हिन्दी
सदियों से राजकाज में

प्राचीन काल में हमारे देश की राजभाषा संस्कृत थी। उस समय के दानपत्र और शिलालेख प्राय: संस्कृत में ही मिलते हैं। हिन्दी गद्य की रचना भी प्राचीन काल से होती आयी है। चित्तौड़ नरेश रावत समर सिंह द्वारा पृथ्वीराज चौहान के नाम सम्बोधित पत्र तथा पृथ्वीराज चौहान द्वारा चित्तौड़ नरेश को लिखे गये पत्र विक्रमी संवत् क्रमश: 1229 और 1235 के मिले हैं। प्राचीन कालीन हिन्दी गद्य के और भी अनेक नमूने बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं।

प्रशासन में प्रवहमानता लाने के लिए वर्तमान काल में कार्यशालाएँ चलाने का प्रचलन है। पर लगभग 300 वर्ष पूर्व प्रशासनिक पत्राचार में एक-सी पद्धति किस प्रकार चली और चलती रही—इस संदर्भ में डॉ. महेश चन्द्र गुप्त की महत्त्वपूर्ण गवेषणा की संज्ञा है '**हिन्दी : सदियों से राजकाज में**'। लेखक ने बड़े ही सबल तर्कों से सिद्ध किया है कि प्रशासनिक हिन्दी गद्य ने निश्चित रूप से 15वीं शताब्दी ईसवी के प्रारम्भ में यह रूप ग्रहण कर लिया था।

थोड़े से अंग्रेजीदाँ अधिकारियों के द्वारा देशी भाषाओं को गँवारू और अविकसित समझने की प्रवृत्ति आम है। यह एक बड़ी चुनौती है न केवल हिन्दी के सम्मुख वरन् सम्पूर्ण स्वदेशी भाषाओं के सम्मुख भी।

यह भी उल्लेखनीय है कि ब्रिटेन में अंग्रेजी का प्रयोग राजभाषा के रूप में जितनी अवधि तक रहा, भारत में हिन्दी उससे बहुत अधिक अवधि तक राजभाषा के रूप में प्रयुक्त रही है।

प्रस्तुत पुस्तक न केवल भाषाविदों, बल्कि उन सभी 'प्रबुद्धों' के लिए पठनीय है, जो हिन्दी को राजकाज की भाषा के योग्य नहीं मानते।

हिन्दी

सदियों से राजकाज में

महेश चन्द्र गुप्त

एम० आई० इ० (इंडिया);
पी-एच० डी०; डी० लिट्०

सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

आमुख

अब सामान्यतः यह माना जाने लगा है कि हिन्दी का आविर्भाव आठवीं शती विक्रमी में हुआ। कौन जानता था कि उस काल में सिद्धों, नाथपंथी साधुओं और संतों के मुखों से निकली पवित्र वाणियाँ भारत की भावी राष्ट्रभाषा और राजभाषा की आधार-शिला सिद्ध होंगी। चूँकि देश में एक प्रदेश से दूसरे में भ्रमणशील साधु-संतों ने हिन्दी भाषा का प्रयोग किया, अतः हिन्दी राष्ट्र की सामासिक संस्कृति की वाहिका बनी।

विगत लगभग १३०० वर्षों की काव्य भागीरथी हिन्दी में गद्य का सृजन भी हुआ। पर यह मान्यता रही है कि हिन्दी के खड़ीबोली रूप में गद्य रचना सामान्यतः १९वीं शती ई० के प्रवेश काल में आरम्भ हुई। किन्तु इस धारणा के पीछे अनु-संधानों का अभाव ही है।

विगत लगभग दो दशकों में हुई शोधों के फलस्वरूप अब यह विचार बनने लगा है कि हिन्दी गद्य और भी प्राचीन है और गत लगभग आठ शतियों से साहित्य पटल पर रहा है। शासन के कार्य-कलापों में प्रयुक्त हिन्दी गद्य की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं होने से प्रशासनिक हिन्दी गद्य नष्ट-प्रायः हो गया। सतत् उपेक्षा के पश्चात् भी शोध कार्य के लिए अभी सामग्री उपलब्ध है जिसके दोहन से नए तथ्य प्रकाश में आएँगे। उन तथ्यों से इतिहास के पुनः लेखन की भी आवश्यकता पड़ सकती है क्योंकि प्रशासनिक पत्र-व्यवहार में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्य छिपे पड़े रहते हैं। यह बात इस पुस्तक में दी गई सामग्री से पता चलेगी। रियासतों के पारस्परिक सम्बन्धों और विदेशी शक्तियों के हस्तक्षेप और उनके द्वारा देश को दासत्व की ओर ले जाने के लिए हुई कोशिशों और कूटनीतिक चालों का भी इस पुस्तक में दिए गए अनेक उदाहरणों से पता चलता है। स्वाभिमान का ह्रास और गौरव का अभाव कैसे हुआ, इन प्रवृत्तियों की जानकारी भी इस पुस्तक के पढ़ने से मिल सकेगी। देवनागरी लिपि के अक्षर-विन्यास और वाक्य-विन्यास की भी सम्यक् जानकारी प्रस्तुत प्रलेखों से मिलेगी।

हिन्दी भाषा का वर्तमान स्वरूप भागीरथी की तरह है, जिसमें मारवाड़ी, डिंगल, जयपुरी, ब्रज, मैथिली, अवधी आदि उप-भाषाओं और बोलियों का योगदान है। वर्तमान हिन्दी किसी एक प्रदेश की नहीं है अपितु सम्पूर्ण देश की है। विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी का व्यवहार थोड़े से स्थानीय प्रभावों के साथ हो रहा है। देश की

अन्य भाषाएँ, यथा संस्कृत, कश्मीरी, सिन्धी, पंजाबी, गुजराती, असमिया, मराठी, बंगला, तेलुगु, कन्नड़, तमिल, मलयालम, उड़िया, उर्दू आदि भी अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट शब्दावली को हिन्दी में घुला-मिलाकर हिन्दी की समृद्धि कर रही हैं और हिन्दी उनको समृद्ध कर रही है। ये सगी बहनें हैं। इस प्रकार देश की राजभाषा हिन्दी सबकी है। हिन्दी केवल कविता, कहानी आदि की ही भाषा नहीं है बल्कि शतियों से यह प्रशासन की भाषा भी रही है। आज भी हिन्दी में प्रशासन के गूढ़तम भावों को सहजता से अभिव्यक्त करने की पूरी क्षमता रखती है। यह विनम्र प्रयास, यदि यह भाव उत्पन्न करने में सहायक हो सका तो सार्थक होगा।

यह प्रयास पांडित्य प्रदर्शन के लिए नहीं है, अपितु शोध के नए आयाम सामने आएँ, इस भाव को लेकर है।

इस कार्य में डॉ० मोती बाबू (अब लखनऊ में हैं, हिन्दी विधि प्रतिष्ठान के संस्थापक हैं) और श्री हरि बाबू कंसल (केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् के संस्थापक सदस्य) की प्रेरणा उल्लेखनीय रही है। आगरा में डॉ० श्री मोहन द्विवेदी (पूर्व-अध्यक्ष हिन्दी विभाग, राजा बलवन्त सिंह कॉलेज) और श्री सुशील कुमार सिंहल का बहुमूल्य दिशा-निर्देश स्मरणीय है।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर और राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली के अनेक अधिकारियों और कर्मियों के सहयोग के लिए भी उनका आभार मानता हूँ।

यह पुस्तक प्रातःस्मरणीय फूफाजी स्व० श्री जगन्नाथ प्रसाद जी गर्ग को समर्पित है।

विनीत :
महेश चन्द्र गुप्त

तिथि—श्रावण शुक्ला एकादशी संवत् २०४५ वि०
दिनांक २१ अगस्त १९९१ ई०

भूमिका

'हिन्दी सदियों से राज-काज में' नामक इस कृति में डॉ० महेशचन्द्र गुप्त ने अपने दीर्घकालीन शोध और अनुसन्धान का प्रतिफल अत्यन्त प्रशस्त एवं ऐतिहासिक परिवेश के साथ प्रस्तुत किया है। इसके 'प्रशासन-व्यवस्था', 'सन् १८५७ ई० से पूर्व हिन्दी गद्य', 'सन् १८५७ ई० से पूर्व प्रशासन में हिन्दी का प्रयोग', 'राजघरानों के बीच पत्राचार की भाषा तथा वस्तु', 'हिन्दी का पठन-पाठन', 'देवनागरी लिपि का प्रयोग (अक्षर-विन्यास)', 'प्रशासनिक हिन्दी गद्य के प्रभाव', 'राजभाषा के रूप में हिन्दी की क्षमता तथा प्रौढ़ता' एवं 'प्रशासनिक शब्दावली—वर्तमान प्रशासनिक शब्दों के सन्दर्भ में' शीर्षक नौ अध्यायों में देश में सदियों पूर्व से चले आए हिन्दी के प्रशासनिक-वर्तन-व्यवहार की उपादेयता पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के अन्त में उसके 'प्रलेख' शीर्षक दसवें अध्याय में 'राजस्थान राज्य-अभिलेखागार बीकानेर' से प्राप्त करौली, जयपुर, इन्दौर, ग्वालियर, किशनगढ़ तथा बीकानेर आदि देशी रियासतों में व्यवहृत पारस्परिक प्रशासनिक पत्राचारों की कुछ मूल प्रतिलिपियाँ प्रस्तुत करके लेखक ने इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता और उपादेयता को सर्वथा असन्दिग्ध बना दिया है।

आज जबकि हमारे देश में सर्वत्र प्रशासनिक कार्य-व्यवहार में हिन्दी का प्रचलन अत्यन्त 'सुगमता' और 'सहृदयता' से होना चाहिए था वहाँ प्रायः उसके मार्ग में अनेक विघ्न और अवरोध खड़े किए जाते रहते हैं। इस अवसर पर हम यह कैसे भूल जाते हैं कि हिन्दी का प्रचलन तथा उसका प्रशासनिक कार्यों में व्यवहार पिछली कई शतियों से निरन्तर होता रहा है। डॉ० गुप्त की यह कृति उन लोगों की चुनौती का करारा उत्तर प्रस्तुत करती है जो आज हिन्दी को प्रशासनिक कार्यों में अक्षम और असमर्थ सिद्ध करने का यदा-कदा विफल प्रयास करते रहते हैं। ऐसे विघ्न-सन्तोषी व्यक्ति यदि भारत के अतीत-कालीन प्रशासनिक कार्य-व्यवहार में हिन्दी के प्रयोग पर सम्यक् रूप से दृष्टिपात करें तो उन्हें सहज ही में इस बात का परिचय मिल जाएगा कि मुग़ल-बादशाह औरंगज़ेब के समय से लेकर ब्रिटिश शासनकाल तक सर्वत्र हिन्दी का ही प्रयोग प्रचुरता से होता था। हिन्दी के अपभ्रंशकालीन प्रारम्भिक-युग अर्थात् ग्यारहवीं शताब्दी के शिला-लेखों से लेकर आज तक के शिला-लेखों को भी यदि हम ध्यान से देखें तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि उन दिनों दान-पत्रों, सिक्कों तथा पारस्परिक पत्राचार में

सर्वत्र हिन्दी का ही व्यवहार होता था। दक्षिण में केरल की तिरुवितांकुर तथा मैसूर आदि कई रियासतों में भी हिन्दी का प्रचलन अत्यन्त सरलता से होता था। वहाँ के कोषिकोड, कव्वूर, कोच्चिन तथा कोडमल आदि बन्दरगाहों पर भी उत्तर भारत से व्यापार-व्यवहार होने के कारण उस हिन्दी को ही सब लोग अपनाते थे जिसे 'हिन्दुस्तानी' कहा जाता है।

पृथ्वीराज के राज्यारोहण का उल्लेख हमें जहाँ सन् ११७८ ईसवी के हिन्दी के शिलालेखों में मिलता है वहाँ मोहम्मद गौरी द्वारा चलाए गए सिक्कों पर भी देवनागरी लिपि अंकित दृष्टिगत होती है। शेरशाह सूरी, अकबर और जहाँगीर के युग में भी हिन्दी का सर्वत्र सम्मान था। खिलजी, तुग़लक, बहमनी तथा गोलकुण्डा के शासकों के यहाँ हिन्दी भाषा ही व्यवहृत होती थी। शहाबुद्दीन ने भी सन् ११८२ में ब्रजमिश्रित हिन्दी का उपयोग किया था और जब तेरहवीं शताब्दी में मोहम्मद तुग़लक ने दक्षिण में देवगिरि (दौलताबाद) को अपनी राजधानी बनाया था तब से तो वह 'दक्खिनी हिन्दी' के रूप में प्रशासनिक कार्यों में पूर्णतः प्रस्थापित हो गई थी। उस समय मुस्लिम-परिवारों के अतिरिक्त अन्य जो बहुत-से हिन्दू व्यापारी उनके साथ वहाँ चले गए थे उनके कारण तो हिन्दी वहाँ सुगमता से सर्वत्र बोली और समझी जाने लगी थी। कालान्तर में मराठों के शासनकाल में राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग पर्याप्त व्यापकता के साथ हुआ। उनके समय के उत्तर भारत के नरेशों के साथ हुए हिन्दी के पत्राचार के भी प्रचुर प्रमाण मिलते हैं। बड़ौदा-नरेश ने तो अपने शासन-काल में न केवल हिन्दी का प्रचलन ही किया, प्रत्युत प्रशासकीय कार्य-व्यवहार में आनेवाला 'शासन-शब्द-कल्पतरु' नामक एक ऐसा शब्द-कोश भी तैयार कराया था जिसमें गुजराती, बंगला, मराठी तथा फ़ारसी के अतिरिक्त हिन्दी शब्दों के विविध रूप दिए गए हैं। इस शब्द-कोश को देखने से यह विदित होता है कि आज के प्रशासनिक-कार्यों में जो शब्द प्रचलित हैं उनमें से अनेक उस समय भी व्यवहार में आते थे। उन दिनों इस कोश के अतिरिक्त सत्रहवीं-शताब्दी में 'राज-व्यवहार-कोश', 'शब्द रत्न समन्वय' और 'शब्दार्थ-संग्रह' जैसे कई मानक कोश भी तैयार हुए थे। ग्वालियर के महाराजा जीवाजी राव सिंधिया ने तो सन् १८५३ में दीवान शेख़ गुलाम हुसैन को पत्र द्वारा यह आदेश दिया था कि सरकारी काम-काज में फ़ारसी शब्दों का प्रयोग करने पर दण्ड की व्यवस्था रखी जाए और जयपुर के दीवान ने उर्दू के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग करने की आज्ञा जारी की थी।

अंग्रेज़ों के आगमन के साथ-साथ सम्पर्क तथा व्यवहार की भाषा भी आवश्यकता और अनिवार्यता से अनुभव की गई। 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' के माध्यम से जब सारे भारत में उनका कार्य-व्यापार फैला तो उनके कार्यकर्ता सर्वजन सुलभ होने के कारण हिन्दी-भाषा और देवनागरी लिपि को ही अपने सामान्य व्यवहार में

लाने को इसलिए विवश हुए क्योंकि एक यही भाषा और लिपि ऐसी थी जिसका समग्र देश में प्रचुरता से प्रचलन था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सन् १८०३ में जनता से सम्बन्धित सूचनाओं को हिन्दी में ही प्रचलित करने का आदेश दिया था। यहाँ तक कि उसने यह भी घोषणा की थी कि भारत के शासन में उसी व्यक्ति को लिया जाएगा जो जनता के व्यवहार में आनेवाली भाषा को जानता हो। परिणामस्वरूप शासकीय कार्यकर्ताओं को हिन्दी सिखाने की दृष्टि से हालैण्ड-निवासी जॉन जोशुजा केटेलर ने 'हिन्दुस्तानी भाषा' शीर्षक से हिन्दी का एक व्याकरण लिखा। इसके बाद सन् १७४५ में बेंजामिन शुल्ज और सन् १७७१ में कैसियानो वेलीगली नामक अंग्रेज़ों ने भी हिन्दी में अलग-अलग दो व्याकरणों की रचना की। हमारे इस प्रतिपादन की पुष्टि संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान् हेनरी थामस कोलब्रुक के सन् १७८२ में व्यक्त इन विचारों से भी हो जाती है—"जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रान्त के लोग सामान्य रूप से करते हैं, जो पढ़े-लिखों और अनपढ़ दोनों प्रकार के लोगों की साधारण बोल-चाल की भाषा है और जिसको प्रत्येक गाँव में थोड़े-बहुत लोग अवश्य समझ लेते हैं उसीका नाम 'हिन्दी' है।"

यही नहीं, हिन्दी की सर्वजन-ग्राह्यता एवं उपयोगिता का ज्वलन्त साक्ष्य दिल्ली के रेजीडेंट सी० टी० मेटकाफ़ के ब्रिटेन के शासकों के नाम लिखे गए उस पत्र से भी भली-भाँति मिल जाता है जो उन्होंने २९ अगस्त सन् १८०६ को लिखा था। उसमें स्पष्ट रूप से यह कहा गया था—"भारत के जिस भाग में भी मुझे काम करना पड़ा है वहाँ हर जगह ऐसे लोग मिले हैं, जो हिन्दुस्तानी बोल सकते हैं। हिन्दुस्तानी एक ऐसी ज़बान है जो आमतौर पर उपयोगी साबित होती है। मेरे विचार में संसार की किसी भी भाषा से उसका उपयोग बहुत बड़े पैमाने पर होता है।" सन् १८१९ में लेफ्टिनेंट रोबर्ट रोकब ने भी मेटकाफ़ के इस कथन की पुष्टि इन शब्दों में की थी—"हिन्दुस्तानी सामान्य जनता की बोलचाल की भाषा है और साथ ही वह भारत की बड़ी लोकप्रिय भाषा भी है।" इन सभी प्रभावों से यह सिद्ध होता है कि हिन्दी राज-काज और सामान्य कार्य-व्यवहार दोनों में ही देश में सर्वत्र प्रचलित थी। देश में कदाचित् हिन्दी की इस लोकप्रियता पर अंकुश लगाने की दृष्टि से ही लार्ड मेकाले ने सन् १८३५ में अंग्रेज़ी का प्रयोग किए जाने पर बल दिया था। ब्रिटिश शासकों की नीति मेकाले की धारणा के अनुसार ही बनी थी। उसके बावजूद सन् १९५१ तक अंग्रेज़ी जाननेवालों की संख्या केवल एक प्रतिशत तक ही सीमित रही। स्वतन्त्रता के उपरान्त अंग्रेज़ और उनकी सरकार तो चली गई, पर उसके मानस-पुत्रों ने अंग्रेज़ी को प्रशासन और उच्च-शिक्षा का माध्यम बनाने का दुराग्रह अभी तक नहीं छोड़ा है।

स्वतन्त्रता के उपरान्त आज जब देश में सब ओर हिन्दी के प्रचार और प्रसार की दिशा में ज़ोरदार प्रयत्न हो रहे हैं तथा सरकार के सभी विभागों में दैनिक

कार्य-व्यापार में हिन्दी के प्रचलन का उत्कट उद्घोष सुनाई देता है तब भी हिन्दी को वह गौरव अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है, जिसकी आशा हमें थी। भारत के संविधान में भारत की भाषा 'हिन्दी' को ही घोषित किया गया था और उसे व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए सन् १९६३ में जो 'राजभाषा अधिनियम' बना था उस समय भी स्पष्टतः यह निर्देश था कि "हिन्दी को हमारे संविधान में केन्द्र और सरकारी काम-काज के लिए जो सम्पर्क भाषा का स्थान दिया गया है वह केवल इसलिए कि यही एक ऐसी भाषा है, जिसे ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग समझ सकते हैं और बोल सकते हैं।" स्वतन्त्रता के इन ४४ वर्षों में भी हिन्दी को वह स्थान नहीं मिल सका, जिसकी वह अधिकारिणी है, यह अत्यन्त खेद की बात है। यह ठीक है कि सरकार ने हिन्दी के विकास, प्रचार और शासकीय कार्यों में उसके प्रयोग के लिए अनेक उल्लेखनीय कार्य किए हैं और अनेक संस्थाएँ सरकारी अनुदानों से हिन्दी के प्रसार के कार्य में लगी हुई हैं, लेकिन कुछ मुट्ठी-भर लोगों की हठधर्मी के कारण हिन्दी का रथ अभी भी जहाँ-का-तहाँ रुका खड़ा है।

इस पुस्तक के लेखक डॉ० गुप्त की हिन्दी के प्रति अनन्य निष्ठा का ही यह सुपरिणाम है कि रुड़की विश्वविद्यालय से 'अभियान्त्रिकी' की शिक्षा में पारंगत होकर वह हिन्दी की ओर मुड़े। यही नहीं कि उन्होंने हिन्दी की उच्चतम शिक्षा प्राप्त की, प्रत्युत् उनके हिन्दी-प्रेम का ज्वलन्त प्रमाण यह भी है कि उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से सन् १९८० में 'राजस्थान के प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग' तथा सन् १९८९ में सन् १६५७ ई० से सन् १८५७ ई० तक के 'राजस्थान के प्रशासनिक हिन्दी-गद्य की वस्तु और भाषा का समीक्षात्मक अध्ययन' विषयों पर क्रमशः पी-एच० डी० और डी० लिट्० की उपाधियाँ अर्जित कीं। आजकल वह भारत-सरकार के गृह-मन्त्रालय के राजभाषा विभाग में निदेशक (अनुसन्धान) के पद पर कार्यरत हैं। अपने दीर्घकालीन अनुसन्धान तथा शोध के निष्कर्ष उन्होंने प्रस्तुत कृति में व्याख्यायित एवं निरूपित करके हिन्दी-जगत् को एक ऐसी अमूल्य धरोहर सौंपी है जिसके आलोक में हिन्दी की प्रशासनिक क्षमता तथा उपयोगिता का सम्यक् निदर्शन मिल सकता है। आशा है हिन्दी-जगत् उनकी इस कृति का सोत्साह स्वागत करेगा। मैं उन्हें इस उपयोगी रचना के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

अजय निवास
दिलशाद कालोनी
दिल्ली-११००९५

क्षेमचन्द्र 'सुमन'
२१ अगस्त, ९१

अनुक्रम

अध्याय १

प्रशासन व्यवस्था

विभिन्न रियासतों में प्रशासन व्यवस्था

पुरातन काल में प्रशासनिक व्यवस्था में सामन्ती प्रथा का प्रमुख स्थान था। इस प्रथा में राजा एक नेता के रूप में रहता था और उसी के वंशज या अन्य जाति के वंशज उसके साथी और सहयोगी बने रहते थे। राजा के सामन्त उसी या समकक्ष वंश के होने से राज्य के बराबरी के भागीदार होते थे। उनके पोषण के लिए कुछ भूमि दे दी जाती थी और उस पर उनका जन्मजात अधिकार होता था। किन्तु धीरे-धीरे सामन्त स्वयं आश्रित स्थिति में पहुँचते गए। जागीरों की आय के अनुपात से उनके सैनिक बल का निर्धारण होने लगा जिसके लिए उन्हें युद्धोचित सेवाएँ देनी पड़ती थीं। 'जागीर' शब्द फारसी का है, जिसका अर्थ जायदाद या जमींदारी से है जो सरकार से किसी बड़े काम के बदले मिले।

गाँव शासन की सबसे छोटी इकाई थी। पटवारी भूमि-प्रलेख रखता था और उनके अनुसार राजस्व एकत्रित करता था। उसके अन्य सहयोगी कनवारी, तपेदार, तलवाटी, शहनाह, चौकीदार आदि थे। कहीं-कहीं पटेल भी होते थे। गाँवों की स्थानीय व्यवस्था के लिए ग्राम पंचायतें थीं। उपर्युक्त अधिकारियों को बहुधा नाममात्र का नकद वेतन मिलता था। उनकी आय उपज और लगान के अनुपात से निर्धारित की जाती थी। उपज वसूली में 'कूँता', 'लाटा' आदि का प्रचलन था। यहाँ स्थानीय अधिकारियों के पदनामों का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक लगता है ताकि पत्राचार में यत्र-तत्र आनेवाले पद और पदनाम स्पष्ट हो जाएँ।

पटवारी (पट्ट + वारी) : 'पट्ट' संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ लिखित सरकारी आदेश होता था, विशेषतः ऐसा आदेश जो भूमि देने आदि के विषय में हो। लगभग इसी अर्थ में आज भी हिन्दी में 'पट्टा' शब्द का प्रयोग होता है। 'वारी' एक हिन्दी प्रत्यय लगता है। वैसे 'वार' एक फारसी प्रत्यय भी है जिसका अर्थ होता है 'करनेवाला' या 'वाला'। 'वाला' शब्द का यह प्रयोग हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में आज भी होता है। ग्राम के भूमि सम्बन्धी अभिलेख तैयार करने के कारण 'पटवारी' नाम दिया गया। संस्कृत में 'पट्टोलिका' का प्रयोग एक विलेख के अर्थ में होता था तथा 'पट्टोपाध्याय' सरकारी अनुदान लेखक को कहते थे।

कनवारी : यह खेत के रक्षक के लिए प्रयुक्त पदनाम है।

तलवाटी : उपज के तोलनेवाले को तलवाटी कहा जाता था। अभी भी अनेक गाँवों में 'तोलना' शब्द 'तलवाना' रूप में बोला जाता है।

तपेदार : पदनाम लेखा-जोखा रखनेवाले का था।

शहना : यह अरबी के शहनह के भारतीय रूपों में से एक है, इसका अर्थ होता था खेतों की चौकसी करनेवाला। कुछ वर्ष पूर्व तक इसका प्रयोग अपने यहाँ भी होता था। पुलिस या न्यायालय द्वारा खेतों की कुर्की किए जाने पर उनकी रखवाली के लिए नियुक्त व्यक्ति को शहना कहते थे।

कानूनगो : यह अरबी-फारसी का पुल्लिग शब्द है जिसका अर्थ माल विभाग का एक पदाधिकारी बताया गया है जो पटवारियों के काम की देखरेख करता है। यह पदनाम आज भी अनेक प्रदेशों में इसी रूप में प्रचलित है और इसके द्वारा यही काम भी होता है।

पटेल : वर्तमान में राजस्थान, गुजरात आदि में गाँव का नम्बरदार या मुखिया पटेल कहलाता है।

भूमि के विभागों में खालसा, हवाला, जागीर, भोम और शासन प्रमुख थे। खालसा भूमि राजस्व के लिए दीवान के निजी प्रबन्ध में होती थी। हवाला भूमि की देख-रेख हवलदार करते थे। जागीर की भूमि का सम्बन्ध जागीरदारों से और धर्मार्थ भूमि शासन भूमि होती थी। भोम की भूमि भोमियों के लिए थी जो राज्य की कई प्रकार से सेवा किया करते थे किन्तु उनसे कोई कर नहीं लिया जाता था। पूर्व कथनानुसार उपज वसूली में 'कूँता' और 'लाटा' आदि का प्रचलन था। 'कूँते' में शिष्ट ग्रामीणों के अनुमान से उपज निर्धारित की जाती थी तो 'लाटा' में उपज के ढेर लगाए जाते थे। वस्तुतः अनुमान लगाने के लिए 'कूतना' शब्द आज भी प्रचलित है।

गाँव से ऊपर, राज्यों के नीचे की लघु इकाई परगना होती थी। प्राचीन काल में तो ग्राम, मण्डल, दुर्ग आदि नामों की इकाइयाँ थीं जिनके प्रमुख ग्रामिक, मण्डल-पति तथा दुर्गाधिपति कहलाते थे। किन्तु बाद में विभिन्न राज्यों में इनके विभिन्न नाम मिलते हैं। जोधपुर की हकीकत बहियों में हाकिम और फौजदार पदों का उल्लेख मिलता है। हाकिम तो परगने का सर्वेसर्वा था जो राजा द्वारा नियुक्त होता था। 'फौजदार' पुलिस तथा सेना का अध्यक्ष होता था। उसके अधीन कई थानों के थानेदार रहते थे जो चोरों, डाकुओं का पता लगाते थे। कहीं-कहीं बड़े परगनों में एक 'ओहदेदार' भी होता था, जो हाकिम के शासन में सहायता देता था। इनके सहयोगी शिकदर, कानूनगो, खजांची, शहने आदि होते थे।

परगना : यह शब्द फारसी के पर्गनः (पुल्लिग) का तद्भव रूप है जिसका अर्थ है जिले का एक भाग, तहसील। इसकी परिभाषा "भूमि का वह भाग जिसके

अन्तर्गत अनेक गाँव हों" सही है। यह आज भी इसी रूप में प्रचलित है।

फौजदार : अरबी में फौज शब्द स्त्रीलिंग है जिसका अर्थ सेना, बल, वाहिनी, लश्कर है। फौजकशी का अर्थ दुश्मन के देश पर चढ़ाई है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के काल में भी इस पदनाम का उल्लेख मिलता है।

हाकिम : यह अरबी शब्द है जिसका अर्थ है पदाधिकारी, शासक, सरदार आदि। इसलिए यह पदनाम परगने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वह परगने का सर्वेसर्वा होता था।

शिकदर : अरबी/फारसी का पुल्लिग शब्द 'शिकदार' है जिसका अर्थ क्षेत्र-विशेष का पदाधिकारी है।

खजांची : ये कोष रखने तथा रुपया जमा करने और व्यय करने का विवरण रखते थे। खजांची शब्द अरबी/फारसी का है जिसका अर्थ खजाने का हिसाब-किताब रखनेवाला है। यह शब्द आज भी ज्यों-का-त्यों प्रचलित है। मेवाड़ में इसे कोषपति कहते थे।

राज्य के तत्कालीन अधिकारियों में से कतिपय पदनाम—लेखक, पोतदार, कोतवाल, लेखेदार, मुनीम आदि थे। प्राचीन परम्परानुसार बने रहे पदों में 'प्रधान' पद महत्त्वपूर्ण था। यह राजा से दूसरे स्थान पर था जो शासन, सैनिक-कार्यों और न्याय में राजा की सहायता करता था। मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के प्रधान शाह आशा और महाराणा प्रतापसिंह के भामाशाह थे। संस्कृत के प्रधान शब्द का अर्थ सर्वोच्च अथवा श्रेष्ठ है। यह विशेषण है। किन्तु संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त होता है। तब इसका अर्थ नेता है।

कहीं प्रधान के होते हुए और कहीं न रहते हुए राज्य का सर्वोच्च अधिकारी दीवान होता था जो मुख्यतः अर्थ विभाग का अध्यक्ष होता था। उसके कार्यों में मुख्यतः आर्थिक कार्य, कोष और कर-संग्रह के कार्य थे। दरोगा, रोकड़िया, मुंशी, पोतदार आदि उसके अधीन होते थे।

लेखक : यह वर्तमान लिपिक के लिए प्रयुक्त प्राचीन शब्द है।

लेखेदार : यह वर्तमान 'लेखाकार' का प्राचीन रूप है जिसे संकर शब्द कहा जा सकता है क्योंकि इसमें 'लेखा' शब्द संस्कृत और 'दार' शब्द अरबी/फारसी का है।

मुनीम : अरबी में 'मुनइम' शब्द विशेषण है जिसका अर्थ इनआम देनेवाला, पुरस्कारदाता, समृद्ध, धनाढ्य से है। किन्तु हिन्दी शब्दकोश (नालन्दा विशाल शब्द सागर) में इसे हिन्दी का शब्द लिखा गया है जिसका अर्थ आय-व्यय का हिसाब रखनेवाला लिपिक बताया गया है। वर्तमान सन्दर्भ में यह पद दुकानों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों में आय-व्यय लेखक के रूप में ही प्रयुक्त हो रहा है।

पोतदार : फारसी में फोतःदार (पुल्लिग) शब्द का अर्थ खजानची, तहसील-

दार, पोतदार बताया गया है। हिन्दी शब्दकोश में इसे हिन्दी का शब्द बताया गया है जिसका अर्थ खजानची, खजाने में रुपया परखनेवाला अथवा पारखी बताया गया है।

कोतवाल : किसी काल का 'कोटपाल' कालान्तर में 'कोतवाल' बन गया। यह जन-सुरक्षा और शान्ति सम्बन्धी व्यवस्था बनाए रखने के लिए था। चोरी-डकैती का पता लगाना, माप-तोल पर नियन्त्रण रखना तथा वस्तुओं के मूल्यों का निर्धारण उसके कार्य थे। 'शब्द सागर' में कोटपाल तथा कोतवाल दोनों शब्द पृथक्-पृथक् दिए गए हैं। वर्तमान काल में शहर के थाने के प्रभारी अधिकारी को कोतवाल कहते हैं।

दरोगा : फारसी का पुल्लिंग शब्द दारोग़ः है जिसका अर्थ निरीक्षक, निगरा, थानेदार है। उस काल में अनेक दरोगाओं का उल्लेख मिलता है। यथा—दारोगा-ए डाक (डाक का), दारोगा-ए-सायर (दाण वसूली का), दारोगा-ए-मुशरिफ (अर्थ विभाग का सचिव), दारोगा-ए-आबदार (खाना-पानी का), दारोगा-ए-फराशखाना (सामान के विभाग का), दारोगा-ए-नक्कारखाना (बाजे और नगाड़ों का)। यह मत भी प्रतिपादित किया गया है कि दारोगा शब्द अफ़सर के लिए प्रयुक्त होता था। इस प्रकार के पदनाम स्पष्टतः मुग़लों के प्रभाव से आए और परकीय प्रभाव के प्रतीक हैं।

मध्य युग में न्याय-व्यवस्था अपने प्राचीन भारतीय रूप में थी। न्याय का स्रोत तथा मुख्य आधार राजा होता था।

सेना का नेतृत्व वैसे तो राजा स्वयं करते थे परन्तु अलग-अलग विभागों के लिए अलग-अलग अधिकारी भी होते थे जिन्हें पैदलपति, गजपति, अश्वपति आदि कहते थे। किन्तु कालान्तर में मुग़ल-प्रभाव में वृद्धि के फलस्वरूप कई राज्यों में दारोगा-ए-फीलखाना (हाथीखाना), दारोगा-ए-तोपखाना (तोपखाने का अफसर), शमशेरबाज, बन्दूकची, किलेदार आदि भी कहलाने लगे थे। यह उल्लेखनीय है कि दरोगा या दारोगा शब्द आज भी प्रचलित है जिसको इंस्पेक्टर के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। मुंशी प्रेमचन्द जी की कहानी 'नमक का दारोगा' से भी यही ध्वनित होता है।

बख्शी : यह भी राज्य का प्रभावशाली मन्त्री होता था। वह मुख्यतः सेना विभाग का अध्यक्ष होने के नाते सेना का वेतन, खाद्य-सामग्री, सैनिक प्रशिक्षण तथा अनुशासन आदि को देखता था। फारसी में इसका अर्थ सैनिकों को वेतन बाँटने-वाला या कस्बों में टैक्स वसूलनेवाला है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह टैक्स वसूलने-वाला, बाद में प्रदत्त कार्य है।

दीवान : फारसी के इस शब्द का अर्थ मन्त्री, वज़ीर, अर्थमन्त्री, वजीरेमाल आदि बताया गया है। यह शब्द निःसन्देह विदेशी है किन्तु हिन्दी में आत्मसात हो

गया है। हिन्दी के शब्दकोशों में भी यह विदेशी शब्द ही बताया गया है। दीवान के अधीन खान सामान होता था, जिसका दायित्व निर्माण-कार्य, वस्तुओं का क्रय तथा संग्रह था। किन्तु फारसी में खानसामां का अर्थ बावरची/रसोइया है।

मुगलों के प्रशासन के तौर-तरीकों ने प्रशासन प्रबन्ध में नई शब्दावली जोड़ी। पत्र-व्यवहार के नए रूपों और नए पदनामों का समावेश हुआ। फरमान; मंसूर तथा रुक्के स्वयं मुगल सम्राट् द्वारा जारी किए जाते थे। सामान्यत: ये शाही वंश से सम्बन्धित लोगों, शाही मनसबदारों तथा विदेशी शासकों के नाम जारी किए जाते थे।

मुगल सम्राट् की आज्ञानुसार शाही पदाधिकारियों द्वारा जारी किए जानेवाले कागज **हस्बुल हुक्म, इंशा** व **रुक्केयात** के नाम से पुकारे जाते थे।

राजाओं की तरफ से सम्राट् तथा शाहजादों की सेवा में प्रेषित कागज अर्ज़-दाश्त के नाम से पुकारे जाते थे।

मुगल शासन काल में शासक मुगल दरबार में अपना वकील रखता था जो अपने शासक को दरबार की गतिविधियों के बारे में नियमित रूप से सूचना भेजते रहते थे। इसको वकील **रिपोर्ट** कहा जाता था।

कुछ राज्यों में बहियाँ लिखने की परम्परा मध्यकाल में प्रारम्भ हो चुकी थी। जिन बहियों में राजा की दैनिक चर्चा का उल्लेख रहता था उन्हें 'हकीकत बहियाँ' कहा जाता था। अरबी में हकीकत शब्द का अर्थ यथार्थता, सत्यता और सचाई आदि से है। जिनमें शासकीय आदेश की नकल होती थी, उन्हें 'हकूमत री बही' कहा जाता था। महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से आनेवाले पत्रों की नकल जिसमें रहती थी, उसे '**खरीता बही**', विवाह-शादी से सम्बन्धित बही 'विवाह बही', सरकारी भवनों के निर्माण से सम्बन्धित बहियाँ 'कमठाना बही' कहलाती थीं।

सर्वप्रथम अकबर ने फौजी प्रबन्ध के लिए ६६ मनसब नियत किए और अपने अमीरों, राजाओं, सरदारों और जागीरदारों आदि को अलग-अलग दर्जे के मनसब देकर भिन्न-भिन्न मनसबों के अनुसार मनसबदारों की **तनख्वाह** और **लवाजमा** नियत कर दिया। ये मनसब १०,००० से लेकर १० तक थे। अरबी में लवाजिम का अर्थ किसी कार्य अथवा उद्योग से सम्बन्धित वस्तुएँ हैं।

ये मनसब ज़ाती थे और इनके सिवा सवार अलग होते थे, जिनकी संख्या ज़ाती मनसब से अधिक नहीं, किन्तु कम ही रहती थी; जैसे हज़ारी ज़ात, ७०० सवार; तीन हज़ारी ज़ात, २००० सवार आदि। मनसब के अनुसार माहवारी तनख्वाह या जागीर मिलती थी।

एक हज़ारी को १०४ घोड़े, ३० हाथी, २१ ऊँट, ४ खच्चर और ४२ गाड़ियाँ रखनी पड़ती थीं और उसे ८००० रुपए मासिक तनख्वाह मिलती थी।

पाँच हज़ारी को ३३७ घोड़े: १०० हाथी, ८० ऊँट, २० खच्चर और १६०

गाड़ियाँ रखनी पड़ती थीं और उसका मासिक वेतन ३०००० रुपए होता था।

दस हजारी को ६६० घोड़े, २०० हाथी, १६० ऊँट, ४० खच्चर और ३२० गाड़ियाँ रखनी पड़ती थीं और उसकी माहवारी तनख्वाह ६०००० रुपए होती थी। एक सदी (१००) वाले को १० घोड़े, ३ हाथी, २ ऊँट, १ खच्चर और ५ गाड़ियाँ रखनी पड़ती थीं और उसका मासिक वेतन ७०० रुपए होता था। मनसबदारों का यह तरीका अकबर के पश्चात् ढीला पड़ गया और तत्पश्चात् तो नाममात्र प्रतिष्ठा सूचक खिताब-सा हो गया था।

मनसब प्राप्त करने की लालसा एवं ललक तो राजाओं में रही किन्तु यह मनसबी व्यवस्था अनेक राज्यों के प्रशासन में अपना स्थान न बना सकी। इसका विदेशीपन प्रतिष्ठापित न हो सका।

पत्राचार के मुगलकालीन पूर्वोल्लिखित रूपों का विशद् विवेचन इसलिए आवश्यक प्रतीत होता है कि इनका आगे यत्र-तत्र उल्लेख होगा।

बही— यह हिन्दी भाषा की जातिवाचक संज्ञा है जिसका अर्थ हिसाब-किताब लिखने का चौपड़ा है। यह वंशावली लिखने का भाटों का चौपड़ा भी है।

फरमान—फर्मा—(फारसी पुल्लिग)

फर्मान—राजादेश—शाही हुक्म, आज्ञा, हुक्म।

मंसूर—मंसूर अरबी का विशेषण—गद्यात्मक लेख

रुक्के और रुक्केयात—रुक्अः अरबी पुल्लिग—पर्चा, कागज का टुकड़ा, चिट्ठी, खत, पत्री।

हस्बुल हुक्म—अरबी (विशेषण) हुक्म के बमूजिब, आज्ञानुसार, आदेशानुसार, यथानिर्दिष्ट।

इंशा—अरबी स्त्री—लिखना, साहित्य, अदब, उत्पन्न करना, आरम्भ करना।

मंसब—अरबी शब्द जिसके अर्थ – पद, ओहदा, बड़ी पदवी, अधिकार, हक, कर्तव्य, फर्ज हैं।

अर्ज़दाश्त—अरबी/फारसी का शब्द जिसके अर्थ—प्रार्थना, इल्तिजा, प्रार्थना-पत्र, दरख्वास्त हैं।

पदनामों और पत्राचार के रूपों तथा अन्य उल्लेखनीय शब्दों की सूची अग्रवर्णित है—

पदनाम	पत्राचार	अन्य
अश्वपति	अर्ज़दाश्त	खालसा
कनवारी	इंशा	जागीर
काजी	सरीता	तनख्वाह
कानूनगो	फरमान	तोपखाना
किलेदार	मंसूर	नक्कारखाना
कोतवाल	रुक्के	परगना
खजांची	हस्बुल-हुक्म	फराशखाना
गजपति		फीलखाना
चौकीदार		भोम
तफेदार		मनसब
तलवाटी		लवाज़मा
दरोगा		हवाला
दीवान		
पटवारी		
पटेल		
पैदलपति		
पोतदार		
फौजदार		
मुनीम		
बख्शी		
लेखक		
लेखेदार		
शमशेरबाज		
शहना		
शिकदर		
हाकिम		

अध्याय २

सन् १८५७ ई० से पूर्व हिन्दी गद्य

(क) प्रशासनिक हिन्दी गद्य और पारम्परिक हिन्दी गद्य से उसकी तुलना

देश की प्राचीन राजकीय भाषा संस्कृत थी। प्राचीन दानपत्र तथा शिलालेख बहुधा संस्कृत में मिलते हैं। हिन्दी गद्य की रचना भी प्राचीन काल से होती आई है। तेरहवीं शताब्दी (विक्रमी) के संवत् १२२९ और १२३५ के क्रमशः चित्तौड़-नरेश रावत समरसिंह का पृथ्वीराज चौहान को सम्बोधित और पृथ्वीराज चौहान का चित्तौड़-नरेश को लिखे पत्र मिले हैं। चौदहवीं शताब्दी की कुछ पारम्परिक गद्य रचनाएँ प्राप्त हुई हैं। उनकी भाषा के अध्ययन से यह अनुमान है कि हिन्दी गद्य-परम्परा का प्रारम्भ तेरहवीं शताब्दी के मध्य से हुआ है। डॉ० नगेन्द्र ने भी यही मत प्रकट किया है।

विद्वानों का मत है कि पद्य की तरह गद्य के प्रारम्भिक विकास में भी जैन विद्वानों का विशेष योगदान रहा है। उनकी अनेक छोटी-छोटी रचनाओं की वर्णन-प्रणाली को विद्वानों ने सरस तथा रोचक माना है। अनेक जैनेतर रचनाओं का भी पता चला है। इनमें कुछ तो पूरी गद्य में हैं और कुछ में गद्य और पद्य दोनों हैं। ख्यात, बात के अतिरिक्त बहुत से प्राचीन ताम्रपत्र, पट्टे, परवाने आदि मिले हैं जिनके द्वारा प्राचीन हिन्दी गद्य के स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। गद्यात्मक सामग्री विगत और पीढ़ी वंशावलियों के रूप में भी पाई जाती है।

(१) **ख्यात**—यह शब्द संस्कृत शब्द 'ख्याति' का रूपान्तर है। राजस्थान में यह इतिहास के अर्थ में प्रयुक्त होता है। सीसोदियां री ख्यात, राठौड़ाँ री ख्यात, कछवाहाँ री ख्यात, मुँहणोत नैणसी री ख्यात, महाराजा मानसिंह जी री ख्यात, जोधपुर री ख्यात, उपरावाँ री ख्यात, बीकानेर री ख्यात, देवलिये राधणियाँ री ख्यात, चहुवाण सोनगराँ री ख्यात, जाड़ेचाँ री ख्यात इत्यादि अनेक ख्यातें इतिहास की सामग्री प्रदान करती हैं।

(२) **बात**—यह संस्कृत शब्द 'वार्त्ता' से बना है। इसका अर्थ कहानी से है। राणै उदैसिंघ री वात, हाड़े सूरजमल री वात, राणाँ कूँभा चितभरमिया री वात, राव बीकैजी री वात, पाबूजी री वात, राव लूँणकरण री वात, जैसलमेर री वात,

सौढाँ री वात इत्यादि प्रमुख हैं।

(३) **विगत**—मेवाड़ रा भाखराँ री विगत, सीसोदिया चूँडावतां री साखा री विगत, गैहलोताँ री च्यौबीस साखाँ री विगत, कछवाहा सेखावतां री विगत, जोधपुर बीकानेर टीकायताँ री विगत, जोधपुर रा निवाणाँ री विगत, गढ़ कोटां री विगत इत्यादि उल्लेखनीय हैं। विगत का अर्थ बीते हुए से है अर्थात् इतिहास से है।

(४) **पीढ़ी**—ईडर रा धणी राठौड़ाँ री पीढ़ियाँ, राठौड़ाँ री खांपां री पीढ़ियाँ, हमीरौत भाटियाँ री पीढ़ियाँ, आहाड़ा री पीढ़ियाँ, भायला री पीढ़ियाँ, चन्द्रावताँ री पीढ़ियाँ इत्यादि महत्त्वपूर्ण हैं।

(५) **वंशावळी**—राठौड़ाँ री वंशावळी, झालोरी वंशावळी, बीकानेर रै राठौड़ राजावाँ री वंशावळी, जैसलमेर रा भाटी महारावळ री वंशावळी इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

(६) पट्टावली में जागीरदारों के पट्टे अर्थात् जागीरों का विवरण रहता है।

(७) हकीकत और हाल में किसी घटना और प्रसंग का विस्तृत विवरण होता है।

(८) याद, याददाश्त को कहते हैं।

पारम्परिक गद्य के कुछ नमूनों का प्रशासनिक गद्य से तुलनात्मक विवरण आगे दिया गया है।

संवत् १६६७ वि० (सन् १६१० ई०) में जन्मे मुहणोत नैणसी जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) के दीवान थे। वह सिद्धहस्त गद्य लेखक थे। उनकी ख्यात के कुछ अंश यहाँ उद्धृत हैं—

"डूँगरपुर सहर, ता उगवण नै दिषण बेउ तरफ भाखर छै। खोहल माहे सहर मगरा दी खंभ वसीयो छै। छोटो सौ कोट छै। उठै रावळ रा घर छै। गांव माहे देहुरा घणा छै। चोहटा घणा पिण हाटे उसड़ीपीठ को नहीं। डूँगरपुर थी उतर रै दिस नुँ रावळ पूँजा रो करायो गोवरधन नाथ रो बड़ो देहरो छै। गांव रै ईसान कूँण मै रावळ गैपा रो करायौ बड़ौ तळाव छै। सहर रे पाछै भाखर छै। मिगरा रौ आहुखाँनो पिण उण हीज भाखर ऊपर छै। घणो दूर आहूखानै रै थाणै थान छै। सहर सुँ कोस पूण मै गाँगड़ी नदी छै। तिण रै टाहै रावळ पूँजा रो करायो बडौ राजवाग छै।"

वचनिका राठौड़ रतनसिंह जी री महेसदासोतरी

खिड़िया शाखा के चारण जग्गाजी ने संवत् १७१५ वि० (१६५८ ई०) के लगभग वचनिका राठौड़ रतनसिंह जी री महेसदासोतरी नामक ग्रन्थ बनाया, जिसका दूसरा नाम 'रतन रासो' है। इसमें जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह और

विद्रोही औरंगजेब तथा मुराद के बीच में उज्जैन के रणक्षेत्र पर संवत् १७१५ का युद्ध वर्णित है। उसमें रतलाम के राजा रतनसिंह दिवंगत हो गए। उन्हीं के नाम से ग्रन्थ का नामकरण हुआ। उसकी भाषा डिंगल है। इसमें गद्य और पद्य दोनों हैं।

उद्धरण—इणि भाँति सूँ चारि राणी त्रिण्हि खवासि द्रव्य नाळेर उछाळि बळण चाली। चंचलाँ चड़ि महासरवर री पाळि आइ ऊभी रही। किसड़ी हेक दीसै। जिसड़ी किरतिआँ रौ झूँबकौ। कै मोतियाँ री लड़ि। पवंगा सूँ उतरि महापवीत ठौड़ि ईसर—गौरिज्या पूजी। कर जोड़ि कहण लागी। जुगि जुगि औ हीज धणी देज्यौ। न माँगा वात दूजी। पछै जमी आकास पवन पाणी चन्द सूरिज नूँ परणाम करि आरोगी दोली परिक्रमा दीन्ही। पाठै आप रै पूत परिवार नै छेहली सीखमति आसीस दीन्ही।"

उपर्युक्त उद्धरण में बळण चाली अर्थात् बलने (जलने) चली तथा ऊभी रही अर्थात् खड़ी रही वाक्य में खड़ीबोली, मारवाड़ी आदि का मिश्रण द्रष्टव्य है।

महाराज अजितसिङ्घ जी री ख्यात

समत १७३५ रा पोस वद १० माहाराज जसवन्तसिंघ जी पिसोर में देवलौक हुआ पोस वद ११ राठोड़ रिणछोड़दास सूरजमल सगरांमसिंघ ऊदेसिंघ दुरगदास पंचोली अणदरूप रुघनाथ हरकिसन हरीदास पंचांयणदास वगेरे सारे साथ सलाह कर पातसाहाजी सुँ सुलेह राखण वास्ते से कूलाखाँ रो हिलाखाँ रो बेटा ने भतीज···

उपर्युक्त उद्धरण में "देवलौक हुआ" प्रयोग खड़ीबोली के प्रयोग का सूचक है तथा पेशावर को पिसोर, महाराज को माहाराज लिखा गया है। अन्य नाम भी विकृत हुए हैं। वगेरे, सारे, साथ, सलाह कर आदि शब्द और सुलह राखण वास्ते जैसे वाक्यांश भाषा में परिवर्तन को इंगित करते हैं।

महाराजा अभैसिङ्घ जी री ख्यात

जोधपुर माहाराज अजीसिंघ जी देवलोक हुवा आंण दुवाई माहाराज अभेसिंघ जी री फिरी ने बखतसिंघ जी वड़ा माहाराज देवलोक हूंवा री हकीकत अभेसिंघ जी ने लिखी सो दिली खबर पोहती तरे अभेसिंघ जी संपाडो करण जमना जी पधारिया संवत १७८१ रा साँवण वद ८ सुकर राज़तिलक विराजिया।

उपर्युक्त गद्यांश में दुहाई शब्द को दुवाई और महाराजा अजीतसिंह जी री ख्यात में 'हुआ' का प्रयोग इसमें 'हुवा' के रूप में हुआ, जो द्रष्टव्य है। इस ख्यात में 'अभेसिंघ जी ने लिखी' वाक्यांश विशेषतः भाषा के खिचड़ीपन का बोधक है। 'दिली' शब्द दिल्ली के लिए प्रयुक्त हुआ है। ख्यात में, प्रशासनिक गद्य, सामाजिक और ऐतिहासिक सन्दर्भ में दृष्टिगोचर हो रहा है।

महाराजा रामसिंह जी और महाराजा बखतसिंह जी री ख्यात
(संवत् १८०६ का वर्णन)

माहाराज श्रीरामसिंघ जी गढ ऊपर राजतिलक विराजिया तरै इतरौ इनायत कीयो तिण री विगत। धायभाई देवकरण ने पचास ५०००० हजार रूपियाँ रो पटो ने हाथी थोड़ो पालखी जड़ाऊ तरवार कटारी मोतियाँ री कंठी किलंगी सिरपेच ऊठण बेठण रो कुरब···

उपर्युक्त गद्यांश में 'राजतिलक विराजिया' वाक्यांश संस्कृत गद्यात्मक शैली के साथ नैकट्य का द्योतक है। किन्तु पुनः 'इनायत कीयो' वाक्यांश में इनायत शब्द अरबी/फारसी भाषाओं का प्रभाव पड़ने की पुष्टि करता है और 'कीयो' क्रिया व्रजभाषा शैली है।

जोधपुर रा राठौड़ाँ री ख्यात

अवल में यहाँ मांडव्य रिसी का आस्रम था इ सबब से इस जगे का नाम मांडव्यास्रम हुवा इस लफ्ज विगड कर मंडोवर हुवा है···

उपर्युक्त गद्यांश में तो अवल (अव्वल), सबब, जगे (जगह), लफ्ज (शब्द) आदि शब्द अरबी/फारसी के प्रभाव के बढ़ने के प्रमाण हैं। लेखक संस्कृत भाषा के ज्ञाता नहीं रहे होंगे, इस तथ्य की पुष्टि उनके द्वारा हुए रिसी (ऋषि), आस्रम (आश्रम) अपभ्रंश प्रयोगों से होती है।

राव अमरसिंह जी री वात

महाराज गजसिंघ जी री पाटवी कवर अमरसिंघ जी था सो महाराज इणां सु नाराज था तिणा सु अमरसिंघ जी ने टीका सु दूर कीया संवत् १६६१ लाहौर बुलाय पातसाहजी रै जूदा चाकर राखीया तरै पातसाह साहजिहाँ अठाई हजारी जात दोढ़ हजार असवाराँ रो मनसब दीयौ तिण मैं वड़ोद वगैरै पाँच परगना दीया।

उपर्युक्त बात में तो गद्यांश की भाषा में 'नाराज था' टीका सु दूर कीया जैसे वाक्य भाषा के निखराव तथा खड़ीबोली की दिशा में सुनिश्चित मोड़ के द्योतक हैं। इसमें परम्परात्मक गद्य में प्रशासनिक इतिवृत्त का समन्वय हो गया है।

टेसिटरी महाशय इनके लिपिबद्ध होने के समय का सही अनुमान नहीं दे पाए हैं। इस गद्य के लेखन के यथार्थ वर्ष का अनुमान लगा पाना कठिन है किन्तु इतना तो समझ में आता है कि रचना सन् १६६० से १७०० ई० के मध्य की होगी।

राव रायसिंह जी री वात

पछै संवत १७१५ औरंगजेब रे नै साहसुजा रे पटणा कनै गाव कुरड़ै लड़ाई हूई जिण में रायसिंघ जी बड़ी बहादुरी कीवी।

राठौडाँ री वंसावली तथा पीढियाँ

टैसिटरी के अनुसार इसको संवत् शताब्दी १७०० के मध्य में लिखा गया। इसका प्रारम्भ इस प्रकार होता है—

श्री परम पुरख परमात्मने नमः ॥ श्री गुरभ्यो नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ अविरलमदजलनिवहं ॥
भ्रमरकलानेकसेवति कपोल। अभिमतफलदातारं।
कामेशं गणपति वंदे···॥ श्रीनागणेचीगोत्रदेव्या प्रसादात् ॥
श्री राठौड़ाँकी वंसावली लिख्यते ॥ तत्रादौ भगवानस्तुतिः ॥

पुस्तक संस्कृत शैली और भगवान की स्तुति से प्रारम्भ होती है किन्तु संस्कृत शब्दों के शुद्ध रूपों के स्थान पर कई तद्भव रूप यथा 'पुरख', 'गुरभ्यो' (गुरुभ्यो के स्थान पर) आदि विशेषतः द्रष्टव्य हैं।

आगे कुछ उदाहरण प्रशासनिक पत्राचार के दिए गए हैं।

उदाहरण सं० १

श्री रामं जी

श्री चत्रभुजराई जी

सिधि श्री महाराजा धि × (फटा भाग) × राजइन्द्र माहाराजी श्री सवाई ज्य संघ जी जोगी लीषतं राव राजा बुध संघ जी केनी मुजरो बंच्या अंठा का संमाचार श्री जी की क्रेंपा सु भला छ आपका संमाचार सदा आरोगी चाहीजे जी ××× म संतोष होई अप्रंची आप बङा छो····· मेहरबानगी फुरमावो छोती सु वीसेष फुरमावता रहजो जी अर उठ चोकी ममानग जी साह माहारा पचोली ×× सो मालम × × माहाराज कु वासत अरज करैसु तीकोष समानो राषोगा जी आर ऐ कामकाज क वासत अरज करैसु स्ही करी मानेगे उठा की तरफ सु माहाराजी कल शेस हरी लात करी न चीतो छु सुई बात म आप तफावत न जाणो म्हारावजी हम्हारी सरमुछ अर हु भी सीता वही बुदीजाँउ छु समा ×× (अस्पष्ट भाग) ×× भादवा वदी १४ सवत १७७९

उदाहरण सं० २

सिधि श्री महाराजाधिराज श्री महाराज श्री राजा सवाई पृथ्विसिंह जी

लिषतं श्री मुष्य प्रधान श्री माधोराव् वल्लाल के आसिर्वाद वाच्या आपरंच अैठा का समाचार श्री जी के ऋुपा सो भला छै राजरा समाचार सदा भला चाहिजे आपर श्री गंगा विष्णु वैद्य सरकार कै चाकर है सो रजा लैकर अपने डेरा जयनगर को गये हैं उनको दो अढाई वर्स हुवै अब ते आय् नहि उन कोई हाव होत जरूर है तो आपुन उनसे भलै तरे कहकर जलद भेजवा दिनो जयनगर न होईगे तो जाहा होयेग वहा सो वुलाय् कर भेज देना मीती जेठा वद ८ सवत १८२७

टिप्पणी—रजा = आज्ञा, तरे = तरह ।

उदाहरण सं० ३

॥ श्री ॥

श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राज राजेंद्र सवाई पृथ्वीसिंग जी जोग्य ऐते श्री पंडीत्त मुष्य प्रधान श्री माधव राव् वल्लाल के आसीर्वादिवंचनें ईहां का समाचार भला है उहां का स्माचार भला चाहीजै आपरंच श्री महाराणा जी के घर सें आपकें घर से कदीम सें जब तक हेत व्योहार चला आया है तीसें जादा तुम भी रषोंगे और केतायेंक मतलवी आप के पास आय कें मतलव की वात कहे तो हरगीज मानोगे नहीं जीन में राणा जी के वा आपके घराणे में कदीम सें व्योहार चला आया है वामे तफावतन आवें सो कीजो यामे म्हानें घणी षुसी है हमेंशा कागद स्माचार लिषत रहोंगें मीती कूँवार

सुदी ७ संवत १८२९ मु० रा० ग० उ०

उदाहरण सं० ४

॥ श्री ॥

श्री महाराजाधिराज श्री महराजा श्री राजा प्रतापसिंघ जी जोग्य लिषतं श्री पंडित मुष्य प्रधान श्री माधवराव नारायण के आशीर्वाद बंचनें इंहा के स्माचार भले हैं उंहा के समाचार भले चाहिजें अपरंच आपनें पाती भेजी सो पोंइची हकीकती लिषी सोजानीइंहा के स्माचार ० राम के वा लछिमण पंडत के कागद ना आयो दौलतीराम के लिषे सें जाहिर हुवे वाको जबाब मसारनिले के कहेतै जानियो मिति पोष बदि २ संवत १८४४ मुकाम पुना ।

अस्पष्ट भाग...............

उदाहरण संख्या १ में बूँदी से प्रेषित पत्र में कृपा को 'ऋपा' लिखा गया है किन्तु उदाहरण संख्या २ में ऋ के मराठी उच्चारण के अनुरूप 'कृपा' को 'ऋुपा' लिखा गया है किन्तु दोनों पत्रों में 'भला' तथा 'समाचार' शब्द प्रयुक्त हुए हैं यद्यपि

वर्तनी में अन्तर है जिसका कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के कारण नियमित शिक्षा का अभाव है जैसा कि अध्याय ६ में विस्तृत विवेचन किया गया है।

उदाहरण संख्या २ तथा ३ दोनों में ही मुख्य प्रधान पंडित माधव राव बल्लाल ने जयपुर के सवाई पृथ्वी सिंह को आशीर्वाद प्रेषित किया किन्तु दो ही वर्षों के अन्तराल में लिपिक के बदलने से पत्रों की वर्तनी में अन्तर हो गया है।

वर्तनी

उदाहरण संख्या २	उदाहरण संख्या ३
पृथ्विसिंह	पृथ्वीसिंग
माधोराव	माधव राव
आसिर्वाद	आसीर्वाद
वाच्या	वंचनें
समचार	स्माचार

दोनों पत्रों की वर्तनी में समरूपता 'मुख्य' शब्द को मुष्य लिखने से प्रकट होती है। उदाहरण संख्या ३ में 'पंडित' शब्द को 'पंडीत्त' लिखा गया है। इन उदाहरणों में 'आपुन', 'जीन में', 'हरगीज', 'घराणे' आदि शब्दों की वर्तनी से यह प्रकट होता है कि ह्रस्व 'इ' के स्थान पर दीर्घ का प्रयोग मराठी के प्रभाव के फलस्वरूप है और आपुन तथा घराणे शब्द वर्तमान काल में भी महाराष्ट्र में हिन्दी बोलचाल के प्रयुक्त रूप हैं।

उदाहरण संख्या ३ में कदीभ, जादा, मतलवी (मतलबी), मतलव (मतलब), हरगीज, तफावतन, हमेशा आदि शब्द अरबी/फारसी के हैं।

उदाहरण संख्या ३ (संवत् १८२९ का) तथा उदाहरण संख्या ४ (संवत् १८४५ का) की वर्तनी में निम्नलिखित अन्तर ध्यान देने योग्य हैं :

वर्तनी

उदाहरण संख्या ३	उदाहरण संख्या ४
पंडीत्त	पंडित
आसीर्वाद	आशीर्वाद
ईहां	इंहा
उहां	उंहा
चाहीजै	चाहिजें
आपरंच	अपरंच

वर्तनी में अन्तर है जिसका कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के कारण नियमित शिक्षा का अभाव है जैसा कि अध्याय ६ में विस्तृत विवेचन किया गया है।

उदाहरण संख्या २ तथा ३ दोनों में ही मुख्य प्रधान पंडित माधव राव बल्लाल ने जयपुर के सवाई पृथ्वी सिंह को आशीर्वाद प्रेषित किया किन्तु दो ही वर्षों के अन्तराल में लिपिक के बदलने से पत्रों की वर्तनी में अन्तर हो गया है।

वर्तनी

उदाहरण संख्या २	**उदाहरण संख्या ३**
पृथ्विसिंह	पृथ्वीसिंग
माधोराव	माधव राव
आसिर्वाद	आसीर्वाद
वाच्या	वंचनें
समचार	स्माचार

दोनों पत्रों की वर्तनी में समरूपता 'मुख्य' शब्द को मुष्य लिखने से प्रकट होती है। उदाहरण संख्या ३ में 'पंडित' शब्द को 'पंडीत्त' लिखा गया है। इन उदाहरणों में 'आपुन', 'जीन में', 'हरगीज', 'घराणे' आदि शब्दों की वर्तनी से यह प्रकट होता है कि ह्रस्व 'इ' के स्थान पर दीर्घ का प्रयोग मराठी के प्रभाव के फलस्वरूप है और आपुन तथा घराणे शब्द वर्तमान काल में भी महाराष्ट्र में हिन्दी बोलचाल के प्रयुक्त रूप हैं।

उदाहरण संख्या ३ में कदीम, जादा, मतलवी (मतलबी), मतलव (मतलब), हरगीज, तफावतन, हमेशा आदि शब्द अरबी/फारसी के हैं।

उदाहरण संख्या ३ (संवत् १८२९ का) तथा उदाहरण संख्या ४ (संवत् १८४५ का) की वर्तनी में निम्नलिखित अन्तर ध्यान देने योग्य हैं :

वर्तनी

उदाहरण संख्या ३	**उदाहरण संख्या ४**
पंडीत्त	पंडित
आसीर्वाद	आशीर्वाद
ईहां	इंहा
उहां	उंहा
चाहीजै	चाहिजें
आपरंच	अपरंच

दोनों पत्रों में 'समाचार' शब्द को 'स्माचार' लिखा गया है। कागद शब्द उदाहरण संख्या ३, ४ में इसी रूप में लिखा गया है, 'भला' शब्द प्राचीन है और सार्वत्रिक प्रयोग में आया है। अपरंच शब्द भी संस्कृत का शब्द है किन्तु रूप बदलता रहा है।

पूर्व-उद्धृत साहित्यिक तथा प्रशासनिक हिन्दी गद्य की कुछ मुख्य-मुख्य विशेषताओं का उल्लेख अग्रोल्लिखित तालिका में दिया गया है जिससे इनका पारस्परिक अन्तर तथा समन्वयात्मकता स्पष्ट हो जाए।

	साहित्यिक गद्य शैली	**प्रशासनिक गद्य शैली**
१.	मारवाड़ी तथा खड़ीबोली मिश्रित भाषा के साथ व्रजभाषा का प्रभाव।	मारवाड़ी की क्रियाओं का बाहुल्य किन्तु पत्रों के बीच-बीच में खड़ीबोली। कहीं-कहीं व्रजभाषा भी प्रयुक्त हुई।
२.	प्रारम्भ स्वस्ति वाचन के और वन्दना के अनेक वाक्य होते हैं।	पत्रों का सर्वत्र प्रारम्भ स्वस्ति वाचन से किन्तु पत्रों के शीर्ष पर सर्वत्र इष्ट-देवता का उल्लेख।
३.	विभिन्न नामों की वर्तनी में एक-रूपता का अभाव।	नामों की वर्तनी में एकरूपता का अभाव यथा माधव सिंह, माधो सिंग, पृथ्वि-सिंह, पृथ्वी सिंग आदि।
४.	मारवाड़ी के कारकों का प्रयोग।	मारवाड़ी के कारकों के प्रयोग के साथ यत्र-तत्र खड़ीबोली के कारकों का प्रयोग।
५.	भाषा में अधिक संस्कृत शब्द प्रयुक्त हुए हैं। अरबी/फारसी के कुछ शब्द समाविष्ट हुए।	भाषा में संस्कृत से तद्भव शब्दों के प्रयोग के साथ अरबी/फारसी शब्दों की अधिक संख्या जोकि मुसलमानी शासन के प्रभाव का द्योतक है।
६.	लालित्य का स्वाभाविक अस्तित्व जो कि साहित्य का एक मुख्य तत्त्व है।	लालित्य मिलता है किन्तु काम-चलाऊपन अधिक है जैसा कि प्रशास-निक गद्य में वांछनीय है।
७.	साहित्यिक गद्य के लेखक अधिक विद्वान् रहे हैं।	लेखक सामान्य भाषा ज्ञान रखते थे क्योंकि भाषा पर उनके अधिकार की पुष्टि नहीं हो पाती।

राव रायसिंह जी री वात

पछै संवत १७१५ औरंगजेब रे नै साहसुजा रे पटणा कनै गाव कुरड़ै लड़ाई हूई जिण में रायसिंघ जी बड़ी बहादुरी कीवी ।

राठौडाँ री वंसावली तथा पीढियाँ

टैसिटरी के अनुसार इसको संवत् शताब्दी १७०० के मध्य में लिखा गया। इसका प्रारम्भ इस प्रकार होता है—

श्री परम पुरख परमात्मने नमः ।। श्री गुरभ्यो नमः ।।

श्री गणेशाय नमः ।। अविरलमदजलनिवहं ।।

भ्रमरकलानेकसेवति कपोल । अभिमतफलदातारं ।

कामेशं गणपति वंदे···।। श्रीनागणेचीगोत्रदेव्या प्रसादात् ।।

श्री राठौड़ाँकी वंसावली लिख्यते ।। तत्रादौ भगवानस्तुतिः ।।

पुस्तक संस्कृत शैली और भगवान की स्तुति से प्रारम्भ होती है किन्तु संस्कृत शब्दों के शुद्ध रूपों के स्थान पर कई तद्भव रूप यथा 'पुरख', 'गुरभ्यो' (गुरुभ्यो के स्थान पर) आदि विशेषतः द्रष्टव्य हैं।

आगे कुछ उदाहरण प्रशासनिक पत्राचार के दिए गए हैं ।

उदाहरण सं० १

श्री रामं जी

श्री चत्रभुजराई जी

सिधि श्री महाराजा धि × (फटा भाग) × राजइन्द्र माहाराजी श्री सवाई ज्य संघ जी जोगी लीषतं राव राजा बुध संघ जी केनी मुजरो बंच्या अंठा का संमाचार श्री जी की क्रेपा सु भला छ आपका संमाचार सदा आरोगी चाहीजे जीं ×××म संतोष होई अप्रंची आप बङा छो······ मेहरबानगी फुरमावो छोती सु वीसेष फुरमावता रहजो जी अर उठ चोकी ममानग जी साह माहारा पचोली ×× सो मालम × × माहाराज कु वासत अरज करैसु तीकोष समानो राषोगा जी आर ऐ कामकाज क वासत अरज करैसु स्ही करी मानेगे उठा की तरफ सु माहाराजी कल शेस हरी लात करी न चीतो छु सुई बात म आप तफावत न जाणो म्हाराव़जी हम्हारी सरमुछ अर हु भी सीता वही बुदीजाँउ छु समा ×× (अस्पष्ट भाग) ×× भादवा वदी १४ सवत १७७९

उदाहरण सं० २

सिधि श्री महाराजाधिराज श्री महाराज श्री राजा सवाई पृथ्विसिंह जी

लिषतं श्री मुष्य प्रधान श्री माधोराव् वल्लाल के आसिर्वाद वाच्या आपरंच अैठा का समाचार श्री जी के कृपा सो भला छै राजरा समाचार सदा भला चाहिजे आपर श्री गंगा विष्णु वैद्य सरकार कै चाकर है सो रजा लैकर अपने डेरा जयनगर को गये हैं उनको दो अढाई वर्स हुवै अब ते आय् नहि उन कोई हाव होत जरूर है तो आपुन उनसे भलै तरे कहकर जलद भेजवा दिनो जयनगर न होईगे तो जाहा होयेग वहा सो वुलाय् कर भेज देना मीती जेठा वद ८ सवत १८२७

टिप्पणी—रजा=आज्ञा, तरे=तरह।

उदाहरण सं० ३

॥ श्री ॥

श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राज राजेंद्र सवाई पृथ्वीसिंग जी जोग्य ऐते श्री पंडीत्त मुष्य प्रधान श्री माधव राव् वल्लाल के आसीर्वादवंचनें ईहां का समाचार भला है उहां का स्माचार भला चाहीजै आपरंच श्री महांराणा जी के घर सें आपकें घर से कदीम सें जब तक हेत व्योहार चला आया है तीसें जादा तुम भी रषोंगे और केतायेंक मतलवी आप के पास आय कें मतलव की बात कहे तो हरगीज मानोगे नहीं जीन में राणा जी के वा आपके घराणे में कदीम सें व्योहार चला आया है वामे तफावतन आवें सो कीजो यामे म्हानें घणी षुसी है हमेंशा कागद स्माचार लिषत रहोंगें मीती कूँवार

सुदी ७ संवत १८२९ मु० रा० ग० उ०

उदाहरण सं० ४

॥ श्री ॥

श्री महाराजाधिराज श्री महराजा श्री राजा प्रतापसिंघ जी जोग्य लिषतं श्री पंडित मुष्य प्रधान श्री माधवराव नारायण के आशीर्वाद बंचनें इंहा के स्माचार भले हैं उंहा के समाचार भले चाहिजें अपरंच आपनें पाती भेजी सो पोंइची हकीकती लिषी सोजानीइंहा के स्माचार ० राम के वा लछिमण पंडत के कागद ना आयो दौलतीराम के लिषे सें जाहिर हुवे वाको जबाब मसारनिले के कहेतै जानियो मिति पोष बदि २ संवत १८४४ मुकाम पुना।

अस्पष्ट भाग...............

उदाहरण संख्या १ में बूँदी से प्रेषित पत्र में कृपा को 'क्रपा' लिखा गया है किन्तु उदाहरण संख्या २ में ऋ के मराठी उच्चारण के अनुरूप 'कृपा' को 'क्रुपा' लिखा गया है किन्तु दोनों पत्रों में 'भला' तथा 'समाचार' शब्द प्रयुक्त हुए हैं यद्यपि

वर्तनी में अन्तर है जिसका कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के कारण नियमित शिक्षा का अभाव है जैसा कि अध्याय ६ में विस्तृत विवेचन किया गया है।

उदाहरण संख्या २ तथा ३ दोनों में ही मुख्य प्रधान पंडित माधव राव बल्लाल ने जयपुर के सवाई पृथ्वी सिंह को आशीर्वाद प्रेषित किया किन्तु दो ही वर्षों के अन्तराल में लिपिक के बदलने से पत्रों की वर्तनी में अन्तर हो गया है।

वर्तनी

उदाहरण संख्या २	**उदाहरण संख्या ३**
पृथ्विसिह	पृथ्वीसिंग
माधोराव	माधव राव
आसिर्वाद	आसीर्वाद
वाच्या	वंचनें
समचार	स्माचार

दोनों पत्रों की वर्तनी में समरूपता 'मुख्य' शब्द को मुष्य लिखने से प्रकट होती है। उदाहरण संख्या ३ में 'पंडित' शब्द को 'पंडीत्त' लिखा गया है। इन उदाहरणों में 'आपुन', 'जीन में', 'हरगीज', 'घराणे' आदि शब्दों की वर्तनी से यह प्रकट होता है कि ह्रस्व 'इ' के स्थान पर दीर्घ का प्रयोग मराठी के प्रभाव के फलस्वरूप है और आपुन तथा घराणे शब्द वर्तमान काल में भी महाराष्ट्र में हिन्दी बोलचाल के प्रयुक्त रूप हैं।

उदाहरण संख्या ३ में कदीम, जादा, मतलवी (मतलबी), मतलव (मतलब), हरगीज, तफावतन, हमेशा आदि शब्द अरबी/फारसी के हैं।

उदाहरण संख्या ३ (संवत् १८२९ का) तथा उदाहरण संख्या ४ (संवत् १८४५ का) की वर्तनी में निम्नलिखित अन्तर ध्यान देने योग्य हैं :

वर्तनी

उदाहरण संख्या ३	**उदाहरण संख्या ४**
पंडीत्त	पंडित
आसीर्वाद	आशीर्वाद
ईहां	इंहा
उहां	उंहा
चाहीजै	चाहिजें
आपरंच	अपरंच

दोनों पत्रों में 'समाचार' शब्द को 'स्माचार' लिखा गया है। कागद शब्द उदाहरण संख्या ३, ४ में इसी रूप में लिखा गया है, 'भला' शब्द प्राचीन है और सार्वत्रिक प्रयोग में आया है। अपरंच शब्द भी संस्कृत का शब्द है किन्तु रूप बदलता रहा है।

पूर्व-उद्धृत साहित्यिक तथा प्रशासनिक हिन्दी गद्य की कुछ मुख्य-मुख्य विशेषताओं का उल्लेख अग्रोल्लिखित तालिका में दिया गया है जिससे इनका पारस्परिक अन्तर तथा समन्वयात्मकता स्पष्ट हो जाए।

	साहित्यिक गद्य शैली	**प्रशासनिक गद्य शैली**
१.	मारवाड़ी तथा खड़ीबोली मिश्रित भाषा के साथ व्रजभाषा का प्रभाव।	मारवाड़ी की क्रियाओं का बाहुल्य किन्तु पत्रों के बीच-बीच में खड़ी-बोली। कहीं-कहीं व्रजभाषा भी प्रयुक्त हुई।
२.	प्रारम्भ स्वस्ति वाचन के और वन्दना के अनेक वाक्य होते हैं।	पत्रों का सर्वत्र प्रारम्भ स्वस्ति वाचन से किन्तु पत्रों के शीर्ष पर सर्वत्र इष्ट-देवता का उल्लेख।
३.	विभिन्न नामों की वर्तनी में एक-रूपता का अभाव।	नामों की वर्तनी में एकरूपता का अभाव यथा माधव सिंह, माधो सिंग, पृथ्वि-सिंह, पृथ्वी सिंग आदि।
४.	मारवाड़ी के कारकों का प्रयोग।	मारवाड़ी के कारकों के प्रयोग के साथ यत्र-तत्र खड़ीबोली के कारकों का प्रयोग।
५.	भाषा में अधिक संस्कृत शब्द प्रयुक्त हुए हैं। अरबी/फारसी के कुछ शब्द समाविष्ट हुए।	भाषा में संस्कृत से तद्भव शब्दों के प्रयोग के साथ अरबी/फारसी शब्दों की अधिक संख्या जोकि मुसलमानी शासन के प्रभाव का द्योतक है।
६.	लालित्य का स्वाभाविक अस्तित्व जो कि साहित्य का एक मुख्य तत्त्व है।	लालित्य मिलता है किन्तु काम-चलाऊपन अधिक है जैसा कि प्रशास-निक गद्य में वांछनीय है।
७.	साहित्यिक गद्य के लेखक अधिक विद्वान् रहे हैं।	लेखक सामान्य भाषा ज्ञान रखते थे क्योंकि भाषा पर उनके अधिकार की पुष्टि नहीं हो पाती।

वर्तनी में अन्तर है जिसका कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के कारण नियमित शिक्षा का अभाव है जैसा कि अध्याय ६ में विस्तृत विवेचन किया गया है।

उदाहरण संख्या २ तथा ३ दोनों में ही मुख्य प्रधान पंडित माधव राव बल्लाल ने जयपुर के सवाई पृथ्वी सिंह को आशीर्वाद प्रेषित किया किन्तु दो ही वर्षों के अन्तराल में लिपिक के बदलने से पत्रों की वर्तनी में अन्तर हो गया है।

वर्तनी

उदाहरण संख्या २	**उदाहरण संख्या ३**
पृथ्विसिंह	पृथ्वीसिंग
माधोराव	माधव राव
आसिर्वाद	आसीर्वाद
वाच्या	वंचनें
समचार	स्माचार

दोनों पत्रों की वर्तनी में समरूपता 'मुख्य' शब्द को मुष्य लिखने से प्रकट होती है। उदाहरण संख्या ३ में 'पंडित' शब्द को 'पंडीत्त' लिखा गया है। इन उदाहरणों में 'आपुन', 'जीन में', 'हरगीज', 'घराणे' आदि शब्दों की वर्तनी से यह प्रकट होता है कि ह्रस्व 'इ' के स्थान पर दीर्घ का प्रयोग मराठी के प्रभाव के फलस्वरूप है और आपुन तथा घराणे शब्द वर्तमान काल में भी महाराष्ट्र में हिन्दी बोलचाल के प्रयुक्त रूप हैं।

उदाहरण संख्या ३ में कदीम, जादा, मतलवी (मतलबी), मतलव (मतलब), हरगीज, तफावतन, हमेशा आदि शब्द अरबी/फारसी के हैं।

उदाहरण संख्या ३ (संवत् १८२९ का) तथा उदाहरण संख्या ४ (संवत् १८४५ का) की वर्तनी में निम्नलिखित अन्तर ध्यान देने योग्य हैं :

वर्तनी

उदाहरण संख्या ३	**उदाहरण संख्या ४**
पंडीत्त	पंडित
आसीर्वाद	आशीर्वाद
ईहां	इंहा
उहां	उंहा
चाहीजै	चाहिजें
आपरंच	अपरंच

दोनों पत्रों में 'समाचार' शब्द को 'स्माचार' लिखा गया है। कागद शब्द उदाहरण संख्या ३, ४ में इसी रूप में लिखा गया है, 'भला' शब्द प्राचीन है और सार्वत्रिक प्रयोग में आया है। अपरंच शब्द भी संस्कृत का शब्द है किन्तु रूप बदलता रहा है।

पूर्व-उद्धृत साहित्यिक तथा प्रशासनिक हिन्दी गद्य की कुछ मुख्य-मुख्य विशेषताओं का उल्लेख अग्रोल्लिखित तालिका में दिया गया है जिससे इनका पारस्परिक अन्तर तथा समन्वयात्मकता स्पष्ट हो जाए।

	साहित्यिक गद्य शैली	प्रशासनिक गद्य शैली
१.	मारवाड़ी तथा खड़ीबोली मिश्रित भाषा के साथ व्रजभाषा का प्रभाव।	मारवाड़ी की क्रियाओं का बाहुल्य किन्तु पत्रों के बीच-बीच में खड़ी-बोली। कहीं-कहीं व्रजभाषा भी प्रयुक्त हुई।
२.	प्रारम्भ स्वस्ति वाचन के और वन्दना के अनेक वाक्य होते हैं।	पत्रों का सर्वत्र प्रारम्भ स्वस्ति वाचन से किन्तु पत्रों के शीर्ष पर सर्वत्र इष्ट-देवता का उल्लेख।
३.	विभिन्न नामों की वर्तनी में एक-रूपता का अभाव।	नामों की वर्तनी में एकरूपता का अभाव यथा माधव सिंह, माधो सिंग, पृथ्वि-सिंह, पृथ्वी सिंग आदि।
४.	मारवाड़ी के कारकों का प्रयोग।	मारवाड़ी के कारकों के प्रयोग के साथ यत्र-तत्र खड़ीबोली के कारकों का प्रयोग।
५.	भाषा में अधिक संस्कृत शब्द प्रयुक्त हुए हैं। अरबी/फारसी के कुछ शब्द समाविष्ट हुए।	भाषा में संस्कृत से तद्भव शब्दों के प्रयोग के साथ अरबी/फारसी शब्दों की अधिक संख्या जोकि मुसलमानी शासन के प्रभाव का द्योतक है।
६.	लालित्य का स्वाभाविक अस्तित्व जो कि साहित्य का एक मुख्य तत्त्व है।	लालित्य मिलता है किन्तु काम-चलाऊपन अधिक है जैसा कि प्रशास-निक गद्य में वांछनीय है।
७.	साहित्यिक गद्य के लेखक अधिक विद्वान् रहे हैं।	लेखक सामान्य भाषा ज्ञान रखते थे क्योंकि भाषा पर उनके अधिकार की पुष्टि नहीं हो पाती।

	साहित्यिक गद्य शैली	प्रशासनिक गद्य शैली
८.	वर्तनी में अशुद्धियाँ मिलती हैं किन्तु साहित्यिक साधना के प्रमाण मिलते हैं।	वर्तनी में एक ही पत्र में एक ही शब्द अलग-अलग ढंग से लिखा गया मिलता है जो कि नियमित शिक्षा के अभाव का परिलक्षक है।
९.	संस्कृत का ज्ञान कम हो जाने का पता चलता है।	संस्कृत के ज्ञान के अभाव की पूर्णतः पुष्टि होती है।

रोठोड़ाँ री वंसावली तथा पीढ़ियाँ ने फुटकर ख्यात री वार्ता

टैसिटरी ने उपर्युक्त पांडुलिपि को दो भागों में बाँटा है जिसमें बादवाले भाग को उन्होंने संवत् १७७४ वि० में मथेना जीवनदास द्वारा सम्पूर्त माना है। पहले भाग को अपेक्षाकृत अधिक पुरातन माना है।

भोगल पुराण : टैसिटरी ने उसके वर्णन में लिखा है—

A short treatise on cosmography and geography in Hindi beginning—

आकास से वायुत्पन्ना : वायु से तेज उत्पन्ना : तेज से ब्रह्मांड उत्पन्ना : ब्रह्म ते पाणी उत्पन्ना : पाणी से अंड उत्पन्ना : अंड फूट कुट का भऐ : ले जल मध्ये विष्णुं रहे है—

स्पष्टतः संस्कृत मिश्रित हिन्दी गद्य के उदाहरण सन् १७१७ में मिलते हैं।

सालोतर or more properly **शालिहोत्र** : टैसिटरी के अनुसार

An abridgement of the well known veterinary treatise in a miniture of Marwari and Hindi. It begins—

प्रथम घोडा संपक्ष हुता : आकास दिसा गमन करता : पछे सालिहोत्र रिख प्रबोध्या : अस्वां की पांख काटी ज्युं वाहन जोगि होई·········etc.।

उपर्युक्त गद्यांश में 'आकास दिसा गमन करता:' अर्थात् आकाश दिशा गमन करता, पीछे शालिहोत्र ऋषि प्रबोध्या : अश्व की पंख काटी आदि अधिक शुद्ध रूप होता। यह पौराणिक तथा काल्पनिक रूप का नमूना है।

पीढियाँ फुटकर

टैसिटरी के अनुसार : The MS is undated but its age can be approximately fixed towards the middle of the samvat century 1700.

अर्थात् संवत् की १७वीं शताब्दी के मध्य अर्थात् सन् १६०० के आसपास माना है।

सीसोदियाँ री पिरियावली

रांणौ भभुणसी जिण था राणा हुवा पैहली रावल कावता पछै भभुणिसी था रांणा कहांणा

२. श्री गोपालजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई प्रतापसिंह जी देव जोग्य लिषाइतँ महाराज राजा जी श्री मनिकपालजी बहादुर यदकुलचंद्र भाल कौ मुजरा बँच्याला के समाचार श्री·········जी कृपा सौ भले है आपुके सुभ समाचार सदैव भले चाहिजे तौपरम आँनंद होइ अप्रंचि दस घोड़ा रजपूत है सो दरबार के चाकर है कागद आयो समाचार मेहेरवानिगी जानी वहाँ के समाचार सब दुलीचंद नैं बयान करै ताको ह्याते सव तरह हुकम आपकौ है अवला की अरज हकीकति होइगी मुसारन अलेह जारह करेगौं कागद समाचार हमेसाँ महैरबानिगी राषि लिषाऐं रँहीयेगौं मिती वैशाष सुदी १३ सं १८५२

टिप्पणी : कागज पर सुनहरी ठप्पे पाए गए।
व=ब, व़=व

३. मुद्रा

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा सवाई जय़सिंह जी देव़ जोग्य़ लिषाइतं महाराज राजाजी श्री हरिवकसपालजी बहादुर य़दकुलचंद्र भाल को मुजरा बँच्याँ ह्याँ के समाचार श्री·········जी की कृपा सौ भले है आपके सुभ समाचार सदैव भले चाहिजै तो परम आँनद होइि अप्रंचि दस घोड़ा रजपूत है सो दरबार के चाकर है और ब्यौरोराव़ल बैरीसाँ कटा जी मालूम करैगे ह्याँ सर्वप्रकार हुकम व्यौहार अंज्ञाप्रमान है कोइी बात करि तफाव़त नाजानि कागद समांचार लिषाव़त रहौगे मिती फागुन सुदी ३ संवत १८८०

टिप्पणी : कागज पर सुनहरी ठप्पे पाए गए।
इि=इ व़=व इी=ई

४. श्री

सिधि श्रीषव़ास रोडाराम जी ने जोग्य़ राजे श्रीराव़ जगंनाथ राम वहादुर राजे श्री राव़ लछिमन राव़ अनंत वहादुर के वाच्य अठै का समाचार भला छै वठै का भला चाहिजै अपरंच अठे सुँ राज श्री पंडित गंगाधर बलवंत जी नै भेजा है वो लाला परनेचंद जी केसौ माकी जुबानी समाचार जानौगे मीति चैत्र सुदी ५ समत १८५६

५. ।। श्रीद्वरिकेशो जयत ।।

मुद्रा

।। स्वस्ति श्री ब्रजभूषण जी गोस्वामिनां सर्व—ओपमा योग्यपरम धार्मिकेषु श्री खवासजी श्री आशाराम जी सु भाशिषः ईंहा कुशल है आपके कुशल वांछत है। अपरंच डोलोत्सव को महाप्रसादत्त प्रसादि उपरण पढाए हैं सो आप लेहवगें इहाँ आपको···श्रुभोदय वाँ वांछत हैं यह तो आपको घर है इहाँ विषे जेसो स्नेह चित राखत हो जैसो ही राखोगे कुशलपत्र लिखोगे मिती चैत्र वदी १० सं० १८५८ के भाई पुरुषोतम जीत वि० लालजी गिरिधर लालजी के आशा···

अगली ओर—श्री खवास जी श्री आशाराम जी योग्य पत्रष्णा सवाई जयपुर

ऊपर वाली मुद्रा का रूप

श्री द्वारिकानाथ
चरण शरण ब्रज
भूषण क्य मुद्रिका

टिप्पणी : ब्रजभाषा का सुन्दर रूप दृष्टिगोचर होता है।

६. श्री रांमजी तारीख १० अगसत १८४८ इी (ई०)···

राजेश्री कपताँन वलीयम ईदरसेन साहेब बहादुर जी : गांम मणादर थी सपङासी रुपा की अरजी श्री हजुर का तारीक ७ अगसत का लीषा मेरे पास पुगा ईस मजबुन का के तुम कु हजुर हुकम दीआ था आगर हरजीवाला मवेसी मणा-दररी सीम में नहीं लावे तो जागङा की जमीन में हल षडण में कु······कराअे देना ओर मवेस हरजीवाल की अगर मणादरवाल चराई लेकर सरणो देवे तो नुण (उन) की षुसी (खुशी) और नुण कु अकतीआर (अख्तियार) है सो जगङा नी मत कीय जमीन अटकाई हे जण में कतरा ईक षत षङा नु है हमेसांका षङा नु षेतराँ (खेतों) में मणादरवलांरा ह षङता था सो बामे कुपकर अि दीआ हे ओर हरजी वालांरी मवेसी मणादररी सीम में लाणमे कु प नही करते है ओर परवीना (परवाना) हजुर का सो बदर बलदेव ने दीबाअे (दिवाय) दीआ हे सो बलदेव ने अरजी जोदपुर कु लषी हे ओर मणादर वालाँ कु सराई लेकर हरजी की मवेसी हद भीतर सरणो देणी मनजुर (मंजूर) नही हे कीस वासते के सरई लेकर सरणो दीआ जद (यदि) हमांरी हद भीतर दावा लगाओ के हमांरा हल बंद करते हे ओर हरजीवाला असवार पे हल जजर बुले ने बवीटुङान पर आते हे ओर पींसांणवारो थाँणे मेले आवे हे फकत तारीख ७ अगसत की संवत १८४८ ईसवी सवत १९०५ सरांमण सुद १० वर बुधवार

बीकानेर रे राठोड़ाँ रो ख्यात सिण्ढायच दयालदास कृत

यह ख्यात टैसिटरी के अनुसार बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह के शासनारूढ होने के पश्चात् अर्थात् सन् १८५१ ई० के पश्चात् उनकी ओर से चारण सिण्ढायच दयालदास द्वारा लिखवाई गई।

इसका प्रारम्भ भी पुरातन पद्धति के अनुसार ही

"श्री गणेशाय नमः श्री करनीजी सहाय श्री सरस्वत्यै नमः" वाक्य से हुआ है। यह गणेश जी के स्मरण की परम्परा पुरातन है। किन्तु इस ख्यात का गद्य बहुत निखरे रूप में मिलता है। पूर्व-कथनानुसार ऐतिहासिक, सामाजिक और प्रशासनिक वर्णन अपने मिश्रित रूप में प्रकट होते हैं :

राव सीहा ने विषा करवाया। बांवन वेद कर मुगलौं से फतै पाया। देस कनवज रा वसण दीना नहीं। पीछै पातसाह राव सीहै कुं दिली कदमाँ बुलाया। कनवजा का मुनसब अनायत कीया। जिस वषत कनवज लारै थोड़ा सा मुलक रै गया। पैदास लाष चौईश २४ री रही···

आगे—अेकदा प्रस्ताव राव जोधौ जी दरबार कीयां विराजै है। नैसारा भाई वां अमराव वाँ कंवर हाजर है। जिसे कंवर श्री वीकौजी भीतर सूं आया। अरु राव जी सूं मुजरौ कर काका कांधल जी रै आगै विराजीया।

इस प्रकार गद्य की भाषा मिश्रित रही अर्थात् संस्कृत, देशी, खड़ीबोली और व्रजभाषा के शब्दों के साथ अरबी/फ़ारसी के 'हाजर', 'मुजरो' जैसे शब्द घुलमिल गए। वर्णन में सामाजिकता जैसे 'काका कांधल जी रै आगै विराजीया' का समावेश, प्रशासनिकता जैसे—'अरु राव जी सूं मुजरौ कर' आदि के साथ सांस्कृतिकता भी समन्वित हुई।

फुटकर वाताँ रौ संग्रह

टैसिटरी के अनुसार यह संग्रह आंशिक रूप से संवत् १८४५ में तथा अंशतः संवत् १८९२ में लिखा गया।

(a) **साई कर रहा तै री वात :** दीली सहर मै अेक फकीर चाँदणी चौक में रहे···

(b) **खुदाय बावली री वात :** दीली सहर मै मुलां अवदला रहै। अर दुसरै महल में सुपाई अलेदाद रहे···

(c) **दीनमान रै फल री वात :** गुजरात देस ते मे पाटण ते में सेठ धरमदास नावै साहा रहै लषेसरी···

उपर्युक्त वातों की भाषा से यह स्पष्ट है कि सन् १७८८ ई० के पूर्व हिन्दी गद्य और खड़ीबोली गद्य सुष्ठु रूप में विद्यमान था और उसका व्यवस्थित रूप

हमें सन् १७८८ में दृष्टिगोचर होता है किन्तु भाषा राजस्थानी—हिन्दी, व्रजभाषा और खड़ीबोली—हिन्दी मिले-जुले रूप में प्रयुक्त होती रही। इस प्रकार पूर्वोल्लिखित पारम्परिक गद्य और प्रशासनिक गद्य के सम्मिश्रित उद्धरणों से यह विनिश्चय करनाउ चित ही होगा कि हिन्दी गद्य और विशेषत: खड़ीबोली गद्य का प्रादुर्भाव सन् १७०० ई० के पूर्व हुआ और सन् १८०० ई० से लगभग १२५/१५० वर्ष पूर्व तो इसका प्रचलन सहजता से हुआ माना जा सकता है।

यह कहना समीचीन होगा कि तत्कालीन साहित्यिक गद्य और प्रशासनिक गद्य के बीच में कोई विभाजक रेखा खींचना सम्भव नहीं है क्योंकि जो भी ख्यात, वात, विगत, खरीते, याददास्तियाँ आदि उपलब्ध हैं उनमें पारिवारिक, सामाजिक और प्रशासनिक विवरणों का सुखद सम्मिश्रण मिलता है, इसलिए भाषा भी पंचमेल है। मारवाड़ी, व्रजभाषा और खड़ीबोली मिली-जुली हैं। लेखक / लिपिक सामान्यत: विद्वान् नहीं होते थे।

(ख) प्रशासनिक हिन्दी गद्य की तुलनात्मक स्थिति

पत्राचार में, एक सुव्यवस्थित पद्धति का प्रचलन दृष्टिगोचर होता है जिसकी पुष्टि अनेक नमूनों से होती है। पत्रों का प्रारम्भ अपने इष्ट देवता या कुल-देवता का नाम लिखकर करने के साथ 'स्वस्ति श्री' या 'सिद्धि श्री सर्वोपमा' से वाक्य का प्रारम्भ, एक ऐसे सूत्र का बोध कराता है जिसने हमारी राष्ट्रीय परम्पराओं को पुष्ट किया है।

यह सूत्र हमें संस्कृत भाषा के प्राचीन ताम्रपत्रों तथा दानपत्रों में मिलता है। उदयपुर के आहाड़ (आघाटपुर) नामक स्थान से गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव (दूसरे, भोलाभीम) का (आषाढ़ादि) वि० सं० १२६३ श्रवण सुदि २ (ई० स० १२०६, ता० ६ जुलाई) रविवार के दानपत्र में मूलराज से लेकर भीमदेव दूसरे तक की वंशावली उद्धृत करने के पश्चात् अभिनव सिद्धराज श्री भीमदेव ने अपने अधीन के मेदपाट (मेवाड़) मण्डल (जिले) के आहाड़ में एक अरहट (नाम अस्पष्ट) उससे सम्बन्ध रखनेवाली भूमि तथा कड़वा के अधिकार वाला क्षेत्र आदि दान किए।

ॐ स्वस्ति···समस्तराजावलीविराजितपरमभट्टारक महाराजाधिराजपरमेश्वर श्रीमूलराजदेवपादानुध्यात······परम भट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वराभिनवसिद्धराज श्रीमद्भीमदेव: स्वभुज्यमानमेदपाटमंडलांत: पातनि: समस्त राजपुरुषान्····· वो (बो) धमत्यस्तुव: संविदितं यथा।······नवलीग्रामवास्त० कृष्णात्रिगोत्रे (त्रेयगोत्राय) रायकवालज्ञाती० व्रा (ब्रा०) वीहडसुतरविदेवाय शासने नोदकपूर्व्वमस्माभि: प्रदत:।

टिप्पणी·· ···भाग छोड़ दिया है।

उदयपुर के प्रसिद्ध तालाब जयसमुद्र (ढेबर) के बाँध के निकटवर्ती वीरपुर (गातोड़) गाँव से वि० सं० १२४२ कार्तिक सुदी १५ (ई० सं० ११८५ ता० ६ नवम्बर) रविवार का उसी भीमदेव (दूसरे) के सामंत महाराजाधिराज अमृत-पाल के एक दानपत्र में लिखा है कि उस (भीमदेव) के कृपापात्र सामंत एवं वागड़ के वटपद्रक (वड़ौदा) मंडल (ज़िले) पर राज्य करनेवाले महाराजाधिराज गुहिलदत्त (गुहिल) वंशी विजयपाल के पुत्र महाराजाधिराज अमृतपाल देव ने भारद्वाज गोत्र के रायकवाल ब्राह्मण ठा० मदना को, जो यज्ञकर्त्ता था, छप्पन प्रदेश के गातोड़ गाँव में ल्हिसाड़िया नाम का एक अरहट और दो हल की भूमि दान की।

दानपत्र—ॐ॥ स्वस्ति श्रीनृपविक्रमकालातीतसंवत्सर द्वादशशतेषु द्विचत्वारिंशदधिकेषु अंकतोऽपि संवत १२४२ वर्षे कार्तिकसुदि १५ खावघेहश्रीमदणहिलपाटकाधिष्ठितपरमेश्वरपरमभट्टारकश्रीउमापतिवरलब्ध प्रसाद राज्यलक्ष्मी स्वयंवर-प्रौढप्रतापश्री चौलुक्य कुलोद्यानमार्त्तंडअभिनवसिद्धराजश्रीमहाराजाधिराज-श्रीमद्भीमदेवीय कल्याणविजयराज्ये·········शासनपूर्व्वका उदकेनप्रदत्ता······ स्वहस्तो यं महाराजाधिराजश्री अमृतपालदेवस्य॥

स्वहस्तोयं महाकुमारश्रीसोमेश्वरदेवस्य

टिप्पणी·········भाग छोड़ दिया है।

उपर्युक्त दोनों उद्धरणों से संस्कृत की प्रशासनिक-गद्य-भाषा के दर्शन होते हैं।

डूंगरपुर राज्य के डेसां गाँव की बावड़ी का एक शिलालेख अजमेर के राज-पूताना संग्रहालय में है। उसमें लिखा है कि गुहिलोतवंशी राजा भचुंड के पौत्र और डूंगरसिंह के पुत्र रावल कर्मसिंह की भार्या माणकदे (बी) ने वि० सं० १४५३ शके १३१८ कार्तिक (चै: मार्गशीर्ष) वदि ७ सोमवार (ई० स० १३९६ ता० २३ अक्टूबर) को यह वापी बनवाई।

शिलालेख—स्वस्ति श्रीनृपविक्रमसमयातीत संवत् १४५३ वर्षे शाके १३१८ प्रवर्त्तमाने कार्तिकमासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां तिथौ सोमवासरे रोहिणी—(पुष्य) नक्षत्रे ग (गु) हिल (लो) तवंशोद्भवभूजचुंडसुतडूंगरसिंहत (स्त) त्सुतराउलकर्म-सिंहभार्याबाईश्रीमाणिकदे तया इयं वापी कारापिता।

इस उदाहरण में भी 'स्वस्ति श्री' मंगल सूचक वाक्यांश से ही आगे की सूचना का प्रारम्भ होता है। स्पष्ट है कि उत्तरवर्ती प्रशासनिक हिन्दी पत्राचार में इसी वाक्यांश से पत्रों का श्रीगणेश होता रहा। विश्व-कल्याण की भावना हमारी संस्कृति का आधार है। इसमें मानवहित के साथ-साथ पशु-पक्षियों आदि प्राणिमात्र सबके कल्याण की भावना अन्तर्निहित है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःख भागभवेत्' हमारी संस्कृति का मूल तत्त्व है। अतः जिसको पत्र सम्बोधित है उसके कल्याण की कामना तो अवश्य की जाएगी। यही

कल्याण-भावना 'स्वस्ति श्री' द्वारा अभिव्यक्त हुई है। हमारी भावना केवल 'जीवेम शरदः शतम्' तक ही सीमित नहीं अपितु सर्वजन कल्याण की भावना का पत्रों में भी संचरण हुआ है। यह परम्परा संस्कृत से आई है, अतएव हम एक-दूसरे को प्रणाम करते समय ईश्वर-स्मरण करते हैं अर्थात् 'राम-राम', 'जै रामजी', 'राधे-राधे', 'जय श्रीहरि' आदि वाक्यों द्वारा एक-दूसरे को अभिवादन की परम्परा चलती आई है।

इसी के कारण हिन्दीभाषी क्षेत्र में अब भी पत्र-लेखन की शुद्ध देशी पद्धति में पत्रों का प्रारम्भ 'स्वस्ति श्री······से······की राम-राम बंचना' आदि के प्रयोग से होता है। यह विचारणीय है कि पश्चिम के अनुकरण से हम इस शैली का परित्याग कर रहे हैं।

आधुनिक काल में प्रशासन में प्रवहमानता लाने के लिए कार्यशालाएँ चलाने का प्रचलन है। किन्तु तीन सौ वर्ष पूर्व प्रशासनिक पत्राचार में एक पद्धति किस प्रकार चली और चलती रही यह विचारणीय है। छोटे, बड़े, कम महत्त्व के, अधिक महत्त्व के पत्रों में प्रेषिती के नामोल्लेख के पश्चात् 'योग्य' लिखना उसी प्रणाली का द्योतक है जैसे आजकल 'सेवा में' लिखकर पत्रारम्भ किया जाता है। 'अपरंच' अर्थात् 'और यह' का लगभग सभी पत्रों में प्रयोग एक सुनिश्चित परिपाटी का ही बोध कराता है।

'अठारा समाचार भला छै राजरा सदा भला चाहिजै' या 'अैठाका समाचार भला छै आपका सदा आरोग्य चाहिजे' या 'अठाका समाचार श्री जी रै प्रताप कर भला छै महाराज का सदा भला चाहीजे', या 'अठाका समाचार श्री······की कृपा सूं भला छै आपका सुष समाचार सदा आरोग्य चाहिजे' आदि वाक्य पत्राचार की निश्चित पद्धति के परिचायक हैं।

'कैनी जुहार बंच्या', 'मुजरो बंच्या', 'केन्य मुजरो बंचज्यौ', 'जुहार वाचजो', 'मुजरा बंचनौ' आदि का बहुलता से प्रयोग होता रहा है। जहाँ तक पत्राचार की भाषा का प्रश्न है, वह तो हिन्दी की समग्रता तथा सुलभता की निधि है। अधिकांश पत्रों में हिन्दी की बोलियों/उपभाषाओं के प्रयोग के साथ-साथ बीच-बीच में खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग मिलता रहा है। अनेक पत्र तो खड़ीबोली रूप में ही लिखे गए हैं जिनके मध्य हिन्दी की बोलियों का स्वाभाविक सम्मिश्रण हुआ है। स्वाभाविक इसलिए कि उन दिनों भाषा राजनीति और स्वार्थपरता का विषय नहीं थी। प्रशासनिक पत्राचार में साहित्य तरंगित हुआ है, किन्तु साहित्यकारों का ध्यान उस बहुमूल्य निधि की ओर आकृष्ट न हो सका।

शब्दावली/पदावली तो लगभग एक जैसी ही रही है।

सिद्धि श्री, सीधश्री, सिधिश्री, सर्वोपमा, सर्बोपमा, सर्ब उपमा, विराजमान, बीराजमान, महाराजाधिराज, महाराज धिराज, मुजरा, मुजरो, अपरंच, अपरचि,

अपरंचि, अवधारजो, कागद, समाचार, समंचार, स्माचार, आरोग्य, आरोग, बंचज्यो, बंच्या, छै, छो, जोग्य, योग्य, राजराजेश्वर, राज, भला, हेत, हित, प्यार आदि शब्दों से सब पत्रों की कलेवर-रचना हुई है। इन कुछ शब्दों से सारे पत्रों का ताना-बना बुना गया है। यह उल्लेखनीय है कि मुद्रणारम्भ होने तक लेखन-शैली की एकरूपता नहीं थी किन्तु कालान्तर में इसकी आवश्यकता पड़ी। प्रसार के अधिक साधन सुलभ न होने के कारण स्थानिकता की प्रधानता थी। इंग्लैण्ड में भी प्रारम्भ से एक शब्द की १२-१२ वर्तनियाँ थीं।

पत्रों की भाषा के वैज्ञानिक विश्लेषण से अनेक तथ्य उद्घाटित होते हैं—

मेवाड़ के महाराणा अमरसिंह (दूसरा) के गद्दी पर बैठते समय बांसवाड़ा का स्वामी अजबसिंह टीका लेकर नहीं आया, जिसके कारण महाराणा ने बांसवाड़ा पर सेना भेजने की आज्ञा दी, जिसकी शिकायत बांसवाड़ा के वकील ने बादशाह से की। किन्तु जाँच-पड़ताल के पश्चात् वज़ीर असदखाँ ने महारावल अजबसिंह को वि०सं० १७५९ वैशाख वदी १२, ई० स० १७०२ को निम्नलिखित पत्र लिखा—

उदाहरण १

"बराबरीवालों में उम्दह रावल अजबसिंह नेक-नीयत रहै। इन दिनों में बुजुर्ग ख़ानदान राजा अमरसिंह के लिखने से अर्ज़ हुआ कि उस सरदार ने भीलवाड़ा वगैरह २७ गांवों पर जो डांगल जिले में राणा के सरहदी इलाकै पर हैं और जिनकी बाबत राणा एक महजर उनके बाप कुशलसिंह और डूंगरपुर के जमींदार रावल खुमाणसिंह के हाथ की रखता है बेफ़ाइदह दावा करके ज़ुल्म और दख़ल दे रक्खा है। यह बात बादशाही दरगाह में बहुत ख़राब मालूम होती है और हुक्म के मुवाफिक लिखा जाता है कि इस काग़ज़ के पहुँचते ही राणा के इलाके पर बेजा दख़ल न करें। इस मुआमले में हुजूर की तरफ से सख़्त ताकीद समझें।" पत्र में बुज़ुर्ग, ख़ानदान, अर्ज़, वग़ैरह, सरहदी, इलाके, बेफ़ाइदह, दावा, ज़ुल्म, दख़ल, दरगाह, हुक्म, मुवाफ़िक, बेज़ा, मुआमले, हज़ूर, सख़्त, ताकीद शब्दों का प्रयोग हुआ है। व्याकरण हिन्दी का है, इसलिए पत्र की भाषा खड़ीबोली हिन्दी है। भाषा की दृष्टि से पद विन्यास प्रौढ़ है और लगभग ३०० वर्ष पूर्व पूर्णत: आधुनिकता के दर्शन होते हैं।

उदाहरण—१. लिखने से अर्ज़ हुआ
२. इलाकै पर है
३. खुमाणसिंह के हाथ की रखता है
४. दख़ल दे रक्खा है
५. ख़राब मालूम होती है
६. हुक्म के मुवाफ़िक़ लिखा जाता है

७. इस काग़ज़ के पहुँचते ही
८. दख़ल न करें
९. सख़्त ताकीद समझें

प्रमाण हैं।

संवत् १७५९ (सन् १७०२ ई०) के इस सरकारी पत्र की भाषा प्रौढ़ तथा सुघड़ है। स्पष्टतः यह वाक्य-रचना-रीति इसके पूर्व प्रचलित रही, तभी भाषा का इतना निखरा स्वरूप दृष्टिगोचर हुआ। पत्र औरंगज़ेब के काल का है। यह लिखना भी उचित होगा कि अन्तिम दिनों में औरंगज़ेब की प्रशासनिक पकड़ ढीली हो जाने पर भी जागरूकता बनी रही किन्तु मेवाड़ की प्रबलता में वृद्धि हुई। भाषिक दृष्टि से पत्र खड़ीबोली का है। यह पता नहीं चल सका कि पत्र मूलतः अरबी लिपि में लिखा गया या देवनागरी में। पत्र देवनागरी में ही लिखा गया होगा क्योंकि उन दिनों पत्र-लेखन में प्रायः देवनागरी का प्रयोग होता था। हिन्दू राजाओं के साथ बादशाह पत्राचार में फ़ारसी लिपि का प्रयोग यदा-कदा करते थे। शाब्दिक दृष्टि से पत्र में अरबी/फारसी के शब्दों का बाहुल्य है। बुजुर्ग, ख़ानदान, अर्ज़, वग़ैरह, सरहदी, इलाक़े, दावा, जुल्म, दख़ल, हुक्म, दरगाह, मुवाफ़िक, बेज़ा, मुआमले (अब मामले), हज़ूर, सख़्त आदि शब्द न्यूनाधिक आज भी प्रचलित हैं। लगभग २९० वर्षों से अर्थात् पत्र की तारीख से अब तक शब्द लगभग उन्हीं अर्थों में प्रयुक्त हो रहे हैं, यह उल्लेखनीय है। पत्र चूँकि दिल्ली के मुसलमान बादशाह की ओर से लिखा गया; इसलिए पत्र की भाषा में अरबी/फ़ारसी शब्दों का आधिक्य स्वाभाविक है। भाषा के इतने सुष्ठु रूप के बनने में उस काल में २००-३०० वर्षों का समय अवश्य लगना चाहिए, जबकि साधन नहीं थे।

मेवाड़ से सम्बन्धित एक अन्य पत्र के, जो मेवाड़ के ही एक अधिकारी ने मेवाड़ के प्रशासन को लिखा, विश्लेषण से कुछ नई अवधारणा बनती है।

उदाहरण २

श्री राम जी करौली

सीध श्री ग़ांम ईडाली सुथांने साहा जीवण दास जी पंचोली सुषराम जी जोग्य श्री ऊदैपुर श्री साहा सदाराम जी ० रा लषावतुं ऊठार बाचजो अठारा समाचार भला छै थाहारा भला चाहीजै अप्रचं—गाम माला सेरी राठोड केसरी सीघ षुमावत है पहैम मा हुइी है जणी साथे ० बीगा १४०० में महाजाणा के आबै सर बहै ० कडरी में जाणी है सो सीम कठा अेचीराह, ४१ अेदीज्यो जेती मूली घती १८०८ व्रषे पील सु।

टिप्पणी : ० फटे हुए भाग हैं।

अगली ओर : साहा जीवणदास जी पंचोली सुषराम जी जोग्य।

विश्लेषण : पत्र की भाषा अस्पष्ट तथा ग्रामीण है। लिखावट भी अपठनीय पाई गई। लगता है काम चलाऊ भाषा-ज्ञाता द्वारा पत्र लिखा गया। किन्तु गद्य का रूप प्रस्फुटित होता है। प्राचीनता की दृष्टि से अर्वाचीन ही कहा जाएगा।

आगे संवत् १७६६ वि० (सन् १७०९ ई०) का करौली रियासत की ओर से जयपुर को लिखा गया पत्र एक प्राचीन पत्र माना जा सकता है। पत्र में व्रजभाषा के साथ खड़ीबोली का मिश्रण है।

मेवाड़ क्षेत्र के पत्र में 'अठारा समाचार भला छै थाहारा भला चाहीजै' वाक्य जयपुर क्षेत्र में 'अँठा का समाचार भला छँ आपका सदा आरोग्य चाहिज्य' आदि रूप में बदलता है।

उदाहरण ३

श्रीमन्मदनगोपालज करौली

सिद्धि श्री सर्वोपमा जोग्य महाराजा धिराज श्रीराजा जैसिंघ जू जोग्य लिषाइतँ कुँवरपाल को मुजरा बंचनौ श्रीमहाराजा के सुष समाचार दिन प्रति घरी-घरी के सदाँ आरोग्य चाहि जैं तो हम को परम संतोष होई इहाँ के समाँचार श्रीमहाराज की कृपा तै भले है आगे श्री महाराज को कागद ठाकुर कल्यान सीघ कै हाथ आयो मैहेरवानिगी जानी समाचार जानै श्रीमहाराज के दरबार के हम हमेसाँ रजपूत हैं कागद समाचार कृपा के यादि करत रहीयैंगे मिती अगहेन सुदी ११ संबत् १७६६

सन् १७०९ का पूर्वोक्त प्राचीन पत्र आमेर के शासक जयसिंह द्वितीय के समय का है, जो सवाई जयसिंह कहलाते थे। करौली रियासत के शासक कुँवर पाल की ओर से लिखे गए पत्र में निम्नलिखित वाक्य भाषा में खड़ीबोली की बानगी है—

"श्री महाराज के दरबार के हम हमेसाँ रजपूत हैं।"

मुजरा, मेहेरवानिगी और हमेसाँ शब्द अरबी/फ़ारसी के हैं। किन्तु ये भी तद्भव रूप में हैं। मुजरा शब्द अरबी से आया है जिसका अर्थ किसी बड़े के सामने पहुँचकर उसे अभिवादन करना है। फ़ारसी के मेह्रबानी से मेहेरबानगी आया है। फ़ारसी में हमेश: शब्द है।

सुष, समाचार, दिन, प्रति, सदा, आरोग्य, परम, संतोष, कृपा आदि सभी शब्द मूलत: संस्कृत के तत्सम रूप में हैं किन्तु 'घरी-घरी' व्रजभाषा और 'भले' भी व्रजभाषा के प्रयोग हैं।

उदाहरण ४

।। श्री गोपालजी ।। किशनगढ़

सिधि श्री राज राजेद्रँ महाराजाधिराज महाराज श्रीसवाई प्रिथीसिंघ जी

जोग्य महाराजाधिराज महाराज श्री बहादर सिंघ जी लिषावतुं जुइवार बाँचज्यो आप म्हौरे घणी वात छौ आप उप्राँयत काई बात न छैः अप्रंच महाराजा श्री माधवसिंघ जी रा वैकुण्ठ प्राप्त हुवाँ का समाचार सुणाँ तीसूँ मन नै बडो फिकर हुवौ महाराजा सारी वात प्रबीण हिदोस्ताँन की मरजादया: अठा सुँ बहोत हेत बिहार रषावता था पिँण संसार की याही रीत छै ईश्वर की इछा सुँ कंही को जोर नँही ईश्वर चाहे सो करै तीसुँ दईव इछा पर नजर राषि आप भी सबर करस्यौ: मिती चैत सुदि १ संवत १८२४ का

मुद्रा

उदाहरण ५

॥ श्रीनाथ जी ॥

सिद्ध श्री राज राजेन्द्र महाराजाधिराज महाराज श्री सवाइ मान सिंह जी जोग उम्दह राजहाय बुलन्द मकान महाराजा श्री सुमेरसिंह जी लिखावतु जुहार बाँचज्यो आप म्हाँ के घणी बात छो आप उपरायत कोई बात न छै सो कागज में कठा तक मनुहार लिखा अठा उठा को एक ब्योहार छै अपरंच मिती बैसाख शुद १० श्रुक्रवार ने पुज्य माबा साहब श्री खींचण जी देवलोक पधारा सोई फिकर की तो कठा तक लिखी जावे पण हरि इच्छा सूँ जोरी नहीं अबे जेठ बदी ६ मंगलवार तारीख २५ मई सन् हाल को द्वादशो है तींपर आप पधारस्यों जेष्ट बदी ४ सँबत १९९९ माताबिक तारीख २३ मई सन् १९४३ ई०

संवत् १८१४ अर्थात् सन् १७६७ तथा सन् १९४३ ई० के दोनों उदाहरणों में पत्राचार की परिपाटी में मुख्य अन्तर यह है कि मुसलमानी प्रभाव के कारण सन् १९४३ ई० के पत्र में 'उम्दह राजहाय बुलन्द मकान' जैसे अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ। किन्तु दोनों पत्रों में 'आप म्हारै घणी बात छो' 'आप म्हाँ के घणी बात छो' जैसे वाक्य प्रयुक्त होते रहे। दोनों पत्रों में मृत्यु के शोक पर लगभग एक समान वाक्यों का प्रयोग विशेषत: उल्लेखनीय है। उदाहरण सं० ५ में अंग्रेजी सन् का प्रयोग भी परिवर्तन का सूचक है। ऐसा लगता है कि भाषा में शब्दावली मिल-जुल गई।

बूँदी रियासत की ओर से जयपुर को लिखे गए दो पत्र उदाहरण सं० ६ तथा ७ एक सन् १७९२ ई० का तथा दूसरा सन् १८८१ ई० के हैं।

उदाहरण ६

श्री राम जी

श्री पीतांबर जी

बूँदी

सीधी श्री सरब वोपमा जोग्ये राजराजींद्र माहाराजाधीराज माहाराजी राजा जी श्री सवाइ प्रताप संघ जी जोग्ये लीषतं माहाराजधीराज राव राजा श्री

बीसनसंघ जी केनी जुहार बंच्या अठा का समाचार श्री·········जी की कृपा सु भला छ आपका सुष समाचार सदा आरोग चाहीजे अप्रची आप बड़ा छो क्रेपा बोहार ऐकता राषो छोती थी बसेष राषोगा ओर कागद समाचार आध्या ना दीन हुवा सु हमेसा लीषावगा अठ तो बोहार सारो आप को ही छ मी आसोज बदी ६ वार संबत १८४६

आध्या ना दीन=अध्ययनाधीन (जैसे विचाराधीन)

उदाहरण ७

श्री हरि: बूंदी

श्री पीताम्बर जी

सिद्धि श्री सर्वोपमा योग्य राज्य राजेन्द्र महाराजाधिराज महाराज राजा जी श्री सिवाई माधव सिंह जी योग्य लिषाइतं महाराजाधिराज राव राजा श्री राम-सिंह जी केन जुहार वाँचज्यो अठा का समाचार श्री·········की कृपा सूँ भला छै आपका सुष समाचार सदा आरोग्य चाहिजे अपरंच आप बडा छो कृपा ब्यवहार एकता राषो छो तीं सूँ विशेस राषोगा ओर अठा सूँ टींका कोसराजाम बैंरा सालोत भाई ईन्द्र साल जी ओर व्यास हरिदास जी कै साथ भिजवायो छै सो पहोंचसी ओर अठा उठा कै सनातन सूँ एकता जाण कागद समाचार हमेशा लिषावोगा मिती भाद्र पद शुल्क १५ गुरुवार संवत् १९३८ का

अगली ओर

श्री रङ्गेश

चरणा ब्र चन्चरी की

कृत चित्तम

महाराजाऽधिराज

श्री रामसिंह

× × ×

॥७४॥ राज्यराजेन्द्र महाराजाधिराज महाराज राजा जी श्री सिवाई माध्व सिंह जी योग्य

उदाहरण ८ श्री राम ॥ श्रीराम जी

॥ श्री राम जी ॥

मोहर

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री
सवाई जगत सिंह जी देव वचनात
धरम दास महाजन अगरवाला
दिसेसु प्रसाद बंच्या अपरंच

आगे फटा
भाग

जोग्य महाराजाधिराज महाराज श्री बहादर सिंघ जी लिषावतुँ जुइवार बाँचज्यो आप म्हौरे घणी वात छौ आप उप्राँयत काई बात न छै: अप्रंच महाराजा श्री माधवसिंघ जी रा बैंकुण्ठ प्राप्त हुवाँ का समाचार सुणाँ तीसूँ मन नै बडो फ्किर हुवौ महाराजा सारी वात प्रबीण हिदोस्ताँन की मरजादया: अठा सुँ बहोत हेत बिहार रषावता था पिँण संसार की याही रीत छै ईश्वर की इछा सुँ कंही को जोर नँही ईश्वर चाहे सो करै तीसुँ दईव इछा पर नजर राषि आप भी सबर करस्यौ: मिती चैत सुदि १ संवत १८२४ का

मुद्रा

उदाहरण ५

॥ श्रीनाथ जी ॥

सिद्ध श्री राज राजेन्द्र महाराजाधिराज महाराज श्री सवाइ मान सिंह जी जोग उम्दह राजहाय बुलन्द मकान महाराजा श्री सुमेरसिंह जी लिखावतु जुहार बाँचज्यो आप म्हाँ के घणी बात छो आप उपरायत कोई बात न छै सो कागज में कठा तक मनुहार लिखा अठा उठा को एक ब्योहार छै अपरंच मिती बैसाख शुद १० श्रुक्रवार ने पुज्य माबा साहब श्री खींचण जी देवलोक पधारा सोई फिकर की तो कठा तक लिखी जावे पण हरि इच्छा सूँ जोरी नहीं अबे जेठ बदी ६ मंगलवार तारीख २५ मई सन् हाल को द्वादशो है तींपर आप पधारस्यों जेष्ट बदी ४ सँबत १९९९ माताबिक तारीख २३ मई सन् १९४३ ई०

संवत् १८१४ अर्थात् सन् १७६७ तथा सन् १९४३ ई० के दोनों उदाहरणों में पत्राचार की परिपाटी में मुख्य अन्तर यह है कि मुसलमानी प्रभाव के कारण सन् १९४३ ई० के पत्र में 'उम्दह राजहाय बुलन्द मकान' जैसे अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ। किन्तु दोनों पत्रों में 'आप म्हारै घणी बात छो' 'आप म्हाँ के घणी बात छो' जैसे वाक्य प्रयुक्त होते रहे। दोनों पत्रों में मृत्यु के शोक पर लगभग एक समान वाक्यों का प्रयोग विशेषत: उल्लेखनीय है। उदाहरण सं० ५ में अंग्रेजी सन् का प्रयोग भी परिवर्तन का सूचक है। ऐसा लगता है कि भाषा में शब्दावली मिल-जुल गई।

बूँदी रियासत की ओर से जयपुर को लिखे गए दो पत्र उदाहरण सं० ६ तथा ७ एक सन् १७९२ ई० का तथा दूसरा सन् १८८१ ई० के हैं।

उदाहरण ६

श्री राम जी

श्री पीतांबर जी

बूँदी

सीधी श्री सरब वोपमा जोग्ये राजराजींद्र माहाराजाधीराज माहाराजी राजा जी श्री सवाइ प्रताप संघ जी जोग्ये लीषतं माहाराजधीराज राव राजा श्री

बीसनसंघ जी केनी जुहार बंच्या अठा का स्माचार श्री·········जी की कृपा सु भला छ आपका सुष समाचार सदा आरोग चाहीजे अप्रची आप बङा छो कृपा बोहार ऐकता राषो छोती थी बसेष राषोगा ओर कागद समाचार आध्या ना दीन हुवा सु हमेसा लीषावगा अठ तो बोहार सारो आप को ही छ मी आसोज बदी ६ वार संबत १८४६

आध्या ना दीन=अध्ययनाधीन (जैसे विचाराधीन)

उदाहरण ७

श्री हरिः बूंदी

श्री पीताम्बर जी

सिद्धि श्री सर्वोपमा योग्य राज्य राजेन्द्र महाराजाधिराज महाराज राजा जी श्री सिवाई माधव सिंह जी योग्य लिषाइतं महाराजाधिराज राव राजा श्री राम-सिंह जी केन जुहार बाँचज्यो अठा का समाचार श्री·········की कृपा सूं भला छै आपका सुष समाचार सदा आरोग्य चाहिजे अपरंच आप बडा छो कृपा ब्यवहार एकता राषो छो तीं सूँ विशेस राषोगा ओर अठा सूँ टींका कोसराजाम बैरा सालोत भाई ईन्द्र साल जी ओर व्यास हरिदास जी कै साथ भिजवायो छै सो पहोंचसी ओर अठा उठा कै सनातन सूँ एकता जाण कागद समाचार हमेशा लिषावोगा मिती भाद्र पद शुल्क १५ गुरुवार संवत् १६३८ का

अगली ओर श्री रङ्गेश

चरणा ब्र चन्चरी की

कृत चित्तम

महाराजाऽधिराज

श्री रामसिंह

× × ×

॥७४॥ राज्यराजेन्द्र महाराजाधिराज महाराज राजा जी श्री सिवाई माध्व सिंह जी योग्य

उदाहरण ८ श्री राम ॥ श्रीराम जी

॥ श्री राम जी ॥

मोहर

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री
सवाई जगत सिंह जी देव वचनात
धरम दास महाजन अगरवाला
दिसेसु प्रसाद बंच्या अपरंच

आगे फटा
भाग

षातरि जमाँ राष्य कसवा सवाई जयपुर में हाटि हवेली वणाय (बनाय) बिणज (ब्रणज) व्योपार करिबो कीज्यो हांसिल मांया राहदारी को हद सरकार की में सहै थांनी सूँ अधकरी दस्तूर दीघ का व्योपारयां कै लीज्ये लो ओर यरणो वांछ बिराऊ सदा मदि माफ मिती जेठ सुदि ६ सा० संवत १८६४

कागज के दूसरी ओर—नकल लिषी

नकल लिषी

नकल लिषी

उदाहरण सं० ६, १० किशनगढ़ से आमेर के राजाओं को लिखे गए पत्रों के नमूने हैं। उक्त दोनों पत्रों को उदाहरण सं० १ से ७ से तुलना करने से स्पष्ट होता है कि प्रशासनिक पत्राचार की निश्चित परिपाटी बनी हुई थी। अधीनस्थ जागीर-दार अपने नियन्त्रक राजा को लिखते समय अपनी निष्ठा की पुष्टि अवश्य करते थे। समग्र पत्राचार से तत्कालीन सामन्ती शासन की स्पष्ट झलक मिलती है। सामान्यत: पत्रों में साहित्यिकता समाई है। काव्यमय सौन्दर्य के भी दर्शन होते हैं।

उदाहरण सं० ८ में तो आमेर/जयपुर के राजा ने व्यापारी को आदेश दिया कि कस्बा जयपुर में हवेली बनाकर वाणिज्य व्यापार कीजिए। हवेली शब्द फारसी का स्त्रीलिंग शब्द है जिसका अर्थ है पक्का और बड़ा मकान।

उदाहरण सं० ८ के उक्त पत्र में शब्दों के कुछ रूप द्रष्टव्य हैं :

शुद्ध रूप	प्रयुक्त रूप
अग्रवाल	अगरवाला
कस्बा	कसवा
बनाय	वणाय
वाणिज्य	बिणज
व्यापार	व्योपार
डीग	दीघ
व्यापारियों	व्योपारयाँ

उदाहरण १०

||सीध श्री महाराजाधिराज मह
राजा श्री सवाई माधवसिंघजी जोग
महाराजाधिराज महाराजा श्री सर
दारसिंघजी लिषावतं जुहार बंचो
रजो अठाका समाचार श्री ——— जी
की क्रिपा कर भला छै आपका सदा
भला चाहीजे आप बडा हैः सदी
हित रषावे हैंः तीसूं विसेस परमाणं
अपंच कागज आपको आयोः श्री म
हाराज साहिब देवलोक पधारयाःतीं
षबर लिषायो छोः जो म्हांनैं दिक करुवैः
सो आपनैं दिक करन होय तो औरकुं
नैं होयः अर मुनैं समाधान लिष
सो मुनैं तो आगैं ही श्री महाराजा
ब्रिंदावन पधारता आपकी तईनात
कियो छोः सो अब अबदौ तो दिक
सारो ही श्री महाराजा ही नैं छैः अर
औ तारो कुकन श्री महाराजा को गो
रषो आकुठा कागज हमेसां लिषावे
सो मिती आसोज सुद ९ संवत १८२४

उदाहरण ११ मुद्रा

श्रीगोपालजी करौली

सिधि श्री महाराजा धिराज महाराजा श्री सवाई पृथ्वीसिंघजी देव योग्य लिखायतं राजाजी श्री माणिकपाल जी बहादुर यदुकुल चंद्रपाल के मुजरा बंच्ये ह्याँ के समाचार श्री जी कृपा से भले हैं आपके सुखसमाचार सदा आरोग्य चाहियैं तो परमानंद होंइ अप्रंचि वौहत दिन सौ कागद समाचार नहीं आए सो कृपा करि लिखांईयैंगे हया घोड़ेवा रजपूत है सो दरवार के काम के है विशेष वर्तमान श्री भट्ट जी वा राजा षुश्यालीराम जी हजूर जाहिर करैंगे मिती श्रावण वदि ५ संवत १८३४

उदाहरण सं० ३ करौली से संवत् १७६६ में और यह उदाहरण सं० ११ संवत् १८३४ में लिखे गए पत्र हैं, ६८ वर्षों के अन्तराल में पत्राचार की शैली लगभग एक जैसी रही। दोनों पत्र सिद्धिश्री (सिधिश्री—संवत् १८३४ के पत्र में) से प्रारम्भ हुए। मुंजरा बंचनौ या मुजरा बंच्ये शब्दावली ने प्रथम वाक्य का कलेवर बनाया। 'इहाँ के समाचार श्री महाराज की कृपा ते भले हैं'—संवत् १८३४ में 'ह्याँ के समाचार श्री जी कृपा से भले हैं' में बदला। सम्भवतः इहाँ का ह्याँ में बदलना पत्र लेखक के भाषा ज्ञान के कारण हुआ है।

उदाहरण १२

श्रीपरमेश्वरजी सत्य छै ग्वालियर

सिधि श्री सर्व उपमा श्री महाराजा धिराज राज राजेंद्र महाराजा श्रीसवाइ जगत सीघ जी जोग्य श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री अलीजाह सूवेदार जी श्री दौलतरांउ जी सिंदे के बाँच्यो: इहाँ के स्माचार श्री की कृपा सौ भला छै राज के स्माचार भले चाहीजैं आप्रंच श्री महांराजा सवाई प्रतापसींघ जी देव लोक हुये की सुनवा मैं आई वा सोह को बड़ा अपसोस हुवा सौ महवाल श्री भगवान जी के असारे है इसमें मनुष्य को कुछ उपाय नहीं है यसा जाने राज वीवेके कर को चीन्तकी समाधानी करावोला मीती भादो सुदी ११ सवत १८७० मुकाम जालनापुर

पत्र में मुख्य बात—'सवाई प्रतापसींघ जी देवलोक हुये की सुनवा में आई वा सोह को बड़ा अपसोस हुवा' है। पत्र प्रशासनिक है। 'देवलोक हुये' रूप अटपटा है जो 'देवलोक गमन हुआ' के अर्थ का बोध कराता है। संवत् १८७० के पत्र की भाषा तो खड़ीबोली है ही। संवत् १७५९ के पत्र (उदाहरण सं० १) की भाषा से तुलना करना ठीक नहीं होगा। संवत् १७५९ के पत्र की भाषा से प्रकट होता है कि

उदाहरण १५

श्री लक्ष्मीनारायण जी बीकानेर

स्वस्ति श्री राज राजेन्द्र माहराजधिराज माहराज श्रीस्वाई मानसिंह जी जोग्य महाराजाधिराज राज राजेश्वर नरेन्द्र सिरोमणि मेजर जनरल श्रीसर गंगासिंह जी बहादुर जी०सी०एस०आई० जी०सी०आई०ई०जी०सी०वी०ओ० जी०बी०ई०के०सी०बी०ए०डी०सी०एल० एल डी लिषावतू जुँहार बाँचजो अठारा समाचार श्री·········जी री सुं नजर सु भला छै राज रा सदा भला चाहीजै राज बडा छो म्हौरे घणी वात छो सदा हेत वुहार राषो छो तें सु विसेष रषावसो अप्रंच टीके रो सरजाम दे मेजर जनरल राव बहादुर ठाकर हरीसिहं जी०सी०आई०ई० ओ०बी०ई० म्हेता अन्नैसिंह ने मेल्या छै सु सारा समाचार जाहर करसी संवत १९८० मिती मीगसर सुद १२ दुजी मुकाम पाय तषत श्री बीकानेर कोट दाषल

उदाहरण सं० १४ में कोटा रियासत के संवत् १८६० के पत्र की बीकानेर रियासत के उदाहरण सं० १५ के संवत् १९८० के पत्र से तुलना करने पर यह प्रकट होता है कि दोनों सुदूर की रियासतों में समय के बड़े अन्तराल ने भी पत्राचार की परिपाटी में उल्लेखनीय अन्तर उत्पन्न नहीं किया। 'श्री·········जी की' या 'श्री·········जी री' दोनों में है। 'माहाराजी बडा छो' या 'राज बड़ा छो' एक से हैं। 'हेत महरबानगी हमेसा राघो छो' या 'सदा हेत बुहार राषो छो' समरूप से हैं।

उदाहरण १६

जेठ सुदी ८
संवत् १७६८

श्री महाराज जी सलामत सुकर लीषां अजमेर को सुबोह वो सुषाना जा दनै बुलाय अर कहीजु हमारै अर अीबेर के घर कही सुंह षलास है जो कुछ मतालब सरकार के होय सु लीष दोजुं सरंजाम कर दे अर भंडारी व् भीषारीदासजी हम कुं राह मै मीले थे सुषानाजाद वो कनै तो कबुल करीम हजुर का जुवाब को ईनतजार छै जोयाकामालनां पहली जुवाब ईनायत होसी सुयानैतीभाकुक मतालाब लीष दे सीर जाम करावसी जी

(सब अक्षर मिले हुए पाए।)

नोट : खुलासा मजमून (फाइल पर ही लिखा है) शुक्रुल्ला खाँ जी को अजमेर का सूबा हुवा है मुझे बुलाकर कहा कि जो कुछ महाराज के मतालिब हो लिख दो इसलिए जवाब लिखावैं जिस मुजिब मतालिब सरंजाम कराऊँ।

उदाहरण सं० १६ संवत् १७६८ का एक प्रार्थनापत्र है जो जयपुर के राजा

को लिखा गया। इसकी तुलना उदाहरण सं० १ संवत् १७५९ के पत्र की भाषा से करने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों पत्रों की भाषा खड़ीबोली हिन्दी है किन्तु संवत् १७६८ के प्रार्थना पत्र की भाषा में राजस्थानी हिन्दी मिश्रित है। भाषा सुष्ठु नहीं है जिसका कारण कम शिक्षित व्यक्ति द्वारा लिखा होना हो सकता है। किन्तु इतना तो स्पष्ट होता है कि हिन्दी का खड़ीबोली रूप प्रशासन में प्रगति कर रहा था।

यह सप्रमाण सिद्ध होता है कि हिन्दी न केवल प्रशासन की भाषा रही अपितु उसके सुष्ठु रूप से यह अनुमान लगाना अनुचित न होगा कि उस रूप के बनने की प्रक्रिया सन् १७०० ई० से ३००-४०० वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई होगी और प्रयत्न करने पर सन् १३००-१४०० ई० का हिन्दी गद्य (विशेषत: खड़ीबोली का) अवश्य मिलना चाहिए।

अध्याय ३

सन् १८५७ ई० से पूर्व प्रशासन में हिन्दी का प्रयोग

मनुस्मृति के सातवें अध्याय में प्रशासन के लिए आवश्यक तत्त्वों के दर्शन होते हैं; राजा की आवश्यकता का उल्लेख निम्नलिखित दो श्लोकों में मिलता है। राजा को प्रशासन का पर्याय माना जा सकता है।

ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कारं क्षत्रियेण यथाविधि
सर्वस्यास्य यथान्यायं कर्तव्यं परिरक्षणम् ॥२॥
अराजके हि लोकेऽस्मिन्सर्वतो विद्रुते भयात्
रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः ॥३॥

शास्त्रानुसार वेद को प्राप्त (उपनयन संस्करण से युक्त) क्षत्रिय (अभिषिक्त राजा) न्यायपूर्वक सब प्रजा की रक्षा करे।

इस संसार को बिना राजा के होने पर बलवानों के डर से (प्रजाओं के) इधर-उधर भागनेवाले सम्पूर्ण चराचर की रक्षा के लिए भगवान् ने राजा की सृष्टि की।

यदि न प्रणयेद्राजा दण्डं दण्ड्येष्वतन्द्रितः
शूले मत्स्यानिवापक्ष्यन्दुर्बलान्बलवत्तराः ॥२०॥

यदि राजा आलस्य छोड़कर दण्ड के योग्यों (अपराधियों) में दण्ड का प्रयोग नहीं करता, तो बलवान् लोग दुर्बलों को जैसे मछलियों को लोहे के छड़ में छेदकर पकाते हैं, वैसे पकाने लगते।

स्पष्टतः प्रशासन का एक प्रमुख अंग दण्ड है।

कर वसूली के सम्बन्ध में भी महाराज मनु ने कहा है—

सांवत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्बलिम्
स्याच्चाम्नायपरो लोको वर्तेत पितवन्नृषु ॥८०॥

(राजा) विश्वासपात्रों से वार्षिक कर वसूल करावे और लोगों से (कर लेने में) न्याययुक्त बर्ताव करे और मनुष्यों में (राजा) पिता के समान बर्ताव करे।

कर्मचारियों (आज के सन्दर्भ में पुलिस) के घूस लेने सम्बन्धी आचरण के विषय में महाराज मनु ने बताया है—

राज्ञो हि रक्षाधिकृताः परस्वादायिनः शठाः
भृत्या भवन्ति प्रायेण तेभ्यो रक्षेदिमाः प्रजाः ॥१२३॥

खड़ीबोली प्रौढ़ रूप को प्राप्त हो गई थी जिसे प्राप्त करने में २००-३०० वर्ष अवश्य लगे होंगे।

उदाहरण १३ श्री राम जी

हजूरि

सिधि श्री सरबवोपमां जोग्य पुज्य श्री दादा भाई जी श्री 'राव' चतरभुज जी जोग्य लिषतं दिवाण सगही मनालाल केन्य मुंजरो बंच्यज्यौ अैठा का समाचार भला छै राज्य का सदा भला चाहज्ये अप्रंच कागद राज्य को आयो समाचार बाच्या बड़ी षुसी हुई और श्री······सू रुको षास ईनायत हूवो सो अदब बजाय माथै चढाय लीयो और मूनै आवा वासतै लिष्यो सो महूरत दिषाय जरूर आनु छू मिती सावण वदि १३ स्वंत १८७४

टिप्पणी—अैठा का जैसे शब्दों के साथ 'राज्य को आयो', 'बड़ी षुशी हुई', 'ईनायत हूवो', 'अदव बजाय' जैसी पदावली विशेषत: द्रष्टव्य है। पंचमेल प्रकार की भाषा का दिग्दर्शन होता है। संवत् १८७४ अर्थात् सन् १८१७ ई० काल मुसलमानों के साथ संसर्ग की दीर्घकालीन परम्परा में ही होने के कारण षुशी, रुको, षास, ईनायत, अदब, बजाय, जरूर जैसे अरबी/फ़ारसी के शब्दों की पत्र में बहुलता होते हुए भी पत्र का ढाँचा पुरातन सांस्कृतिक परम्परा में ही है, क्योंकि पत्र के शीर्ष पर 'श्री राम जी' तथा प्रारम्भ मंगलसूचक 'सिधि श्री' से हुआ है।

कोटा

उदाहरण १४

जे श्री क्रेसंन

सीधी श्री सरववोपमा जोग्ये राज राजेइंद्र माहाराजाधीराजे माहाराजा माहाराजा श्री सवाइी जगतसींघ जी जोग्ये लीषाऐतं माहाराज जी श्री उमेद सींघ जी केनी·······वंचजो अठा का संमाचार श्री········जी की क्रँपा त× ×फटा × × राजी की महरवानंगी सुभला छ माहाराजी का संमाचार सदा आरोग्ये चाहीजे सो प्रंम संथोष होऐ अप्रंची माहाराजी बडा छो हेत महरवांनगी हमेसा राषो छो तीसु वसेष रषाव जो श्री माहाराजी देवलोक हुवा की षवरे आइी सुश्री ·······जी न वोहोत अजोग करी भगवत अंछा सु कोइी को जोर नंही माहाराजी सुगा न छ पत रहसु संमाधान रषावसी अठ बुहार माहाराजी ही को जाणोगा महरवानंगी करी क्लाद संमाचार हमेसा लीषावोगा मती आगण षुद ४ स्मत १८६० मुकाम नंदगाव

टिप्पणी—प्रंम का अर्थ परम से है।
संथोष का अर्थ संतोष से है।
वसेष विशेष

उदाहरण १५

श्री लक्ष्मीनारायण जी   बीकानेर

स्वस्ति श्री राज राजेन्द्र माहराजधिराज माहराज श्रीस्वाई मानसिंह जी जोग्य महाराजाधिराज राज राजेश्वर नरेन्द्र सिरोमणि मेजर जनरल श्रीसर गंगासिंह जी बहादुर जी०सी०एस०आई० जी०सी०आई०ई०जी०सी०वी०ओ० जी०बी०ई०के०सी०बी०ए०डी०सी०एल० एल डी लिषावतू जुँहार बाँचजो अठारा समाचार श्री·········जी री सुं नजर सु भला छै राज रा सदा भला चाहीजै राज बडा छो म्हौरे घणी वात छो सदा हेत वुहार राषो छो तें सु विसेष रषावसो अप्रंच टीके रो सरजाम दे मेजर जनरल राव बहादुर ठाकर हरीसिहं जी०सी०आई०ई० ओ०बी०ई० म्हेता अन्नैसिंह ने मेल्या छै सु सारा समाचार जाहर करसी संबत १९८० मिती मीगसर सुद १२ दुजी मुकाम पाय तषत श्री बीकानेर कोट दाषल

उदाहरण सं० १४ में कोटा रियासत के संवत् १८६० के पत्र की बीकानेर रियासत के उदाहरण सं० १५ के संवत् १९८० के पत्र से तुलना करने पर यह प्रकट होता है कि दोनों सुदूर की रियासतों में समय के बड़े अन्तराल ने भी पत्राचार की परिपाटी में उल्लेखनीय अन्तर उत्पन्न नहीं किया। 'श्री·········जी की' या 'श्री·········जी री' दोनों में है। 'माहाराजी बड़ा छो' या 'राज बड़ा छो' एक से हैं। 'हेत महरबानगी हमेसा राखो छो' या 'सदा हेत बुहार राषो छो' समरूप से हैं।

उदाहरण १६

जेठ सुदी ८
संवत् १७६८

श्री महाराज जी सलामत सुकर लीषां अजमेर को सुबोह वो सुषाना जा दनै वुलाय अर कहीजु हमारै अर अीबेर के घर कही सुंह षलास है जो कुछ मतालब सरकार के होय सु लीष दोजुं सरंजाम कर दे अर भंडारी व् भीषारीदासजी हम कुं राह मैं मीले थे सुषानाजाद वो कनै तो कबुल करीम हजुर का जुवाब को ईनतजार छै जोयाकामालनां पहली जुवाब ईनायत होसी सुयानैतीभाकुक मतालाब लीष दे सीर जाम करावसी जी

(सब अक्षर मिले हुए पाए।)

नोट : खुलासा मजमून (फाइल पर ही लिखा है) शुक्रुल्ला खाँ जी को अजमेर का सूबा हुवा है मुझे बुलाकर कहा कि जो कुछ महाराज के मतालिब हो लिख दो इसलिए जवाब लिखावैं जिस मुजिब मतालिब सरंजाम कराऊँ।

उदाहरण सं० १६ संवत् १७६८ का एक प्रार्थनापत्र है जो जयपुर के राजा

को लिखा गया। इसकी तुलना उदाहरण सं० १ संवत् १७५६ के पत्र की भाषा से करने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों पत्रों की भाषा खड़ीबोली हिन्दी है किन्तु संवत् १७६८ के प्रार्थना पत्र की भाषा में राजस्थानी हिन्दी मिश्रित है। भाषा सुष्ठु नहीं है जिसका कारण कम शिक्षित व्यक्ति द्वारा लिखा होना हो सकता है। किन्तु इतना तो स्पष्ट होता है कि हिन्दी का खड़ीबोली रूप प्रशासन में प्रगति कर रहा था।

यह सप्रमाण सिद्ध होता है कि हिन्दी न केवल प्रशासन की भाषा रही अपितु उसके सुष्ठु रूप से यह अनुमान लगाना अनुचित न होगा कि उस रूप के बनने की प्रक्रिया सन् १७०० ई० से ३००-४०० वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई होगी और प्रयत्न करने पर सन् १३००-१४०० ई० का हिन्दी गद्य (विशेषत: खड़ीबोली का) अवश्य मिलना चाहिए।

अध्याय ३

सन् १८५७ ई० से पूर्व प्रशासन में हिन्दी का प्रयोग

मनुस्मृति के सातवें अध्याय में प्रशासन के लिए आवश्यक तत्त्वों के दर्शन होते हैं; राजा की आवश्यकता का उल्लेख निम्नलिखित दो श्लोकों में मिलता है। राजा को प्रशासन का पर्याय माना जा सकता है।

ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कारं क्षत्रियेण यथाविधि
सर्वस्यास्य यथान्यायं कर्तव्यं परिरक्षणम् ॥२॥
अराजके हि लोकेऽस्मिन्सर्वतो विद्रुते भयात्
रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः ॥३॥

शास्त्रानुसार वेद को प्राप्त (उपनयन संस्करण से युक्त) क्षत्रिय (अभिषिक्त राजा) न्यायपूर्वक सब प्रजा की रक्षा करे।

इस संसार को बिना राजा के होने पर बलवानों के डर से (प्रजाओं के) इधर-उधर भागनेवाले सम्पूर्ण चराचर की रक्षा के लिए भगवान् ने राजा की सृष्टि की।

यदि न प्रणयेद्राजा दण्डं दण्ड्येष्वतन्द्रितः
शूले मत्स्यानिवापक्ष्यन्दुर्बलान्बलवत्तराः ॥२०॥

यदि राजा आलस्य छोड़कर दण्ड के योग्यों (अपराधियों) में दण्ड का प्रयोग नहीं करता, तो बलवान् लोग दुर्बलों को जैसे मछलियों को लोहे के छड़ में छेदकर पकाते हैं, वैसे पकाने लगते।

स्पष्टतः प्रशासन का एक प्रमुख अंग दण्ड है।

कर वसूली के सम्बन्ध में भी महाराज मनु ने कहा है—

सांवत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्बलिम्
स्याच्चाम्नायपरो लोको वर्तेत पितवन्नृषु ॥८०॥

(राजा) विश्वासपात्रों से वार्षिक कर वसूल करावे और लोगों से (कर लेने में) न्याययुक्त बर्ताव करे और मनुष्यों में (राजा) पिता के समान बर्ताव करे।

कर्मचारियों (आज के सन्दर्भ में पुलिस) के घूस लेने सम्बन्धी आचरण के विषय में महाराज मनु ने बताया है—

राज्ञो हि रक्षाधिकृताः परस्वादायिनः शठाः
भृत्या भवन्ति प्रायेण तेभ्यो रक्षेदिमाः प्रजाः ॥१२३॥

राजा के रक्षाधिकारी प्रायः दूसरों का धन लेनेवाले (घूसखोर) हुआ करते हैं, उन शठों से (राजा) इन प्रजाओं की रक्षा किया करे।

पुनः कहते हैं—

ये कार्यिकेभ्योऽर्थमेव गृह्णीयुः पापचेतसः
तेषां सर्वस्वमादाय राजा कुर्यात्प्रवासनम् ॥१२४॥

जो पापबुद्धि अधिकारी काम पड़नेवालों से (अनुचित रूप में) धन अर्थात् घूस ले, राजा उनका सर्वस्व लेकर उन्हें राज्य से बाहर निकाल दे।

कार्य की कोटि के अनुसार वेतन के सम्बन्ध में मनु महाराज ने व्यवस्था दी है—

राजा कर्मसु युक्तानां स्त्रीणां प्रेष्यजनस्य च
प्रत्यहं कल्पयेद्वृत्तिं स्थानं कर्मानुरूपतः ॥१२५॥

राजा काम में नियुक्त दास-दासियों के लिए (अर्थात् आज के सन्दर्भ में कर्मचारियों के लिए) कार्य के अनुसार प्रतिदिन का वेतन एवं स्थान निश्चित कर दे।

व्यापार कर के सम्बन्ध में मनु महाराज का मत है—

क्रयविक्रयमध्वानं भक्तं च सपरिव्ययम्
योगक्षेमं च संप्रेक्ष्य वणिजो दापयेत्करान् ॥१२७॥

(राजा) खरीद-बिक्री, मार्ग, भोजन, मार्गादि में चौर आदि से रक्षा का व्यय और लाभ को देख (सम्यक् प्रकार से विचार) कर व्यापारी से कर लेवे।

युक्तियुक्त रूप में राजा की कर ग्रहण सीमा के विषय में मनु महाराज का कथन है—

पञ्चाशद्भाग आदेयो राज्ञा पशुहिरण्ययोः
धान्यानामष्टमो भागः षष्ठो द्वादश एव वा ॥१३०॥

राजा को पशु तथा सुवर्ण का कर (मूल धन से अधिक) का पचासवाँ भाग और धान्य का छठा, आठवाँ या बारहवाँ भाग (भूमि की श्रेष्ठता अर्थात् उपजाऊपन एवं परिश्रम आदि का विचारकर) ग्रहण करना चाहिए।

पुनश्च—

यत्किंचिदपि वर्षस्य दापयेत्करसंज्ञितम्
व्यवहारेण जीवन्तं राजा राष्ट्रे पृथग्जनम् ॥१३७॥

राजा अपने देश में व्यवहार (शाक आदि सामान्यतम वस्तुओं की खरीद-बिक्री) से जीनेवाले साधारण श्रेणी के लोगों से कुछ (बहुत थोड़ा) वार्षिक कर ग्रहण करे।

प्रशासक किस प्रकार का हो, इसके विषय में ऋग्वेद के मंडल २ सूक्त २३ में वृहस्पति सूक्त हैं।

त्वया वयमुत्तमं धीमहे वयो बृहस्पते पप्रिणा सस्निना युजा।

मा नो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत प्रसुशंसा मतिभिस्तारिषीमहि ।।

अनुवाद—हे बृहस्पते ! कामनाओं को पूरा करनेवाले, शुद्ध और सहायक तुम्हारे द्वारा हम श्रेष्ठ आयु को धारण करें। **कुत्सित कीर्तिवाला और आक्रमण करने की इच्छावाला व्यक्ति हमारा स्वामित्व न करे।** हम प्रार्थनाओं द्वारा शोभन कीर्तिवाले होते हुए फलें-फूलें।

स्पष्ट है कि प्रशासक सुप्रतिष्ठित होना चाहिए और वह जन पीडक नहीं होना चाहिए।

राजा की आवश्यकता, अपराधियों को दण्ड का प्रावधान, घूस लेनेवालों को कठोरतम दण्ड, कार्य के अनुसार वेतन तथा कर वसूली आदि के युक्तियुक्त प्रावधान मिलते हैं किन्तु पुरातन ग्रन्थों के रचना काल के समय संस्कृत भाषा ही एकमात्र भाषा रही, इसलिए राज्य की भाषा कैसी हो अर्थात् जनता की भाषा हो अथवा नहीं हो, आदि के विषय में उल्लेख नहीं मिलते। किन्तु कल्पना करें कि जनता की भाषा में सरकार का कार्यकलाप न चलना, क्या जनता को पशु की श्रेणी में अन्तरित करने के समान नहीं है। श्रीमद्भगवद्गीता की तथा श्री वाल्मीकि रामायण की संस्कृत भाषा के अत्यन्त सरल तथा अल्प संयोगात्मक होने के कारण से भी उनकी जनप्रियता अन्य ग्रन्थों यथा वेदों, उपनिषदों आदि से अधिक रही। जनभाषा से नैकट्य ही उनकी जनप्रियता का आधार है। इसी प्रकार प्रशासन की लोकप्रियता के लिए भी प्रशासन की भाषा का जनभाषा होना आवश्यक ही नहीं अपितु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

विभिन्न देशी रियासतों का कामकाज हिन्दी की बोलियों में चलता था तथा आज से शताब्दियों पूर्व चलता रहा, इसके प्रमाणस्वरूप अनेक उदाहरण दिए गए हैं और भाषा का विश्लेषण भी किया गया है।

(क) राजनय

एक राज्य अर्थात् देश द्वारा राज्य के प्रति आचार-व्यवहार को 'राजनय' कहा जाता है। व्यावहारिक उदाहरणों से यह पुष्टि होती है कि राजनय सम्बन्धी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्राचार हिन्दी में हुआ है और सतत् होता रहा है।

उदाहरण सं० १ : रियासत कोटा से जयपुर को तथा उदाहरण सं० २, ३ और ४ किशनगढ़ से जयपुर को लिखे गए पत्र हैं। इन पत्रों के लेखन वर्ष क्रमशः सन् १७०६, १७०९, १७१७ और १७४२ ई० हैं। इतने प्राचीन पत्रों में भाषा की नम्रता के द्योतक निम्नलिखित वाक्य जयपुर राज्य की उच्चता प्रकट करते हैं—

कोटा— संवत् १७६३	राजी ठाकुर छै बडा छै ईतै मोह राधो (राखो) छौ
किशनगढ़— संवत् १७६६	राजि म्होरै घणी बात छो राजि उपराइत काई बात न छै
संवत् १७७४	अठा उठा का व्योहार में दूजाइगी न छै अठा लायक कांम-काज होय सो लिषावो करौला
संवत् १७९९	आप बड़ा हैं : सदा क्रिपा हित राषै है : तीसूं बिसेष रषावेला :

चारों उदाहरणों में जयपुर के प्रति विशिष्ट सम्मानसूचक वाक्यों का प्रयोग हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार में तथा संधियों में भी विशेष आदरसूचक शब्दों का प्रयोग सामान्यतया होता है। किन्तु उदाहरण सं० ४ में राजि म्होरै घणी बात छो के स्थान पर 'आप बडा हैं' वाक्य भाषा में परिवर्तन का सूचक है। दोनों रियासतों अर्थात् कोटा तथा किशनगढ़ के पत्रों में प्रारम्भ सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा के मंगलसूचक एवं उच्चतम सम्मानसूचक शब्दों से किया गया है। कोटा के इष्टदेव श्री राम तथा श्री पीताम्बर (श्री कृष्ण) और किशनगढ़ के श्री गोपाल राम जी एवं श्रीनाथ जी भी रहे हैं। श्री गोपालराम अथवा श्री गोपालराय जी अथवा श्रीनाथ जी तो श्रीकृष्णचन्द्र के ही पर्यायवाची हैं।

उदाहरण १

श्री रांम कोटा
श्री पीतांबर जी

सीधी श्री माहाराजधिराजी माहाराजां राजा जी श्री जसंघ जी जौगी लीषतं माहाराजीधराजी माहाराव् श्री बुधीसंघ जी केनी जुहार वंचैनो अैठा का समंचार सदा भला चाहीजे तो प्रम संतोघ होइी अैप्रंची राजी ठाकुर छै बडा छै ईतै मोह राखो छौ तीसु वसेष (विसेष) राषनो (राखनौ) राजी को उर को आक्रो समंचार वांची सुन्या अवी समंचार जुवानी सुंदर कहै सु सही कैरी मानैगौ अैठा उठा को वीहार ० ० ० ० छै दुजाइीगी कोइी वात की नं छै मख्य् कौरी कागज स्मंचार लीप्नावु (लिखावु) कीनौ मी जेठ सुदी १५ संवत १७६३

टिप्पणी—०००० अस्पष्ट भाग।

पत्र में परम संतोष को प्रम संतोघ, तथा व्यवहार को वीहार लिखा गया है। इसी प्रकार विशेष को वसेष, जयसिंह को जयसंघ, योग्य को जौगी, समाचार को स्मंचार लिखना यह प्रकट करता है कि लिखनेवाला व्यक्ति साधारण था।

पत्र में जुहार वंचैनो लिखा गया है किन्तु किशनगढ़ के पत्रों में जुहार वाचीजो, जुहार अवधारज्यौ, जुहार वांचीजो लिखा गया है। जुहार शब्द का तथा बांचना के विभिन्न रूपों का प्रयोग बीकानेर, बूँदी के पत्रों में भी हुआ है किन्तु करौली के पत्र (उदाहरण सं० १०) में मुजरा शब्द प्रयुक्त हुआ है। जुहार शब्द हिन्दी की संज्ञा (स्त्रीलिंग) है जिसका अर्थ क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन है। मुजरा (मुज्रा) शब्द अरबी की संज्ञा है जिसका अर्थ छोटे व्यक्तियों का बड़े आदमियों को प्रणाम है। 'वांचना' शब्द हिन्दी की क्रिया है जिसका अर्थ पढ़ना है। यह शब्द संस्कृत के वाचन शब्द से उद्भूत है। आजकल वाचनालय शब्द अत्यधिक प्रचलित है।

उदाहरण सं० १ में लेखन में अशुद्धियों का यह संकेत है कि तत्समय शिक्षा की व्यवस्था क्षीण थी, अरबी/फ़ारसी के शब्दों की खिचड़ी कच्ची थी। ऐसा लगता है कि कोटा-बूँदी क्षेत्र में इन भाषाओं का प्रभाव कम ही रहा। इन राज्यों का तत्कालीन मुसलमान राज्यों से उतना अधिक सम्बन्ध नहीं रहा था। संवत् १८१० में उदाहरण सं ७ में इनकी बहुलता नहीं है।

उदाहरण २

॥ : ॥ श्रीगोपालरामजी किशनगढ़
नाथजी

॥ : ॥ सिधि श्री महाराजिधीराजि माहाराजि श्री जेसंघ जी जोग माहाराजि धिराजि माहाराजिधीराजि श्री राज संघ जी लिषावतं जुहार वाचीजो अठारा समाचार श्री जी री कीरपा थे भला छै राजिरा सदा भला चाहीजे राजि म्हो घणी वात छो राजि उपराइत काई वात न छै सो कागद में कासू मनुहार लीषां अठै घोडो रजपूत छै सो राजिरा काम नै छे अपरंची हजूर सूं लिष्या पढ्या आया त्यामै आपरे वासते लिष्यो छो तीण सूँ आपरी तरफू सूँ ऊठे खातर जमा हुई छै कुछ फुरमायो छै सो षधारोत महासंघ जी तथा सौलंषी सवलो अरज करसी या बात कूडा ठैहरी छै म्हांने राज सू जुदा न जाणै या वात ग्है रावरी लिष मेल्है आप आगे भली मसलहेत करी जो अजमेर न पधारया भावे आप या मसलहेत ठैहराई भावे किण ही ठकुर तथा मुतसदी अरज की आसाढ़ सुदी १ संवत १७६६

उदाहरण ३

॥ श्रीनाथजी किशनगढ़

॥ सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई जैसिंघ जी जोग्य महाराज कंवार श्री साँवत संघ जी लिषावतँ जुहार अवधारज्यौ अठारा समाचार श्री जी की क्रिपा सूँ भला छैः आप का सदा भला चाही जेः आप बडा है : सदा क्रिपा हित

राषै है : तीसूँ बिसेष रषाव्ँला : अपरंच राठौड़ सिंभूसंघ: उकील (वकील) गजसिंघ : सारा समाचार भाई वहादर संघ का ईरादा का एकंत जाहर करसी: म्हांकै तौ सारौ व्यौहार आपही को है : अर भरोसो आप ही को है तीसूं या ने जवाब दे सिंभूसंघ नै सिताव रुषतस करैला : बाकुड़ता कागज समाचार दिराव्ँला मिती पोस वदि १४ संवत १७६६

उदाहरण सं० २, ४ तत्कालीन रियासती सम्बन्धों को उजागर करनेवाले हैं। 'राजि म्हारै घणी बात छो', 'आप बड़ा है सदा क्रिपा हित राषे है', 'म्हांके तौ सारौ व्यौहार आपही को है' जैसे वाक्यों का प्रत्येक पत्र में विद्यमान रहना, अपनी निष्ठा का प्रकटीकरण है तथा ये राजसी सम्बन्धों की जीवंत श्रृंखला की कड़ियाँ हैं।

चारों उदाहरणों में संस्कृत शब्दों के निम्नलिखित प्रचलित तत्सम तथा तद्भव रूप मिलते हैं। देशज शब्द भी पृथक् किए गए हैं।

तत्सम : श्री, सदा

तद्भव : सिधि, माहाराजाधीराजि, माहाराजा, जोग्य, जोग, लिषावतं, वाचीजो, वांचीजो, कीरपा, राजिरा, समाचार, बात, लीषा, लिष्या, व्यौहार, पढ्या।

देशज : अठारा, भला, चाहीजै, म्होरौ, घणी, भला, सारा, उपराइत, पोहोचसी, दूजाइगी।

उदाहरण ४

॥ श्री गोपालरायजी   किशनगढ़

॥ : ॥ सिधि श्री महाराजा धीराजिमहाराजा श्रीसवाई जैसंघ जी जोग्य महाराजाधीराजि माहाराजा श्री गजसंघ जी लिषावतं जुहार वांचीजो अठारा समाचार श्री जी री कीरपा थे भला छै राजि रा सदा भला चाहीजे अठा उठा का व्योहार में—दूजाईगी न छै अठा लायक कांम काज होय् सो लिषावो करौला अपरंची फूरमांन दसषत षास हजरत के ईनाईत हुयो है सो भेजोहै सो पोहोचसी ओर हजरत आपसू वोहोत मेहरवान है सो सव वाता सूषातर जमां राषेला और हजरत कांम की ताकीद वोहोत फरमावै छाती कीतो आप ऊठै रात दीन वजीद छौ ही कांम सीताव फैसल होसी ही और फरमांन का जवाव में अरजदासत भेजैलां और ऐक फरमांन की रसीद की फरद मोहर कर म्हाँ कनोरै मैलै ला और हकीकत कंवर वीजैसंघ जी वापचोली रूपाम संघ जाहर करसी वाहुड़ता कागद सँमाचार लीषावतारहीजो मीती असाढ वदी १० स १७७४

टिप्पणी—'अठा उठा का व्योहार में दूजाईगी न छै', 'अठा लायक कांम काज होय सो लिषावो करौला' आदि वाक्य उदाहरण सं० २ में उल्लिखित वाक्यों के समान है।

कामकाज शब्द आज भी इसी अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है जिसमें यहाँ हुआ है। किशनगढ़ के पत्रों में संवत् १७६६ से १७९९ तक अरबी / फ़ारसी शब्दों का बाहुल्य मिलता है।

खातर जमा—यह शब्द अरबी/फ़ारसी के ख़ातिरनशीं विशेषण का पर्यायवाची है जिसका अर्थ हृदय में जमनेवाली बात या हृदयंगम है।

फुरमायो—फ़ारसी के फ़र्मा शब्द से यह शब्द बना है। फ़र्मा का अर्थ आज्ञा, राजादेश है। यह शब्द आजकल भी प्रयुक्त होता है।

अरज—अरबी के स्त्रीलिंग शब्द अर्ज़ का तद्भव रूप है जिसका अर्थ प्रार्थना है। अभी तो प्रचलन में है।

जुदा—फ़ारसी का विशेषण है जिसका अर्थ पृथक् है। अभी भी प्रचलित है।

मसलहेत—अरबी का पुल्लिग शब्द 'मस्लहत' है जिसका अर्थ दूरंदेशी है। यह शब्द आजकल प्रचलित नहीं है।

मुतसदी—अरबी का विशेषण मुतसद्दी है जिसका अर्थ प्रबन्धक, अभिकर्ता, पेशकार है।

लायक—अरबी का विशेषण लाइक़ है जिसका अर्थ योग्य है। यह शब्द उसका तद्भव रूप है और प्रचलित है।

दसषत—फ़ारसी के दस्तख़त का तद्भव रूप है, अर्थ है हस्ताक्षर। यह प्रचलित है।

खास—अरबी के विशेषण ख़ास (ख़ास्स) का तद्भव रूप है जिसका अर्थ विशेष है। यह प्रचलित है।

हजरत—अरबी के पुल्लिग शब्द 'हज़्रत' का तद्भव रूप है जो किसी बड़े व्यक्ति के नाम से पहले सम्मानार्थ लगता है। प्रचलन में है।

ईनाईत—अरबी के स्त्रीलिंग शब्द 'इनायत' का तद्भव रूप है जिसका अर्थ कृपा, दया है। यह प्रचलित है।

मेहरवान—फ़ारसी का विशेषण मेह्रबान है जो प्रचलित है।

षातरजमाँ—यह पूर्व-वर्णित खातर जमा का लिखने का दूसरा ढंग है।

ताकीद—अरबी का तत्सम शब्द है जिसका अर्थ कोई बात जोर देकर कहना है। प्रचलित है।

वजीद—सम्भवत: अरबी शब्द वज्द (आनन्दाधिक्य) या वज़ीद: फ़ारसी शब्द से बना है जिसका अर्थ चली हुई वायु है।

फैसल—अरबी विशेषण है—फ़ैसल जिसका अर्थ है निर्णीत।

फरमांन—फ़ारसी के फ़र्मा शब्द का तद्भव रूप है।

जवाव—अरबी पुल्लिग शब्द है। अर्थ है उत्तर।

अरजदासत—अरवी/फ़ारसी के अर्ज़दाश्त शब्द से बना है जिसका अर्थ है प्रार्थना-पत्र—इस रूप में अप्रचलित है।

रसीद—फ़ारसी का शब्द है जिसका अर्थ है प्राप्ति—प्रचलित है।

फरद—अरबी का पुल्लिग शब्द फ़र्द है जिसका अर्थ एकाकी, अकेला है या चादर है।

फ़ारसी का स्त्रीलिंग शब्द फ़र्द है जिसका अर्थ हिसाब का रजिस्टर है।

उदाहरण ५

श्रीलिक्ष्मीनारांयणजी बीकानेर

स्वस्ति श्री माहाराजाधिराज माहाराज श्री सवाई माधोसिंघ जी जोग्य माहाराजाधिराज माहाराजा श्री गजसिंघ लिषावतं जुहार वाचजो अठारा समाचार श्री जी री सु नजर सु भला छै राज रा सदा भला चाहीजै अप्रांच राज वडा छो म्हारै घणी बात छो सदा हित प्यार राषो छो तिणसु विसेष राषजो तथा कागद राज रो आयो वाचीयां सु षुसाली हुई और हकीकत व्यास भवानी मालूंम करसी अठै पाँच घोडा रजपुत छै सौ राज रै कांमनु छै अठै उठ रो ईक विहार करजांण जो जुदागी किणी बात री न जाण सो बोहडतो कागद दे जो मिती आसाढ वद ५ सं० १८०६ मु० गाँ बँगोई

इष्टदेव श्री लक्ष्मीनारायण जी को लिक्ष्मीनारांयण जी लिखा गया है। किशनगढ़ के पूर्वोल्लिखित पत्रों की भाँति 'अठै पाँच घोडा रजपुत छै सो राजरे कांमनु छै' वाक्य का प्रयोग हुआ है किन्तु उदाहरण सं० २ में 'सो राजिरा काम नै छे' लिखा गया है। यह अन्तर बोली के परिवर्तन का संकेत है। पत्रों की भावना लगभग एक जैसी है।

उदाहरण ६

॥श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजराजेंद्रसवाइतो
॥ध्यांरांघजीजोग्यलिषतंश्रीपंडीतरामचंद्रगणेशरावाश्रीवीसा
॥जीकुशलक्षेमआसीर्बादवंचनेआठाकासमाचारभलाछेनाऊका
॥भलाचाहिजेअप्रंचषलितराजका ग्यापरमआनंदहुयेयासी
॥वजीरामचालागलाचेनरायनेसमाचारजाहीरकीयासोमालुम
॥हुवाश्रीमंतमुख्यप्रधानश्री रावसाहेबवाआपकेघराणेका
॥यकलगासकदीमचलाआयाहेसोछीपानहीकहेसोजाणीय
॥वेसीवातनहीओरभठजीश्रीराजासदासीवजीनेसमाचारली
॥ष्याछेसोअरजकीरेकावासीवजीरमवाचेनरायहकीकतआप
॥णाकागदकेमाफीकम्हासुजाहरकरेकामीतीश्रावणसुदीद
॥संवत१८२६मुःनरषेआपालपेतीनाउावहमकायातेरि

उदाहरण ७

श्री रामं जी कोटा
श्री लछमी नाराईन जी

श्री ऋसं

सीधी श्री माहाराजीधीराजी महाराजा श्री सवाई माधो सीघ जी जोगी लीषाईतं माहाराव् जी श्री दुरजंन साल जो केणी···वंचीजो जी अठा का संमाचार श्री·········जी की ऋपा सु तथा माहाराजी की महरबानगी सु भला छै जी माहाराजी का संमाचार सदा आरोगी चाहाजे जी तो प्रम संतोष होई जी अप्रंची माहाराजी बङा छो हेत महरवानंगी हंमेसा राषो (राखो) छो जी सु वीसेष (विशेष) रषावजो (रखावजो) जी अर वौर संमाचार तो आग लषावा (लिखा हुवा) छै सु पोहोचा (पहुँचा) ई हो सी अर अठाई की फोज मोकल छा सुफेरी षवरी (खबरी) आई दषनी (दक्खिनी) सा राजपुर सु नं जी मुजाई पङा छै तो ऊपरी श्री दीवान जी इसी लषाव्यो (लिखावयो) छै सु उठा की तथा अठा की दोनु आछी शेजलारही आव् छै उठा का तपसीलवार संमाचार लीषी फुरमावोगा अठ वुहर माहाराजी को छै महरबानगी करी कागल संमाचार लीषावोगा मी ० पोस बुदी १२ संवत १८१०

उदाहरण ८

श्री रामं कोटा
श्री लछंमी नाराईन जी

श्री ऋसं

सीधी श्री सरवोपमा जोगी राज राजेईन्द्र माहाराजाधीराज माहाराजा श्री सवाई प्रथीसीघ जी जोगी लीषाईतं (लीखाईतं) महाराव् जी श्री उमेदसीघ जी केनी·········बंचीजो अठा का समाचार श्री·········जी की ऋपा तथा माहाराजी की महरवानंगी सुभला छ जी माहाराजी का संमाचार सदा आरोगी चाहीजे तो प्रम संतोष होई जो अप्रंची माहाराजी वङा छो हेत महरवा-नंगी हंमेसा राषो (राखो) छो जी सु वीसेष रषावजो जी माहाराजी को कागज आयो संमाचार वाची सुन माहाराजी इमीला को सो सुष (सुख) हुवो जी अठ बुहार माहाराजी को छै माहाराव जी श्री गुमान सीघ जी वकुट पधारा तथा वीसेस चंता (पिता) न उरवाक वासत लीषो (लिखो) छो सु हुई जातो श्री ठाकुर जी की अंछा (इच्छा) महाराजी ईीदुसथान (हिन्दुस्थान) का सीरदार छै अठा सु महरवानंगी संदीव सु वीखेस फुरमावगा अठ सारी त्रह (तरह) हुकंम माहाराजी ई को जानोगा।

वीसेस संमाचार वास गोपाल रामं जी की अरजदासती सु मालुम होसी

महरवानंगी करी कागल संमाचार लीषावोगा जी मती बैसाष बुदी १२ सवत १८२७ मु० नंदगाव

टिप्पणी—वकुट=बैकुण्ठ, त्रह=तरह, मती=मिति, ईदुसथान=हिन्दुस्थान, अंछा=इच्छा।

उदाहरण ६

॥ श्रीरामचन्द्रो जयति ॥ इन्दौर

सिध श्री माहाराजधीराज राज राजेंद्र माहाराज श्रीसवाइ प्रतापसिंघ जी जोग्य श्री राव तुकोजी होलकर केन्य श्रीबांचजो अठा का समाचार भला छै राज का सदा भला चाहीजे तो परम सुष होय अपरंच कागद राज को आयो घणी षुस्याली हुई केतायेक समाचार इषलास बेहार का महता संभूराम सो कह्न्या था सो मसारनीले के लीषे से मुफसल मालुम हुवा राज को ह्याको कदीम सुरीत स्नेह की इसी भाँत चली आई है तफावत कीसी बात को रख्यो नहीं और वीशेष समाचार मसारनीले जाहर करसी हमेस कागद समाचार लीषावता रहोला मीती भाद्रपद बदी १० समत् १८४०

तत्कालीन पत्र-लेखन की यह सामान्य विशेषता रही कि लिखते समय सभी अक्षर एक ही शिरोरेखा के अन्तर्गत लिखे जाते थे और पत्र में से शब्दों को अलग करके उसका आशय समझने का कार्य पत्र-वाचक का रहता था। उन दिनों तो इन का आशय निकालना कठिन नहीं रहता था किन्तु सैकड़ों वर्ष के पश्चात् इन्हें पढ़-कर अलग-अलग शब्द लिखना श्रमसाध्य हो गया है।

पत्र में 'आयो' क्रिया व्रजभाषा की ओकारान्त शैली का द्योतक और 'आगे' हुई, 'कह्या था', 'हुवा' आदि खड़ीबोली रूप के हैं।

उदाहरण १०

श्री गोपालजी करौली

सिधि श्री महाराजा धिराजा महाराजा श्री सवाई प्रतापसिंह जी देवजोग्य लिषाई·········श्रीमानिकपाल जी बहादुर यदकुलचंद्रभाल को मुजरा······के समाचार श्री जी किरपा सो भले है आपुके सुष समाचार सदैव भले चाहिजे तो परम आनंद होइ अप्रंच दस घोड़ा रजपूत है सो दरवार के चाकर है हित स्नेह राषियत है तो से विसेस रषाऐर रहियोगो कागद आपुको आयो·········रिजाने-लिषी ही के ब्यौरे दुलीचन्द के लिषा सो जानोला सो याने लिषी के इस-माइल अेबा उदेराम बिदा कीने है सो समीतिरफ ठीक करी सामिल हे के दबार की चाकरी कीजो ताको चाकरी तो हम हमेसा वाही घर की कीनी है ताको ब्योरादौलतिराम वा दुलीचंद अरज करेंगे सो अमल में लाइयेगो वहा सो दोए चार सुवार अछै

भेजियेगा सौयार की······कोमा रिके अल करा दीजो·······दरबार के हुकम सवाई दूसरी बात न जानियेगो सब प्रकार आग्या आपकी है सदैव स्नेह करी कागद समाचार लिषाएरेहियेगो मिती भादवा बदी ६ संम्त १८४४

·········अस्पष्ट भाग

टिप्पणी—पत्र में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्द प्रशासनिक पत्रों के साहित्यिक सौन्दर्य और हित-भाव का दिग्दर्शन कराते हैं।

श्री गोपाल जी, सिधि श्री, महाराजाधिराज, देव, यदुकुल चंद्रभाल, समाचार, श्री जी, भले, सुष, सदैव, परम, आनंद, दस घोडा रजपूत, सो, दरवार, चाकर, हित, स्नेह, कागद, ब्योरे, बिदा, वाही घर, अरज, अमल, मिती।

भाषा में लालित्य तत्सम शब्दों यथा यदुकुल चन्द्र भाल, सदैव से तथा परम, हित, स्नेह आदि शब्दों से पत्र में साहित्यिक सौन्दर्य आ गया है। पत्र में अरबी/फ़ारसी शब्दों का अभाव सा है। किन्तु संस्कृत से तद्भव शब्दों का बाहुल्य है। उदाहरणार्थ—जोग्य, किरपा, विसेस, आग्या, सुवार आदि। 'सुवार' शब्द 'असवार' से निकला है। 'असवार' शब्द 'अश्वारोही' से आया है।

उदाहरण ११

॥ श्री राम जी। इन्दौर

॥ सीध श्री राव् च्यतुरभुज जोग लीषतं श्री माहाराज धीराज माहाराज श्री सुबादार जसवत राव हुलकर आलीजाहा वाहादुर के राम राम वंच्या हया के स्माच्यार भले है तुम्हारे स्माच्यार भले चाहीजे आप्रच्य कागद तुम्हारो भाउ भासकर के नाव् आयो सो तुम्हारे लीषने माकूफ सरकार से पैहल सब जगे में से थाने बुलाय लीने वा घर से कदीमे से व्याव्हार सो दीन (दिन) प्रत (प्रति) जादे है आब सवारी वा तरफू आव् है सो वंदवस्त रहेगो और सवारी भरतपुर से आय् थे आगरेज ने रनजीत सीग का काजी से कोल करार करे है सो उन वातन में कौन से मतालब भये और कौन से मतालब होने है सो लीषोगे काकाजी के मतालब हासल होने की हमको षुसी है वो जगे है सो सीर की है आब षरची के तरफू से वेहबुदी करी है सो जलद आवने का ईरादा है ता से तुम काकाजी से कहे दीजो के पैसा के बावन कछु सधेहे न करे जीस माफूक व्येव्हार है सो पको (पक्का) बनो रहै उस में सब आछी बात है और स्माच्यार भाउ के लीषन से जानोगे मीती वैसाष सुदी १ संवत १८६२

कागद जसुतरा
वतर का

जोग

टिप्पणी—हया=यहाँ, नाव्=नाम (जिस प्रकार ग्राम का गाँव बना है वैसे ही नाम का नाव् हुआ है), माकूफ=मवाफ़िक, आगरेज=अंग्रेज सधेहे=संदेह

उदाहरण सं० ११ का पत्र यशवंतराव होल्कर ने जयपुर के राव चतुर्भुज को लिखा है जिसमें अंग्रेजों की महाराजा रणजीतसिंह के काजी से कौल करार करने की चर्चा की है।

उदाहरण १२

श्री रांम जी बूँदी
श्री पातांबर जी

सिधि श्री सरबवोपमा राज राजंद्र माहाराजाधिराज माहाराजे राजा जी श्री सीवाइी जगतसंघ जी जोग लीषईंत माहाराजाधिराज राव राजा श्री बिसन सिंघ जी केनि जूहार बंच्या अठा का समाचार श्री·········जी की क्रॅपा सू भला छ आपका सूष समाचार सदा अरोग्यै चाहीज्यै अप्रचि आप बङा छो क्रॅपा बोहार ऐकता राषो छो तीसू बसेस रषावज्यो वोर आ दना म कागद समाचार व आध्वा सो हमेसा लीषावोगा अठ बोहार आप को छ वोर समाचार बास आतमाराम मालूम करसी मी० म्हा बूद ११ संवत १८६५

टिप्पणी—पत्र में 'और' के स्थान पर 'वोर' का प्रयोग द्रष्टव्य है जो बूँदी के संवत् १८८७ के उदाहरण सं० १३ में भी मिलता है। इन दोनों उदाहरणों में 'कृपा' शब्द 'क्रॅपा' लिखा गया है। या तो लेखक एक ही रहा होगा या पीछे की नकल करके लिखने की प्रवृत्ति रही होगी।

उदाहरण १३

श्री रांम जी बूँदी
श्री पातांबर जी

सिधि श्री सरबवोपमा जोग्य राज राजंद्र माहाराजाधिर महाराज राज राजा जी श्री सीवाई जसिंघ जी जोग्य लीषायत ×××× राजधिराज राव राजा श्री राम सिंघ जी केनि जुहार बंच्या ×××× का समाचार श्री·········जी की क्रॅपा सु भला छ सुष समाचार सदा आरोग्ये चाहीजै अप्रंचि आप ब ××× महरवानगी एकता राषो छो ती सु बसेस राषो×××× कागद आयो समाचार बाच्या कागद समाचार न पाहो ×××× की लषी सो आपह ही न लषाम तो कुनीह लषा ××× कागद सु मालुम हुवा तीको द्र जुवाब या का कागद सु ×××× होसी बोर कागद समाचार हमेस लषावोगा की ×××× सुदी १ संवत १८८७

टिप्पणी—×××× फटा भाग

(ख) राजस्व

राजस्व का अर्थ राज्य-कर, लगान, मालगुजारी और राज्य की वार्षिक आय आदि होता है। वर्तमान में लक्ष्य राजस्व की परिभाषा करना नहीं है, अपितु विषय को स्पष्ट करने के लिए यह वांछित है। राजस्व के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग होते हुए भी विगत लगभग दो-तीन शताब्दियों से अरबी/फ़ारसी के शब्दों का बाहुल्य रहा है। इसका मुख्य कारण अकबर द्वारा लागू की गई भूमि सम्बन्धी नई व्यवस्थाएँ हैं जिसके कारण विदेशी शब्दों का विशिष्ट स्थान बना। राज्य उपज का एक तिहाई भाग लगान के रूप में वसूल करता था। भूमि के लगान का लेखा बड़ी सावधानी से रखा जाने लगा। कुछ अधिकारियों को लगान के अनुदान से वेतन दिया जाने लगा।

उदाहरण सं० १ में सन् १६८३ ई० में वगैरह, साल, ईजारे, षिदमति, गुमासता, लवाजिमा, ज्मा, हजूरि, दाषिल, अरज आदि शब्दों की प्रधानता मिलती है। जयपुर रियासत में भाषा में, सामान्यतः अरबी, फारसी शब्द अन्य रियासतों की अपेक्षा अधिक पहले तथा अधिक संख्या में प्रविष्ट हुए। इसका प्रमुख कारण जयपुर की मुगलों के साथ घनिष्ठता ही है।

उदाहरण १

श्रीरामसिंघ जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री जी देव् चरणं कमलाँन वंदा षाँनाजाद दीपचंद केनि चरणां धोक अव्धारिज्योजी अैठा का समांचार श्री महाराजाजी का पुनि परताप थे भला छै जी श्री महाराजा जी का घडी घडी का सदा आरोग्य चाहिजे जी अपरचं श्री महाराजाजी सलामति परगनै नेवचूणि भेराणां कर गांव जागीर अवदुलालापाँ वगैरह नागनपठांणां का व् किसोरस्यंघ राठोड का गोपालदास राजावत व सगही अजितदास संवत १७३९ का साल में सरकार मैं ईजारे लीया था—अर षिदमति मीते सौंपी थी सो षरीफ को काम मैं कीयो ऊ षरीफ ० ० ० रुपया ७८४० ।।। टका ३२४९ रुपया सात हजार आठ सौ चालीस आना पौणां पाँच टकां तीन हजार दोय से उणचास नकै हुवा त्या में जागीरदारां का गुमासता ने ईजारौ लेता व और लवाजिमा कौ षरच मुत सघा कीसन दिसो रु० २२०९।। दोई हजार दोई सै साढा नौ हुवा सो सीगा वार धौरौ कागद ज्मा कौ वरव १४ हजूरि भेजी छै तीमे दाषिल छै ती सौ अरज पहोचैली।

० ० ० मिटा भाग

मिती असोज वदि १३ सवंत १७४०

टिप्पणी—उदाहरण सं० १ इतना प्राचीन है, इसमें 'ईजारे लीया था', 'सौंपी थी', 'हूवा' आदि खड़ीबोली के प्रयोग हैं।

पत्र में मारवाड़ी और खड़ीवोली के मिश्रित प्रयोग के साथ अरवी/फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। 'ईजारै' शब्द को पत्र में आगे 'ईजारौ' लिखा गया है। 'इज़ारः' शब्द अरबी की संज्ञा (पुल्लिग) है जिसका अर्थ ठेका बताया गया है।

यह पत्र सरकार की आय-व्यय सम्बन्धी कारगुजारियों का ठोस उदाहरण है जिससे जयपुर में ईसा की सत्रहवीं शताब्दी में गद्य की भाषा और शब्दावली का पता चलता है।

उदाहरण सं० २ में भी ईजारदारा शब्द का प्रयोग हुआ है। पत्र में 'पहुंच ली' का रूप 'पौहचैली' विशेषतः द्रष्टव्य है। 'ईजारदारा सु ताकीद करा दीई छै' वाक्य में 'ताकीद' शब्द अरवी स्त्रीलिंग है जिसका अर्थ 'किसी बात को जोर देकर कहना' है। शब्द आज भी लगभग इसी अर्थ में प्रचलित है। पत्र में 'आयो' तथा 'आपकौ' प्रयोग व्रजभाषा के हैं।

उदाहरण २

श्रीराईजी

सिधि श्री सरववौपमां वीराजमान दीवान जी श्री मुरलीधर जी दीवान जी श्री स्योवनाथ जी जौगी लीषतं रतनचंद फतेराम केन्य मुजरौ औधारीज्यो जी अैठा का समाचार भला छै आपका सदा आरोगी चाहीज्ये जी अप्रची कागद आपकौ आयो जो रसत सवाई जैपुर भेजीज्यौ सो मा लीषे सवाई जैपुर पौहचैलीजी औठी नेनजावा दीज्येली और ईजारदारा सु ताकीदु करीदीई छै सो हासीलमा दसतुर लेवा दीज्यैलो जी मीती मागश्र वदि ११ संवत १८१२

दीवांन जी श्री स्यौनाथ जी

दीवांन जी जोग्य

म० दनोसावा० र

सती

उदाहरण सं० २ तथा ३ में यह देखने में आया है कि पत्रों में व्रजभाषा का प्रयोग हुआ है। मारवाड़ी भी उदाहरण सं० २ में प्रारम्भ में आ गई है।

उदाहरण ३

॥ श्रीमदन मोंहनजी ॥ करौली

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई माधवसिंघ जी जोग्य लिषातं श्री राजागोपालसिंघ जी केन्यु मुजरा कृपा कर वंच्या ह्यां के समाचार श्री जी की कृपा सौं भले हैं आपके सुष स्मांचार सदा भले चाहीयै तौ हंमकौं प्रंम आनंद

होई अप्रंच ह्यां सव तरह हुकंम श्री महाराज कौ ही है महाराज वडे है हंम वा दरबार के हमेंसा सौ रजपूत है ह्यां घोरौ रजपूत है सो वा दरवार के काम के है और कागद श्री महाराज कौ आयो समांचार जानै लिषी ही इन दिनांन में कागद समांचार नहीं लिषे सो श्री महाराज को न लिषैगे तो कौन कौ लिषैगे और समांचार मिश्र मोजीराम जी कौ प्रवानौ आयो तामैं लिषे है सो ऊनेकहे वेहड के गुजरन बाबत लिषी सौ वे आगै इनही फैलन के सबव वे वतन कर दीने है हिडौंन के हीगांवन भेजाइ बेठे ह्यां सौ आ मिल करै लिषी कि इन को ऊंहां मत राषो सो उन राषेज्यूव बिना इतलाइ गुजर वेहड मे फेर आइ वेठे सो फेर निकाल दीजेंगे आमिल कौ राजीनामां पौहचैगौ और मुतसिल हिडौन के गाँव लग रहे हैं उँन में इंन के मानस तो बैठे ही है और येहं उंहां ही फेर जाइ वैठेंगे तो फेर बद फैली करे बिनाँ न रहैगें सो आमिल को हुकंम पोहचेगौ सो गुजर वा प्रगनेमै भी रहै नही और सवाइी जैपुर की जरवके रुपया म्हां परायो चाहै है सो टकसाल के कारीगर दोइ को ह्यां अबनै कौ हुकंम पौहचैगौ और समाचांर मिश्र मौजीरांम जी की अरजदासत सौ जाहर हौइगे और कागद समांचार हमेस लिषित रहीयैंगे मिती कातिग सुदी १३ संवत १८१३

टिप्पणी—उपर्युक्त उदाहरण में टकसाल (टंकशाला) के दो कारीगरों की चर्चा भी की गई है। कुछ गूजरों को बेवतन (देश-निकाला) करने की चर्चा भी हुई है।

पत्र की भाषा प्रचलित है और इसमें पंडितों की भाषा का अभाव है। पत्र में तद्भव शब्दों के साथ-साथ तत्सम शब्द भी आए हैं। उनकी वर्तनी में अवश्य हेर-फेर हुई है। जैसे 'परम' को प्रम, कहीं 'समांचार' तो कहीं 'स्मांचार' भी लिख दिया गया है।

घोरौ, को, आयो, प्रवानो (परवाना), आदि प्रयोग व्रजभाषा के हैं। किन्तु खड़ीबोली भी आ गई है जैसे—'फेर आइ वेठे', 'हिडौन के गांव लग रहे हैं उनमें इंनके मानस तो बेठे ही है', 'तो फेर बदफैली करे बिनां न रहैंगे'। स्पष्टत: सम्पूर्ण राजस्थान में ईसा की सोलहवीं, सत्रहवीं शताब्दियों में मिले उदाहरणों से भाषा के मिश्रितपन यथा मारवाड़ी, व्रजभाषा, खड़ीबोली के मिश्रण की पुष्टि होती है।

पत्रों में उदाहरण सं० १ में 'टका' तो उदाहरण सं० ३ में 'रुपया' शब्द का प्रयोग हुआ है।

उदाहरण ४

का मुकाम स्वाइी ज्यपुर
रजु दफ्तर दीवाण सींघीजीवराज
रजु दफ्तर दीवाण

रजु दफ्तर काजी छीघरम्स्मद मुसतोफीहजुरी

द० मवजनैल द० मवाजनैल

नकल लीषी रजु दफ्तर

पीरोहत मोतीराम आमील

श्री रां जू // श्री रां जै

सही—

अपठनीय

सीधै श्री म्हाराजाधीराज म्हाराजा श्री सवाइी प्रताबै संघ जी देव बचनात कमैती प्रगनां सवाई जै प्रकाद से सूप्रसाद बंचना अप्रंची बाबत का व् रांव् कुंस्या-लीराम छाजुराम का माहजन ने जो मुवाफीक यादवास्ती में दसषत दीवाना यानकरार मीती मागश्र सुदी १३ समत १८३९ अरज यो छी जोगाव् मोठीवास जाहोता वगैरह तपाककाङ परगना सवाइी जयपुर का बषस्या सो तुमदेवा रवी सो फुमावा छा गाव् मोठीवास जाहीता वगेहरे तपाकाकाङ परगना स्वाइी जयपुर कातन भुामी वगेरह सुधाइी पतदाय् समत १८३९ घे सीगे तुदीके केंजाणी हासीलह वाले करावो कीजो माह का बन्सकारीका बन्स का सुदुरने करसी अर प्रत वरष नवो प्रवानी मत माज जोडी हीतावां पत्रसु हीसाब में मुजरा होयलासी लीकसी व दतरान परदतरान चयं लुनन्त वसुन्दरातेन्रा नरकमयान्ती यावत चन्दर देवाकरे-मुकर गाव् मुजकोर वगेरह मुवाफीक तफसील गाव् मोठीवास जाहीतातन भोमवा गाव् अटल भीयारी पुरावास कोठी तगेरह सुधा रुपया ४४२० को रोकत भोम वगेरह सुधा रुपया २००० को मुवाफीक याददास्ती में दसषत षास वांदी दीवान यान मीती मांगश्रुर पुनो समबत १८३९

टिप्पणियाँ—उपर्युक्य पत्र में सुदुरने = सुधारने

अर = और

प्रत = प्रति

भियारी पुरा = बिहारीपुरा

नरकम = नर्कम्

यावत चन्दर देवाकरे = यावच्चन्द्र दिवाकरौ

आदि सुंदर शब्दावली प्रयोग देशज रूप में है। खड़ीबोली क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी और के स्थान पर 'अर' बोला जाता है।

लेखक भाषा का अल्पज्ञ रहा होगा क्योंकि शब्दों के लेखन में अनेक त्रुटियाँ हुई हैं। यद्यपि यावच्चन्द्रदिवाकरौ जैसी पदावली का प्रयोग किया किन्तु उसे भी 'यावत चन्दर देवाकरे' लिखकर अपनी अल्पज्ञता का परिचय दिया है।

यह ध्यान देने योग्य है कि माह, दसषत, माहजन, मुवाफीक, प्रत, वरष,

नरकम, वगेरह, मांगश्रुर (मंगसिर) (मार्गशीर्ष) आदि शब्द ऐसे प्रचलित हैं कि आज तक भाषा में अपना स्थान बनाए हुए हैं। वस्तुतः सरल शब्दों के टिके रहने की सम्भावना अधिक रहती है। अरबी/फ़ारसी के कठिन शब्द यथा उदाहरण सं० ६ में रोजीना आदि लुप्त होते जाते हैं। रुक्का याददाश्त के लिए लिखा गया है।

उदाहरण ५

॥ श्री राम जी ॥ श्री राम जी ॥

रु० ४००   सी०ई०ग्रो

मा०द० बासकरी

यादिदासति वषसी बाल मुकंदनै पालकी वणावा वास्तै सीगै ईनाम कै रूपया देवा को हूकम हूवो सो दसकता को उमेदवार मिती वैसाष सुदी १४ सा० संवत १८५४

प्र० राव रतन लाल

मि० जेठ सू० ८ दा स्याहै बकाया १४ दा० तु० कू०   रजू

मि० जेठ सू० सा सवत १८५४

उदाहरण सं० ६ में रोजीना शब्द अब प्रचलित नहीं रहा। यह फारसी रोज़ीनः शब्द का तद्भव रूप है जिसका अर्थ : हर रोज की तनख्वाह (एक दिन के हिसाब से मजदूरी) है।

उदाहरण सं० ५ में पालकी बनवाने के इनाम के ४०० रुपए दिए जाने की याददास्ति (अर्थात् अभिलेखार्थ अथवा पावती के प्रमाणार्थ) रखी गई। 'र' पर ह्रस्व उ की मात्रा को सुविधा की दृष्टि से 'र' के नीचे लगाकर लिखा गया है।

दोनों उदाहरणों में लेखक भाषा के अल्पज्ञ रहे होंगे क्योंकि वर्तनी में अनेक अशुद्धियाँ हैं; यथा उदाहरण सं० ६ में 'चतुर्भुज' के लिए 'चत्रभुज', 'राम' के लिए 'रांम', दसकती, दसकत, प्रगना जैसे शब्द लिखे गए हैं।

उदाहरण ६

॥ श्री राम जी

मा० ली० अमल दीज्यो

सिधि श्री आमिल प्रगना उजीरपुर का जोग्य लिषतं मेघस्यंघ दीवांन नोबंद-राम केन बंच्या अेंठा का समाचार भला छै थाका सदा भला चाहिजे अप्रंचि राव चत्रभुज राव षुस्याली रांम का म्हाजन का रोजीना ३५५/१०० माफिक फरद दसकती मैं दसकत षास के हूवा ती कीदा षाह मैगाविसोय वगो प्रगन ामजकूर का

ठाइ भाछै सो पानै अमल दीज्यो गांव मजकूर गांव मजकूर या भैज्या वेठसी सोई रोजाना मैं द्वी मीती वसाष, वद ३२ समत १८७××× का

××= छूटा भाग

उदाहरण ७

श्री राम जी

श्री राम जी
श्री महाराज धीराज
श्री सवाई रार्मास्यिह
जी सेवक राव दीवाण
गंगादास
×××× × → मुद्रा

××××अस्पष्ट

श्री दीवान वचनात मौ० टोङा ठेकला का जमीदार अत्र कसबा लालसोट मै बाग वैगरहै मकान चौधरी कुंजलाल बणैला पोछैती का षरच मै गाव मजकुर की ज्मी बीघा पचास की सनाहाली कोठी के मुतसलिदी छै

५०

पङते कोठीनीवै बीघा पचीस कतस ङोली बार बीघा पचीस रामा की

२५) २५)

ई ज्मी को हांसीमल बोआवै सो वस्क बाग कामै देवो कीज्यो साल वर साल अय दत्तंम प्रदत्तं मै जो नर मेटतै बसंदरा से नरै नरक जाये हे तो बलकै चंद्र देवाकरा जमी बीघा पचास छैर वैगरह की उदक की गाव मजकुर में हैसीम होये वजी बाग षरच मेलगाई छै सी कौ हासील क भारो देवो कीजो था सुई मुदे अङचल न्ही होसी मीती भादवा सद ७ सवत १९०७

टिप्पणी—उदाहरण सं० ७ में संस्कृत के निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग ध्यान देने योग्य है। जयपुर रियासत में यह प्रयोग सन् १८५० ई० के निकट विशेष महत्त्व इसलिए रखता है कि वहाँ अरबी/फ़ारसी शब्दों का प्रयोग बढ़ता ही रहा है।

संस्कृत शब्द

अत्र
दत्तंम
प्रदत्तं
नर
बंसंदरा (वसुंधरा)

भूमि के मापन में बीघा का प्रयोग भी उल्लेखनीय है। संख्याओं में 'पचास'

व 'पचीस' प्रयोग भी संवत् १७४० के उदाहरण सं० एक में हुए संख्याओं के प्रयोग आठ, नौ, चालीस, तीन आदि के अति प्राचीन प्रयोगों के साथ चलते रहे हैं।

यह ध्यान देना आवश्यक है कि प्राचीन पत्राचार में अर्थात् संवत् १७०० वि० से संवत् १९०७ वि० के मध्य हुए पत्राचार में हिजरी (इस्लामी) वर्ष का या महीनों का प्रचलन न हो सका किन्तु कालान्तर में अंग्रेजी तारीखों का प्रयोग अवश्य होने लगा।

(ग) विधि कार्य

जमीन-जायदाद के विवाद प्राचीन काल से ही न्यायाधिकरणों के अधीन रहे हैं। मध्य काल में तो भारत में रियासती जागीरदारी के विवादों ने प्रधानता प्राप्त की। गाँवों पर कब्जे और भूमि के विवाद प्रमुख हो गए। किन्तु जटिलतम विधि-कार्यों में हिन्दी का प्रयोग सतत् होता रहा।

उदाहरण सं० १ करौली की ओर से जयपुर को लिखा गया पत्र है। संवत् १७८३ में भाषा में खड़ीबोली का व्यापक प्रयोग हुआ है। उदाहरण सं० २ भी रियासत करौली की ओर से जयपुर को भेजा गया, भूमि विवाद सम्बन्धी पत्र है। इसमें जाहर, तहैतीक, हजूर, नालस, इनसाफ, हकीकत, अरज, हुकंम, हंमेस आदि शब्दों का प्रयोग संवत् १८१६ वि० अर्थात् सन् १७५९ ई० के निकट अरबी-फ़ारसी के प्रभाव के द्योतक हैं। उदाहरण सं० ३ जोधपुर से जयपुर को लिखा गया पत्र है। उदाहरण सं० २ में सरबऔपमा, जोग्य, आसीरवाद, तेज, प्रताप, विसेष, इचरज (अचरज), सरुप, विगत आदि शब्दों का प्रयोग ध्यान योग्य है। राजस्व के उदाहरण सं० ३ में संवत् १८१३ में और संवत् १८१६ वि० के विधि कार्य के उदाहरण सं० २ में मिश्र मौजीराम का नाम आया है। तत्कालीन जयपुर राज्य के वे बड़े अधिकारी रहे होंगे। दोनों में 'दरबार' शब्द की वर्तनी भिन्न है। संवत् १८१६ के पत्र में 'द्रवार' लिखा गया है। वर्तनी में एकरूपता का अभाव सामान्य बात है।

उदाहरण १

॥ सिधिश्रीमहाराजाधिराजेमहाराजाश्रीसवाईजेसिं
जूजोगिलिषाइतंश्रीराजागोपालसिंघजूकोमुजरावंचनौं
श्रीमहाराजकेसुषसमंचारदिनप्रतिघरीघरीकेसदांआरोग्यचा
हीयेतोहमकोंपरमआंनंदहोइ ह्यांकेसमंचारश्रीमहाराजकी
मेहरवानिगीतेंभलेहैंअप्रंचश्रीमहाराजकोआगेअरोषल
मंचारपाएश्रीमहाराजकेदरवारकेहमेसांरजपूतहैंह्यांकुछ
मुव्यौहारश्रीमहाराजहीकोहैश्रीमहाराजजागीरदाराने
वासेतफुरमायोहोसोपरगनेमहलकेदांमलाषवतीसह
दीमतहैंतामेंचौवीसलाषपिच्यासीहजारदामकेतोजागीर
दारानसोमांमुलोफेसलकीनोहैंराजामलवारावजगराम
केलियेमांफिकजागिरदारनिकीनावनवेसीसफीयांदाम
लाषफुनईससहैवाजवादरेगाऊवहैरीकोचारिलाषद
सहजारहफीजुलादामपचीसहजारमीरसेदअलीऐकलाष
पंचासहजारऐतोदामफेसलकीनेंहैंअवऐओरसेदनूरज
मारोदहजूरमहंमदगेदअवूलमहंमदसेदसुलतानवगैरहे
जागीरदारआसामीइकतीसलाषपेंतालीसदांमलिषाइ
लाऐहैंश्रीमहाराजकेआगेदुलाऐहैंसोह्यांसातलाषपैइहह
तारदांमपाईहैंश्रीमहाराजको हुकमु आवैताको देहिं और
राजारतनपालजूते   वरपालजूतेलकेअवमेरीगोरखा
समांनाकीमहाराजहीनेकीनीहैंश्रीमहाराजहीकेरंगेकृपा
मेहरवानिगीकरिआगदसमेंच्यारहमेसांफुरमावारहीयेगो

व 'पचीस' प्रयोग भी संवत् १७४० के उदाहरण सं० एक में हुए संख्याओं के प्रयोग आठ, नौ, चालीस, तीन आदि के अति प्राचीन प्रयोगों के साथ चलते रहे हैं।

यह ध्यान देना आवश्यक है कि प्राचीन पत्राचार में अर्थात् संवत् १७०० वि० से संवत् १९०७ वि० के मध्य हुए पत्राचार में हिजरी (इस्लामी) वर्ष का या महीनों का प्रचलन न हो सका किन्तु कालान्तर में अंग्रेजी तारीखों का प्रयोग अवश्य होने लगा।

(ग) विधि कार्य

जमीन-जायदाद के विवाद प्राचीन काल से ही न्यायाधिकरणों के अधीन रहे हैं। मध्य काल में तो भारत में रियासती जागीरदारी के विवादों ने प्रधानता प्राप्त की। गाँवों पर कब्जे और भूमि के विवाद प्रमुख हो गए। किन्तु जटिलतम विधि-कार्यों में हिन्दी का प्रयोग सतत् होता रहा।

उदाहरण सं० १ करौली की ओर से जयपुर को लिखा गया पत्र है। संवत् १७८३ में भाषा में खड़ीबोली का व्यापक प्रयोग हुआ है। उदाहरण सं० २ भी रियासत करौली की ओर से जयपुर को भेजा गया, भूमि विवाद सम्बन्धी पत्र है। इसमें जाहर, तहैतीक, हजूर, नालस, इनसाफ, हकीकत, अरज, हुकंम, हंमेस आदि शब्दों का प्रयोग संवत् १८१६ वि० अर्थात् सन् १७५९ ई० के निकट अरबी-फ़ारसी के प्रभाव के द्योतक हैं। उदाहरण सं० ३ जोधपुर से जयपुर को लिखा गया पत्र है। उदाहरण सं० २ में सरबऔपमा, जोग्य, आसीरवाद, तेज, प्रताप, विसेष, इचरज (अचरज), सरुप, विगत आदि शब्दों का प्रयोग ध्यान योग्य है। राजस्व के उदाहरण सं० ३ में संवत् १८१३ में और संवत् १८१६ वि० के विधि कार्य के उदाहरण सं० २ में मिश्र मौजीराम का नाम आया है। तत्कालीन जयपुर राज्य के वे बड़े अधिकारी रहे होंगे। दोनों में 'दरबार' शब्द की वर्तनी भिन्न है। संवत् १८१६ के पत्र में 'द्रवार' लिखा गया है। वर्तनी में एकरूपता का अभाव सामान्य बात है।

उदाहरण १

॥ सिधिश्रीमहाराजाधिराजमहाराजाश्रीसवाईजैसिं
जूजोगिलिषाइतंश्रीराजागोपालसिंघजूकोमुजरावंचनौं
श्रीमहाराजकेसुषसमंचारदिनप्रतिघरीघरीकेसदांआरोग्यचा
हीयेंतोहमओपरमेश्वरांनेदुहाइ स्यांकेसमंचारश्रीमहाराजकी
मेहरवानिगीतेंभलेहेंअप्रंचश्रीमहाराजकोआगदुआपेस
मंचारपाएश्रीमहाराजकेदरवारकेहमेसांरजपूतहेंस्यांकुछ
मुब्याहारश्रीमहाराजहीकोहेश्रीमहाराजजागीरदारानिके
वासेतफुरमायोहेसोपरगनेमहलकेदांमलाषबतीसक
दीमतेहैं ताँमें चोवीसलाषपिच्यासीहजारदांमकेतोजागीर
दारानिसोमांमुलोफैसलकीनोहैंराजामलवारारूजगराम
केलियेमाफिकजागीरदारनिकीनावनवेसीसफीयांदांम
लायकुनहीसलहैवाजवादरोगाऊबहेरीकेचारिलाषद
सहजारहफीजुलादांमपचीसहजारमीरसेदअलीएकलाष
पंचासहजारऐतोदांमफैसलकीनेहेंअबएओरसेदनूरज
मारोदहजरमहंमदगेदअबूलमहंमदसेदसुलतांनवगेरहे
जागीरदारआसामीइकतीसलाषपेंतालीसदांमलिषाइ
लाएहेंश्रीमहाराजकोआगदुलाएहेंसोत्यांसातलाषपैंइहह
जारदांमवाकीहेंश्रीमहाराजकोहुकमुआवेताकोदेहिओर
राजारतनपालजूते   वरपालजूतलेकेअबमेरीगोरसे
समांनाश्रीमहाराजहीनेकीनीहेंश्रीमहाराजहीकेरंगेकपा
मेहरवानिगीकेरिआगदसमंचारहमेसांफुरमावतरहीयेगो

उदाहरण २

।। श्रीमदनमोहनजी ।। करौली

सिधि श्री महाराजा धिराज महाराजा श्री सवाई माधवसिंघ जी जोग्य लिषाइतं महाराजा श्री तुलसीपाल जी के मुजरा बंच्या ह्यां के समाचार श्री जी की कृपा सौ भले हैं आपके सुष समांचार सदां भले चाहीयै तौहंम कौ प्रंम आंनद होई अप्रंच श्री महाराज वडे हैं हंम वा द्रवार के हंमेस के रजपूत है ह्यां घोरौ रजपूत है सो श्री महाराज के कांम के हैं और मिश्र मौजीरांमजी नैं लिषी कि हजूर मैं जाहर हूई श्री कँवरमॉनकपालजी नै उँदेही के गाँव चार मारे है सो या वात को तहैतीक करि लीजै एक पूमींन हजूर सौ आवै सो तहतीक करिजाइ युह वात सांची होई तौ और भी बीच के हमें ह्या की नालस करे है सौ सब सांची होइगी और नहीं तो अैसी ही तरहै हजूर में जाहर करे है या वात को इनसाफ कीजै और हकीकत मिश्र मु० इल्है अरज करैंगें ह्यां सब तरहै हुकंम श्री महाराजा धिराज ही को है कागद समांचार हंमेस लिषावत रहीयैगो मिती आसौज वदी संवत १८१६ मु० करौली।

पत्र में जाहर, तहैतीक, नालस, इनसाफ, हकीकत, हुकंम शब्दों का सम्बन्ध कानून से है और वर्तमान काल में भी ये शब्द पूर्ववत् प्रचलित हैं। वर्तनी में बदलाव तो सुव्यवस्थित भाषायी ज्ञान के अभाव के कारण होता है।

तहतीक —अरबी तहतीक से तद्भव है जिसका अर्थ जाँच-पड़ताल है।

नालस —फ़ारसी के स्त्रीलिंग शब्द नालिश से बना है जिसका अर्थ वाद या दावा है।

इनसाफ—यह शब्द अरबी के इंसाफ शब्द का तद्भव रूप है जिसका अर्थ न्याय है।

उदाहरण ३

श्री जलंधरनाथ जी सत्य छै जोधपुर

श्री महराजा जी

स्विस्ति श्री सरबओपमा जोग्य राव जी श्री चतुरभुज जी जोग्य जौधपुर सु ब्यास चतुरभुज लिषावतं आसीरवाद वांचसी अगरा समाचार श्री·········जी रा तेज प्रताप सिं भला छै राजरा सदा भला चाहीजै सदा हेते इकला सरषावौतिण था विशेष रषावसी

अपरंच श्री हजुर सु षास हुको राजरे नी वै इनायत हुवो सु नै कागद आसाढ सुद ४ चलोया छै सु पांहता इण मुकदमारो राजरो अजै स कागद आयो नहीं तिणरो इचरज है सु कोण कारण जैज हुई सु लिषसी उठै सारा सिरदारां रोजावणो हुवौ श्री म्हाराज निवाज स फुरमाई सु श्री षांवदां री मरजी श्री जु ही श्री· ····

जी राजरो ही जबाव दरम्यांन रषायौ सु इणा वातरी वडी षुसी हुई अवै उगरो सरुप विगत बार सलासहत लिषावणै श्री दरबार री मरजी ने फुरमावण आही थी कोई तरैस्यां रा

आगे नहीं पढ़ा गया १८६६ रा० असाढ सुद ७

॥ राव जी श्री चतुरभुज जी जी जौग्य जैपुर

इस उदाहरण की भाषा ठेठ ग्रामीण है। पत्र ग्रामीण बोली में ही लिख दिया गया है फिर भी पत्र का प्रारम्भ अन्य पत्रों की भाँति मंगलसूचक और आशीर्वादात्मक रूप में किया गया है। 'इस मुकदमे के सम्बन्ध में राज का कागज आज तक नहीं आया, आश्चर्य है, सो किस कारण' आदि भाव पत्र से निकलता है।

यह लिखना होगा कि खोजे गए पत्रों में अरबी/फ़ारसी के प्रचलित शब्द ही सैंकड़ों वर्षों से प्रयुक्त हुए और उन ही शब्दों की यात्रा दीर्घ रही। यदि कुछ अप्रचलित शब्द कहीं आए तो वे बाद में दिखाई नहीं दिए।

उदाहरण ४

श्री रामं जी

नकल षलीता मसत्रमटकलप साहिब वहादर नाम माहाराजे जगत स्यंघ वहाद्र चोथी माह जुन सन १८१३ ईसवी मुकदमे छुटावनै मकानु दुवीसी कराय वास्तै दोस्ती दोनु त्रफ (तरफ) के हमने कोसीस ब्वौत करी ईस वासतै की मुकदमा सीरकार तुम्हारी का है और त्रफ आपकी सै कछु जुहुर मै आया न्ही आदमी राव राजा वषतावर स्यंघ के सुरत राम प्रोहत वर षलाफ को ले हमारी सीरकार के त्रफ राव राजा की सै सुवाल जुवाव ईस मुकदमै का आगै तुम्हारै करना सईद पीछ वस के चाहना मकानात का हम सै फरमाते हो मुनास्व नहीं असल मुनासब ये है के सुरतराम प्रोहत या जो कोई कीमात मद राव राजा का होय सो वस जायगा सुषांरज होय और कोई जुवाव सवाल न करवा पावै और अलावै बस के जो राव राजा वहाद्र सी कराय के मुकदमे मै ऊजर करत है वे सज गेदषल राव सुषलाल का है और राव मजकुर आगे तुम्हारै हाजरी है सो बद केताइी भी समझाय दीय जाय अर।

अंग्रेज का नाम 'मसत्रमटकलप' लिखा गया है। स्पष्ट नहीं हो पाया कि यह सही नाम क्या है। किन्तु सन् १८१३ में अंग्रेज अधिकारी की ओर से लिखे गए इस पत्र की भाषा अच्छी खड़ीबोली है। पुरोहित के लिए प्रोहत लिखने से विदेशी प्रभाव की पुष्टि होती है। 'वास्ते दोस्ती दोनु त्रफ के हमने कोसीस ब्वौत करी ईस वासतै की मुकदमा सीरकार तुम्हारी का है' खड़ीबोली में अरबी/फ़ारसी शैली का प्रभाव है। इस प्रकार की शैली राजस्थान की रियासतों के पत्रों में यदा-कदा ही दिखाई दी। मध्य प्रदेश के होल्करों और शिंदों के पत्रों में भी इस शैली के दर्शन नहीं होते।

(घ) स्थापना

शासकीय कर्मचारि-वृन्द के वैयक्तिक मामलों से सम्बन्धित पत्राचार इस श्रेणी के अन्तर्गत आता है।

उदाहरण सं० १ में किसन सिंह हवलदार ने यह स्पष्ट लिखित दिया कि उसने त्यागपत्र अपनी इच्छा से दिया।

उदाहरण सं० २ में जयपुर राज्य के दारोगा ने शासन की आज्ञा मानने का वचन देते हुए अपने धर्म को साक्षी रखा।

उदाहरण सं० ४ सन् १८५० में जयपुर के अंग्रेज एजेण्ट की ओर से सुन्दर खड़ीबोली में आदेश है जिसमें श्रीलाल नामक किसी व्यक्ति के सरकारी काम में हस्तक्षेप को अनुचित बताया गया है जबकि घासीराम नामक व्यक्ति रियासत सीकर में कामदार था।

उदाहरण १

श्री राम जी

कीसन स्यघ कायथ नैं राजानामो लिख दीयो ज्यौं मैं सीरकार वक्सी जी साहिव की मे पलटण की रसौ हवालदार देनो सो मैं आपणी राजी वाजी नौकरी छौडी मिती असाढ सुदी ८ सवत १८५५ का

दूसरी ओर

फरकती राजीनामा कीसन स्यघ का चाकरी छोड वा का मथ हवालदार की।

कर्मचारियों की जाति लिखने की प्रथा भी चल गई, ऐसा प्रतीत होता है। पत्र में 'कायथ' लिखा है जिसका अर्थ 'कायस्थ' से है। कीर-पल्टण तथा हवलदार देनो (पद) हैं। 'प्लाटून' शब्द से बना पल्टन शब्द आज भी प्रचलन में है।

भाषा खड़ीबोली है—'नौकरी छौडी' वाक्य से इसकी पुष्टि हो जाती है।

उदाहरण २

श्री राम जी

राव जी श्री चतरभुज जी सू दरोगा सरप चंद वीजे लाल केन मुजरो वंचजो अप्ररचे हु आपका कायदा की वा़छा हो बुरी कोई बात को तकावत आपसु राषू नही आपकी आगा माफक रहसु जनम ताई आप सु नाठो रहु तो माहारो धरम वीच छं मुन मारा वेहा की सोगन (सौगंध) छ मीती मगस सुदि ६ सवत १८७२ दसकीत दगरग सरुप चंद की

दूसरी ओर

श्री राव जी श्री   जी जोग्य

ई=ई

सरपचन्द दरोगा ने अपने आवेदन में 'आज्ञा' के लिए 'आगा' लिखा है। सामान्यतः 'आज्ञा' के लिए 'आग्या' तो लिख दिया जाता है। 'आप सु नाठो रहु तो माहारो धरम वीच छं' वाक्य जीवन्त है जिसका सर्वथा अभाव हो गया है। 'नाठो' रहु अर्थात् आपके 'विरुद्ध होऊं' अर्थ ध्वनित होता है। 'नाटना' शब्द रुष्ट होने के लिए प्रयुक्त होता है। 'नटना' शब्द मुकरने अर्थात् बात से फिरने के लिए प्रयुक्त होता है।

उदाहरण ३

श्री राम जी

मोहर
फारसी साह
आलीम वादशाह की

नकल फरमान वादशाह की

× × स वषत मुवारक में फरमान वंलदसान जाहर हूवा जो प्रगना साह्झा-पुर मुकाम गवतालुक प्रगने मजकुर रो दरो वसत अमले प्रग्ना साह्झानाबाद का सीगे ईनामवा ऊदक ऐरस षुस्यालीराम कु वेटा सुधामा (सुदामा) फवस ची याद हैत केई सा प्रस्पालु से मा० लीषे ठाहरने सो वाद साहजादा वा वोजीर और उमराव वेङे और हाकीम और आमील वा मुतसदी कामदीवानी देवा ओधादार मामले पातसाई के और जागीरदार और कीरोङाहालका वा आगला हमे सेवा सदा मंदकेरार वा ईसतमरारी ईस हुकम वेङे कु जानकर प्रगना गव मजकुर सुधा आल ओलद व पटका राव मुसारं ने अमल हुक वेटन सुधा दो ओई कीतागीरी वात नहीं ली जाणजो मत और पेसकस सूवादारी वा फोजदारी वा मालजेहात वा सापर (सफर) परच और मुहसलान वा मोहराना वा फसलाना वा दारोगाना और दसतकार वा पेसकार और पचोत्रा वा दहोत्रा वा मुकदमी वा कानोगो, ई माफ कीया छे सो कोई ईसु मुजाहम होवे न्ही और सारावा दीवानी का और मुतालव वादसाही का माफ जाणोला ई वात मे ताकीद घणी ओर घणी जाणोला ओर साल ब्रसाल सनद नीवादा मागोला न्ही ओर ईस हूकम वेङ सू फरोला न्ही तारीष १२ मास जेमादी अल अेवल की सुन २२ वादसाही का मे लिषना हुवा **फकत**

रसलिनवा
वोजीरषा

मोहर
फारसी
राव कवर सेन की

मोहर फारसी
षान जादषा
वहाद्र की

मौहर नवाव
विजीर आसफ
दोला की

उदाहरण ४

श्री राम जी

कपतान वलीयम हींनरी रीकारडस साहब वाहादुर ईजंट राज सवाई जैपुर की तरफ से कैफीयतनामं राव गंगादास जी मुषतीयार कार रयासत सीकर के अप्रच हंमारे सुणने मै अैसा आया कि सीरी (श्रीलाल) लाल वाहां का सब काम वेसी रसतै करता है ईस वासतै राज्य कुं लीषणे मै आता है कि घासीरामं वाहां काम दार है और सीरीलाल कोण है कि बे हुकम वाहां के काम में दषल अपणां वेसी रसतै देता है ऊए कुं दषल देणों कारबार ऊस जगै कैसे वील फैल मनै कीया जावे मिती सावण बंद संवत १६०७

ह० अंग्रेजी में विलियम हेनरी (अपठनीय)

दि० १६/७/५१

टिप्पणी : १. उपर्युक्त बहुत फटी स्थिति में मिला है।

२. इसमें कोण अर्थात् कौन, अपणा यानि अपना, बीलफैल यानि अवश्य आदि शब्दों का प्रयोग भाषा की स्वाभाविकता और जीवन्तता के ज्वलंत प्रमाण हैं। बनावटी भाषा के स्थान पर भाषा के स्वाभाविक प्रयोग के सुन्दर उदाहरण हैं।

पत्र के शीर्ष पर 'श्री राम जी' लिखना पावनता का द्योतक है 'विलियम हेनरी रेकार्ड्स' के लिए 'वलीयम हींनरी रीकारडस' वर्तनी प्रयुक्त हुई है।

(च) सुरक्षा

सेना तथा सैनिक संचालन सम्बन्धी कार्यों में पत्राचार के कई उदाहरण आगे प्रस्तुत हैं। उदाहरण सं० ७ में 'दषिनी निकी फौज को वां तरफ कूंच भए को सुने है सो चिंता है' आदि वाक्यों के प्रयोग से तत्कालीन रक्षा सम्बन्धी मामलों में मिली-जुली हिन्दी प्रयोग का रूप उभरता है। 'वणतगा ठिनो उतिम है ह्या सब तरह आग्या आपुकी है' वाक्य इस दृष्टि से महत्त्व के हैं।

उदाहरण सं० ६ तो अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी के सुघड़ रूप के साथ जगह शब्द के स्थान पर 'जगाय', खाली को 'षाली' आदि लिखा गया है।

उदाहरण १

॥ श्रीपरमेसरजी सत्य छै—

स्वस्ति श्री माहाराजाधिराज माहाराज श्री जै सिंघ जी जोग्य माहाराजा धिराज महाराजा श्री अजीत सिंघ जी माहाराज कंवार श्री अभैसिंघ जी लिषावतं जुहार बांचजो अठारा समाचार श्रीजी रे प्रताप कर भला छै राज नप्रांईत कांई

बात न छै अठे घोडा रजपूत छै सु राज रा कांम नुं छै अठा उठा रो व्योहार एक छै जुदागी कांई मत जाँणो—ईणा तरफ कांम काज हुवे सु लिषीया कीजौ तथा कागद राजरौ आयौ हकीकत मालम हुई राज लीषीयौ थौ नागोर सुँ कुच कीयाँ री हकीकत लीषावजो सुदीन ४ तथा ५ कांम काज थौ तीण वासते ढील हुई हमें नागौर सुँ कुँच कीयो छै लाडणुँ में होय उण तरफ नुं आचां छां संबत १७६६ रा फागुन वद ५ तथा म्हाँनु दीन २ तथा ४ लागे जीतरे उण तरफ रौ साथ राजावत नाथावत षगारौत सारा भेला करावजो सेषावतां सुधा

संवत् १७६६ में पत्र की भाषा में निम्नलिखित वाक्य द्रष्टव्य हैं—

(१) मालम हुई

(२) ढील हुई

मारवाड़ी के क्षेत्र जोधपुर से निर्गमित इतने प्राचीन पत्र में भी खड़ीबोली का प्रयोग इस तथ्य का द्योतक है कि उस समय अलगाव की प्रवृत्ति नहीं थी बल्कि हिन्दी की उपभाषाएँ, बोलियाँ सुविधानुसार काम-काज में प्रयुक्त होती थीं और एक ही पत्र में मिली-जुली रहती थीं। इस तथ्य की पुष्टि पूर्व में भी अनेक उदाहरणों से हुई है। राजकाज में हिन्दी गद्य का प्रयोग प्राचीन है, यह भी सिद्ध होता है।

उदाहरण २

श्री राम जी कोटा

श्री लीछमी नाराईन जी

श्री ऋसौन

साघी श्री माहाराजी धीराजी माहाराजी राजा जी श्री सीवाई जसीघ जी जोगी लीषाईतं माहारावँ दुरजंनसालै जी के नी·········बंचीजो जी अठा का समंचार श्री·········जी की ऋपा सु तथा माहाराजी की महैरवानगी सु भला छै जी माहाराजी का समंचार सदा आरोगी चाहीजे जी तो प्रम संतोष होइी जी अप्रची श्री माहाराजी वड़ा छो हेत महरवानगी हंमेसा रषावौ छो जी सु वसेष रषावैंजो जी वोर समंचार श्री भरै जी हजुरी आव्या छै सु सारा जाहर करसी अठै सारो वुहार श्री माहाराजी को छै ईधर की गोरी अठाई की छी अर अवी ही श्री माहाराजी करगा महेरवानगी करी कागदैन समंचार लीषावगी भी माहा सुदी ७ सवत १७८० प्र०···

उदाहरण ३

कोटा

श्री रामं जी

श्री लछमी नाराईन जी

श्री

साधा श्री माहाराजीधीराजी माहाराजा श्री सवाई माधो सीघ जी जोगी लीखाईतंमाहाराव् जी श्री दुरजंन साल जी केणी········वंचीजो जी अठा का संमाचार श्री·······जी की ऋपा तथा माहाराजी की महरवानगी सु भला छै जी माहाराजी का संमाचार सदा आरोगी चाहीजे जी तो प्रम संतोष होई जी अंची माहाराजा जी वडा छो हेत महरवानगी हंमेसा राषो छो जी सु वीसेपरषावजो जी माहाराजी को कागल आव्यो संमाचार वाची सुना माहाराजी हमीला को सो सुष हुवो जी अर लीषाको छो लाहुर (लाहौर) की त्रफ पंडाना को फीसाद हुवो ती उपरी म्हाई श्री पातसाहा जी को बुलावा को फुरमाण आव्यो हवो अर मंलार जी को भी कागल आव्यो छै सु अठ तीव्यारी कराई छै सु माहाराजी नवो होतइी आछी वीचारी अर माहाराजी का लीषा का १ की अठ भीसारी नीकारी करवाई छै सु अवी माहाराजी को डी ला पकारवो होसी तो तो म्हा भी डी लाइी तीध्यार छा अरजो माहाराजी फोज मोकलावगा तो अठा सु भी फोज मोकलावसा सु माहाराजी की फोज सु जाई सामली होसी वो स्माचार ठाकुराभेमसीघ जी का कागल सु जाहार होसी अठ बुहार माहाराजी को छै महरवानगी करीं कागल संमाचार लीषावगा जी मो० जेठ बुदी ९ सवत १८०८

उदाहरण सं० २ तथा ३ दोनों में ही कृपा शब्द के लिए 'ऋपा' लिखा गया है। अध्याय ४ के राजस्व (ख) भाग में करौली रियासत के संवत् १८१३ के पत्र उदाहरण सं० २ में भी 'ऋपा' लिखा गया है। वहाँ 'प्रंम आनंद होई' लिखा गया किन्तु इस उप अध्याय के उदाहरणों २ तथा ३ में 'प्रंम संतोष होई' वाक्य आया है। वहाँ पर 'महाराज वडे है' तो यहाँ पर 'महाराजा जी वडा छो' लिखा गया है। वहाँ 'कागद' शब्द आया है तो यहाँ 'कागल' लिखा गया है, कोटा तथा करौली की बोलियों में अन्तर के फलस्वरूप पत्रों की भाषा में अन्तर आया है।

कोटा के यहाँ के दोनों उदाहरणों में पत्रों पर 'श्री राम जी', 'श्री लछमी नाराईन जी' लिखकर पत्र प्रारम्भ हुए हैं। किन्तु करौली के संवत् १८१३ के पत्र में 'श्री मदन मोंहन जी' लिखा गया तथा आगे उदाहरण सं० ४ में 'श्री गोपाल जी' लिखा गया है। इस उप-अध्याय का उदाहरण सं० ४ वर्ष १८२४ वि० का है। इस पत्र के अवसर पर राजा तुलसीपाल जी शासक थे किन्तु संवत् १८१३ में गोपालसिंह जी शासक थे।

भाषा में विशेष अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता।

उदाहरण ४

करौली

श्रीगोपाल जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई माधवसिंघ जी देव जोग्य लिषीइतं राजाजी श्री तुलसीपाल जी के मुजरा बंच्यां ह्यां के समांचार श्री जी की कृपा सौ भले है आपके सुष समाचार सदा सर्वदा आरोग्य चाहिये तो परम आनंद होई अप्रंच इिनि दिनानि में कागद समांचार नहीं आणे सो बा तरफ के समांचार ब्योरे सुधां लिषाईयेगें सुनिवे मैं आइी जो कछू फोज दषनीनिकी दरबार की·········प्रमाण जारी है सो कुरगाँव की·············है नामो दरबार के भले मानस फोज में हा ही गेउन,············· सो षेवल न करे यह भी जगा दरबार की है अ हमेसा कागद समांचार ईनायत होत रहे मिती माह वदि संवत १८२४

············अस्पष्ट भाग

उदाहरण ५

वीकानेर

श्रीलक्ष्मीनारांयणजी

स्वस्ति श्री राज राजैन्द्र महाराजाधिराज महाराजा श्रीसवाई प्रथ्वीसिंघ जी जोग्य राजराजैश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्रीगजसिंह लिषावतं जुहार वाचजो अठारा समाचार श्री जी री सु नजर भला छै राजरा सदा भला चाहीजयै अप्रांच राज वडा छो म्हारै घणी वात छो हेत प्यार राषो छो तिण सु विसष रषाव सो अठा उठारो एक वहवार कर जांणसी तथा कागद राजरो दु सांवण सुद १४ री भादुवा वदा० आयो वाचीयां सुषुस्वषती हुई बीजा कित राहे क जावस्पुाल प्रोहत रघुनाथ मालुम किया सु अठै पांच घोडा राजपूत छै सु राज रै काम नै छै बीजी हकीकत मुह ते जी री अरती सु जाहर हुसी सं १८२५ मिती आसोज बद २ मु० बीकानेर कोटदाषल

उदाहरण सं० ४ करौली का तथा उदाहरण सं० ५ वीकानेर का जयपुर को सम्बोधित पत्र है। करौली की ओर से 'मुजरा बंच्या' तथा बीकानेर से 'जुहार वाचजो' पदावली प्रणाम के लिए प्रयुक्त हुई है।

करौली से —'   के समाचार श्री जी की कृपा सो भले है। आपके सुष समाचार सदा सर्वदा आरोग्य चाहिये'।

बीकानेर से—'अठारा समाचार श्री जी री सु नजर भला छै राजरा सदा भला चाहीज्यै'।

वाक्य प्रयुक्त हुए हैं। भावना एक समान है। पत्रों का आदान-प्रदान विशेष व्यक्तियों के माध्यम से होता था। सम्भवत: कई व्यक्ति चलते होंगे जो डाक लेकर चलते होंगे।

उदाहरण ६

करौली

मुद्रा ॥ श्रीगोपालजी ॥

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराज श्री सवाई पृथ्वीसिंघ जी देव जोग्य लिषायतं राजा जी श्री माणिकपाल जी बहादुर यदुकुल चंद्रभाल के मुजरा वंच्यै ह्याँ समाचार श्री जी की कृपा सै भले है आपुके सुष समाचार सदा सर्वदा आरोग्य चाहियैं तौ परम आनंद होइ अप्रंचि बोहत दिननि सौं कागद समाचार नही आए सु·········कृपा करि लिषाईयैंगे ह्यां रजपूत त्था घोरे है सु दरवार के काम के है ह्यां सर्व प्रकार शासन दरबार की है की मिती आश्वनि वदि ५ संवत् १८३४

पत्र में करौली नरेश 'माणिकपाल' जी के लिए 'यदुकुल चन्द्रभाल' विशेषण का प्रयोग विशेष महत्त्व रखता है जो इससे पूर्व के पत्रों में दिखाई नहीं दिया। उदाहरण सं० 7 में भी यह प्रयुक्त हुआ।

उदाहरण ७

करौली

१ श्रीगोपालजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई परतापसिंह जी देव जोग्य लिषाइतं महाराजा जी श्री मनिक पाल जी बहादुर यदकुल चंद्रभाल कौं मुजरा बंच्या ह्या के समाचार श्री·········जी की कृपा सौ भले है आपुके सुभ समाचार सदैव भले चाहिजै तो परम आनंद होइ अप्रंचि दस घौड़ा रजपूत है सो दरबार के काम के हैं हित स्नेह राषियत हैं तासैं विसेस रखाऐ रहियेगौं कागद समाचार आऐ घने दिन हुवे सो हमेसा स्नेह करि लिषाइयेगौ और दषिनी निकी फोज को वां तरफ कूँच भए को सुने हैं सो चिंता है ताको आप सग्यान हौ षातसाहिती साथ है ताको ऐसो कुछ उपाय कीजियेगा सौ पेली तरफ कौ कूंच होइ वणत गा ठिनो उतिम है ह्या सब तरह आग्या आपुकी है जुदाइगी किंचित मात्र न जानि कागद समाचार विदिवार लिषाऐ रहियेगो मिती पउस सुदी ८ संवत् १८४१

उदाहरण सं० ५ के अनुसार बीकानेर में 'पांच घोडा रजपूत छै' लिखा गया किन्तु करौली के इस पत्र में 'दस घोड़ा रजपूत है' लिखा गया है।

इस पत्र में 'दषिनी निकी' फोज के कूच की चर्चा तथा उसके विषय में चिंता प्रकट की गई है।

'वां तरफ कूंच भए की सुने हैं' व्रजभाषा के प्रभाव का प्रतीक है।

उदाहरण ८

स्वस्ति श्री राजराजेंद्र महाराजाधिराज महाराजा श्री सवा
ई प्रताप सिंघ जी जोग राजराजेस्वर महाराजाधिराज म
हाराजा श्री प्रताप सिंघ जी लिखावतं जुंहार बाच जो अठ रा
समाचार श्री   जी री सुनजर सुं भला छै राज रा सदा भ
ला चाही जै अगांव राज व उठ बोहां रै घणी बात बोस दा है
त प्यार राषो बो तिण सुं विसेष रषावसो अवा जु गरो एक
उहार करजो ण सी अठै पासवयो जार जपुत बैसो राज रै
[illegible] तथा कागद राजरो आयो समाचार वाचीयां सुं
[illegible] जइ ओर दिषणीयां दिस ला समाचार लिषीया
[illegible] जवाद मार सुणन मै आई दरबार राफोज गती
[illegible] जीयो ऊ वो दे तुं नरफां रायां व आदमी कां मआ
या दिषणी सिक सत षाथी दरबार हरीफ ने ऊइ सोई
ण बात री वडी षुस वषती ऊ ई सो हमें षुसषबरी रा स
माचार सताब लिषावसी सं १८४४ मिती ऊ सावण
वद ११ मुकाम पाय तषत श्री बीकानेर   ।।।   ।।।

उदाहरण ६

इन्दौर

सिधि श्री माहाराजधिराज राज राजेंद्र माहाराज श्री सवाइ प्रताप सिंह जी जोग्य श्री कासीराव होलकर केन्य··············बांचजो जी इंहा का समाचार भला हे राज का सदा सर्वदा भला चाहीजे तो परम आनंद होवेलो अपरंच परगना टोंक की जायगा बगडी वासोनवा षाली करबा वास्ते राज की तरफ सु पलठन जमीत आय जायगा षाली हुइले कीन हालतांइ वामे राज श्री जीवाजी सषाराम मुकासदार को आम लभयो नही और दरमीयान टोंक बाबत जाब साल वगैरे राज श्री नवल राय वा नरायनदास बतलावें है और मौजे चारु पीपलु वगैरे चारगांव यामे आमल मुकासदार मसारनीलाको बैठबां वास्ते लीषोथो सो भी हुवो नहीं जीं सु यो कागद लीषवामे आया हे जो राज के फौज जमीयत सु टोंक की गढया षाली हुइ उस में या और कोइ जायगा रही होय तो सो भी षाली करवाय परगना मजकुर में बमैगढ या समेत राज श्री जीवाजीसषाराम को आमल कायम करवाय देणा और मौ० चोरु वगैरे को भी आमल मसारनीलाको कायम करवाय देणा कागद समाचार लीषावो करोला मीती पोस सुदी १३ स्मत १८५५

संवत् १८५५ का पत्र महत्त्वपूर्ण है। मराठों की बढ़ती शक्ति का परिचायक है। भाषा में व्रजभाषा और खड़ीबोली का मिश्रण हुआ है।

(छ) विविध

विभिन्न प्रकार के पत्राचार के नमूने आगे दिए गए हैं—

उदाहरण १

सीध श्री महाराजधीराज राज राजेंद्र श्रीसवाई माधोसींग जी का मुत सदीया जोग्य लीषतम पंडत श्री सषाराम भगवंत केन आसीर्वाद बचनै अेठा को स्माचार भले है आपका सदा भला चाहीजें अपरंच बासगत हमारे षरच के रूपीया २५०००/ अंके पचीस हजार वा एक दंता हाथी १ येक दरबार का मारफत दीवान कनीराम जी की भेजा सो पोहचा मीती अधीक ज्येठ सुदी ५ समत १८१२ वर्ष·········· अपठनीय························

मुहर गोल में अंकित लेखन सीमा

उदाहरण २

श्रीरांमजी

सिधि श्री सरववौपमा वीराजमान लीलाजी श्रीमुरलीधर जी दीवान जी श्री स्योनाथ जी जोग्य लीषतं स पदारत पाया ढणी काकेन्य मुजरो अवधारिज्यो जी

अेठा का संमाचार भला छै जी आपका सदा आरोग्य चाहीजे जी अप्रंचि साहीव कागद आपकौ फरमायो आवौ जौ व्याह वगेरे की मरजाद आगे वड़ा माहराज्य बाधी दीनी छी वा प्रवांनां की नकल भेजी सो पहुची मुवाफीक कागद वान कुल अमल में ल्यावांलाजी मिती असाढ़ सुदी १ संवत १८१२

टिप्पणी—मरजाद

बाघी

प्रवांनां आदि शब्द विशेष उल्लेखनीय हैं।

उदाहरण सं० १ में अंके रू० पचीस हजार अर्थात् अंकों में लिखकर पुन: शब्दों में धनराशि लिखने की परिपाटी प्राचीन है। संवत् १८१२ वि० अर्थात् सन् १७५५ ई० में यह परिपाटी थी। 'एक दंताहाथी १ येक' का अर्थ एक दाँत वाला एक हाथी' है। हिन्दी में हस्ती के लिए हाथी लिखने का प्रचलन भी प्राचीन है, ऐसा लगता है। हस्त को हाथ तथा हस्ती को हाथी कब से लिखा जाने लगा, यह अनुसन्धान का विषय है। 'भेजा सो पोहचा' वाक्य-रचना खड़ीबोली की है।

उदाहरण सं० २ में विवाह की मर्यादा निश्चित करने का उल्लेख है अर्थात् विवाह के नियम बनाए गए। विवाह शब्द के स्थान पर ब्याह शब्द का प्रयोग बोलचाल में आजकल भी हो रहा है। यह परिवर्तन कैसे हुआ, खोज का विषय है।

उदाहरण ३

श्री रांमं जी

सिधि श्री सरवोपमा विराजमान पूज्यं श्रीदीवानजी श्रीमुरलीधर जी जोग्यां लिषतं सहेज रांम मयारांम केन्य पावाधोक अवधारीज्यौ जी अठा का समांचार भला छै आपका सदां आरोग्य चाहीजैजी अप्रंचि साहिब कागद आपको आयो फूरमायौ आयो जो संनदि दीनानी मा० हूकम हजुरि की भेजी छै सौ अमल में आज्यो सौ साहिब पहू ताकी रसीद मदोरसू भेजी छै सौपहूचैलींजी अरमा श्रीकिसन दि अमल में ल्याजे लौजी मीती भादवा सुद १ सं० १८१२

उदाहरण सं० २ में 'सरववोपमा वीराजमान' प्रयुक्त हुआ है किन्तु उदाहरण सं० ३ में 'सरवोपमा विराजमान' लिखा गया है। 'सर्वोपमा' शब्द संस्कृत का शुद्ध रूप है जिसके बोलचाल के रूप लिखे गए हैं।

उदाहरण सं० ४ में बोलचाल के शब्द ज्यों-के-त्यों लिखे गए हैं। उदाहरणार्थ थारी, त्रफरा, कील्याणमल, शुभचींतक, षहसी आदि इनमें—थारी अर्थात् आपकी (तुम्हारी) आजकल भी प्रयुक्त होता है। त्रफरा का सही रूप तरफरा है। 'कहसी' के स्थान पर 'षहसी' लिखा गया है।

रुक्का शब्द प्रचलित शब्द है जिसका व्रजरूप 'रुको' प्रयुक्त हुआ है। अरबी रुक्अ: शब्द का अर्थ पर्चा, कागज़ का टुकड़ा, चिट्ठी, पत्र, खत है। 'दसकताको

तीकी नकल' वाक्यांश विशेषत: द्रष्टव्य है जिसका अर्थ 'हस्ताक्षर को उसकी प्रतिलिपि' है।

उदाहरण ४

श्री जलंधर नाथ जी सत छै

नंबर अवल

राव चत्रभुज जी कस्पैसुप्रसाद बांचजो तथा थे सुबादारजी कन आया थारी त्रफरा समाचार कील्याणमल मालुम कियासो थान सुभचींतक जाणाछा सरकार मैं थारी बंदगी है समाचार कील्याणमल नै फुरमावण में आया है सो षहसी (कहसी) संबत १८६३ फांगण बुदी ६

रुको माहाराजाधीराज श्री माहाराज मानसंघ जी जोधपुर का षास दसकताकोतीकी नकल।

उदाहरण ५

॥ श्री स्वी ॥

श्री ऐकलिगजी श्रीनाथजी

स्वस्ति श्री राव चुत्रभुज १ अप्र ॥ थारी तरफ रा स्माचार राये भेरु बगस सासटा मालम ही करबो करे है सो थारी भरोसो इ ज्मा षातर × × × × ज्मात थी वा भाई ० ० ० ० × × × × हजुर आवजो की तरे को।

टिप्पणी—× × × फटे भाग, ० ० ० ० अपठनीय भाग

अंतर (अंतर) थां था न्ही लैंगो म्हांरो हुकम्है पुजा स्माचार गऊता लाल जार (जाहिर) करे गो तथा राये भेरु बगसरा ० ० ० ० जा ० ० ० ० स्वत १८६० ० ० ० ० मगस्र सुद ३ बुधै

टिप्पणी—० ० ० ० अपठनीय भाग

उदाहरण ६

मुद्रा श्री रांम जी

श्री सीता रांम

जी सहाय सेवक

राव् राजा जीवसिंह

जी नरुका

।। मो० प्रवण ए पटल पटवारी दसेसु प्रसाद बंचत अप्रंची योग व राव् चत्रभुज जी न दीनो छ सो हासल ० ० ० गुमासता एहवाल एस जोजे मीती सावण बुदी १० संबत १८७४ ए

उदाहरण सं० ५ में बोलचाल के वाक्यांश ही लिखे गए हैं। लेखक का भाषा ज्ञान अत्यन्त अल्प रहा होगा, यह निस्संदेह कहा जा सकता है।

इस अध्याय में किए गए विवेचन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं—

(१) प्रशासनिक हिन्दी गद्य प्राचीन है और इसने निश्चित रूप से पन्द्रहवीं शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भ में यह रूप ग्रहण किया।

(२) प्रशासनिक हिन्दी गद्य में मारवाड़ी, जयपुरी आदि उपभाषाओं और बोलियों के प्रयोग के साथ पत्रों के हृदय-स्थान में खड़ीबोली का प्रयोग हुआ। व्रज-भाषा भी यत्र-तत्र प्रयुक्त हुई किन्तु कम।

(३) भाषा में संकीर्णता का अभाव था और हिन्दी की विभिन्न बोलियों के शब्दों का निःसंकोच प्रयोग होता था जिससे उनके भी पारस्परिक सम्पर्क व व्यापक ज्ञान का भी संकेत मिलता है।

(४) गद्य में अरबी/फ़ारसी के जो शब्द प्रयुक्त हुए वे सामान्यतः तद्भव रहे। कम शब्द ही तत्सम रूप में प्रयुक्त हुए। किन्तु हिन्दी भाषा में उनके प्रयोग को अनुचित नहीं समझा गया जिससे भाषा में प्रवाह बना रहा।

(५) खड़ीबोली हिन्दी गद्य शताब्दियों से विकसित रूप में विद्यमान है।

(६) सुनिश्चित वर्तनी के अभाव में उच्चारण-भेद से एक शब्द के अनेक लिखित रूप मिलते हैं। इसका कारण व्यक्तिगत और स्थानीय उच्चारण-भेद है।

(७) अधिकांश पत्रों में 'कागद' शब्द का प्रयोग हुआ है जो वर्तमान पत्र शब्द के लिए प्रयुक्त हुआ। पत्र का अर्थ 'पत्ता' है। पत्र से ही 'पत्तर' शब्द उद्भूत है जो आजकल 'पीतल पर सोने का पत्तर चढ़ा है' रूप में प्रयुक्त होता है। ख़त शब्द अरबी का है जिसका अर्थ लकीर, रेखा, चिट्ठी, लेख आदि है। अध्ययन-अवधि में कागद शब्द १२वीं शती के कग्गर शब्द से मिलता-जुलता है। अरबी शब्द काग़ज़ भी इसी प्रकार आया हो सकता है।

तीकी नकल' वाक्यांश विशेषत: द्रष्टव्य है जिसका अर्थ 'हस्ताक्षर को उसकी प्रतिलिपि' है।

उदाहरण ४

श्री जलंधर नाथ जी सत छै

नंबर अवल

राव चत्रभुज जी कस्पैसुप्रसाद बांचजो तथा थे सुबादारजी कन आया थारी त्रफरा समाचार कील्याणमल मालुम कियासो थान सुभचींतक जाणाछा सरकार मैं थारी बंदगी है समाचार कील्याणमल नै फुरमावण में आया है सो षहसी (कहसी) संबत १८६३ फांगण बुदी ६

रुको माहाराजाधीराज श्री माहाराज मानसंघ जी जोधपुर का षास दसकताकोतीकी नकल।

उदाहरण ५

॥ श्री स्वी ॥

श्री ऐकलिगजी श्रीनाथजी

स्वस्ति श्री राव चुत्रभुज १ अप्र ॥ थारी तरफ रा स्माचार राये भेरु बगस सासटा मालम ही करबो करे है सो थारी भरोसो इे ज्मा षातर × × × × ज्मात थी वा भाई ० ० ० ० × × × × हजुर आवजो की तरे को।

टिप्पणी—× × × फटे भाग, ० ० ० ० अपठनीय भाग

अंतर (अंतर) थां था न्ही लैगो म्हांरो हुकम्है पुजा स्माचार गऊता लाल जार (जाहिर) करे गो तथा राये भेरु बगसरा ० ० ० ० जा ० ० ० ० स्बत १८६० ० ० ० ० मगस्र सुद ३ बुधै

टिप्पणी—० ० ० ० अपठनीय भाग

उदाहरण ६

मुद्रा
श्री सीता रांम
जी सहाय सेवक
राव् राजा जीवसिंह
जी नरुका

श्री रांम जी

।। मो० प्रव्ण ए पटल पटव्ारी दसेसु प्रसाद बंचत अप्रंची य्ोग व राव् चत्रभुज जी न दीनो छ सो हासल ० ० ० गुमासता एहवाल एस जोजे मीती सात्रण बुदी १० संबत १८७४ ए

उदाहरण सं० ५ में बोलचाल के वाक्यांश ही लिखे गए हैं। लेखक का भाषा ज्ञान अत्यन्त अल्प रहा होगा, यह निस्संदेह कहा जा सकता है।

इस अध्याय में किए गए विवेचन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं—

(१) प्रशासनिक हिन्दी गद्य प्राचीन है और इसने निश्चित रूप से पन्द्रहवीं शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भ में यह रूप ग्रहण किया।

(२) प्रशासनिक हिन्दी गद्य में मारवाड़ी, जयपुरी आदि उपभाषाओं और बोलियों के प्रयोग के साथ पत्रों के हृदय-स्थान में खड़ीबोली का प्रयोग हुआ। ब्रज-भाषा भी यत्र-तत्र प्रयुक्त हुई किन्तु कम।

(३) भाषा में संकीर्णता का अभाव था और हिन्दी की विभिन्न बोलियों के शब्दों का निःसंकोच प्रयोग होता था जिससे उनके भी पारस्परिक सम्पर्क व व्यापक ज्ञान का भी संकेत मिलता है।

(४) गद्य में अरबी/फ़ारसी के जो शब्द प्रयुक्त हुए वे सामान्यतः तद्‌भव रहे। कम शब्द ही तत्सम रूप में प्रयुक्त हुए। किन्तु हिन्दी भाषा में उनके प्रयोग को अनुचित नहीं समझा गया जिससे भाषा में प्रवाह बना रहा।

(५) खड़ीबोली हिन्दी गद्य शताब्दियों से विकसित रूप में विद्यमान है।

(६) सुनिश्चित वर्तनी के अभाव में उच्चारण-भेद से एक शब्द के अनेक लिखित रूप मिलते हैं। इसका कारण व्यक्तिगत और स्थानीय उच्चारण-भेद है।

(७) अधिकांश पत्रों में 'कागद' शब्द का प्रयोग हुआ है जो वर्तमान पत्र शब्द के लिए प्रयुक्त हुआ। पत्र का अर्थ 'पत्ता' है। पत्र से ही 'पत्तर' शब्द उद्‌भूत है जो आजकल 'पीतल पर सोने का पत्तर चढ़ा है' रूप में प्रयुक्त होता है। ख़त शब्द अरबी का है जिसका अर्थ लकीर, रेखा, चिट्ठी, लेख आदि है। अध्ययन-अवधि में कागद शब्द १२वीं शती के कग्गर शब्द से मिलता-जुलता है। अरबी शब्द काग़ज़ भी इसी प्रकार आया हो सकता है।

अध्याय ४

राजघरानों के बीच पत्राचार की भाषा तथा वस्तु

औरंगजेब की मृत्यु हो जाने तथा दिल्ली के सिंहासन पर उसके समतुल्य किसी शासक के न होने के परिणामस्वरूप राजस्थान में तो विभिन्न रियासतें धीरे-धीरे स्वतन्त्र रूप लेने लगी थीं। दूसरी ओर दक्षिण से मराठे जो औरंगजेब के काल में ही छत्रपति शिवाजी के नेतृत्व में प्रबल हो गए थे, प्रबलतर होते गए और उन्होंने मध्य प्रदेश में दो सबल राज्य स्थापित कर लिए। इन्दौर में होल्कर और ग्वालियर में सिन्धिया, दो शक्ति केन्द्र बन गए।

जयपुर रियासत तो जैसे मुसलमानों से संत्रस्त रही, उसी प्रकार मराठों के आक्रमणों का भी शिकार रही। जैसे राजस्थान की रियासतों में से जयपुर ने सर्व-प्रथम मुगलों का आधिपत्य स्वीकार किया, उसी प्रकार अंग्रेजों के साथ सर्वप्रथम सन्धि करके जयपुर रियासत ने राजस्थान में अंग्रेजों के शासन की नींव डाल दी। इन्दौर और ग्वालियर रियासतों का, राजस्थान के राजाओं के साथ जो पत्राचार हुआ, उसमें प्रधानता जयपुर के साथ पत्राचार की रही। इस पत्राचार में तत्कालीन प्रचलित हाड़ौती, मारवाड़ी, खड़ीबोली और व्रजभाषा मिश्रित प्रचलित भाषा ही सामान्यत: प्रयुक्त हुई। मिश्रित खड़ीबोली भी व्यवहार में आई।

पत्रों का प्रारम्भ तो पत्र के प्राप्तकर्ता राजा का सम्बोधन करके 'योग्य' शब्द के लिए 'जोग्य', 'जोग्ये' आदि शब्दों का प्रयोग करके ही चला। अपरंच अठा का समाचार भला छै आपका सदा भला चाहीजे' आदि वाक्य सामान्यत: सभी पत्रों में विद्यमान रहे हैं।

'अपरंच कागद राज को आयो' 'समाचार वांच्या' आदि वाक्य पत्राचार की एक सुप्रचलित रीति की ओर संकेत करते हैं, जो सम्भवत: सार्वत्रिक न भी रही हो किन्तु सुपरिचित अवश्य रही होगी।

'समाचार, महाराजाधिराज, व्यवहार सब आपको छ' आदि शब्द बहुप्रचलित शब्द थे, किन्तु जिनके अपभ्रंश रूप ही लिखने में आते रहे और शुद्ध रूपों का प्रयोग यदा-कदा ही देखने को मिला। अनेक शब्दों में से कुछ शब्द जिन रूपों में प्रयुक्त हुए वे अग्र प्रकार हैं—

प्रचलित/शुद्ध रूप	प्रयुक्त रूप
विधिवार	बीदीवार
मुआफिक	माफीक
विचारी	बीचारी
बहुत	बोहत
व्यवहार	व्योहवार, बौहार
महाराजाधिराज	महाराजाधीराज
हित	हेत
मिति	मीती
निर्वाह	नीभाव
सरकार	सीरकार
गाँव	गाउं
प्रसन्न	प्रसन
चैत्र	चत
बहादुर	बहाद्र
विश्वास	वसवास
संवत्	संमत

पत्राचार के कुछ उदाहरणों के दोहन से तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना तथा गतिविधि के चित्र उभरते हैं और महत्त्वपूर्ण भाषिक निष्कर्ष निकलते हैं। सभी पत्रों का प्रारम्भ 'श्री राम जी' लिखकर होने से सांस्कृतिक सूत्र की उपस्थिति का आभास मिलता है। यह उल्लेख करना आवश्यक है कि राजस्थान की रियासतों में 'श्री रांम जी', 'श्री राम'; 'श्री पीतांबर जी', 'श्री गोपालराम जी', 'श्री नाथ जी', 'श्री लक्ष्मीनारायण जी', 'श्री गोपाल जी', 'श्री मदनमोहन जी' आदि इष्टदेवता सूचक शब्द पत्रों के ऊपर लिखे जाते थे, उसी के अनुरूप यह देखा गया कि इन्दौर तथा ग्वालियर दोनों से प्रेषित पत्रों में 'श्री रामजी' ने स्थान पाया।

उदाहरण १

इन्दौर
आसोज बदी १३, १८०७

प्रेषक —खांडेराव होल्कर
प्राप्तकर्त्ता —माधो सिंह

'श्री'

'सीध श्री सर्व उपमा लायक माहाराज श्री माधोसी

घ जी जोग लीखायेतं खाडेराव होंलकर केन
राम राम बचना अटा का समाचार भल छे अ
पका समचार सदा भला चाहीजी अप्रच श्री
सुमेदार को कागज आने आयो तीमे लख्यो आ
यो जो लोका सम जासका पैसा की तदबीर सीताब की
जो और पेमसीघ कु व कनीराम कु सीताब
कु लायली जो सो कनीराम तो हामारे पास है
पेमसीघ कु सीताब भेजो जौ पैसा को तदबीर सीताब कीया
च्याहीं जेंताकीद जादा छे और भीमवसर अम बाज
खाये छे सो सुबेदार जीने राजी कीया सारोनी का होये
लो जी और समीच्यार कनीराम के लीखे सु मालुम होय
लो हामशा कागज समीच्यार लीखीवो कर मीती आसोज
बदी १३, समत्त १८०७

अभिलेखागार का नोट—संदेश

सूबेदार जी से प्राप्त पत्र समाचार की प्राप्ति स्वीकार। पैसों की व्यवस्था व कनीराम को बुलाए जाने की सूचना के लिए—कनीराम के वहीं (साथ) होने का संकेत व प्रेमसिंह को भेजे जाने का अनुरोध। लिखते समय, पत्र में यह भी ध्यान नहीं रखा गया कि यदि माधोसीघ जी लिखना है तो वह एक ही पंक्ति में आ जाए अपितु माधोसी यदि एक पंक्ति है तो 'घजी' अगली पंक्ति में निःसंकोच लिखे गए। इसी प्रकार अपका और आयो के साथ हुआ। 'अ' एक पंक्ति में तो 'पका' दूसरी में और 'आयो' का 'आ' एक पंक्ति में तो 'यो' दूसरी में। 'सर्व उपमा लायक' शब्दों में संकर शब्द रचना दिखाई देती है। यदि सर्वउपमा जैसे तत्सम शब्दों के साथ 'योग्य' लिखा जाता तो भाषा सौन्दर्य बढ़ जाता।

'को' के स्थान पर बोलचाल में आज भी प्रयुक्त 'कु' लिखा गया है। 'सूबेदार' को 'सुभेदार' लिखा गया है। उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि लिखनेवाला व्यक्ति या तो नया या कम पढ़ा-लिखा था।

यह तो स्पष्ट है कि पत्र की भाषा खड़ीबोली और व्रजभाषा मिश्रित है।

उदाहरण २

ग्वालियर

श्रीमाहांराजा धीराज श्री राजेंद्र श्री सवाई माधोसीघ जी जोग्ये राज श्रीजया जी सीदें सुबेदार ईन के श्रीरामराम बंचजो जी अठां का स्माचार भले है आपको सदा सर्वदा भले चाही जे आपर आपकी भी भार नेणवां के तरफू जांणहार छै और

श्री दगुण्एसींघ जी को भी आपने बुलाबो भेजा है जैपुर आप पास आये छै सो सुणा तो प्रांत बुंदी वा नेगवातो हमारी षास जागीर छै उधरी कुच हीषीचल करना आपकुं मुनासीब नहीं छै प्रांत मजकूर मो कुच बात सो आपके तरसोषत राहोगा तो आपकुं ईसी बात की फीकीर होगी मीती जैठ सुदी ७ संबत १८०८

टिप्पणी—"प्रांत बुंदी वा नेगवा तो हमारी षास जागीर छै उधरी कुच हीषीचल करना आपकुं मुनासीब नहीं छै" वाक्य ग्वालियर रियासत की ओर से जयपुर को चेतावनी के रूप में है।

यह उल्लेखनीय है कि जिस प्रकार राजस्थान की रियासतों के पत्राचार में विरामपद्धति नहीं थी, उसी प्रकार ग्वालियर तथा इन्दौर से लिखे गए पत्रों में भी यह दृष्टिगोचर नहीं हुई।

उदाहरण ३

ग्वालियर

॥ श्रीरामजी ॥

श्री माहाराजाधीराज राज श्री राज राजेंद्र श्री सवाई माधोसीघ जी जोग्ये राज श्री ज्याजी सींदे सुबेदार कैंन श्री वंचणा आप्रंच—आंठां को स्मांचार भला छै आपको सदा सर्वदा भले चाहीजे आपर आपको पत्र आयों सो पोंहीचा और केतायेक संमींचार दीवान श्री कन्हीरामजी के लीषे सो बीदीवार वा श्री साह अंनोपराम जी क कहे सो जांणां और महाराज ने लीषी जो करार माफीक रुपीया कीनी सांकी हुंडीया वा फोज श्री दीवान कंन्हीराम जी के लार देर सीताब ही भेजा छां सो आप यां बात बीचारी छै तो बोहत भली छै दोनों ही तरफ़ सालुष की स्नेह वृद्धि छै जी और ब्यौहवार सब आप ही को छे कहुंबात की दुजागी नहीं जाणोंला जी और सारी हकीकती अनोपराम के लीषे पर जाणेला मीती कुवार बदी १३ संबंत १८०६

राजस्थान की रियासतों की भाँति ग्वालियर तथा इन्दौर के पत्रों में पत्र का प्रारम्भ मंगलसूचक शब्दों यथा 'सिद्धि श्री' से होता था, यद्यपि उदाहरण सं० २ तथा ३ में तथा कुछ अन्य उदाहरणों में ये शब्द नहीं मिलते। यह भी ध्यान में आया कि 'स्वस्ति श्री' शब्द, जो राजस्थान में प्रायः प्रयुक्त हुए, इन्दौर तथा ग्वालियर के पत्रों में नहीं दिखे और केवल 'सिधि श्री', 'सिधी श्री', 'सिद्धि श्री' आदि शब्द ही प्रायः मिलते हैं। हुंडियाँ (आजकल चेक) शब्द विशेषतः उल्लेखनीय है।

उदाहरण ४ इन्दौर

श्रावण सुदी ११
सं० १८१०

प्रेषक—बापू जी महादेव

प्राप्तकर्ता—माधोसिंह

शुभचिंतक बापू जी महादेवतानेक आशिर्वाद अठाका स्माचार श्री के ० ० ० भला छे श्री जी का सदा चाहते हैं अपरंच श्री जी ने षत भेजा था उसका जबाब व श्री मंत पंडत प्रधान कों व केदारजी को जबाब अश्रफुल उज्रा बाहादर के तालीकच्यें व हमने अपने षत ताकीद लिषी है सो श्री जी के पास पौहचे होयगे आगे माहाराव परसोतम पंडत पौहचे होयगे उनके मसलत सो टीका व अपना भला आदमी साथ भेजना हम ईहा दरबार में शुभचित काई करते है सो श्री जी को मालुम है मुफसल लाला भीमसिंघ के लिषे से मालुम होयगा

० ० ० अस्पष्ट

मिति श्रावण सु० ११ सं० १८११

अभिलेखागार का नोट—पूर्व लिखे पत्र के सन्दर्भ में पंडित प्रधान व केदार जी को नवाब अशरफ उल्ल उज्र बहादुर के लिए लिखी ताकीद की सूचना व पुरुषोत्तम पंडित के साथ टीका व किसी जिम्मेदार व्यक्ति को भेजे जाने का अनुरोध।

उदाहरण सं० १ तथा ४ पत्राचार की सुन्दर परिपाटी के नमूने हैं। इनमें प्रेषक तथा प्राप्तकर्ता सबसे ऊपर दिखाए गए हैं और पत्र की तिथि भी सबसे ऊपर लिखी गई है जैसा कि आज भी होता है।

संवत् १८१० अर्थात् सन् १७५३ ई० का यह पत्र खड़ीबोली गद्य का एक अत्यन्त श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है।

सदा चाहते है—
श्री जी ने षत भेजा था
उसका जबाब
हमने अपने षत
लिषी है
श्री जी के पास
पौहचे होयगे
भला आदमी साथ भेजना
करते है
श्री जी को मालुम है

विचारणीय है कि भाषा का इतना सुष्ठु प्रयोग वर्तमान काल में देखने में आता है। अत: यह निष्कर्ष निकालना उचित होगा कि भाषा का यह रूप २००-२५० वर्ष पूर्व से बनना प्रारम्भ हुआ होगा अर्थात् सहजता से सन् १५००-१५५० से खड़ीबोली गद्य बनने लगा होगा।

उदाहरण ५

ग्वालियर

श्री महांराजाधीराज श्री राज राजेंद्र श्री सवाई माधवसींघ जी जोग्ये राज श्री सुबेदार श्री जयाजी सीदे केंन की बंचजो जी आठां को स्माचार भला छै आपकी सर्वदा भलें चाहीजे आप्रचं ह्यां को रुपेया क्यां हुडयां मारफात साबकार श्री भीषारीदास वा मोजीराम ईन क्यां चीठयां जयपुर मोक्यां छै सो हुंडी पत्रां ठाकरां दलेल सींघ जी राजावृत ईन पास सौ आप त्रफू आवेगें सो सब रुपैया हुंडया ह्याँ पास षरच वास्ते आयां चाहीयें सो आप आपणें त्रफू को मातबर मुसदीयां के साथे आस वार ५००/- पांच सौ देकर मेडता लग रुपैयो आये पोहोंचे सोही क-योजी ईन वास्ते दलेल सीघ जी सो कहा छै सो आपसो आरज लीषेगें सो पर जाहर होसी मीती प्रथम जेट सुदी ५ संबत १८१२

पूर्वोक्त तीनों उदाहरण सं० २, ३ और ५ में प्रयुक्त शब्दावली के विश्लेषण से निम्नलिखित तथ्य प्रकाश में आते हैं—

ग्वालियर के सिंधिया (शिंदे) परिवार अपने को सूबेदार लिखते थे। यह शब्द अरबी/फ़ारसी के 'सूब:दार' शब्द का तद्भव एवं प्रचलित रूप है जिसका अर्थ सूबे का शासक, गवर्नर है।

समाचार का स्थानीय रूप स्मांचार, स्माचार प्रयोग सामान्य दिखता है। सर्वदा के साथ सदा का प्रयोग भी प्राय: हुआ किन्तु सर्वत्र नहीं। रुपया आज का प्रचलित रूप है जो रुपीया या रुपैया रूप में मिलता है जबकि संस्कृत का शब्द 'रुप्यकम्' है। हुंडीया और हुडयां शब्द 'हुंडियाँ' के लिए प्रयुक्त हुए हैं। हो सकता है कि पत्र लेखक सही प्रकार से लिखना न जानते हों। उदाहरण सं० २ में 'सुणा' शब्द 'सुना' के लिए प्रयुक्त हुआ। वास्तव में आज भी हिन्दीभाषी क्षेत्र विशेषत: खड़ीबोली के क्षेत्र में 'सुणा' रूप ही व्यवहार में बोलचाल में प्रयुक्त होता है। उदाहरण सं० १ में ही 'पीचल करना' शब्द मराठी के प्रचलित प्रयोग का नमूना है किन्तु 'कूच' या 'कुच शब्द प्रस्थान या प्रयाण के लिए प्रयुक्त हुआ है। कूच शब्द फ़ारसी का है जिसका अर्थ प्रस्थान, रवानगी, सेना का प्रस्थान है।

अन्य प्रयुक्त विदेशी शब्दों का खुलासा इस प्रकार है—

मुनासीव—अरबी शब्द मुनासिब का अपभ्रंश है जिसका अर्थ उचित है।

मजकुर—अरबी शब्द मज़्कूर: से उत्पन्न है जिसका अर्थ कही हुई बात है।

फीकीर—अरबी शब्द फ़िक्र से उत्पन्न है जिसका अर्थ चिन्ता है।
मातबर—अरबी मुतवर्रे शब्द का बिगड़ा रूप है जिसका अर्थ है संयमी।
मुसदीयां—अरबी शब्द मुसद्दिक़ से निकला है जिसका अर्थ है प्रमाणित करनेवाला।
आरज—अरबी (स्त्रीलिंग) अर्ज़ शब्द का बिगड़ा रूप जिसका अर्थ है प्रार्थना।
जाहर—अरबी ज़ाहिर से बिगड़ा रूप है जिसका अर्थ है 'व्यक्त'।
माफीक—अरबी शब्द मुआफ़िक़ से उत्पन्न है जिसका अर्थ है 'अनुकूल'।
सलुष—अरबी सलूक का बिगड़ा रूप है जिसका अर्थ है 'व्यवहार'।
स्नेह वृद्धी—स्नेह तो शुद्ध संस्कृत रूप है किन्तु वृद्धि को वृद्धी लिखा गया है।
हकीकती—अरबी में हक़ीक़त शब्द से बना शब्द जिसका अर्थ है 'सत्यता'।
मारफात—अरबी शब्द मारिफ़त (स्त्रीलिंग) से उत्पन्न है। अर्थ है 'द्वारा', 'जरिये से'।

औरंगज़ेब के शासन के पश्चात् अरबी/फ़ारसी शब्दों के बाहुल्य से पत्रों के कलेवर बने किन्तु सब मूल शब्दों के व्यावहारिक रूप बदल गए।

उदाहरण ६

इन्दौर

।। श्रीरामजी ।।

सीध श्री महाराजाधीराज राज राजेंद्र महाराज श्री सवाई प्रीथ्वीसींघ जी जोग्य श्रीराव तुकोजी होलकर केन श्री बंचजो अठा का समाचार भला छै राज का सदा भला चाहीजे अप्रंच कागद राज को आयो समाचार बांचणे सुं मालुम हुवा नबाब नजीबपां जी के त्रफ सु राजा प्रसादीराम अठे आय सारी हकीकत नवाब की वा राज की श्रेह बेहार की कही सोथेट सुं नबाब की वा राज की तथा इंहा की सला इतफाक सुं कर बाकी छै ही सो हाल याही बात मंजूर राष कुच को ईरादो कीयो छै सो मुफसल मसारनीले के लीषे से जाणोगें हमस कागद समाचार लीषावता रहोगा मीती आसोज श्रुद्ध १० संबत् १८२६

ग्वालियर से प्रेषित पत्रों की भाँति इस पत्र में भी 'कूच' शब्द के स्थान पर 'कुच' लिखा गया है। इस पत्र में मुफसल, मसारनीले दो शब्द नए हैं जो आज अप्रचलित हैं। मुफसल शब्द अरबी मुफस्सिल से उद्भूत है जिसका अर्थ स्पष्टीकरण करनेवाला है। मसारनीले शब्द किससे उद्भूत है, स्पष्ट नहीं हो सका।

उदाहरण ७

श्री राम जी
श्री
जोति स्वरूप चरणी
तसर राणी जी ← मुद्रा
सुत माहादजी
शिंद निरंतर

श्री मंत राज श्री सूबादार श्री माधौराव जी सीदे के पार कैसू लैं पर गयो ऐ हनो के जमीदार चौधरी वा कानूगो वागैरेह को मालुम होई आगुराज श्री रामलाल जैपुरकर ईन को चाकरी मे जागीर पर गये मजकूर के गाउं सीरकार नै साल मजंकूर सो लगाय—दीये ताको बेवरो

१	मौजेनीबादाजे	१	मौजे नागोर
१	मौजे कैथोदा	१	मौजे बरो
३	मौजे भवनपुखागेरे	१	मौजे गोघरो
१	मौजे षरगपुरा	१	मौजे पालीलोधी
१	मौजे बेनोरा	१	मौजे पडराई
१	मौजे बसवारी	२	मौजे डेडो नीसुनाई
८		७	

जुमले तेरी जुगांउ
१५

जुमले गाउं पंघरेह लगाय दीये है सो तुम ईन के आमलदार से हुजूर हके आमल सुरलीत देनो मीती आसाड वदि १४ संमत १८४०

पत्र की भाषा सामान्यतः खड़ीबोली है। संवत् १८४० अर्थात् सन् १७८३ ई० में अच्छी खड़ीबोली प्रयोग में आ रही थी। उस काल में भाषा में परिवर्तन की गति अत्यन्त धीमी थी, इसकी विगत संवत् १८०८ से लगाकर संवत् १८६० तक के उदाहरणों से पुष्टि होती है। इसलिए सन् १७८३ में प्रयुक्त अच्छी खड़ीबोली के विकसित होने में या चलते रहने में २००-२२५ वर्ष की अवधि सामान्य बात रही होगी। पत्र में कुछ विदेशी शब्दों का अर्थ इस प्रकार है—

वागैरेह—अरबी का वग़ैरः (अव्यय) से तद्भव रूप है। यह शब्द आज भी आदि के अर्थ में प्रचलित है।

बेवरो—यह शब्द आजकल के ब्यौरा शब्द का रूप है।

जुमले—अरबी का जुम्ल: (पुल्लिग) से उद्भूत, अर्थ है—समस्त। किन्तु यह आजकल कम चलता है।

पंधरेह—पन्द्रह का पुराना बोली रूप।

आमलदार—अरबी/फ़ारसी में अमलदारी का अर्थ शासन/सत्ता से है। इसलिए आमलदार यानि शासक है।

हुजूर 'हके' में 'है कै' रूप व्रजभाषा का बोली का रूप है जो लिखित में 'ह्वै कै' होगा।

उदाहरण ८

इन्दौर

आसोज सुदी ९
१८४९

प्रेषक— राव तुको जी होल्कर

प्रापक— प्रताप सिंह

॥ श्री रांम जी ॥

सीध श्री महाराजधिराज राज राजेंद्र महाराज श्री सवाइ प्रताप सिंघ जी जोग्य श्री राव तुको जी होलकर केल्य वंचजो अठा का समांचार भला छै राज्य का सदा भला चाहेजे अप्रंच कागद राज्य को आयो स्माचांर वांच्या तथा मीठालाल जाहर कीया ती को दरजुवाव रामसरनालह तथा जयरांम पंडत्त सूंकह्या छे सो जाहर करसी कागद समांचार हमेसा लीषता रहोळा मी आसोज सुद ९ सोमवार समत १८४९

अभिलेख नोट—संदेश

पत्र प्राप्ति स्वीकार तथा मीठालाल जी से मिले समाचारों का उत्तर जयराम पंडित के हाथ भेजे जाने की सूचना।

पत्र में समाचार शब्द को दो स्थानों पर अलग-अलग रूप में लिखा गया है। एक स्थान पर 'समांचार' तथा दूसरे पर 'स्माचांर' लिखा गया है।

दर जुवाव, जाहर और हमेसा शब्द विदेशी शब्द हैं। जवाब शब्द अरबी का पुल्लिग है जिसका अर्थ है उत्तर और दरजवाब का अर्थ होता है प्रत्युत्तर। जाहर शब्द अरबी के ज़ाहिर का तद्भव रूप है जिसका अर्थ है व्यक्त, प्रकट आदि। हमेसा शब्द फ़ारसी के हमेश: शब्द का तद्भव रूप है जिसका अर्थ है सर्वदा, सदा, नित्य आदि।

मुस्लिम शासन की लम्बी अवधि में अरबी/फ़ारसी के दो-चार शब्दों का पत्रों में समावेश, यह प्रकट करता है कि भारतीय संस्कृति की भाँति भारतीय भाषाएँ भी शब्दों को पचाने की शक्ति रखती हैं।

उदाहरण ९

इन्दौर

॥ श्रीरांमजी ॥

सिधि श्री सरवोपमा बीराजमान राज राजेंद्र मांहाराजाधिराज माहाराजा श्री सवाई प्रतापसीघ जी जोग्य लीषायतं बकसी राव जीवाजी बलाल केन आसीर-वाद आवधारीजो आठा का सांमाचार भला छ आपका सदा भला चाहीजो जी आप्रंच्य पुन्यासुं आलीजाहां बाहादर के कागद हांमकुं आये हैं हींदुस्थान के कारभर की मुषत्यारी हांमकु लीषी आई है और राजे श्री गोपालराव भाउ की तगीरी करके छडे हाजुर बुलाया है सो जायेंगे फौज में सीरदार ईहां सुराजे श्रीलछीमण आनंत वा राज श्री जगनाथराम जलदी आवे है सोजाणोगें जैसा य कलासराज श्री लछीमण आनंत ईन के मारफत पहेले बात ठहरी है सो नीभाव होसी ईहा के तरफ से बहुत षुसी रहणा पुन्यासु आलीजाहा बहादर के षत आपकुं आया है सो परभारा आपके पास पोहंचसी और संमाचार बौहरा दीना रामं जी कहेगे सो मालुम होसी कागद स्माचार हामेस लीषावत रहणा मिति आसिन सुदि १ समंत १८५१

अस्पष्ट

हस्ताक्षर

पत्र में अवधारिजो शब्द अवधारना शब्द का वाक्य प्रयोग है जिसका अर्थ है धारण करना अथवा ग्रहण करना अर्थात् बक्शी जी के आशीर्वाद को धारण करने का अनुरोध है। संस्कृत के अवधारण शब्द का अर्थ निरूपण/निश्चय है। 'कागद' शब्द में अर्थ-विस्तार का बोध है, जिसका अर्थ है पत्री या चिट्ठी। इस पत्र की भाषा में हिन्दी का खड़ीबोली रूप निखरकर स्पष्ट हुआ है उदाहरणार्थ—

आये हैं
लीषी आई है
बुलाया है
जायेंगे
बात ठहरी है (निश्चित हुई है)

उदाहरण १०

इन्दौर

·········फटा·········   ॥ श्रीरांमजी ॥

सिधी श्री महाराजाधिराज राज राजेद्रं महाराज श्रीसवाईजगतसिंह जी जोग्य लिखतंग महाराज श्री यसेवंतुराव हुलकर केन्य श्री—रांम रांम बंचजो ईहां का समाचार भला है महाराज का सदा भला चाही ये अपरचं अषबार सुं जाहर हुया के दरबार की फोजा व पलटण

कंयुगार नेल वगे़ रे ने जेपुर सूं राज जालिम सिंह के मुकाबला वास्ते
रुषसत कीया सो वात काम की है परंतु हाल ईसा मनसुबा जलदी
लडाई करोगा न्हीं पारपत ईस्का करणा हम कुं भी मंजूर है
सवारी ईदारे सु कुचदर कुच आवेते है आपस्की फोजां येक होय
जिस्माफिक राज्य कीमरजी होवे सोही करवा में आवेगा झालो
हरामषोर सरकारां को छै सो पुरकसपकी·········सलाह बिगड़
जासी चंता कोई तरह है की करोगे हमारी सवारी पोंहचे तब तक झाला सुबांता जाहरदारी रहे और मुफसिल स्माचार मेहता रंगीलाराम जुबानी जाहर करेगें कागद स्माचार पे हर पोलिषावता रहागा मिती आसोज सुदी ५ सवंत् १८६०

संवत् १८०८ से संवत् १८६० तक के सभी पत्रों में, जो ग्वालियर तथा इन्दौर से लिखे गए हैं सेनाओं के अभियानों की चर्चा मिलती है। वह काल पूर्णत: अराजकता का काल था, ऐसी इन पत्रों से पुष्टि होती है।

सभी उदाहरणों में सभी शब्द एक-दूसरे से मिले हुए मिलते हैं जिनमें से शब्दों को अलग-अलग करके पत्रों के रूप उभरे हैं।

उदाहरण ११

इन्दौर

श्री राम जी

सिधि श्री राज श्री राव चतुरभुज जी वा बकसी बाल मुकुंद जी जोग्य महाराजधिराज राजराजेश्वर महाराज श्री सुबेदार जी श्री जसवंत राव जी होलकर आलीजाह बहादुर केन्य बंचा अठा का समाचार भला छे उठा का भला चाहीजे अपरंच तुम्हांरे तरफ का अहवाल जीवणराम के अरज करबासु मालुम हुवा सरकार के सुभचींतकी में छो सो जोग ही छे अठे तुम आपणो दरवार जाणोग कीसी बात को बसवास (विश्वास) षातर मे न ल्यावोगे तुम्हारे और सीरकार के बीच श्री जी को वेल भडार छे और सारी हकीकत जीवण राम कहसी सीरकार के चाकरी कर बतावोग जदि सारी बरदास्त करवा मे आबसी मीती भदवा सुदि २ संमत १८६१

॥ । रा सी बाल मुकुंद जी जोग्य

इन्दौर के यशवंतराव होलकर के लिए आजीलाह बहादुर उपाधि का भी प्रयोग किया गया है। आलीजाह शब्द अरबी का शब्द है जो विशेषण है और इसका अर्थ बहुत बड़े रुत्बे वाला, महामान्य होता है। यह आश्चर्य का विषय है कि मुगलों का आधिपत्य समाप्तप्राय हो जाने पर मराठा शासक अरबी के अटपटे सम्मानसूचक शब्द अपने नाम के साथ लिखवाने के इच्छुक थे। यह उल्लेखनीय है

कि संवत् १८२६ के उदाहरण सं० ४ के पत्र में जयपुर के लिए राज शब्द का आदरसूचक प्रयोग था, संवत् १८५१ के पत्र में (उदाहरण सं० ५) 'आपकुं' शब्द का प्रयोग था किन्तु इस पत्र में 'तुम्हांरे', 'तुम्हारे' अल्पसम्मान सूचक शब्द प्रयोग में आए हैं। संभव है कि जयपुर की शक्ति घटने के कारण यह परिवर्तन हुआ हो या यह भी हो सकता है कि यह पत्र राव जी और बक्शी को सम्बोधित है, इसलिए ऐसा किया गया हो।

उदाहरण १२

ग्वालियर

। श्रीरामजी ।

सिद्धि श्री सर्वोपमां श्री महाराजाधिराज राज राजेंद्र महाराजा श्रीसवाई प्रतापसिंघ जी जोग्य श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा आलीजाह सुवेदार जी श्री दौलतराव सिंदे केन बाँच्य अठां का स्माँचार भला छै राज का सदा भला चाहिजे अपरंच जान राव वावले की छत्री जैपुर केन जी क छै उठे वगिचे के वास्ते राज दरवार सु पंचीस वीघा द्या ज्मीन ईनाम कर दी ईसों आत ताई चली आई और हाल साल में दरबार के मुतसदी ने हरकत करके ज्मीन में को माल भरवाएले गऐ छे ऐसा जाहर हुवा तीसुं लीषा छै सु अब राज दरबार सु मुत्तसघा ने ताकीद करवाए के ज्मीन मैको माल लीया होय सो पीछे दीवार देसी और धरती कु — आगे ईतन्है षे जलन होय सो करोला मिती माह बंदी १ साँ १८८१ मुगनजीक पुना

"वगिचे के वास्ते राज दरवार सुं पचीस वीघा जमीन ईनाम कर दी" वाक्य से इस पत्र का मुख्य कलेवर बनता है। इसमें संख्या 'पचीस' और बीघा शब्द गणना प्रणाली और भूमि की माप प्रणाली के द्योतक हैं। यह मानना होगा कि हमारी आधुनिक गणना तथा माप प्रणालियाँ पर्याप्त प्राचीन हैं। पत्र की भाषा में यथापूर्व मिश्रित हिन्दी का प्रयोग चलता रहा है।

समीक्षा से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं—

१. अन्तर्राज्यीय पत्राचार में हिन्दी के राजस्थानी, ब्रजभाषा, खड़ीबोली रूपों का मिश्रित प्रयोग हुआ है जो यह सिद्ध करता है कि हिन्दी के राजभाषा रूप में भाषा की किसी काल्पनिक शुद्धता के प्रति आग्रह नहीं था और पत्राचार में बोलचाल की भाषा प्रयुक्त होती थी।

२. हिन्दी का गद्यात्मक खड़ीबोली रूप सन् १५०० ई० से सन् १५५० के मध्य विकसित हुआ और वह शुष्क प्रशासनिक ही नहीं अपितु साहित्यिक सौन्दर्य से भरपूर था।

३. प्रशासनिक भाषा में अरबी/फ़ारसी के प्रचलित शब्दों के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई और वे शुद्ध न होकर तद्भव रूपों में उसी प्रकार चलते थे जैसे संस्कृत के अनेक शब्दों के तद्भव रूप प्रचलित थे ।
४. लेखन शैली लगभग एक जैसी थी और परम्परागत शैली ही चली ।
५. पत्रों के लिपिक बहुत कुशल तथा प्रशिक्षित नहीं थे । अल्पशिक्षित लिपिक ही पत्र लिखते थे, इस तथ्य की पुष्टि उदाहरण सं० ८ में एक ही पत्र में समाचार शब्द को दो प्रकार से लिखने से होती है ।

अध्याय ५

हिन्दी का पठन-पाठन

मध्य युग में शिक्षा का विकास उस रूप में राज्य का कर्तव्य नहीं माना जाता था जिस रूप में आधुनिक काल में माना जाता है। वैदिककालीन परम्पराओं के कुछ चिह्न उपासरों, पौसालों तथा पाठशालाओं में दिखाई देते थे जिनमें सामान्य रूप से पाँच से दस वर्ष की आयु के बच्चों को तपस्वी एवं विद्वान् अध्यापक नि:स्वार्थ भाव से शिक्षा देते थे। शिक्षा का जीवन की व्यावहारिकता से गहरा सम्बन्ध था। अतएव बच्चों को पढ़ने-लिखने और गणित की शिक्षा देने के साथ-साथ धार्मिक एवं नैतिक आदर्शों का भी ज्ञान कराया जाता था। मध्य काल के मुस्लिम शासकों ने शिक्षा के लिए मकतब और मदरसे खोल रखे थे, उसी प्रकार विभिन्न भागों में शिक्षा देने के लिए पाठशालाओं की व्यवस्था थी जिनमें पढ़ाए जानेवाले विषय आधुनिक समय के पाठ्यक्रम के समान नहीं होते हुए भी, सुनिश्चित थे। इसीलिए व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करके इन शालाओं से शिक्षा प्राप्त करके निकलनेवाले बच्चों की भाषा परिमार्जित होती थी। मूलत: शिक्षा धर्म प्रधान थी। परंतु उतनी धर्मप्रेरित नहीं थी जितनी मुस्लिम राज्य में। ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जहाँ प्राथमिक स्कूलों में हिन्दू और मुसलमान बच्चे एक साथ बैठकर शिक्षा प्राप्त करते थे अथवा एक मुस्लिम मदरसे में हिन्दू पंडित को अध्यापन का काम सौंपा जाता था और फ़ारसी भाषा का ज्ञान मुसलमानों के अतिरिक्त हिन्दू (जिसमें ब्राह्मण भी शामिल थे) भी प्राप्त करते थे। राजपूत राजा मुस्लिम मदरसों को अनुदान देते थे।

संवत् १५४५ वि० (सन् १४८८) के एकलिंग शिलालेख में भृगु परिवार का जिक्र है जिसकी चार पीढ़ियाँ घर की चारदीवारी के भीतर रहकर वेद, मीमांसा और साहित्य में प्रकांड पंडित हो गई थीं। पारिवारिक एवं वंश परम्परागत शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी।

प्रकांड पंडितों के निवास-स्थान पर भी शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था थी। 'गुणभाषा चित्र' नामक पांडुलिपि को पढ़ने से प्रकट होता है कि जोधपुर नरेश गजसिंह ने गुरु के आश्रम में रहकर ही शिक्षा प्राप्त की।

प्रकांड पंडितों को ग्राम दान में मिले हुए थे। उन ब्राह्मणों को अपने गाँव में शिक्षा की व्यवस्था करनी पड़ती थी। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि मेवाड़ की भौगोलिक सीमाओं में ही इस प्रकार के शिक्षालयों की व्यवस्था थी। मेवाड़ में भी पीपली और चित्तौड़ के निकट एक गाँव राजेश्वर भट्ट को मिला हुआ था। यह सम्भव है कि इस व्यवस्था से प्रेरित होकर आधुनिक युग में ईसाई पादरियों ने चर्चों के साथ शिक्षालय स्थापित किए हों, किन्तु भारतीय जन इस प्रणाली की उपयोगिता को भूल से गए हैं क्योंकि आजकल मन्दिरों के साथ शिक्षालय स्थापित करने की परिपाटी समाप्तप्राय है।

जैन साधुओं के द्वारा संचालित 'उपासरे' शिक्षा के लोकप्रिय केन्द्र थे। उनमें केवल बच्चे ही शिक्षा ग्रहण नहीं करते थे वरन् प्रौढ़ भी उनमें शिक्षा प्राप्त करने जाते थे। उपासरों में अध्यापन-कार्य करनेवाले जैन साधुओं को प्रशिक्षित करने के लिए बीकानेर में एक उपासरा था। उसे आधुनिक शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र का प्राचीन रूप कहा जा सकता है। उनके अतिरिक्त मेवाड़ और जैसलमेर में मठ थे जो सम्बन्धित प्रदेश के निवासियों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन को नियन्त्रित करते थे।

सर्वाधिक लोकप्रिय शिक्षा-संस्थाएँ पाठशाला, नेसाल, पोसाल और चौकी मानी जाती थीं। उनमें पेड़ों की छाया के तले तपस्वी अध्यापकों की चरण छाया में बैठ कर विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे।

विद्यालयों में अध्यापन-कार्य मौखिक रूप से होता था क्योंकि मुद्रणालय के अभाव में पुस्तकों की व्यवस्था प्रत्येक विद्यार्थी के लिए सम्भव नहीं थी। तख्ती और स्लेट पर लिखित अभ्यास करनेवाले विद्यार्थी मौखिक रूप से पुस्तकें रटते थे। सामान्यत: लिखने, पढ़ने और गणित की शिक्षा दी जाती थी; परन्तु चौदहवीं शताब्दी के ग्रन्थ 'कान्हड़दे प्रबंध' से प्रकट होता है कि पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, नक्षत्र विद्या, व्याकरण तथा तर्कशास्त्र का भी गूढ़ अध्ययन करने की व्यवस्था थी। उस युग के राजा-महाराजा वेद और धर्मशास्त्रों के अध्ययन में रुचि रखते थे। अतएव राजकुमारों को इनका ज्ञान दिया जाता था। 'सूरजप्रकाश' के अनुसार क्षत्रिय बालकों को घुड़सवारी, हाथी की सवारी, धनुर्विद्या तथा दुर्ग वेधन कला का ज्ञान उन विद्यालयों में कराया जाता था। वाद-विवाद (आधुनिक सेमिनार प्रणाली) व्याख्यान तथा प्रश्नोत्तर आधार पर शिक्षक विद्यार्थियों को प्राथमिक ज्ञान देते थे। यह प्रणाली दिन-भर चलती थी और कभी-कभी रात्रि में भी अध्यापक अपने विद्यार्थियों को घेरकर बैठ जाता था। उन्हें अवकाश नहीं दिया जाता था। महीने में केवल पूर्णिमा को अवकाश दिया जाता था।

शिक्षा समाप्ति पर गुरु द्वारा अपने शिष्य को जो उपाधि दी जाती थी वही विद्यार्थी के ज्ञान का मापदंड मानी जाती थी। कवि, कविराज, पंडित, उपाध्याय

तथा महामहोपाध्याय की उपाधियाँ प्रदान की जाती थीं। पंडित और आचार्य की उपाधियाँ अद्वितीय प्रतिभावाले विद्यार्थियों को प्रदान की जाती थीं, यद्यपि उपाध्याय का सामाजिक महत्त्व अधिक था।

मध्यकाल में स्त्रीशिक्षा भी प्रचलित थी। साधारण व्यक्ति अपनी लड़कियों को शिक्षा देने के प्रति जागरूक नहीं था। उच्च वर्ग की स्त्रियाँ ही शिक्षा प्राप्त करने में समर्थ थीं।

प्रेस के अभाव में पुस्तकें उपलब्ध करना बड़ा ही कठिन था, फिर भी कतिपय बुद्धिजीवी शासकों ने अपने राज्यों में पांडुलिपियों का संग्रह करके आधुनिक पुस्तकालयों की व्यवस्था की थी। उदयपुर का वाणी विलास (जिसमें अब सरस्वती भवन पुस्तकालय है) अथवा जोधपुर का पुस्तक प्रकाश इस प्रकार के पुस्तकालय थे।

प्रेस की सुविधा मिलते ही उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शिक्षण संस्थाएँ तीव्र गति से खुलने लगीं। पूर्व-विवेचन से इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि भाषा के लेखन में वर्तनी की एकरूपता सम्भव नहीं थी अपितु किसी भी शब्द के वोलने की शैली के आधार पर ही उस शब्द को पत्र में लिखना एक स्वाभाविक बात थी। इसी कारण पत्रों में वर्तनी की एकरूपता नहीं होती। तो भी परम्परागत पत्र शैली का निर्वाह उन दिनों की डाक वितरण प्रणाली और पत्रों द्वारा पारस्परिक सम्पर्क के फलस्वरूप होता था। अनिवार्य शिक्षा न होने और शिक्षा की सर्वत्र एक प्रणाली न होने के कारण ही प्रशासनिक पत्राचार में वर्तनी का मानकत्व स्थापित नहीं हो सकता था। भाषा के मानक रूप की स्थापना का प्रश्न भी नहीं था; किन्तु यह विचारणीय है कि तत्कालीन शासक/प्रशासक देश की प्राचीन मान्यताओं के निर्वाह का ध्यान रखते थे जिसके कारण पत्र-लेखन-शैली तथा शब्द सैकड़ों वर्षों तक यथावत् प्रयुक्त होते रहे। हिन्दी भाषा की शिक्षा का नियमित और व्यवस्थित प्रचलन नहीं था, इसीलिए प्रयुक्त भाषा में एकरूपता नहीं थी। अतः भाषा में व्यक्ति-वैचित्र्य और स्थान-वैचित्र्य मिलता है।

कतिपय शब्दों के भिन्न-भिन्न लिखित रूप—

परम, प्रम प्रंम
समाचार, समांचार, स्मांचार, समंचार, संमाचार
घोरौ, घोडा, घौड़ा, घोरे
दीवाण, दीवान, दीवाण, दीवान
सुदी, सुद, श्रुध, सुदि, षुद, सद
सम्वत्, समवत, संवत, समत, सवत, संबत, सवंत, समत, सवत, स्मत, समत्, संवत्, सवत, समत

मिति, मीती, मिती, मीति, मती
प्रति, प्रत
दस्तख़त, दसषत, दसकता, दसकती, दसकत
बैंशाख, वैसाष, बसाष, बैसाष, वसाष
चैत्र, चैत
ज्येष्ठ, जेठ, ज्येठ,
आसाढ़, आसाढ, असाढ
भादौं, भाद्रपद, भादवा
कार्तिक, कातिग, कार्त्तिकी, कातिक, काती
मार्गशीर्ष, मागश्र, मांगश्ृर, मगस, मगस्र, मंगसर, मागसिर, मगश्र, मारग-
सीरा, मगस
महाराजाधिराज, माहाराजीधराजी, माहाराजाधीराजि, महाराजाधिराज़ा,
माहाराजधीराज
लीषतं, लीषत, लीषाईतं, लिषावतं, लिषायतं, लीषीतं
कागद, कागज, कागल, कगद
अपरंच, अप्रांच, अप्रचि, अपरचं, अप्रच, अप्रांच, आप्रंच, अप्रंचे, आप्रच्य,
अप्ररचे
पौष, पोस, पउस, पोस, पोंस, पौस
बदी, बुदी, बूद, वदि, बंद, वद, बदि, बीदी, वुंदी, वदी
हुकम, हुकंम
विशेष, विसेष, वसेष, वीसेस, वीसेष, वीशेष, बसेस
रजपूत, राजपूत
माघ, म्हा, माहा
जुहार, जूहार, जुहवार, जुंहार
सुख, सूष, सुष
क्वार, असोज, आसौज, आसोज, आश्वनि, कुंवार, कुवा़र
परगना, प्रगना, प्रगनां
मुजरा, मुजरो, मुजरौ
चाहिज्ये, चाहीज्ये, चाहिये, चाहियै, चाहीजे, चाहज्ये, चाहीज्यै
बहादुर, वाहादर, बाहादुर, वहादुर
जोग्य, योग्य, जोग्यी, जोग, जौगी
आरोग्य, आरोग, अरोग्यै, आरौगी, आरोगी
सर्वोपमा, सर्बोपमा, सर्ब उपमा, सरववोपमा, सरबवौपमा
विराजमान, बीराजमान

अवधारजो, औधारीज्यो, अवधारिज्यो
ईहां, ईहा, ह्यां, हया
उहां, उंहा
ऋपा, ऋुपा,ॠपा, कीरपा, क्रिपा, कृपा
बंच्या, वाचजो, बांच्यो, बाच्या, बांचजो, वाचीजो, बंचीजो, वंचीजो, वंच्यै,
बंचने
संथोक, संतोष
हमेस, हंमेस, हंमेसा, हमेसा
सीवाइी, सवाइी, सवाइ, सवाई
महरवानगी, महरबानगी, महेरवानगी
रुपीया, रुपया, रुपया रूपया, रु०
पंडित, पंडीत

विकासशील भाषा में शब्दों की वर्तनी निश्चित नहीं होती, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति स्वेच्छया लिखता है। मध्यकालीन अंग्रेजी में भी एक-एक शब्द की १०-१२ प्रकार की वर्तनियाँ थीं। शब्दकोश तथा व्याकरण बन जाने के पश्चात् ऐसा नहीं होता।

अंग्रेजों के आधिपत्य के पश्चात् उल्लेखनीय परिवर्तन हुए। पुराने समय में प्रायः हर बोली के क्षेत्र में अपना एक राज होने से राज-काज की भाषा भी वही बोली रहती थी और वही शिक्षा का माध्यम भी बनती थी। तब शिक्षा का प्रबन्ध पंचायतों द्वारा आसानी से गाँव में ही हो जाता था, अतः अशिक्षितों का प्रश्न तब इतना न था। पर अंग्रेजों के आधिपत्य के पश्चात् "पढ़े-लिखे राज्याधिकारी शासन सुधार के नाम पर सरकार द्वारा नियत किए जाकर पहुँचने लगे। वे प्रायः बाहरी लोग होते थे जो जनता की भाषा छोड़कर राजकाज फ़ारसी, उर्दू या अंग्रेजी में चलाते थे, शिक्षा का माध्यम भी उर्दू, अंग्रेजी बना दिया गया। फलतः सिर्फ अपनी बोली में बोलना जानने-सोचनेवाली अधिकांश जनता अशिक्षित घोषित कर दी गई। इससे अशिक्षितों की संख्या बहुत बढ़ गई और वे सब बोलियाँ, जो इससे पूर्व काफी पुष्ट साहित्य सृजन और विचार प्रकाशन की क्षमता और प्रवृत्ति दिखाती रही थीं अब केवल बोलचाल की गँवारू बोलियाँ बन गईं।"

अंग्रेजी के बढ़ते हुए प्रयोग और उसको जाननेवाले अधिकारियों द्वारा स्व-भाषाओं को गँवारू अथवा अविकसित समझने की प्रवृत्ति का जो शिलान्यास हुआ वह वृत्ति आज भी एक सुदृढ़ भवन के रूप में न केवल हिन्दी भाषी प्रदेशों में अपितु सम्पूर्ण देश में स्वदेशी भाषाओं के सम्मुख खड़ी है। फलस्वरूप अंग्रेजी भाषा की

उच्चता और शासन में हिन्दी भाषा की हीनता का भाव भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आए अनेक हिन्दीतर भाषा-भाषियों के द्वारा अंग्रेजी प्रयोग पर बल देते रहने के कारण बना हुआ है। प्रशासन की सक्षम भाषा के रूप में हिन्दी के स्थान को निरंतर चुनौती मिल रही है। तथापि हिन्दी भाषा को इसका स्थान मिले, इसके लिए भी बहुविध प्रयत्न हो रहे हैं।

अध्याय ६

देवनागरी लिपि का प्रयोग (अक्षर विन्यास)

'लिपि' भाषा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा न केवल 'श्रुति' को संरक्षित कर उसे भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जाता है, अपितु इसके माध्यम से 'भाषा' समाज के क्रिया-व्यवहार की सुगमता प्राप्त करती है। लिपि का कार्य भावों का अंकन है। अपने इस कार्य में जो लिपि जितनी ही सफल होगी, उसे उतनी ही शक्ति-सम्पन्ना तथा उपयोगी कहा जाएगा। लिपि के अभाव में भाषा अपनी सीमा से बाहर नहीं निकल पाती। लिपि के द्वारा भाषा में निश्चिन्तता आती है।

देवनागरी लिपि, प्राचीन ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। अल्बेरूनी (१०३० ई०) ने अपने ग्रन्थ में जानकारी देते हुए लिखा था कि—

"कश्मीर, वाराणसी तथा मध्यदेश (कन्नौज के आसपास के प्रदेश) में सिद्ध मातृका लिपि का व्यवहार होता है और मालवा में नागरी लिपि का प्रचलन है।"

इस जानकारी के अनुसार छठी से दसवीं सदी तक की उत्तर भारत की लिपि को 'सिद्धमातृका' कहते थे। इसे सम्भवत: 'सिद्धम् लिपि' भी कहते थे।

कुषाण व गुप्त कालीन ब्राह्मी लिपि के अक्षरों से शनैः-शनैः कलात्मक सिद्धम् लिपि के अक्षरों का विकास हुआ।

ईसा की दसवीं सदी से उत्तर भारत में नागरी लिपि के लेख मिलने लग जाते हैं। परन्तु दक्षिण भारत से इस लिपि (नंदि नागरी) के लेख करीब दो सदी पहले मिलते हैं। नागरी लिपि के आरम्भिक लेख दक्षिण भारत से ही मिले हैं। पहले-पहल विजयनगर के राजाओं के लेखों की लिपि को ही नंदि नागरी नाम दिया गया था।

८वीं से ११वीं ईस्वी सदियों में नागरी लिपि पूरे देश में व्याप्त थी। उस समय यह एक सार्वदेशिक लिपि थी। उदाहरणस्वरूप कुछ दानपात्रों और शिलालेखों के नमूने देखने योग्य हैं। अगले पृष्ठों पर मूल शिलालेखों की प्रतिलिपि तथा उसके सामने पृष्ठ पर देवनागरी लिपि में उसका रूप दिया गया है।

१. प्रतीहार राजा महेन्द्रपाल (प्रथम) के दानपत्र का एक अंश :

परम्भगवतीभक्तो महाराजश्रीभोजदेवस्तस्य
पुत्रस्तत्पादानुध्यातः श्रीचन्द्रभट्टारिकादेव्यामुत्पन्नः
परम्भगवतीभक्तो महाराजश्रीमहेन्द्रपालदेवः ॥

२. परमार राजा भोज के बेतमा दानपत्र (१०२० ई०) का एक अंश :

जयति व्योमकेशोऽसौ यः सर्गाय बिभर्त्ति तां ।
ऐंदवीं शिरसा लेखां जगद्बीजाङ्कुराकृतिं ॥
महाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीभोजदेवः

३. गंगवंश के राजा वज्रहस्त (तृतीय) के गंजाम दानपत्र (१०६८ ई०) की अंतिम पंक्ति :

गोकननायकाय चिरकालमाराध्य
स्वपौर्षपरितोषिताय दत्त इति ॥

४. कोल्हापुर के शिलाहार शासक गंडरादित्य के ताम्रशासन (११२६ ई०) का एक अंश :

श्रीगंडरादित्य इति प्रसिद्धः
दीनानाथदरिद्रदुःखिविकल्लव्याकीर्णनाना-
विधप्राणित्राणपरायणः प्रतिदिनं

१. **राजा वरगुण के पलियम दानपत्र (९वीं सदी) का एक अंश :**

यस्यास्तोदयहिम्यशैलमलया: सैन्येभदन्तावलीटङ्कक्षुण्णतटा
भवन्ति विजयस्तम्भा जगन्निर्ज्जये ॥

२. **दिर्वे-आगर (रत्नागिरी जिले) से प्राप्त मराठी भाषा के प्राचीनतम ताम्रपट (१०६० ई०) की अंतिम पंक्ति :**

य देवलु हे जाणति । जें
सुवर्ण्ण लिहलें तें कांठेअ: समेत: ॥

३. **श्रवणबेलगोल के गोमटेश्वर के पुतले के पैरों के पास खुदा हुआ एक लेख (१११७ ई०), जिसकी भाषा मराठी है :**

श्रीगंगराजे सुत्ताले
करवियले

४. **कल्याण के पश्चिमी चालुक्य नरेश विक्रमादित्य (छठे) के समय (१२वीं सदी) के एक लेख का अंश :**

दशशतयत्र अष्टत्यधिकसकु १००८ प्रभवसंवत्सरे

५. **देवगिरि के यादव राजा रामचन्द्र (१३वीं सदी) के थाना ताम्रपत्र का एक अंश :**

आस्ते पयोधिप्रतिमो यदुनां वंश: प्रतीतो भुवनत्रयेपि ।

६. **चोळ-नरेश राजेन्द्र का सिक्का, जिस पर नागरी में 'श्रीराजेन्द्र' शब्द अंकित है ।**

आगे के उदाहरणों में से उदाहरण १ अत्यन्त प्राचीन प्रलेख है। इसका संवत् तो ज्ञात नहीं है किन्तु सवाई जयसिंह अर्थात् जयपुर के जयसिंह (द्वितीय) को सम्बोधित होने के कारण यह सन् १७०० से सन् १७४३ ई० के मध्य का है। इसमें अक्षरों के निम्नलिखित रूप द्रष्टव्य हैं—

ज	=	ज	ज का रूप कुछ विचित्र है।
व़	=	व	
र	=	र	पिछले चित्र में उदाहरण ३ में र इसी प्रकार का है और यह भी उल्लेखनीय है कि पिछले चित्र में उदाहरण ५ में भ इसी प्रकार का है।
भ	=	भ	
म	=	य	
इ	=	इ	
फ	=	फ	
अ	=	अ	
क्र	=	कृ	

उदाहरण १

ग्वालियर

।।सिधिश्रीमहाराजाधिराजश्रीराजाधिराजश्रीसवा

।।ईजैसिंघदेवजूऐतेराजागोपालसिंघकौदुहाजुत्र

।।गिश्रीमहाराजाजूकेस्याघारसदाजेलचाहिजैएहा

।।केस्याचारमहाराजकीमहरवानिगीतैजलहैत्रा

।।गैत्रपापत्रुआदेमहरवानिगीजानीमहाराज

।।लिषीतीकिकुवरवहादुरसिंघपाछकुमुलीघतु

।।जाहिरकरैगेताकोंघसमानाफेरैगेताकोंमहाराजुन

।।गोरषसमानाकरैतोत्रौनुकोकरैगोहिलाजेघोरारज

।।सूतहैतेमहाराजकेकामकेहरिगातोसववातकेमहा

।।राजहीकोहुकुमुहैव्योरोमुकासिलपाछकुअरजक

।।रैगेमहरवानिगीकैहिनालाडिफकामुथिदिमि

।।तिहोडिसुकुरमावतरहिहोत्रसाढसुदिश्स्वर्णमुः

।।ओर

उदाहरण ३

बीकानेर

॥श्री लिछमीनारायणजी

॥स्वस्तश्री राजराजेंद्र महाराजा
धिराज महाराजा श्री स वाइ मा
धवसिंघजी सुं म्हांरो जुहार
मालम हुवै उपर चरु का
दीय आपरा ओफाकिसनद
त वास्ते कारी सुं आया वाचि
यां सुं षस्यब षतीजा इ न्या ओ
फाकिंनदत देवद न आपरै
फुर माये माफक सारा सीमा चा
र मालुम कि या छै ठेतो सब अ
कम आपरो छै सो बणायरैका
सु लिषी आफदी नि जर आव
सी आपरी मरजी माफक कांम

[illegible] बी[illegible] वीकनसा[illegible] नारण[illegible]

[illegible]

पृष्ठ ६६ का उदाहरण २ इन्दौर रियासत की ओर से जयपुर को भेजा गया पत्र है। पत्र का हस्तलेख सुलेख तो नहीं है किन्तु 'भ' अक्षर की रचना आधुनिक देवनागरी के अनुसार है।

पृष्ठ ६७ का उदाहरण ३ बीकानेर रियासत की ओर से जयपुर को लिखा गया पत्र है। इसमें निम्नलिखित अक्षरों की रचना ध्यान देने योग्य है। संवत् १८११ अर्थात् सन् १७५४ ई० में लिपि में पुरानी ब्राह्मी के गुण दृष्टिगोचर होते हैं।

= हु

= पृं इसमें आधा प लिखकर उसमें र जोड़ा गया है।

= रु इसमें रु लिखकर ह्रस्व उ की मात्रा भी लगा दी गई है।

= छ

हस्तलेख बहुत सुन्दर है।

आगे के उदाहरण ४ में 'ध' को वर्तमान मानकरूप 'ध' की भाँति ही लिखा गया है। पुराने ध का प्रयोग नहीं हुआ।

उदाहरण ५ में मल्हारराव को मल्लारराव

उदाहरण ६ में 'अ' को अ न लिखकर वर्तमान मानक रूप 'अ' लिखा गया है।

उदाहरण ४

श्री राम जी इन्दौर

स्वस्ति श्री महाराजाधीराज राजेंद्र श्री सवाई माधवसिंह जी जोग्य श्री मलारराव होलकर केन श्री············बंचजो अठां का समाचार भला छे राज का सदा भला चाहीजे अप्रंच राज को कागद आयो समाचार मालुम हुवो दीवाण कन्हीराम जी का भिजबाकी लीष्यो सो राज आछी सलाह बीचारी होये लीवां का आंयां समाचार जाण बामे आवे लो और अठां का समाचार साह अनुपराम कालीष्या सुं मालुम होये लो कागद समाचार हमेसां लीषावोला मीती पोंस बदी ७ संमत् १८०८

ध को ध ऐसे लिखा गया है।

श्री महाराजाधी श्री सवाई माध्वसिंह जी

उदाहरण ५

श्री राम जी इन्दौर

सीध श्री महाराजधीराज राजेंद्र श्री सवाधवसींघ जी जोग्य लीपीतं राजे श्री मल्लारराव होलकर श्री वांच जो अपरंच इंहा के समाचार भले है आपके सदा भले चाहीजे अपरंच गणेश पंडित तथा शंकराजीपंडित के लीषा सुं मालम हुवो जो रुपया वसुला मे आया नही या बात जोग्य नही इंहा हजुर की ताकीद रुपया के सबब हुई है। सो वेवरो अनुपराम जी के लीषा सुं मालम होगो अब इंहा को सलुक राषणो जरूर है तो रुपया की निसां पंडिता की कर रसीद पंडिता की इंहा पोहचा वजो घणों काई लीषां मीती कार्त्तिकी श्रुध १ समत् १८०९

उदाहरण ६

।। श्री शिवो जयति ।। इन्दौर

सीध श्री महाराजाधिराज श्रीसवाई माधोंसीग जी जोग्य श्री पंडीत श्री रघुनाथ वाजिराव को आसीर्वाद बंचने अैठा को स्माचार भलो छे आप का सदा भला चाहीजे अपरंच आपके तरफ का रुपीया कातिक महीने के किस्ति का सीरकार में अब ताई आया नहि कीस्तवंदी का करार था सो चुग गया या बात असनेह (स्नेह) कों जोग्य नहिं रुपीया की ताकिद पुन्ना दीयां को कराय जलदी से रुपीया भेज देना यामे आछा हें हमेसा कागद स्माचार लीषवो करोला

मीति कातिक सुदी १० समत १८१४ परषें मुका साजना वाद

उदाहरण ७ में हिन्दी की गिनतियों के शब्दों में रूप के दर्शन होते हैं। 'उनचालीस' ३९ लिखा गया है। सन् १७५३ ई० के, लगभग २३८ वर्ष प्राचीन पत्र में 'ण' का 'ण' रूप ही मिलता है।

उदाहरण ९, १०, ११ तथा १२ में देवनागरी के अक्षरों के रूपों का सुंदर दिग्दर्शन होता है।

उदाहरण ७

श्री इन्दौर सन् १७५३

स्वस्ती श्री महाराजाधीराज राजेन्द्र श्री भाई जी श्री सवाई माधोसींघ जी जोग्य ली० श्री षंडेराव होलकर केन श्री··············बंच्या अठा का समाचार भला छे राज का सदा भला चाहीजे अप्रंच आगे राज कुं षत भेजा छे पोहच्या होयगा आगें राज नें शहर औरंगाबाद की उनचालीस हजार की हुंडी भेजी वा सरकार के पैसों की हुंडी भेजी थी ते की पेठ हुंडी की दीकत हुयी पैसे पलोंमें पडे नही ना वाकी के पैसों की रहान हुयी सबब अब षत लीख्यों छै सो आपके दील में पैसे देणे होय तो औरंगाबाद की हुडी की पेंठ वा बाकी पैसों की तजवीज कर भेज

दीजो नही तो साफ जवाब लीष भेजो तौ माफक करणा होय तो करांगा रुपयों वास्ते श्री हर गोवींद जी कु ताकीद कर नीशा करोला हमेसा षत में सारा समाचार लीषवो करोला

मीती कुंवार सुदी १४ संवत् १८१०

टिप्पणी :—पत्र में हिन्दी की गिनती 'उनचालीस' का प्रयोग और सन् १७५३ ई० में सुघड़ खड़ीबोली का प्रयोग यह इंगित करता है कि यह परिपाटी सन् १५००-१५५० ई० से उभरी होगी।

उदाहरण ८

।। श्री राम जी ।। इन्दौर

शुभ चिंतक बापू जी माहादेव व पुरुषोतम माहादेव केन अनेकानेक आशीर्वाद अपरं वाल मकंद पोहोंच्या माहाराज के हुकुम माफ सगळा समंचार कह्या सो पातशाह सूं अर्ज कीया पातशाह वहात राजी हुवा मतालबां कु वास्ते अरज करी सो दीवाण राजा हरगोविंद अरज करेला म्हेनो माहाराज का सदा सूं शुभ चित्क छ। महांसू सरकार को काम होसी सो करसां मीती आसाढ सुदि १४ सं० १८१०

टिप्पणी—पत्र का लिपिक भाषा का अल्पज्ञ था। इसकी अनेक शब्दों के सही न लिखे होने से पुष्टि होती है, उदाहरणार्थ—माहादेव, माहाराज, पातशाहा, वहात (बहुत), आदि शब्द हैं।

उदाहरण ९

।। श्री रांम जी

सिधि श्री राव चतुरभुज जी जोग्य श्री महांराजधिराज श्री महांराजा श्री अलीजांह सूबेदार जी श्री दौकतराउ जी सिंदे के वांच रै यह के समाचार भला छै उहां के स्माचार भलै चाहीजै आप्रंच पच लाष रुपैया राजे श्री वाला जी जसवंत घर तै लेके वेरात मामले मैं दइ है सो राज मै जुवाव स्वाल करकै वरात वर मुजम रुपैया जलदी दीवाइ दै नौ मीती पौस बदी २ संमत १८६५

पत्र के पीछे की ओर

।। सिधि श्री राव चतुरभुज जी जोग्य..................

सींध्यासौ

'उ' को लिखने की विधि इस पत्र की विशिष्टता है। सूबेदार में 'ब' के स्थान पर 'व' का प्रयोग उल्लेखनीय है। यह प्रवृत्ति कम पढ़े-लिखे व्यक्तियों में आज भी दृष्टिगोचर होती है।

समाचार का बोलचाल का रूप स्माचार इस पत्र में प्रयुक्त हुआ है। 'रुपैया' शब्द भी कहीं रूपया, कहीं रुपया, कहीं रुपीया तो कहीं रुपिया आदि रूपों में बोल-

चाल के अनुसार बदलता रहा है किन्तु भाषा अर्थ की वाहिका है, इसलिए अर्थबोध कराती रही है।

उदाहरण १०

श्री रांमजी

सीधी श्री सरब्वोपमा जोग्य दादा भाई श्री राव चतरभुज जी[जोग्य लीषाईतं कीसन स्यंघ केन्य मुजरो वाचीजो अंठा का स्माचार भला छै राज्य का सदा भला चाहीज्ये अप्रची बासडीद कोई न्यत हंवो छैसो अदब वजाय माथ चोड़ी लोला ओर अवाकी ढील ५ करोला स्माचार भाई जी का कागद सुजाणला मीती काती बदी ३ संबत १८७१ क

दूसरी ओर

दादा भा भुज जी जोग्य

पत्र में 'क' का 'ए' जैसा रूप तथा ल का ळ रूप उल्लेखनीय है।

उदाहरण ११

श्री राम जी

सीधी श्री सरब्वोपमा जोग्य राव् जी श्री भाइ चैत्रभुज जो जोग्य लिषतं राव चाद स्यंघ केनी मुजरो वंच्यज्यो अठा का स्माचार भला छै राज्य का सदा भला चाहीज्ये अप्रंची हित ई कलास राषो छोंती सु वसेष राषोला ओर स्यामत षां जी आवै छै वा सेषजी आव छै अरु अंठासु ईचा सब कस नै भेज्यो छै सो स्माचार सारा कहसी राज्य वेगा आवोला और कागद स्मंचार कामकाज होय सो हमेसा लिषावो करो ल।

मीती सावण सुदी १ संबत १८७१

कागज की दूसरी ओर

राव जी भाइ चैत्रभुज जी जोग्य

मुद्रा श्री राम जी

राव चाद स्युंघ

······अस्पष्ट

उदाहरण १२

श्री ऐकलिग

श्री बाणनाथजी श्रीनाथजी

श्री

स्वस्ति श्री म्हाराजधिराज म्हाराज म्हाराज श्री भाइी श्री जगत सिघ जी हजुर

राणा भिमसीघरो मुजरो मालम [व्हे २ == पप्तः आपरौ कगद आयो स्माचर जार वाकतरा स्माचार दो ही जणा राज षानाथा वा राव चुतरभुज जीरी अरजी थी मालम वा सो अग ऊगरो श्री जा ऐ कही वे वार की दोहे जुही जाणेगा कड़ी तफावज न्ही जाणेगा आपसुग्य न्हे सो सात पद लाब लोक्रे गा भुलेगा न्ही जादा काही लषा माहो था अजालरीघ जाहे जे तल्वा हे सो जलदी ऊठे आवे हाजर न्हे गाय द्दे म्हवे फरमावेगा वी अेल्षेगा जो ही अेठ म्हारे कत बहे कत्तरा स्माचार राव चुतरभुज जी हे सको लषो हे सो वी मालम क्रेगा तथा रा॑ राम चद री अरजी थी मालम व्हेगा संबत १८७४ व्षे सुदि १४ भोमे

टिप्पणी—कागज पर सर्वत्र सोने के ठप्पे पाए गए।

नहीं को न्ही लिखा गया है। तथा को त्था लिखा गया है।

भी को वी लिखा गया है। "सो वी मालम क्रेगा" खड़ीबोली के 'सो भी मालूम करेगा' का रूप है।

उदाहरणों के दोहन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं—

१. 'ख' के स्थान पर ष का प्रयोग सार्वत्रिक था।
२. लिपि में ए को ण तथा 'ण' भी लिखा जाता था।
३. 'अ' के दोनों रूप अर्थात् अ तथा ग्र प्रचलन में थे।
४. इ को दीर्घ करने के लिए प्रायः 'ई रूप में लिखते थे।
५. 'व' के नीचे बिंदु लगाकर व लिखते थे।
६. 'ब' लिखने के लिए 'व' लिखते थे।
७. लिपिक वर्ग को भाषा लिखने के विशेष प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था नहीं थी, इसलिए अक्षरों की रचना में समानता नहीं मिलती।
८. विभिन्न क्षेत्रों में लिपि की दृष्टि से कोई स्पष्ट प्रणाली या स्पष्ट विधि नहीं दिखती। लिपिक पर लेखन निर्भर था।

वाक्य विन्यास की विशेषता

"स्वस्ति श्री·········सुभस्थाने सर्वोपमा विराजमान············"

"स्वस्ति श्री राजराजेंद्र माहाराजाधिराज माहाराजा············"

"सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री·········जी"

"जोग्य लिषतं श्री·········"

"स्वस्ति श्री सर्वोपमा लायक············जी जोग्य············जी श्री·········लिषावतं"

"सीध श्री सर्वोपमा लायक वीराजमान श्री·········"

"सिधि श्री सर्वोपमा महाराजधिराज श्री·········"

"सिधि श्री सरबउंपमा जोग बिराज्मान·········

श्री·········जी जोग लिषतम·········केन
श्री रामराम बंचिजो" आदि वाक्य सम्पूर्ण पत्राचार के प्रारंभिक वाक्य होते हैं।
"अठारा समाचार श्री महाराज री कृपा थी भला है"
"कागद राज रौ आयो समाचार वांचीया"
"अैठा का समाचार भला छै आपका सदा भला चाहिज्ये"
"अठारा समाचार श्री जी री सु नजर भला छै"
"अठै का समाचार भला छे राज के सदा भले चाहियै"
"यहाँ का समाचार भला है, आपका सदा आरोग चाहिजै"
आदि वाक्य, वाक्य-संरचना को आगे बढ़ाते हैं।

वाक्यों में हित की भावना साहित्य की परिभाषा "सहितस्य भावा इति साहित्यं" की ओर संकेत करती है। वाक्यों में बिखरा सौन्दर्य भी आगे प्रदर्शित विभिन्न पत्रों में प्रकट होता है। उदाहरण ३ के वाक्यों में सौन्दर्य विशेषतः द्रष्टव्य है :—

"श्रीमन्निखिल वृंदारक वृंद वंदित
पादारविंदोपापास्य देवता चरण नलिन
व्यानादीप्त सगस्त पुरुषार्थेषु
अभिनवगुण ग्रामाभिराम सौजन्यसिंधु षु
दुष्ट शिक्षण शिष्ट रक्षण दक्षेषु"
आदि।

आगे के उदाहरण ४ में "वाहा को अर याहा को सनेह थरोवो तीन पीढी से चल्या आयौ है सो अब तो पगडी बदल भाई चारा हूवा" प्रशासनिक पत्राचार में साहित्य की गरिमा को समेटे हुए है। और के स्थान पर 'अर' का प्रयोग कब प्रारम्भ हुआ, इसके स्पष्ट संकेत नहीं मिलते किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रयोग अति पुराना है और खड़ीबोली के क्षेत्र में कस्बों और ग्रामों में यह प्रयोग समान रूप से होता है। 'सो', 'अब' तथा 'तो' आदि शब्द वाक्य रचना के कलेवर में आज भी प्रायः प्रयुक्त होते हैं। 'तीन' और 'पीढ़ी' जैसे शब्द भी यथापूर्व अद्यतन प्रचलन में हैं। वाक्य-विन्यास का विवेचन उदाहरण १ से आरम्भ होता है जो करौली रियासत के श्री रावत पालजी द्वारा जयपुर के राजा जयसिंह को डिंगल में लिखा गया पत्र है। प्रारम्भ ही संस्कृत के "आंबेरसुभ स्थाने सर्वोपमा विराजमान गंगाजल निर्मल गो ब्राह्मण प्रतिपाल महाराजधिराज महाराज श्री जैसिंघ जी चिरंजीवि" शब्दों से हुआ है अर्थात् आम्बेर शुभस्थान में विराजमान गंगाजल सदृश स्वच्छ गो ब्राह्मण के पालनकर्ता श्री··········चिरंजीवी

हों। "अठारा समाचार श्री महाराज री ऋपा थी भला है जी श्री महाराज बडा है श्री महाराज साहिब है" ये वाक्य हिन्दी भाषी क्षेत्र में जन सामान्य के पत्रों में इस काल में भी मिलते हैं—"यहाँ का समाचार आपकी कृपा से भला है और वहाँ की भलाई चाहते हैं या भलाई की कामना करते हैं" आदि। पत्र-लेखन की इस परिपाटी का ३०० वर्ष पूर्व होना और आज भी होना हमारी कालजयी परम्परा का द्योतक है। जो उत्तम है—धारणीय है, वह सदा के लिए है। वाक्य विन्यास में "श्री महाराज बडा है श्री महाराज साहिब है" के स्थान पर आदर-सूचक पद्धति में "श्री महाराज बड़े हैं" आदि लिखते हैं। अर्थात् "आप बड़े आदमी हैं" या "आप महान् हैं" आदि का प्रयोग किया जाता है। "पोंहचसी जी", "जाहर करसी जी" से अर्थ है पहुँचेंगे और जाहिर करेंगे। हर बार 'जी' का प्रयोग राजा के प्रति उच्चता की भावना का द्योतक है।

उदाहरण १

श्रीरामजी

स्वस्ति श्री आंबेर सुभस्थाने सर्वोपमा विराजमान गंगाजल निर्मल गो ब्राह्मण प्रतिपाल महाराज धिराज गहाराज श्री जै सिंघ जी चिरंजीवि लिपितं गंगधार श्री रावत पाल जी केन जुहार अवधारजेजी श्री महाराज रा सुष समाचार साहन भंडार रा सदा आरोग्य आवे तो प्रम सँतोष होय अठारा समाचार श्री महाराज री ऋपा थी भला है जी श्री महाराज बडा है श्रीमहाराज साहिब है जी श्री महाराज ऋपा महरबानी फरमावै है तिण थी विसेष फरमावजे अप्रंच नबाब षान षाना जी रो षत आयो है सो मोकल्यो है हुजूर पोंइचसी जी और हकीकत बुधसिंघ जी जाहर करसी सी वाहुडता कागज रो हुकम होय जेठ सुदी २ संवत १७६६

उदाहरण २

श्रीरामजी सत्यछैजी जोधपुर

स्विस्तिय श्री राज राज्यंद्रं माहाराजाधिराज माहाराजा श्री सवाई माधोसिंह जी सु माहारो जुहार अवधारजो अप्रंच कागद राज रो आयो समाचार वाचीया षुस्याली हुई और समाचार प्रोहित जगनाथ कहा सो राज रै केहण रा था सोईज कवाया माहरै काम री तो सारी चीत राजनु छै औरच्यार ठाकुर ने व जगनाथ ने मलारजी कनै मेलीया छे राजरी हजूर आवसी सो राजरी सला आवे तीस भांत ऊठीरा काम रो जतन करावसी अठै सातो राज रो हुकम जाणसी समत १८०८ रा आसोज सुद ८

उदाहरण सं० २ और आगे उदाहरण सं० १३ के दोनों पत्र जोधपुर से जयपुर को लिखे गए हैं। संवत् १८०८ और १८७८ (अर्थात् ७० वर्ष पश्चात्) के दोनों

पत्रों के वाक्य विन्यास में कोई मौलिक अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता, केवल खड़ी-बोली के दो वाक्य 'जुदागी न है' 'मालंम कीया' बीच में आ गए हैं। उदाहरण २ तथा १३ दोनों डिंगल के व्याकरण पर आधारित हैं; जैसे 'मेलिया छै', आवसी (आवेंगे), उदाहरण १३ में करावसी (करावेंगे)।

उदाहरण ३

इन्दौर

स्वस्ति श्री मन्निखिलवृंदारक वृंद वंदित पादार विंदोपापास्य देवता चरण नलिन व्यानादीप्त समस्त पुरुषार्थेषु अभिनव गुण ग्रामाभिराम सौजन्यसिंधुषु दुष्टशिक्षण शिष्ट रक्षणदक्षेषु निज कुलावतंसेषु राजराजेंद्र श्रीमन्महाराजाधिराज श्री मन्माधवसिंहेषु ।। ।। श्री रघुनाथ वाजीराय विहिताशीराशयः समुल्लसंतु विशेषस्क आपनें दीवान जी राजा हरगोविंद जी के साथ तोफां जरबा तथा जोजाइलां तथा फवज घोडा असवार भजे सो आया आछि तरासे चाकरी करि माने बहुत रजावंत राष्यो मीति जेठ बीदी १३ संमत १८११

मुकाम कुंभेर

टिप्पणी :—फवज=फौज, तरासे=तरह से, आछि=अच्छी

उदाहरण ४

।। श्री ।।

पुणे

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई पृथ्वीसिंह जी जोग्य लिषतं श्री मुष्य प्रधान श्री माधवराव के आसीर्वाद वाजिज्यौ अैठा का समाचार भला छै आपका सदा भला चाहिज्ये अपर राज का कागद राज्य श्री सुरतरांमस्योत्रमपौता वा मनोरथ राम वा सैदस्याहषूवला वा व्यंकटराव मोरे र केसाथि भेज्य सौ पहोच्या और दो कागद भी आपके आये सो पहोचे वा के ताक मजकूर आपका सनेह प्रीधी का ईनकी जूवानी जाहरि हूवा सो ईस परि वहोत षूसी हूई वाहा को अर याहा को सनेह थरोवो तीन पीढ़ी से चल्या आयौ है सो अब तो पगडी वदल भाई चारा हूवा वा तीनु मूसारन अलहे आये सो ईस परि दिल की सफाई वा सनेह की मजबुती दोनों त्रफुं की आगु सै अति वीसेस हूई सो अब वा राज अर या राज दोन नाही ये करी जांणोगे और आपने पघडी मैसरपेच भेजी सो पहोची बडे सतकार सै लीई अर याहा सै भी पघडी व मैसरपेच राज श्री देव राव महादेव ईन कै साथ भेजी है सो सतकार सै आप नै लेणा कें तैक

— — — —
— — — —
— — — —

पत्र का आगे का भाग छोड़ दिया है।
कुवार वदी ८ सवंत १८२६ मुकाम पूना

उदाहरण ५

॥ श्रीरामजी ॥ इन्दौर

सीध श्री सर्वोपमा बीराजमान्य श्री राज राजेंद्र माहराजधीराज माहराज श्री सवाई प्रतापसींघ जी जोग्य लीषाएतं पँडत माधोराव जी के आसीर्वाद मालुम हो अपरंच पत्री पंडत चीटकोजी के हात समाचार कहया सौ जान्या जी परमान श्रमंत पठेल साहेब सु मालुम कर दीना जीनको दर जबाबदेर मशारनुले कु भेजा है सो हजर गुजाराएंगे और कीताक समीचार मीसर नंदराम के कागद में लीषे है व मशारनुले कहै हो सो परमाने माहाराज कु जाहेर करेगें औटे बेव्हार आगे सुचालत आये है सोई जानेगा और कीसी बात की जुदागी नहीं हयाँ लाएक काम काज होय सो लीषावगा सवं तरहे सुभचींतकी कु हजर है मीती फाघन सुदी ३ सम्बत १८४०

उदाहरण ६

॥ श्रीरामजी ॥ इन्दौर

सिधि श्रीसर्वोपमा महाराजधिराज महाराज श्री सवाई जगतस्यंघ जी जोग्य श्रीमहाराजधिराज सूबेदार जसवंतराव होलकर आलीजाह वहादर केन बंच्या अठै का समाचार भला छै राज के सदा भले चाहिये अप्रंच मेता रगीलेराम कू यहाँ कुछ काम है सो मुशार अलह के करज का सलुक करवाय के सीष दीज्यो कागद समाचार हमेशा लिषावते रहोजो मिती काती सुदी ८ संवत १८६३

उदाहरण सं० ४, ५ और ६ क्रमशः संवत् १८२६, १८४० तथा १८६३ (सन् १८०६) के पत्र हैं। संवत् १८२६ (सन् १७६६) के पत्र का वाक्य विन्यास और बाद के पत्रों की रचना, पत्रों का प्रारम्भ और समापन छोड़कर लगभग खड़ीबोली वाक्य रचना है। सब पत्रों के सभी शब्द एक दूसरे से मिले हुए थे। कुछ शब्द प्राप्त करने में पर्याप्त समय लगा। उदाहरणार्थ—त्रफुं अर्थात् तरफ, मीसर (उदा० सं० ५) अर्थात् मिश्र, मैतारगीलेराम (उदाहरण सं० ६) अर्थात् मेहता रंगीलेराम आदि।

उदाहरण ७

श्रीलक्ष्मीनारांयणजी बीकानेर

स्वस्ति श्री सर्वोपमा लायक व्याहणिजी श्री चोडावत जी जोग्य व्याहिण जी श्री राजावत जी लिषावतं निल्याँणों बाचिजो अठारा समाचार श्री जी री सु नजर सु भला छै व्यांहण जी रा सदा भला चाहीज्यै अप्रांच थे म्हाँरै घणी बात छो था

उप्ररंत और कोई वात न छै तथा कागद थांहरो (तुम्हारा) आयो वाचीयां सुष सवषती हुई बिजा कित राहेक समाचार वोहरै षुस्याली रांमरे लीषेसु जाणीया तिण रा पाछा जुंबाब लीषाय दीया छै सु वोहरो मालुम करावसी उठे रै षुसषबर रे संमाचांरा सु हमैसां षुस्याल करावसी सां १८२६ मिती सांवण वद १४

उपर्युक्त उदाहरण में "बिजाकितराहेक" शब्द का अर्थ अस्पष्ट है। वैसे तो सभी शब्द मिले हुए थे जिन्हें पर्याप्त ध्यानपूर्वक अलग किया गया है।

उदाहरणार्थ—"वोहरैषुस्यांलीरांमरैलीषेसु" वाक्य रचना को "वोहरा षुस्याली राम रै लीषेसु" प्राप्त करना कठिन है, जबकि सभी अक्षर मिले हुए हों।

बीकानेर रियासत के सन् १७७२ के इस पत्र के वाक्य विन्यास की तुलना सन् १७०६ ई० के करौली के पत्र (उदाहरण १)से करने पर अन्तर ध्यान योग्य है :—

	करौली	बीकानेर
१.	अठारा समाचार श्रीमहाराज री क्रपा थी भला है	अठारा समाचार श्री जी री सु नजर सु भला छै
२.	षानषाना जी रो षत आयो है	कागद थांहरो आयो (थांहरो : थाहरा = तुम्हारा = आपका)

उदाहरण ८

श्री राम जी

सिधि श्री सरव उंपमा जोग बिराज्मांन राव जी श्री चतरभुज जी जोग लीषतम राव तेज स्यघ केन श्री राम राम बंचिजो जी यहां का समाचार भला है आपका सदा आरोग चाहिजै जी अप्रंचि कागद आपको आयो स्मांचार बांचा आप लीषी भाई बालमुंकंद जी हम वहां छोड्या है ओर तावड़ु को मकान तीहार ते अलक हे सो भाई बाल मुकंद जी लीषे जीस माफक कीजो सो यहां तो सारी तरह आपको हुकम है आप लीषो हे जीसी माफक बषसी जी की नौकरी मै हाजर हां वनका लीषा माफक ही अमल में आवेगो बषसी जी ने सारी तरह लीष भेजी हे वनका लीषा से आप कु दरयाफत होयगो यहां सारो ब्योहार आपको हे कागद समांचार हमेस लीषाबो करोगा मीती फागण सुदी १ सं : १८६३

राव जी श्री

"आप लीषी" अर्थात् आपने लिखा है, इसमें कर्ता का चिह्न 'ने' नहीं लगा था जो सम्भवत: पहले न लगता हो और यह परवर्ती परम्परा बनी हो। 'यहाँ तो सारी तरह आपको हुकम है' वाक्य में नम्रता और निष्ठा का पूर्ण समावेश है यद्यपि भाषा अत्यंत सरल है। सरल भाषा में भी उच्च भावाभिव्यक्ति सम्भव है, यह विशेषत: द्रष्टव्य है।

उनका के स्थान पर वनका प्रयोग हरियाणा के ग्रामीण अंचल की विशिष्ट बोली का उदाहरण है। पत्र में 'तावडू' का उल्लेख है। यह ग्राम आज भी हरियाणा में उष्ण जलस्रोतों के नगर 'सोना' से आगे है।

उदाहरण ९

श्री राम जी इन्दौर

सिधि श्री सर्बोपमा महाराजधिराज महाराज श्री सवाई जगत संघ जी जोग्य श्री महाराजाधिराज सूबेदार जसवंतराव होलकर आलीजाह वहादर केन्य-बंचा यहा के समाचार भले है राज के स..........(छूटा भाग)............भले चाहियै अप्रंच राव चतुरभुज जी के लिषने सू सब अहवाल मालूम हुवा वौहत षुसी हुई राव जी वौहत समझदार है इिस जमाने मै अछी वुध्य है राज के तौ घर के है सब तरह सूं राज जाने ही हैं हमैं कुछ लिषना चाहियै नही राज जो अछा जाने सी ही करोगे कागद समाचार लिषावते रहोगे मिती माह वुंदी १० संवत १८६४

"चतुर भुज जी के लिषने सू सब अहवाल मालूम हुवा वौहत षुसी हुई" वाक्य से वाक्य रचना का सन् १८०७ ई० का नमूना मिलता है। सब अहवाल मालूम हुआ या हुवा और बहुत खुशी था खुसी (बोलचाल का प्रयोग) हुई" वाक्य परम्परा प्राचीन है और पूर्व उद्धरित अनेक उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि ८०-१०० वर्षों तक ही नहीं अपितु २००-३०० वर्षों तक पत्राचार की एक-सी पद्धति चलती दिखाई देती है।

उदाहरण १०

श्री राम जी

सीध श्री सरववौपमा जोग्ये भतीज जी श्री दीवाण राव गंगादास जी जोग्ये लिषाईत भूपाल स्यंघ केने मुंजरो बंचजो अठा का समाचार भला छ राजे का सदा भला चाहीजे अप्रंचे सरव री रसुलपुरा का काजी चमन स्यंघ जी क अर कलादारा क वासो बगसती वा ङीक पुराणा कर जबाब से अङ चले छै सोइी का षुलता समाचार तो सेरषा राजे नै कहसी सो सेरषा कहै जीने राजे नीका समझे रया की वाकी दौनु त्रफ की राहा करवा दौला जी म यें का काजी चीमन स्यंघ जी पार पङ जाव सो करौला अठा लायक काम काज कागद समाचार होय सो हमेसा लषावस्यो मीती वसाष बदी १० संमत १८६८

दूसरी ओर

भतीज जी श्री दी जी जोग्ये

अस्पष्ट

पत्र में "चमन स्यंघ जी क अर कलादारा क" वाक्य में दो बार 'क' 'क' आए

हैं। इनका अर्थ यहां "के यहाँ" होना चाहिए जैसा कि आज भी प्रयोग होता है— "राम क सत्यनारायण व्रत पूजा है, इसलिए माँ उन क गई है।" वाक्य का अगला भाग अर्थात्

"वासोबगसतीवाङीकपुराणाकरजबाबतेअङ चले छै" का भाव स्पष्ट नहीं होता। पत्र का लिपिक साधारण स्तर का कर्मचारी रहा होगा, जिसके कारण भाषा में स्पष्टता की कमी है। चमनसिंह को "चमनसिंघ" न लिखकर "चमनस्यंघ" लिखा गया है, जिससे उपरिलिखित कथन की पुष्टि होती है।

उदाहरण ११

श्री राम जी

सीघ श्री सरववोपंमा जोग्य वकसी जी श्री बाल मूकंद जी जोग्य लीषाव्ंत पर व्रघुवीराम के मूजरा वंचने ह्य के समाचार श्री...........जी की ऋपा सौ भले है राज्य के समाचार भले चाहीजै अप्रंची हीत डीक लास राषौ तासौ वीसेस राषे रहौगे ओर कागद दरवार के नाव् आयौ जामै समाचार लीषे सो सव जाने राज्य ने भले आदमी की लीषी सो मीर मूनसी अतीकूला जी भेजे है सो राज्य सौ मीलेझीगे ह्य व्राहा कौ व्योहार येक जानी कागद समाचार लीषाव्त रहौगे मीती आसोज बदी १२ सं १८७४

उदाहरण सं० १० की भाँति इस पत्र का लिपिक भी साधारण शिक्षित व्यक्ति ही रहा होगा। पत्र में—

"ह्य, वाहा" शब्द आधुनिक यहाँ तथा वहाँ के तत्कालीन बोलचाल के रूप रहे होंगे जो उसी प्रकार लिखे भी गए। 'मुंशी' को 'मूनसी' लिखा गया है। 'वीसेस' शब्द 'विशेष' के लिए है। वाक्य विन्यास में कोई उल्लेखनीय विशेषता दृष्टिगोचर नहीं होती।

उदाहरण १२

श्री राम जी

साध श्री राव जी श्री चतरभुज जी जोग्य नवाब अमीरदोला म्हमद अमिर षांजी बाहादर संमसेर जंग लिषाषतं केन वंच्या/अप्रंच जैपुर में प्रीतमांन जी दास नैकद र् रे हे सु अवै राज नै ताकीद सु आवण री मुनासब छै जे जक रावस्यो नही पछै पीसतावोला हंम तो तमारी दोसती कै ईरादै फेर बी चुका न छै अबै ताकीद सु आवजो जेज कीजो मती/सां १८७४ रा असाढ सुद ४ मु माधोराजपुर

पत्र की वाक्यावली बड़ी साधारण तथा भाषा बोलचाल की है।

'कद' शब्द 'कब' के लिए आज भी ग्रामीण प्रयोग के रूप में मिलता है। किंतु 'कंद' शब्द 'संस्कृत शब्द 'कदा' का तद्भव रूप है।

'पीसतावोला' अर्थात् 'पछताओगे' है। तमारी अर्थात् 'तुम्हारी', 'फेर बी' अर्थात् 'फिर भी' के रूप में है। आज भी 'फिर भी' को ग्रामों में 'फेर बी' ही बोलते हैं।

उदाहरण १३

श्रीजलधरनाथ जी सत्य छै — जोधपुर

श्रीजलंधरनाथ

स्वस्तिय श्री राज राजेद्रं महाराजाधिराज महाराजा श्रीस्वाई जै सिंघ जी जोग्य राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्रीमांन सिंघ जी लिषावतं जुहार वाचजो अठारा समाचार श्री जी री कृपा प्रताप कर भला है राज रा सदा भला चाहीजे राज वडा हो अठा ऊठारा व्यौहार में किणीं वात री जुदागी न है अठेरी तरफ कांम काज हुबै सो लिषायाँ करावसी। अप्रंच कागद राज रो आयो मैं समाचार हरकिसन मालंम कीया सो अठा सु टीकारो फटा भाग मातबरानू मेलीया है सो समाचार जाहर करसी संवत १८७८ रा मंगसर सुद ५

इस उदाहरण (संवत् १८७८) और उदाहरण सं० १५ (संवत् १९१९) के मध्य ४१ वर्ष का बड़ा अन्तराल है किन्तु यह द्रष्टव्य है कि वाक्य-विन्यास और लेखन शैली में कोई उल्लेखनीय अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता। स्वस्ति श्री से लगाकर "जुदागी न है" तक सब कुछ एक जैसा ही है। अन्तर केवल इतना है कि किसी शब्द की वर्तनी में त्रुटि में भिन्नता मिलती है। जैसे उदाहरण सं० १३ में 'स्वस्तिय' लिखा गया है तो १५ में 'स्विस्तिय' लिखा गया है। इसी आधार पर यह कहना होगा कि यदि सन् १७०० ई० के आसपास खड़ीबोली की स्पष्ट वाक्यावली मिलती है तो वह परम्परा २००-२५० वर्ष पीछे से चली है।

उदाहरण १४ — श्रीरांम — जोधपुर

(श्री राधों)

स्वस्त श्री सर्वउंपमा लायक विराजमान सकल गुनगुनालंक्रत राज राजेद्रं श्री महाराजधिराज श्री महाराज श्री श्री सवाई जयसिंह जी देव ऐते महाराज श्री अजीतसिंघ जी केन्य मुजरा अवधारजों अप्रंच श्री जी के सुष समाचार दिन प्रत घडी घडी पल पल के सदा सर्वदा आरोग्य् चाहिजे तो हमहैं परम आनंद होंय् इहा के समाचार श्री जी की क्रपा से भलें हैं जी महाराज वर्डे हों क्रपा मेहरबानगी फूरमावो हो तासे विसेस फूरमावेंगे जी आगें वोहतें रोज से कागद समाचार इनायत नहि हुवै सो कृपा कर इनायत करवे मैं आवेंगे जी ईहा आछो प्रताप श्री जी के हुकम कौ जानेंगे जी मिती जेठ सुदी ९ संबत १८८७

इस उदाहरण में जयपुर के महाराजा को पत्र लिखते रहने का अनुरोध किया गया है। इसको अनुस्मारक की संज्ञा दी जा सकती है।

उदाहरण १५ श्रीजलंधरनाथ जी सत्य छै जोधपुर

श्री जलंधरनाथ

स्विस्त्यि श्री राज राजेद्रं महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई रामसिंघ जी जोग्य राज राजेश्वर महाराजाधिराज माहाराजा श्रीतपतसिंघ जी लिषावतं जुहार वांचजों अठारा समाचार श्री जी री कृपा प्रताप कर भला है राजरा सदा भला चाहीजे राज वडा हो अठा ऊठारा व्यौहार मैं किणी वात री जुदागी न है अठै घोडा रजपूत है सो राज राज कामनु हे अठीरी त्रफ् कांम काज हुवे सौ लिषावांक करावसी अप्रंच म्हारो व्याव सुद ८ राश्रावा जेसलमेर है सो राज सै कपीले आवसौ। संवत १६१६ रा भादवा वद १०

इस पत्र में जयपुर के महाराजा को जोधपुर राजा के विवाह (अपने) की सूचना तथा आने का निमंत्रण दिया गया है। निमंत्रण पत्र की विशिष्ट शैली अपनाई गई है—"म्हांरो व्याव सुद ८ रा"

विवाह के लिए 'व्याह' शव्द का प्रयोग आज भी खड़ीवोली क्षेत्र में बहु-प्रचलित है।

सन् ६०० ई० की वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ

ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल

व श ष स ह क्ष ओम्

जापान के होर्युजी विहार में रखी हुई भारतीय पुस्तक "उष्णीषविजयधारणी" की हस्तलिपि के अंत में दी गई वर्णमाला (लगभग ६०० ई०)

इस हस्तलिपि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके अंत में उस लिपि की पूरी वर्णमाला दी गई है जिस लिपि में यह लिखी गई है। हम नहीं जानते कि होर्युजी मंदिर में रखी हुई यह हस्तलिपि मूल है या पुर्नलिखित। पर इसमें जो वर्णमाला दी गई है, वह ६०० ई० के आसपास की उत्तर भारत की लिपि की है। इसे हम **सिद्धमातृका लिपि की वर्णमाला** कह सकते हैं। इसमें 'ऋ' तथा 'लृ' ह्रस्व तथा दीर्घ दोनों ही ध्वनियों के लिए अक्षर हैं।

पूर्वोक्त उदाहरणों से हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचते हैं—

१. जापान के होर्युजी विहार में रखी हुई भारतीय पुस्तक "उष्णीषविजयधारणी" की हस्तलिपि के अन्त में दी गई पूर्ण सिद्धमातृका वर्णमाला (लगभग ६०० ई०) के अक्षरों जैसे अक्षर देवनागरी लिपि में सन् १७०० ई० तक और कतिपय पत्रों में तत्पश्चात् भी प्रयुक्त हुए।

२. तमिल भाषा की लिपि में 'आ' की मात्रा उसी प्रकार लगती है जैसे उपर्युक्त ग्रन्थ की वर्णमाला में 'अ' से आ बनाने में लगती है।

३. इ, ई की मात्राएँ इन दोनों अक्षरों में लिखते समय भी प्रयुक्त होना अर्थात् इन्हें 'इि', 'इी' लिखना सामान्य बात थी। इसका कालान्तर में लोप हो गया।

४. सिद्धमातृका लिपि का 'च' (६०० ई०) (च) रूप अध्ययन अवधि के पत्रों में भी मिलता है।

५. सिद्धमातृका लिपि का 'ह' (६०० ई०) रूप का संवत् १८११ वि० तक मानकीकरण नहीं हुआ था।

६. भाषा के बोलचाल रूप ही लिखित रूप होते थे और भाषा का भी मानकीकरण नहीं हुआ था। इससे अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्थित परम्परा न होने की पुष्टि होती है जैसाकि अध्याय ५ में वर्णित है।

७. यदि शताब्दियाँ व्यतीत होने पर भी लिपि के कुछ अक्षरों के अति पुरातन रूप प्रचलन में रहे तो यह भी नितान्त निश्चित है कि सन् १७०० ई० के निकट प्रचलित भाषा का २००-२५० वर्ष पूर्व प्रचलित होना सम्भव है। अतएव पत्राचार में प्रयुक्त हिन्दी का खड़ीबोली रूप या मारवाड़ी रूप १४००-१५०० ई० के आसपास चला होगा। वाक्य विन्यास की विशेषताओं के अध्ययन से भी इसी तथ्य की पुष्टि होती है क्योंकि एक जैसी वाक्य रचना कई सौ वर्ष तक चलते रहने की पुष्टि होती है।

अध्याय ७

प्रशासनिक हिन्दी गद्य के प्रभाव

(क) सामाजिक प्रभाव

इस अध्याय में विभिन्न क्षेत्रों में प्रशासनिक हिन्दी गद्य के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। साहित्य में समाज की झलक दृष्टिगोचर होती है, यह तथ्य सामान्यत: स्वीकृत है। साहित्य के अध्ययन से तत्कालीन सामाजिक स्थितियों और परम्पराओं का ज्ञान होता है। किन सामाजिक स्थितियों में किस प्रकार के साहित्य का सृजन होगा, इसका अनुमान भी लगा सकना कठिन नहीं होता। फ्रेंच विद्वान् तेन के अनुसार किसी भी साहित्य के इतिहास को समझने के लिए उससे सम्बन्धित जातीय परम्पराओं, राष्ट्रीय और सामाजिक वातावरण एवं सामयिक परिस्थितियों का अध्ययन-विश्लेषण आवश्यक है। अत: समाज और साहित्य अभिन्न न भी हों तो भी ये अन्योन्याश्रित तो हैं।

प्रशासनिक पत्रों में समाज में विद्यमान सामन्तवाद का झलकना सर्वथा स्वाभाविक है। प्रशासनिक पत्राचार के अध्येता तत्कालीन सामाजिक परिवेश का अनुमान सहज ही लगा सकते हैं। अत: प्रशासनिक पत्राचार भी साहित्य का एक अंग बनकर समाज के दर्पण का कार्य करता है। यह स्थिति तो आने लगी है कि हिन्दी के विद्वान् अव हिन्दी की इस अमूल्य निधि की ओर देखने लगे हैं।

उदाहरण सं० १ में रियासत जोधपुर की ओर से जयपुर को लिखे गए निम्न-लिखित वाक्य विशेष हैं—

१. "राज बडा छौ सदा हेत मया राषौ छौ"

२. "जुदायगी किसी बात री जांन्नोमत"

३. अठे घोडा रजपूत छै सु राज रे कांमनु छै"

उपर्युक्त वाक्यों से तत्कालीन सामाजिक स्थिति के विषय में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं—

१. जोधपुर रियासत जयपुर शासन के अंतर्गत आती थी,

२. जोधपुर के शासक को अपने शासकीय पत्रों में जयपुर के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करनी पड़ती थी,

३. जोधपुर रियासत की सेना अर्थात् घोड़े और जवान जयपुर के आदेश

पर काम करने को सदैव सन्नद्ध रखने पड़ते थे।

उदाहरण सं० २ में "राज बडा छौ" के स्थान पर "राज बडा हो" और "अठे घोडा रजपूत छै" के स्थान पर "अठे घोडा रजपूत है" लिखे गए। संवत् १७८३ के उदाहरण सं० १ की और संवत् १८२७ के उदाहरण सं० २ की भाषा में इतना अन्तर ही दृष्टिगोचर होता है।

उदाहरण सं० ३ सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण पत्र है। इन्दौर के होल्कर राजा ने जयपुर के राव चतुर्भुज को लिखे गए पत्र में "सरकार का चित्त तुमारी तरफ वौहत लगा रहै है", "सब तरह सूँ तुम षातर जमा रषियो", "षातर-निसा राष के आइयो" आदि वाक्य अब तक भी सामाजिक पत्राचार में प्रयुक्त होते रहे हैं। "निसा खातिर" या "खातिर जमा" आदि पद पत्राचार की एक विशिष्ट शैली के अंग हैं जो मुगलों के आगमन के पश्चात् प्रचलित हुई। धीरे-धीरे नित्य प्रति के सामाजिक व्यवहार से ये शब्द लुप्त होने लगे हैं। 'ख़ातिरनशाँ' शब्द अरबी व फ़ारसी का विशेषण है जिसका शुद्ध रूप 'ख़ातिरनशीं' है। इसका अर्थ हृदयंगम/हृदय में जमनेवाली बात है।

उदाहरण सं० ४, ५ में दोनों पक्षों की भलाई और हित की भावना का दिग्दर्शन पत्राचार की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप है।

उदाहरण सं० ६ और ७ में संवत् १८८५ अर्थात् १८०७ ई० में बीकानेर तथा जोधपुर के राजाओं ने जयपुर के सवाई जयसिंह को विवाह की पत्री की प्राप्ति की सूचना दी और 'षुसी हुई' वाक्य से अपनी प्रसन्नता प्रकट की। यह सामाजिकता की सामान्य भावना का द्योतक है जो राजाओं के मध्य होने के साथ-साथ जनता में भी इसी प्रकार है।

इस प्रकार प्रशासनिक पत्राचार के अनेक उदाहरण नितान्त शुष्क पत्र न होकर साहित्यिक सौन्दर्य, सामाजिकता और सांस्कृतिक सुगन्ध से भरपूर रहे हैं जिन्हें साहित्य की परिधि में रखने से साहित्य की श्रीवृद्धि ही होगी।

उदाहरण १

जोधपुर

स्वस्त्य श्री राजराजेंद्र माहाराजाधिराज माहाराजा श्रीसवाई जै सिँघ जी जोग्य जोधपुरगढ महादुरंगेथा राजराजेश्वर माहाराजाधिराज महाराजा श्री अभै-सिंघ जी लिषावतँ जुहार अवधारजो जी अठारा समाचार भला छै राज रा सदा भला चाहीजै राज वडा छौ सदा हेत मया राषौ छौ तिणथा विसेष रषावजो जुदायगी कीसी वात री जाँनो मत अठे घोडा रजपूत छै सु राज रै काँमनु छै तथा नागौर रा गाँव षीवज मैं लाडषाँनी रैहता था सु तकस्यार मै आया तिण ऊपर राय सीव दास हीमा सुँ फौज लेने उँस तरफ आया तरै लाडषाँनी तो नास गया

नेगां वँ पीवज वगैरे में नागोर सु दरवार रो थांणो रापीयो छै सीवदास पीण सेपावती नुँ रापीया सु अै गांवण सु सिँधवी दावन वगैरे आसी मीयाँ नु आगे ही जपटै दीया छै नै लाडपाँ नीचो रथ का रैहता था जुड़ी में राज राय सिवदासनु लिपावजो नागोर रै गाँव पीवज वगैरै मै सेपावत रापीया हुयै बुलायोता जो नागौ-रसु फौज मेली छै सु पींवज थांणौ रहैसो नै उँस तरफ रौ जावतो करसी सँवत १७८३ रा भादवा सुद ५ मिती परपतपतगढ जोधपुर

उदाहरण २

श्री परमेश्वरजी सत्य छै जोधपुर
श्रीराधाकृषन जी

स्विस्त्यि श्री राज राजेंद्र महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई परतापसिंघ जी जोग्य राज राजेसवर महाराजाधिराज महाराजा श्रीं विजैसिंघ जी लिपावतं जुहार वाच जो अठारा समाचार—श्री कृपा सुँ भला है राज रा सदा भला चाहीजै राज वडा हो अठै घोडा रजपूत है सो राज रा काँम नु है अठीरी तरफ काँम काज हुवे सो लिपायाँ करावसी। अप्रँच वारट पदमसिंघ जी मूं लालचन्द नुँ मैळीया है सो समाचार जाहर करसी कागद समाचार सदा लिपायाँ करावसी सँवत १८३७ रा भाद्रवा वद ५ माँ रोज हारमालम हुवै हमेजेजरी वपत न छै

पत्र के प्रारम्भ में 'श्री परमेश्वर जी सत्य छै' और 'श्री राधाकृषन जी' वाक्य/शब्द लिखे गए हैं जो धार्मिक विश्वास की गहरी भावना के प्रतीक हैं और ईश्वर को सदा स्मरण रखने की परम्परा के द्योतक हैं। यही परिपाटी न्यूनाधिक रूप में समाज में विद्यमान है और आज भी हम लोग पत्रों में 'श्री हरि', 'श्री गणेशाय नमः', 'ओ३म्', 'श्री राम' आदि विश्वाससूचक शब्द प्रयोग में ला रहे हैं। यह परिपाटी कितनी प्राचीन है, यह कह सकना कठिन है।

उदाहरण ३

इन्दौर

श्री राम जी

सिधि श्री राव जी श्री राव चत्रुर्भुज जी जोग्य श्री महाराजधिराज सूबेदार जसवंतराव हुलकर आलीजाह वहादर केन वंच्या अठै का समाचार भला है थांका सदा भला चाहियै अप्रंच इन दिनो कागद आया नही सो जीव कूंइत जारी है और तुमारा जो हेत है सो लिषने मै आवै नही सब कूं मालूम है इश्वर दिन दिन सिवाय जहूर मै लावै सरकार का चित्त तुमारी तरफ वौहत लगा रहै है सो तुम यहां आइयो सब तरह सूं तुम षातर जमा रषियो सब तरह सूं तुमारी दुरस्ती मनजूर है षातरनिसा राष कै आइयो और सब समाचार राव वहादुर कल्यान मल जी के

लिषे सू जानोगे मिती सावन सुदी ९ संवत १८६३

पत्र में प्रयुक्त निम्नलिखित वाक्य ध्यान योग्य हैं—

"तुमारा जो हेत है सो लिषने मै आवै नही
सबकूं मालूम है"

अर्थात् तुम्हारा हित साधन जो हम करते हैं, वह लिखने में नहीं आ सकता अपितु सबको मालूम है।

ये वाक्य मात्र कोरी सामाजिकता के मानदण्ड हैं क्योंकि वास्तव में तो होल्करों ने राजस्थान के राज्यों को संतप्त कर रखा था।

पुनः—"सरकार का चित्त तुमारी तरफ वौहत लगा रहै है सो तुम यहां आइयो" वाक्य भी उपर्युक्त औपचारिकता के क्रम में ही लिखे गए हैं। किन्तु यह तो कहना ही पड़ेगा कि यह पत्र भाषा की दृष्टि से साहित्य की उल्लेखनीय निधि है।

उदाहरण ४

श्री जलंधरनाथ जी सत छ
श्री जलंधर नाथ

राव चत्रभुज कस्यैसुप्रसाद बाचज्यो तथा अरजदासत आई मालुम हुई सो थारो दुतरफो बंदगी रो ईरादो ईण ईजत रै मालुम हे अठा उठारा ब्योहार री कुसी री उमैदवारी लीषी सो श्री.........जीरी क्रपा सु ईण ईजत रै रहसी समाचार कास सुभ करण री जुबानी जाणस्यो संबत १८६५ रा आसाढ सुदी ६

जोधपुर का महाराजाधिराजा श्री राज श्रीमान संघ जी काउर का षास दसकता घाघी नकल

टिप्पणी—पत्र में अरजदासत शब्द प्रार्थनापत्र के लिए, ईरादो शब्द इरादे के लिए और ईजत शब्द इज्ज़त के लिए, कुसी शब्द खुशी अर्थात् राज़ी खुशी (कुशलता) के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

समाज में भाषा के लेखन में होनेवाली असावधानी का उल्लेख आवश्यक है क्योंकि उक्त पत्र की भाषा में अनेक गलतियाँ हैं; यथा—

चतुर्भुज को चत्रभुज
अर्ज़दाश्त को अरजदासत
व्यवहार को ब्योहार
खुशी को कुसी
इज्ज़त को ईजत
शुभकर्ण को सुभकरण

आदि लिखा गया है। इससे लगता है कि भाषा अध्ययन या अध्यापन की कोई

सुनिश्चित परिपाटी नहीं रह गई थी और अस्त-व्यस्तता का दौर चलता रहा। अन्य उदाहरणों में भी इस प्रकार की त्रुटियाँ सामान्य थीं। यदि साहित्य समाज का दर्पण है तो ये प्रशासनिक पत्र समाज की दशा बताने के कारण साहित्य की श्रेणी में रखने ही होंगे।

उदाहरण ५

॥ श्री जलंधर नाथ जी सत छै

राव चत्रभुज जी दसै तथा समाचार मोहता सुरजमल सींघवी फतेराज री अरजी सु मालुम हुवा सो अब सतावजपुर पोहचस्यो ईन दुतरफी षातरी रो जुंमु थारो है सु अठारी त्रफ सु सारी तरफ थार ही षात्र जमा है जो व जलदी पुषत हुवा दुतरफो फायदो है संवत १८६६ रा फागण वदी ५

टिप्पणी :—उपर्युक्त पत्र से (उदाहरण से) उदाहरण सं० ४ में प्राप्त निष्कर्षों की पुष्टि होती है। पत्र में तरफ को त्रफ षातरी रो जुंमु/षात्र जमा शब्द पत्र लेखक के भाषा का साधारण ज्ञान रखने के द्योतक हैं।

उदाहरण ६

श्री लक्ष्मीनारायणजी बीकानेर

स्वस्ति श्री राज राजैद्र महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई जैसिंघजी जोग्य राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री रतनसिंह जी लिषावतु जुहार वाचजो अठारा समाचार श्री जी री सु नीजर सु भला छै राजरा सदा भला चाहीज्यै राज वडा छौ म्हाँरै घणी वात छो सदा हेत वुहार राषो छो तै सु वीसेष रषावसो अठा उठारो ऐक वुहार जाँणसो अठै पाँच घोड़ा रजपूत छै सु राज रै काँम नु छै अप्रंच कुकु पतरी राज री आई मीती माहा सुद १० विवाह लिषो तेरी षुसी हुई ई दिन सो कडा ते सु भलै माणुस मेलणरी ढील हुई सँबत १८८५ मिती माहा सुद ८ मु० पा श्री बीकनेर काँटदषल

उदाहरण ७

जोधपुर

श्रीजलँधरनाथजी सत्य छै

श्री जलंधरनाथ

स्विस्तिय श्री राज राजेन्द्रँ महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई जैंसिंघ जी जोग्य राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्रीमाँनसिंघ जी लिषावतँ जुहार वाचजो अठारा समाचार श्री···· ·······जी री कृपा प्रताप कर भला है राज रा

सदा भला चाही जे राज वडा हो अठा उठारा व्योहार मै किणी वात री जुदागी न है अठै घोडा रजपूत है सो राज रा कांमनुं है अठारी तरफ काँम काज हुवैसो लिषायाँ-करावसी। अपरँच राज रैं विहावरी कुँकुँम पत्री मिली सो षुसी हुई अठा ऊठारो तो सदाई सुँ एक व्योहार है ज्यूँ ही जांणसो संबत १८८५ रा माहा सुद ४

उदाहरण सं० ६ और ७ दोनों ही महाराजा जयपुर के विवाह निमंत्रण के उत्तर में बीकानेर तथा जोधपुर से माघ मास में संवत् १८८५ में लिखे गए हैं। विवाह सामाजिकता का सबसे बड़ा मापदण्ड कहा जा सकता है। दोनों पत्रों में ही 'षुसी हुई' वाक्य प्रयुक्त हुआ है। सामाजिकता के निर्वाह में दूरी बाधक नहीं थी और डाक प्रणाली विकसित थी।

(ख) राजनीतिक प्रभाव

आगे जिस प्रकार के पत्रादि की समीक्षा की गई है उनमें राजनीति की प्रधानता है। इस पत्राचार और अन्य प्रशासनिक गद्य में साहित्य की भी सर्वत्र विद्यमानता है, इस तथ्य की भली भाँति पुष्टि होती है। राजनीति और साहित्य का सुखद समन्वय, प्रशासनिक गद्य की विशेषता है। संस्कृति के, साहित्य के साथ अन्योन्य सम्बन्ध होते हैं, साहित्य भी संस्कृति के अनुरूप होता है।

प्रशासनिक गद्य में संस्कृति भी साहित्य के साथ सम्बद्ध रही है। अतएव प्रशासनिक गद्य साहित्यिक गद्य है। उदाहरण सं० १ में "श्री गोपाल जी सत छै जी" वाक्य संस्कृति की मनोरम झलक है, यद्यपि पत्र दिल्ली दरबार की ओर से जयपुर रियासत के राजा को लिखा गया है। जिन दिनों का यह पत्र है उन दिनों औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली में औरंगजेब के मुअज़्ज़म नामक पुत्र का शासन था, जो बहादुरशाह के नाम से शासन कर रहे थे। उन्हीं की ओर से जयसिंह (द्वितीय) को, जिन्हें सवाई जयसिंह भी कहा जाता था, पत्र लिखा गया। उन्हें भी मिर्ज़ा राजा की उपाधि प्रदान की गई, जो औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् ही सम्भवतः जहाँदारशाह की ओर से दी गई होगी। स्पष्टतया उदाहरण सं० १ में, जिसे अर्ज़दाश्त कहा गया है, राजनीति अपने प्रखर रूप में प्रकट हुई है। जयपुर के राजा से स्पष्टीकरण माँगा गया है या जवाबतलबी की गई है कि वे मोहरों में मिर्ज़ा राजा उपाधि का प्रयोग क्यों नहीं कर रहे।

उदाहरण सं० २ तत्कालीन सामन्ती प्रथा का सुस्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है। करौली के सामन्त की ओर से महाराजा जयपुर को लिखे गए पत्र में "मुजरा बंचनों", "श्री महाराज की महरवानगी ते भले हैं" "श्री महाराज वडे हैं"

"श्री महाराज के दरवार के हमेसां रजपूत हैं"

"ह्या हुकम व्यौहार श्री महाराज ही के है"

"महेरवानगी करि कागद हमेसा लिषत रहीयैगो"

आदि वाक्य राजनीति में नम्रता की पराकाष्ठा प्रकट करते हैं।

उदाहरण सं० ३ में करौली रियासत की ओर से जयपुर को लिखे गए पत्र में इन्दौर के मल्हारराव होल्कर की ओर से जती सन्तोषराम के साथ किए गए वायदे का उल्लेख है जिसके अनुसार हिण्डौन का एक गाँव देने की बात है।

उदाहरण सं० ४ जोधपुर की ओर से जयपुर को लिखा गया पत्र है जिसमें जयपुर महाराज के देवलोक पधारने के पश्चात् पत्र न मिलने का उल्लेख है। राजनीति का एक उत्तम उदाहरण है।

उदाहरण सं० ५ तो अति विशिष्ट प्रलेख (दस्तावेज़) है जो महाराज यशवंत राव होल्कर और ईस्ट इंडिया कम्पनी के बीच संधि का प्रारूप है। भाषा की दृष्टि से तो सन् १८०७ ई० (संवत् १८६२) का अरबी/फ़ारसी मिश्रित खड़ीबोली का एक उल्लेखनीय नमूना प्रस्तुत हुआ है किन्तु राजनीति की प्रौढ़ता और प्रखरता की भी, उल्लिखित प्रलेख में, स्पष्ट अभिव्यक्ति है।

उदाहरण सं० ६ ग्वालियर के दौलतराव सिंधिया (शिंदे) की ओर से जयपुर के दीवान राव चतुर्भुज को लिखा गया पत्र है। यद्यपि पत्र साधारण तथा छोटा है, पर उक्त पत्र में भी राजनीति के अध्येताओं के लिए अध्ययन योग्य पर्याप्त सामग्री है।

मि० काती वदि ४ का पहोचा मुकाम साभर

उदाहरण १

श्री गोपाल जी सत छै जी। श्री महाराजा जी सलामत अरजदासत षाम कीयां पाछै परवानों षानांजाद नवाज़ी कोमी आसोज सुदी ९ को लिष्यो मी, आसोज सुदी १३ नै ईनायत हुयो तमाम सरफराजी व षानांजाद नवाज़ी हुइ़ी जी

श्री महाराजा जी सलामत आगै परवानो हिंमोण को मुकदमां मै ईनायत हुवो थो सु नवाब अमीरल उमराव जी नै दीषायो नवाब कह्यो जु हजरत नै सहनवाजस कै मीरजा राजगी का षीताब ईनायत कीया अर अब मोहर मै मीरजा राजगी का नांव दाषल कुं न करते अर थेलीयां व बंद व लीफ़ाफा रजाइी का नांव की मोहर सुं हाल मै ईनायत हुइी सु अर आगै बवाह नदी पर बहादर साह पातसाह का नांव की मोहर की थैलियां ईनायत हुइी थी सु हजुर भेजी है उमेदवार हुंजु मीरजा राजगी का नांव की मोहर षुदाइी है सु मीरजा राजगी का नांव की मोहर सूं थैलीयां व बंद व लीफाफा ईनायत होय जी अर मोहर न षुदाइी होय तो अब मीरजा राजगी का नांव की मोहर षुदाय ईनायत करावजे जी महाराजा अजीतसिंघ जी षत भेज्या था तीमै जहांदर साह की मोहर में महाराजा इी को षीताब दाषल थो जी मी आसोज सुदी १४ सबत १७६९

भाषिक दृष्टि से पत्र का विश्लेषण करने से प्रकट होता है कि पत्र की भाषा में

अरबी तथा फ़ारसी के शब्दों की भरमार है। किन्तु प्रयुक्त शब्द अरबी/फ़ारसी लिखने की विधि में न होकर तद्भव रूपों में लिखे गए हैं। उदाहरणार्थ 'षाम' शब्द फारसी के ख़ामः शब्द से तद्भव है जिसका अर्थ है—लेखनी/कलम। इसी प्रकार मुकदमां शब्द भी मुकदमः अरबी शब्द से तद्भव है। इतना होते हुए भी लेखन शैली व्रजभाषा और खड़ीबोली मिश्रित है। लिष्यो, हुयो आदि शब्द व्रज-भाषिक शैली में हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी के शब्द यथा लिखना, होना, नांव, भेज्या, महाराजा, सु, आदि शब्दों ने पत्र के कलेवर की रचना में सहयोग दिया है। यह भी विशेषतः द्रष्टव्य है कि पत्र में हिन्दु तिथियों अर्थात् आसोज, सुदी, और संवत् का प्रयोग ही हुआ है। अन्यत्र भी पत्राचार में हिज्रारी वर्ष का प्रयोग देखने में नहीं आया।

उदाहरण २

करौली

श्री ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

श्रीमदन मौंहनजू

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई जैसिंघ जू जोग्य लिषइतँ श्री राजागोपाल सिंघ जू को मुजरा बंचनौं श्री महाराज के सुष समंचार दिन प्रति घरी घरी के सदाँ आरोग्य चाहीय़ें तो हम कौ प्रमआँनंद होहि हिया के समँचार श्रीमहाराज की महेरवानगी ते भले हैं अप्रँच श्रीमहाराज वडे है श्री महाराज के दरवार के हमेसाँ रजपूत है हया हुकम व्यौहार श्रीमहाराज ही के है और हयाँ की अरज होइगी सो राजा आयामल जू हजूर करेगे महैरेवानगी करि कागद हमेसा लिषत रहीयैंगो मिती चैत्र सुदि २ सँवत १७८०

उदाहरण ३

॥ श्री मदनमोहनजी ॥

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई माधवसिंघ जी जोग्य लिषतँ श्री राजागोपालसिंघ जी कैन्य मजुरा बंचया ह्यां के समांचार श्री जी की किरपा महाराज की महेरवांनगी सो भले है आपके सुष समाँचार सदां संरवदा भले चाहीयैं तो हंमको प्रम आनंद होई अप्रंच महाराज वडे है हम वा द्रवार के रजपूत है ह्यां घोरो रजपूत है सो महाराज के कांम को है और जती संतोषराँम जी सो आगै श्री राव मल्हार जी ने महाराज कौ राज प्रापत होने को प्रसन पूछो हो सो इन विचार कही ताही माफक विद्यमिली वा समें रावमु० अल्हैने इनँ सौ कही कि महाराज सौ अरज कर ऐक गाँव हिंडोन को तुम को ले दैंगे हिडौन इनको असथा हैं ये ह्यां रहैं हैं सो मल्हारराव जी ने कुम्हेर के डेराँन सौ महाराज को कागद लिषो है और दीवान

कन्हीरामया मजकूर सो वाकिफ है सो वे अरज करेंगे और ह्याँ संव तरहै हुकम महाराज कौ हे कागद समाँचार हमेस लिपावत रहीयेगो मिती मगश्रवदी ६ संवत १८११ मु० करौली

उदाहरण ४

श्री परमेश्वर जी सत्य छै जोधपुर
श्री राधा ऋष्न जी

स्विस्त्य श्री राज राजेंद्र महाराजधिराज महाराज श्री सवाई परताप सिंघ जी जोग्य राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराज श्रीजालमसिंघ जी लिषावतँ जुहार बाचजो अठारा समाचार—रीक्रपा सुँ भला है राज रा सदा भला चाहीजै राज वडा हो अठा ऊठारा व्योहार में किणी बात री जुदागी न है अठै घोडा रजपुत है सो राज रा कामनूँ हे अठीरी तरफ काँमकाज होय सो लिषाया करावसी। अप्रंच श्री महाराज देवलोक पधारीया पछे राज मातम पुरसी रो कागद आयो नहीं सो म्हें कँवर पदै था जद तो राज ऊत रो हित राषता नै हमैं कागद ही दैण मै न आवै सु आराज नै क्यू चाहीजै इतरा दिन तो राज रा कागदरं री वाट देषी सो कागद आया नंही तरै अठा सूँ कागद दैण मैं आयो और भीवं सिघँ जोधपुर आय बैठौहैनै फितूर करे हैं सो तीनूँ ही रायत उाँ में थेट सुँ रीत मरजाद है सो तो राज सूं छानीन है सो बूं मरजाद होय जठे राज नै ही बिचारीयो चाहीजै तिणारो पाछो जाब लिषावसी सँवत १८५० आसोज बदी १३ बुधवार मुकाम जैतारंण

श्री महाराज देवलोक पधार गए किन्तु पीछे राज का मातमपुरसी का कागद नहीं आया। राज ने हमें कागद क्यों नहीं भेजा। इस प्रकार की शिकायत पत्र में की गई है। पत्र में सामान्यत: अरबी/फ़ारसी के शब्द नहीं हैं किन्तु एक शब्द मातमपुरसी ही ऐसा है जो कुछ खटकनेवाला है। यह फ़ारसी का स्त्रीलिंग शब्द है जिसका अर्थ किसी की मृत्यु पर सहानुभूति के प्रकटीकरणार्थ घरवालों के पास जाना है।

उदाहरण ५

श्री रांम जी

नकल अहदनाम महाराज जसोंतराव हूलकर वाहादर वह सीरकार कूपनी अगरेज वाहादर अहदनाम दरवाव ईस तकरार म वूनीपाद × × × लहकी अर माफकत तूरफन की सीरकार कूपनी अगरेज वाहाद्र अर माहाराज जसोतराव हूलकर वाहादर माफक जल कै ठहरी ईस त्रह परीजो फीमावन सीरकार कूपनी वाहादर कै अर माहाराज मौसूफ कै वीलकल दोनो तरफै राह सूलह की मनजूर हुई ईस वासत दफै तीजल सात वीसात तै करनल ज्यान मालकंम साहब वादर की व

मूजव अषती य्यारदीये हूये नवाव मोला अलकाव जनरल जरारैलारहलीक साहव वाहादर सीपहसालार फतेजंग सात अषतीय्यार की त्रफ नवाव आली जनाव गवरनर जनरल न्याजम मूमालक महरू सैं ही दोसतान मूतलकै सीरकार कूंपनी अगरेज बाहादर दामइीकवालहू फीरषते है भीसात उसीले सेष हवीवूला वा वालारांम सेठ मूषतयार तरफै माहाराज हूलकर के मूकरैर हूये

दफे पहली सीरकार कंपनी अगरेज वाहादर ईीकरारै करते ह के ळढाइी मूका-लवा साथी माहाराजा हूलकर वाहादर कै मोकूफै अर आयंद माहाराजै मोसूफ सैं वदोसतू सीरकार के सैं जाने गये चूनाचैं माहाराज मौसूफैं भी ईीकरारै करते ह ततवी-रायत सैं अर वरदूदा से वीची सीरकार दोलतमदार कूपनी अगरेज वाहादर जीस म मूजव नूकसान सीरकार कूपनी अगरेज वाहादर का होवै अहतयादी करी जाइीगी : दफ दूसरी माहाराज जसोंतराव हूलकर ईीकरार करते हे के दावै हक अर तसरफै भूलके सैं कीरे वसी दावा नही वीची लटोक रामपूरा वा बूदीला अरीवासमधी मैं वइी वागरह के पाहरवूदी सैं तरफ समालकी है और अब लग वे ची लाष सीरकार दोलतमदार कैं कायम है वीलकूल दसतवरदार हूये अर आयंद मूतलष दावा बीची ईीलाषा मजकूर कै नैं चाहीगा रैषा : दफा तीसरी : आहाली सीरकार कूपंनी अंगरेज वाहाद की ईीकरारै करते ह के मूलक कैदी ममूलाल कू षांनदान हूलकर का प्यांनै बीच मालवा के वा ओर राजू के मसिल मेवाढ वा मारवाङी वा हाङौती की त्रफ जनूब चैमलके है कूछी सैरोकांर नै रष ओर वीचै कामूकै उस तरफ के मूलक तालीक हूलकर का कैं वीच त्रफैं जैनूव क दरीय्याव तरवेणी वीची दीषण कै ह ओर अब वीची तसइफ हाली सीरकार के ह साथी माहाराजे जसूवत राव हूलकर के फरीदीय्या जात हसी वाइी कीलवा प्रगना चादोर वा अमर वा प्रगना वीची तरफ जैनूब गंगा गोधावरी के ह वीची तसइफ आहाली सीरकार के चाहगे रहै साथी बूजगी षांनदानैं हूलकर के ईीकरारैं की या जात है की दर सूरत तके त्रफ माहाराजैं जसवत राव हूलकर के सैं मजवूती वा दोसती चाही की रही ओन कीसी रैं वसी हरकती का मूहकी मूजव परावी का नीसपत ईीलाष कूपनी अगरेज वाहादर का होवै नै चाहगा हूवा मूलकै मजकूरय्या नै कीला वा प्रगना चाङोर का वा अंवर का वा सागाव का दहोत का की त्रफै जैनूव दरीय्याव गंगा गोधावरी के है वादीये कवरस अर छेहे महीना कै हवाल माहाराज जैसवत राव हूलकर कैं कीय्य जायगे : दफ चौथी : माहाराजा जैसवंतराव हूलकर ईीकरारैं करते ह कूछी रैं व सीदावा न्ही सात प्रगने को चैंके अरजील वुदेलषंङ के हर रैं वसी दावा न्ही दसतवरदार हूये अर कवी नै चाहीयेगा कीय्या लेकन दरसूरती य के मजबूती दोसती की वा यकेतादीली की त्रफ माहाराजैं मौसूफ सैं नीसवतै सतह षाहाली सीरकार कूंपनी अंगरेज बाहादार कै मजून चाहीगी रही आहा हाली सीरकार दोलतमदार कूंपनी अगरेज बाहादार ईीकरारैं करते है के प्रगना को चैका साथ उजैं कैं जागीर

बालावाइी साहीब कू दी गइी है साथ उनहीवाइी साहीवा के लहकी माहाराजै मोसूफ की वादी दोय वरस कै तरीय् कै जागीर सीरकार कूपनी अंगरेज बाहादर के सै दी जायगी : दफ पाच ही : माहाराज जेसव्ंत राव् हूलकर ईकरारै करते है के माहाराजे मौसूफ कू हर रोव् वस सै दावा न्ही मूवालाकमह इसा अर मूतसरफा आहाली सीरकार कूपनी अंगरेज वाहादर का दावा न्ही वीची सीरकार कूपनी अंगरेज वाहादर कै दसतवरदार हुये के वी दावा कीसी अमर का नै चाहगा : दफ छठी : माहाराज जैसवंत राव् हूलकर ईकरार करते ह के वे रैजावंदी अहाली सीरकार कूपनी अगरेज वाहादर के कैंवी येक कैता ई साहब वीलायत फीरंग के सै नोकर नै चाहगे रखना:

दफ सात उ ॥: माहाराजै जसव्ंत राव् हूलकर ईकरारै करते ह जो हाथ सरजेराव् घाटी के सै कीसने उठ मूजव षरावी अर वरवादी आलम का हूवा अल षसूसनी सवतरै सरकार कूपंनी अगरजै वाहादर के वे अदाईहाना सात तै करीई वासर्ते आहाली सीरकार दोलतमदार कूपंनी अंगरेज वाहादर वीची जाहर करने दूसमनी य्या उस वदनीहात के ईसातारनामा लीष करी सै व तरफ भेजे मै दनी जरई वात के कवी जर जेराव् कै ताई वीच कारवारमसो रे मूलक के वीची ईलाष अपने कै दषलनै चाहीयगा दीय्या अर नोकर नै चाहीयेगा रषा : दफ आठ : आहाली सीरकार कूपनी अगरेज वाहादर ईकरार करते है वीची सूरत मजबूती अरतकदूर सूलह के ओर सरतै मजमून दफा तसदरकी माहाराज जसव्ंत राव वीची मूकदमै फीरणे माहाराजै मौसूफ के वै त्रफ मूलाकै मूतालकै अपणे कै मन करणा वा मूजामती करणा नै चाहगा ओर कीसी रै वसीरवत ओर आसेवनीसवत साथी महाराजै मोसूफ के तरफ सीरकार कूपनी अगरेज वाहर के सै वीच अमल कै नै चाहगा आय्या ओर आहाली सीरकार ममदूह की सीरे वसी वीची अमूर माहाराजा मोसूफ कै दषल नै चाहगे कीय्या ओर सैरोकार नै चाहगे रैष्या ओर मसकत ईस वात के वमजरेद दूरसती अहदनाम माहाराजै मोसूफ कै जीस राहा सै के मूलक पीटा लावा के थेलवाजी दी ओर मूलक तालकै सीरकार के वा राजा जपूर के साथी हाथ वाय्या कै छोड़ी कै री कूच वकूचे मूलक अपणे कू जावै ओर गारतगीरी मूलक सीरकार कूपनी अगरेज वाहादर वागरह के वीच राहा है होवै फोज अपणी सै अहतय्याद कूली करै : दफै नोमी : येह अहदनामा नो दफै तारीष चोबीस ईस माहा दीसवर संनी १८०५ ईसउ मूतावक दूसरी ईस महीने की संनी १२२० हीजरी कै उपर घाट रायपूर अर दरीय्याव् व्यास के दोनू तरफ सै लीष्यां य्या यके कीता अहदनामे का मोहर दसषत सेष हवीवूला के सै ओर वालाराम सेठ के सैमूतार माहाराजै जैसोवतराव् हूलकर वाहा के सै दूरसत कर कै हवाला जनरल लारदलीक साहब ______ फटा ______ हके कीयया ओर येक कीता अहदनामे का मोहर दसषकरनल मालकम साहब वाहादर कै सै व मूजव अषतीय्यार दीये हूये

जनरल लारद साहब ममदूह के तयारहोके रैहवाल मूषतारो मजकूर माहाराजै मौसूफ के कीय्या गया

संधि का अनुबन्ध अरबी/फ़ारसी शब्दों से भरपूर है। हो सकता है कि लेखक कोई मुसलमान रहा हो। वैयाकरणिक दृष्टि से भाषा यद्यपि खड़ी-बोली कही जा सकती है किन्तु भाषा अटपटी और अरबी/फ़ारसी लेखन शैली के कारण अस्वाभाविक है। अनेक शब्दों ने भाषा को बोझिल बना दिया है। उदाहरणार्थ—अषतीय्यादीये, मूमलाक, महरूसै, ततवीरायत, तरदूदा, पाहरवूदी, दरीय्याव, तरवेणी (त्रिवेणी), तसइफहाली, मजकूरय्या आदि शब्द ऐसे ही हैं। अरबी/फ़ारसी के अधिकांश शब्द तद्भव रूप में न होकर अपने क्लिष्ट रूपों में ही हैं। हिन्दी के शब्द भी बिगाड़ दिए गए हैं।

उदाहरण ६

॥ श्री रांम जी

सिधि श्री सर्वउपंमा श्री रांउ चतुरभुज जी हरदेयेले श्री महांराजधिराज श्री महांराजा श्री अलीजांह सूबेदार जी श्री दौलतरांउ जी सिंदे के वांचनै यह के स्माचार

श्री जी की क्रपा सौ भले है उहां के स्माचार भले चाहीजै आप्रंच राजेश्री वा पुजना रहन भेजे है सो तुम मिलकर सरकार के लछपा फूक राजा जी सौ वोलचाल करले जानौ जोग्य है मीती जेठ बदी २ संमत् १८६२

(ग) सांस्कृतिक भावना का अंकन

आधुनिक काल के प्रशासनिक पत्राचार अथवा अन्य कार्यों में संस्कृति की जीवन्त झाँकी के दर्शन करना कठिन हो गया है क्योंकि उसमें शुष्कता बढ़ती जा रही है, किन्तु जिस अवधि का प्रशासनिक गद्य विचाराधीन है, उस काल में संस्कृति प्रशासन के वस्त्र के रूप में विद्यमान रही, यह तथ्य यहाँ प्रस्तुत अनेक उदाहरणों से पुष्ट होता है।

उदाहरण सं० १ में, जो संवत् १८१३ का पत्र है, "हयां के समाचार श्री··· ·········जी की कृपा सौं भले हैं आपके सुष समाचार सदां भले चाहीये तो हंम कौ प्रंम आनंद हौइ" वाक्य सनातन भारतीय संस्कृति के "बहुजन सुखाय" सुभाषित के अनुकूल है। पत्र का प्रारम्भ "श्री मदन मौहन जी" लिखकर हुआ है जो भारतीय संस्कृति की विशेषता लिए है अर्थात् ईश्वर स्मरण करके कार्यारम्भ करना।

उदाहरण सं० २ में "श्री परमेस्वर जी सतिय छै" और "श्री राध कृष्ण जी" पद तथा "स्वस्ति श्री राज राजेंद्र महाराजाधिराज महाराजा", "राजराजेश्वर

महाराजाधिराज माहाराजा श्री", "जुहार अवधारज्यौ","अपरंच गुसांई श्री मुरली-धरजी अठै जोधपुर बिराजे है"

"सो आप ईणां रो आदर सतकार अवल रीत सूं करावसी"

वाक्य संस्कृति की छाप उजागर कर रहे हैं क्योंकि पत्र में गोस्वामी जी के उच्च आदर-सत्कार का अनुरोध है।

उदाहरण सं० ३ तो व्रजभाषा के पीत वस्त्र में आवेष्टित होकर भारतीय संस्कृति की उच्चता के उच्च प्रतिदर्श का प्रदर्शन करता है।

उदाहरण सं० ४ में भी जयपुर के दीवान श्री गंगादास को जयनगर से गोस्वामी जी ने भगवान् के भोग के लिए भूमि के विषय में लिखा है। देश के मन्दिरों की व्यवस्था का चित्रण इस उदाहरण में हुआ है, जो भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है।

उदाहरण १

मुद्रा

श्रीमदनमौंहनजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई माधव सिंघ जी जोग्य लिषातँ श्री राजागोपालसिंघ जी केन्य मजुरा बँच्या हुँयां के समाँचार श्री जी की कृपा सौं भले हैं आपके सुष समाचार सदा भले चाहीये तो हंमकौ प्रंम आनंद हौइ अप्रंच महाराज बड़े है हंम वा दरबार के हमेस के रजपूत है·········ह·········(फटा) ·········रो रजपूत है सो महाराज के काँम कौ है ओर कागद आपको आयौ समाचार जानै अनरुधसिंघ जी की मदत करनै के वासतैं लिषी ही सो ह्यो तौ सब तरह हुकंम श्री महाराज को ही है वे लिषैंगे तबज्यीयत भेजनै मैं आवैगी और हकीकत राइ हसहाइजी कौलिषी है सो बे जाहर करैंगे और मिश्र मोजीराँम जी के कागद सो मालूंम होइगी और कागद समाचार लिषांवत रहीयैंगे मिती फालगुन बदी ६ सँवत १८१३ मु० पौ

उदाहरण २

श्री परमेस्वरजी सत्यि छै

श्री राध कृष्न जी

स्वस्त्यि श्री राज राजेद्रँ महाराजाधिराज माहाराजा श्री सवाई माधौसिंघ जी जोग्य राजराजेश्वर माहाराजाधिराज महाराजा श्री·········(फट गया)······ ···सिंघजी लिषावतँ जुहार अवधारज्यो अठारा संमाचार री कृपा सूं भला छै राजरा सदा भला चाहीजै राज बडा हो अठा उठारा व्योहार मै किणी वात री

जनरल लारद साहब ममदूह के तयारहोके रैहवाल मूषतारो मजकूर माहाराजै मौसूफ के कीय्या गया

संधि का अनुबन्ध अरबी/फ़ारसी शब्दों से भरपूर है। हो सकता है कि लेखक कोई मुसलमान रहा हो। वैयाकरणिक दृष्टि से भाषा यद्यपि खड़ीबोली कही जा सकती है किन्तु भाषा अटपटी और अरबी/फ़ारसी लेखन शैली के कारण अस्वाभाविक है। अनेक शब्दों ने भाषा को बोझिल बना दिया है। उदाहरणार्थ—अषतीय्यादीय, मूमलाक, महरूसै, ततवीरायत, तरद्दुदा, पाहरवूदी, दरीय्याव, तरवेणी (त्रिवेणी), तसइफहाली, मजकूरय्या आदि शब्द ऐसे ही हैं। अरबी/फ़ारसी के अधिकांश शब्द तद्भव रूप में न होकर अपने क्लिष्ट रूपों में ही हैं। हिन्दी के शब्द भी बिगाड़ दिए गए हैं।

उदाहरण ६

॥ श्री रांम जी

सिधि श्री सर्वउपमा श्री रांउ चतुरभुज जी हरदेयेले श्री महांराजधिराज श्री महांराजा श्री अलीजांह सूबेदार जी श्री दौलतरांउ जी सिंदे के वांचनै यह के स्माचार

श्री जी की क्रपा सौ भले है उहां के स्माचार भले चाहीजै आप्रंच राजेश्री वा पुजना रहन भेजे है सो तुम मिलकर सरकार के लछपा फूक राजा जी सौ वोलचाल करले जानौ जोग्य है मीती जेठ वदी २ संमत् १८६२

(ग) सांस्कृतिक भावना का अंकन

आधुनिक काल के प्रशासनिक पत्राचार अथवा अन्य कार्यों में संस्कृति की जीवन्त झाँकी के दर्शन करना कठिन हो गया है क्योंकि उसमें शुष्कता बढ़ती जा रही है, किन्तु जिस अवधि का प्रशासनिक गद्य विचाराधीन है, उस काल में संस्कृति प्रशासन के वस्त्र के रूप में विद्यमान रही, यह तथ्य यहाँ प्रस्तुत अनेक उदाहरणों से पुष्ट होता है।

उदाहरण सं० १ में, जो संवत् १८१३ का पत्र है, "हयां के समाचार श्री··· ·········जी की कृपा सौं भले हैं आपके सुष समाचार सदां भले चाहीये तो हंम कौ प्रंम आनंद हौइ" वाक्य सनातन भारतीय संस्कृति के "बहुजन सुखाय" सुभाषित के अनुकूल है। पत्र का प्रारम्भ "श्री मदन मौहन जी" लिखकर हुआ है जो भारतीय संस्कृति की विशेषता लिए है अर्थात् ईश्वर स्मरण करके कार्यारम्भ करना।

उदाहरण सं० २ में "श्री परमेस्वर जी सतिय छै" और "श्री राध कृष्न जी" पद तथा "स्वस्ति श्री राज राजेंद्र महाराजाधिराज महाराजा", "राजराजेश्वर

महाराजाधिराज माहाराजा श्री", "जुहार अवधारज्यौ","अपरंच गुसांई श्री मुरली-धरजी अठै जोधपुर बिराजे है"

"सो आप ईणां रो आदर सतकार अवल रीत सूं करावसी"

वाक्य संस्कृति की छाप उजागर कर रहे हैं क्योंकि पत्र में गोस्वामी जी के उच्च आदर-सत्कार का अनुरोध है।

उदाहरण सं० ३ तो व्रजभाषा के पीत वस्त्र में आवेष्टित होकर भारतीय संस्कृति की उच्चता के उच्च प्रतिदर्श का प्रदर्शन करता है।

उदाहरण सं० ४ में भी जयपुर के दीवान श्री गंगादास को जयनगर से गोस्वामी जी ने भगवान् के भोग के लिए भूमि के विषय में लिखा है। देश के मन्दिरों की व्यवस्था का चित्रण इस उदाहरण में हुआ है, जो भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है।

उदाहरण १

मुद्रा

श्रीमदनमौंहनजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई माधव सिंघ जी जोग्य लिपातँ श्री राजागोपालसिंघ जी केन्य मजुरा बँच्या हूँयां के समाँचार श्री जी की कृपा सौं भले हैं आपके सुष समाचार सदा भले चाहीये तो हंमकौ प्रंम आनंद हौइ अप्रंच महाराज बड़े है हंम वा दरबार के हमेस के रजपूत है.........ह.........(फटा) ....रो रजपूत है सो महाराज के काँम कौ है ओर कागद आपको आयौ समाचार जानै अनरुधसिंघ जी की मदत करनै के वासतैं लिषी ही सो ह्यो तौ सब तरह हुकंम श्री महाराज को ही है वे लिषैंगे तबज्यीयत भेजनै मैं आवैगी और हकीकत राइ हसहाइजी कौलिषी है सो बे जाहर करैंगे और मिश्र मोजीराँम जी के कागद सो मालूंम होइगी और कागद समाचार लिषांवत रहीयेंगे मिती फालगुन बदी ६ सँवत १८१३ मु० पौ

उदाहरण २

श्री परमेस्वरजी सत्यि छै

श्री राध कृष्न जी

स्वस्त्यि श्री राज राजेद्रँ महाराजाधिराज माहाराजा श्री सवाई माधौसिंघ जी जोग्य राजराजेश्वर माहाराजाधिराज महाराजा श्री.........(फट गया)...... ...सिंघजी लिषावतँ जुहार अवधारज्यो अठारा संमाचार री कृपा सूं भला छै राजरा सदा भंला चाहीजै राज बडा हो अठा उठारा व्योहार मै किणी वात री

जुदागी न है अठै घोडा रजपूत है सो राज रा काँमनु है अठीरी तरफ कांम काज होय सो लिषाया क़रावसी

अपरँच गुसांई श्री मुरलीधरजी अठै जोधपुर बिराजे है सो जैपुर ब्याह करांणनूं पधारिया है सो आप ईणाँ रो आदर सतकार अवल रीत सूँ करावसी कागद सँमाचार सदा लिषाया करवसी सँबत १८१६ काती सुद ५

उदाहरण ३

श्री राधा वल्लभो जयति
जैं जैं श्री राधा वल्लभ जी
मुद्रा
अपठनीय

मुद्रा
श्री राधा वल्लभ श्री
हरिवंश रूप किशोरी
हित रूपा गोस्वामि
श्री गोपी लाल जी

मुद्रा
श्री राधा वल्लभ
× × × गोस्वामि
मोहन लाल × × ×

गोस्वामि गोपीलाल प्रियालाल मोहनलाल मदन गोपाल जी आदि सव के ँ के वंचने राव जी चतुरभुज जी कु आगें आपनें सेवां कुंज को महल नयो बनाय को मनोरथ कीयो सो हम सब प्रसन है महल बनवावो यामे कोई हरकति करे नंही आप तो परमारथ की बात करो हौ हम आप ही पै प्रसन भये है जलदी बने सो करोगे मिती वैसाष सुदी ४ संवत १८८२ शुभस्तु:

उदाहरण ४

॥ श्री सर्वेश्वर जी
राधा नागर जी
श्री गोपेश्वर सरण देव जी

सिधि श्री परम भाग्यवान हरि गुरु सेवा सावधान दीवाण जी श्री गंगादास जी जोग्य लिषतं जयनगर तें गौस्वामी श्री जी म्हाराज.......... के हित पुरबक श्रुभासिरबाद श्री प्रभू स्मरण बंचने ईहा आनंद है तुमारे सदैवानंद बाछै है अप्रंच पीपल नामें × × × ठाकुर जी श्री............जी को वणाय ज्मी बीघा साठ भोग मै ठाकर बीस्न स्यंघ जी दे गया अर (और) गंगा जी × × × परब में ज्मी बीघा पचावन पूजारी हर नारायण नें ठाकरा दीनी त्याको पंडो हर नारायण कै पास हें सो देषोग्ये तीसी वाप पूजारी सू अङ चल कर ज्मी मंदू षोस लीया अर

सीना जोरी कर राषी है सो अब ठाकरा सू ताकीद कराय पूजारी मजकुर नें मंदू में बठाय ज्मी जायेगाई कै हवालै करावोगा मिति वसाप वद ६ सवत १८७

टिप्पणी :—पत्र में संवत् स्पष्ट नहीं है।

दीवाण जी

उदाहरण ५

श्री गोपालजी करौली

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई जयसिंह देव जोग्य लिषाइतँ महाराज राजाजी श्री हरिबकसपाल जी बहादुर यदुकुल चंद्र भाल को मुजरा बँच्या ह्याँ के समाचार श्री············जी की कृपा सो भले है आपके सुभ समाचार सदैव भले चाहिजै तौपरमआनंद होइि अप्रंचि दस घोडा रजपूत है सो दरवार के चाकर है और ब्यौरो सगहीरुथाराम जी मालूम करैंगे वा प्रीयादास भेजे है सोये अरज करैंगे ह्या सर्व प्रकार हुकम व्यौहार अज्ञाप्रैमान है कोइी वात करि तफावत नजानि कागद समाचार लिषावत रहीयेगौ मिती सावन बदी १२ संवत १८९०

पत्र में "यदुकुल चन्द्र भाल" शब्दों का प्रयोग हिन्दू राजाओं में स्वयं को सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी बताकर श्रीरामचन्द्र जी और श्रीकृष्णचन्द्र जी के कुलों से सम्बन्ध जोड़ने की सांस्कृतिक भावना को दर्शाता है।

पत्र में "ह्यां सर्व प्रकार हुकम व्योहार अज्ञां प्रमान है" वाक्य में पदलालित्य है जो सांस्कृतिक झुकाव का संकेत है और प्रशासन का संस्कृति से सम्बन्ध स्थापित करता है।

उदाहरण ६

श्रीगोपालजी करौली

सिध श्री महाराजा धिराज महाराजा श्री सवाई रांमसिंह जी देव जोग्य लिषायतँ महाराज राजाजी श्री प्रतापपाल जी वहादुर यदकुल चंद्रभाल को मुजरा वँच्या हयां के समांचार श्री जी की क्रपा सौ भले है आपके सुभ्समाँचार सदैव भले चाहिजै तो परंम आँनद होय अप्रँच दस घोड़ा रजपूत है सो दरबार के काँम के है कागद आयौ समाँचार जाँने टीका को ब्यौहार राव् गँगादास के साथ भेज्यो सौ आय् पौहच्यौ और ह्यां सौरुषसुयि है के आवै है सो ये जाहर करेगें ह्यां सरव प्रकार हुकंम व्योहार अग्या प्रमान है कोइी बात करि तफावत न जानि कागद समांचार-लिषावत रहीयेगो मिती कातिग बदी १४ सवँत १९०३

रियासत करौली में संवत् १८९० श्री हरि बक्शपाल और संवत् १९०३ में श्री प्रतापपाल राजा थे किन्तु करौली रियासत जयपुर के अधीन थी। टीका का व्यवहार सांस्कृतिक परिपाटी थी। इस पत्र में उदाहरण सं० ४ के पत्र के साथ

यह साम्य बैठता है कि संवत् १८७०-७५ (पत्र में तिथि स्पष्ट नहीं है) में जयपुर के दीवान गंगादास जी थे जो टीका लेकर संवत् १९०३ में करौली पहुँचे। दीवान को इस पत्र में राव सम्बोधन दिया गया है।

(घ) राष्ट्रीय ऐक्य में योगदान

स्वातंत्र्य प्राप्ति के पश्चात् अनेक वर्षों तक शरणार्थी पुनर्वास की समस्या रही, किन्तु साम्प्रदायिक स्थिति लगभग ठीक रही और साम्प्रदायिक दंगों की समस्या नहीं रही किन्तु विगत कई वर्षों में विभिन्न मज़हबी दंगे, भाषायी दंगे, प्रान्तीय विवाद और अन्य अनेक प्रकार की विषमताएँ पनपीं। राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने के विषय में चर्चाएँ शुरू हुईं किन्तु किसी ठोस तल पर नहीं पहुँचा जा सका। भाषा के उस सूत्र की उपेक्षा होती रही है जो राष्ट्रीय ऐक्य का सुदृढ़ आधार रहा है और हो सकता है।

यह देखना है कि हिन्दी भाषा किस प्रकार राष्ट्र की एकता में महत्त्वपूर्ण योगदान करती रही।

उदाहरण सं० १ में इन्दौर के होल्कर राजा की ओर से संवत् १८०९ में जयपुर को लिखित अनुरोध किया गया कि निजामन मुल्क गाजुदी खाँ दिल्ली से नर्मदा किनारे पहुँच गया, इसलिए फौज की आवश्यकता है। हिन्दी भाषा के सूत्र ने दो भिन्न वंशों और राज्यों को जोड़ने का कार्य किया।

उदाहरण सं० २ में ग्वालियर राज्य की ओर से जयपुर को अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ी गई लड़ाई का विवरण दिया गया और अंग्रेजों के मारे जाने की सूचना दी गई। उदाहरण सं० १ सन् १७५२ का और उदाहरण सं० २ सन् १७७८ का है।

उदाहरण सं० ३ इन्दौर राज्य की ओर से जयपुर को लिखा गया पत्र है। पारस्परिक विवादों को निपटाने की सूचना सन् १८०४ ई० में हिन्दी भाषा में देकर हिन्दी की सर्वप्रियता को प्रमाणित किया गया है।

उदाहरण १

। श्री । इन्दौर

श्रीमहाराजधिराज श्रीराजराजेद्रं श्रीसवाई माधोसिंघ जी जोग्य लि: श्री पंडीत गंगाधरय् संवत केन बाँचजो आपका सदा सर्वदा भला चाहिजे इहाँ के स्माचार भले है हेत प्यार राषो छो ती थी विसेष रषावोला अप्रंच सलावतजंग के तांई तँवीकर नबाब नीजामन मुलक गाजुदीषाँ वाहादर जीणको दषन के सूबे पर बैठावणा येमसलत श्रीमुंत राजश्री पंडीत प्रधान ही में मर्जी माफक ठहरी है नवाव ह मे होकर दीली सें दर मंजल नरमदा किनारे आन पोंहचें अणा समया मौफौज री दरकार जाणकर राज श्री दोनों सुबेदार जी ने आपको पत्र लिष भेजा है अणी

प्रमाण आपने षातीर मोलेकर फौजरी तयारी कर भेज देवोला अणी बात में दोनो सुवेदार जी री षुसी आर श्रीमतु पंडीत प्रधान जी री भी बड़ी षुसी है सो हि आप करोला मीतीश्रावण सुद ५ सँ० १८०९

सन् १७५२ के इस पत्र की भाषा का विश्लेषण करने से खड़ीबोली हिन्दी के प्रयोग की प्राचीनता की पुष्टि होती है।

उदाहरणार्थ—(क) मर्जी माफक ठहरी है

(ख) दीली (दिल्ली) से दरमंजल नरमदा किनारे आन पोंहचें

(ग) फौज री दरकार जाणकर

(घ) सुवेदार जी ने आपको पत्र लिख भेजा है।

उपर्युक्त भाषा और आधुनिक बोलचाल की हिन्दी में अन्तर नहीं है। सन् १७५२ ई० से पूर्व १५०-२०० वर्ष पूर्व भी ऐसी भाषा का प्रचलित रहना स्वाभाविक होगा।

उदाहरण २

ग्वालियर

श्री राम जी

सिघ श्री सर्वोपमालायक महाराजाधिराज राज राजेंद्र महाराजा श्री सवाई परतापसीघं जी जोग्य राज श्री सुवेदार जी श्रीमाधवरावजी सींदे केन बंचा अठां का स्माचार श्री जी कृपा सुँ भला छै आपका भला चाहिजे अप्रंच मुंबई वाला फीरंगी ईगरज सरकार से बिगाड कर लड़ाई का सरजाम मातबर करके बोरघाट उपर पुने से दस कोस अये तीस पर अठा की बी तयारी करके फौज सुधा कुचा करके ईगरेज का मुकावला कीया दोनों तरफ की लड़ाई सरु हुई सरकार की फौज मातबर थी चारो त्रफू से लगाव करके तोफा की वगैरे मार दीई तीन पोहर ताई लड़ाई हुई श्रीमंत जी का पासू आपणी फतेह हुई ईगरेज बोहत मारे गये बाकी रहे सो बडनाव के असरेजाअर सलुष का पेगाम करके भले आदमी हजूर मोकलया सरकार का माहाल लुषवा के त्रफे था सो सरकार मोपा छै दिया तहनामा ठेराय के मातबर ईगरेज सरकार में वोल राषी तिस पर फीरंग्या के साथ फौज देकर में वोल राषी तिस पर फ्हीरंगया के साथ फौज देकर मुंबई को पोहचाय दीये अठा को बंदोबस्तु हुवो अब प्रति पदा के मुहरत सो सवारी सीताव वा त्रफू को आवेगी ईगरेज के त्रफू श्रीमंत रघुनाथराव दादा थे उनको बी हवाले कर देकर सा—बगैर मूलष छोड दिया राज ने मालूम होयो वास्ते लिषो है मिती माघ सुदी १ सा १८३५ मुमनजीकवडगांव

पत्र में लिखे "मुंबई वाला फिरंगी इंगरज" वाक्यांश से वर्तमान बंबई शब्द के खोखलेपन और मुंबई की उपयुक्तता का आभास तो मिलता ही है, अंगरेज शब्द

के प्रयोग और फिरंगी शब्दों का प्रचलन भी मिलता है।

पुनश्च : पत्र में 'पुने से दस कोस' वाक्यांश भी वर्तमान 'पूना' का, जिसे अब पुराना गौरवशाली नाम 'पुणे' दिया गया है, नाम इंगित करता है। 'दस' और 'कोस' भी ऐसे ही शब्द हैं जो वर्तमान हिन्दी की गिनतियों और दूरी के प्राचीन माप की उपस्थिति के संसूचक हैं।

उदाहरण ३ श्री राम जी

सीधी श्री राजे श्री राव च्यतुरभुज जी जोग लिखतं माहाराजाधिराज महाराज श्री सुबादार जसवं‌त राव हुल्कर के रांम रांम बंच्या ह्या के स्माच्यार भले है तुम्हारे स्माच्यार भले चाहीजे आप्राच्य कागद तुम्हारो आयो स्माच्यार जाने ओर षलीता माहाराजाधिराज का भेज्या जीस मैं आपस के ब्यावहार लीषी सो जो कदीम सैं व्यव्हार है तीस सें दिन प्रत जादे है अर तुम नें सरकार के थाने हींडोन वगरह में थे जिसका मजकूर लीष्या तो रोवरो बी तुम सें कहा फेर तुम्हारा लीष्या आया जब ही उठाय लीये अब सवारी वा तरफ आवै है सो वदबस्त रहेगो ओर षलीता का दर जवाब भेज्या है सो भेज देना य्हा तुम्हारा घरोबा जानोंगे कागद स्मांच्यार लीषते रहोगे मिती बैसाष सुदी १ संवत १८६१

राजेश्र ह० अपठनीय

पत्र की भाषा में प्रवाह और गहनता के दर्शन होते हैं; यथा—"सो जो कदीम सैं व्यव्हार है तीस सें दिन प्रत जादे है" वाक्य लेखनी में भाषा की पकड़ का परिचायक है क्योंकि भावों का संप्रेषण सम्यक् प्रकार से हुआ है। 'तीस' शब्द के स्थान पर यदि 'तिस' लिखा होता तो लेखक व्यक्ति की योग्यता प्रकट होती। 'तिस' का अर्थ 'उस' है।

"फेर तुम्हारा लिष्या आयो, जब ही उठाय लीये अव सवारी वा तरफ आवै है" वाक्य में 'फिर' के स्थान पर प्रयुक्त 'फेर' आज भी ग्रामीण प्रयोग 'फेर' ही होता है। 'तब ही' के लिए 'जब ही' लिखा गया है जो प्रयोग आज भी प्रायः जभी के रूप में होता है। सन् १८०४ ई० की यह भाषा दो सौ, तीन सौ वर्षों से प्रयुक्त होती रही होगी, ऐसा सोचना उचित रहेगा।

भाषा के प्रशासनिक प्रयोग के विकास क्रम का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं—

(१) प्रशासनिक पत्राचार हिन्दी साहित्य की बहुमूल्य निधि है जिसमें 'साहित्य' की मान्य परिभाषा के अनुसार 'साहित्य' के सब गुण और पहलू विद्यमान हैं।
(२) प्रशासनिक हिन्दी गद्य, समाज के दर्पण का कार्य करता है।
(३) सन् १७५० ई० के आसपास हिन्दी गद्य की भाषा प्रौढ़ हो गई थी।

(४) पत्रों में अरबी, फ़ारसी के शब्द प्रारम्भ काल में कम थे किंतु बढ़ गए। पुनः घटते से लगते हैं जिसका कारण मुसलमानी शासन का सन् १७१० ई० के पश्चात् से दुर्बल होते जाना ही हो सकता है और भाषा अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति की ओर बढ़ने लगी।

(५) हिन्दी के खड़ीबोली रूप का विकास और प्रयोग निरन्तर व्यापक होता गया। इस प्रकार भाषायी एकरूपता बढ़ने लगी।

अध्याय ८

राजभाषा के रूप में हिन्दी की क्षमता तथा प्रौढ़ता

भारत के संविधान के अनुच्छेद ३४३ द्वारा हिन्दी भारत संघ की राजभाषा बनी। किन्तु अंग्रेजी भाषा के प्रभाव से कुछ व्यक्ति राजभाषा के रूप में हिन्दी की क्षमता पर सतत् प्रश्नचिह्न अंकित करते रहे और कुछ तो अभी भी, जबकि हिन्दी का सामर्थ्य विभिन्न पहलुओं से देखने पर बहुगुणित हुआ है, हिन्दी की क्षमता के प्रति आश्वस्त नहीं हैं। ऐसे व्यक्तियों को, सम्भवत: यह जानकारी नहीं है कि राज-भाषा के नाते किसी भाषा की क्षमता उस भाषा के व्यावहारिक प्रयोग से जुड़ी होती है तथा हिन्दी भारत के बड़े भू-भाग में कई शताब्दियों से राजभाषा के नाते प्रयुक्त होती रही है। हिन्दी की, राजभाषा के नाते प्रयुक्त होते रहने की अवधि अंग्रेजी भाषा के ब्रिटेन की राजभाषा बनने की अवधि से भी दीर्घ है।

आगे दिए गए उदाहरणों में प्रथम उदाहरण संवत् १७३३ (सन् १६७६ ई०) का है जो ३०० वर्ष से अधिक पुरातन है। जयपुर रियासत में उन दिनों मिर्ज़ा राजा जयसिंह शासक थे और जयपुर मुग़लों के गहन प्रभाव में रह चुका था तथा तब भी प्रभाव में था। अर्ज़दास्त की भाषा सुघड़ और स्पष्ट है। खड़ीबोली हिन्दी का अत्यन्त निखरा रूप इसमें दृष्टिगोचर होता है।

"तीसरे पहर जुर हुवा"

अर्थात् ज्वर हुवा।

"पाँचवे दिन सनपात हुवा"

अर्थात् सन्निपात हुवा।

"सो सहदेव वौद भलां भला ईलाज कीयआ"

अर्थात् सहदेव वैद्य ने भला ईलाज किया

"ग्रहां का दान जप जीन जीन जो बताया था सो कीया"

अर्थात् ग्रहों का दान, जप जिस-जिसने जो बताया सो किया

"पूजा पाठ बागौ० पुन्या भाति-भाति का कराया"

आदि

अर्ज़दास्त की वर्तनी में कुछ अशुद्धियाँ हैं किन्तु अस्पष्टता या अर्थ का अनर्थ नहीं है। सन् १६७६ ई० में इस प्रकार का हिन्दी गद्य एकदम तो नहीं आया। उस

काल में भाषा में धीमी गति से परिवर्तन हुए, ऐसा अनुभव हुआ है। इसलिए इस प्रकार की भाषा सन् १५०० ई० से या उससे भी पूर्व से प्रचलन में रही होगी, तभी भाषा का इतना स्पष्ट रूप दिखाई देता है।

उदाहरण सं० २ सन् १७१२ ई० की विस्तृत रपट है जिसकी भाषा राजस्थानी हिंदी के हाडौती रूप में खड़ीबोली के साथ मिश्रित है।

उदाहरण सं० ३ सन् १७१३ ई० में लिखी एक वकील रपट है जो जयपुर के शासक को लिखी गई है। शब्दावली तो निस्संदेह अरबी/फ़ारसी-युक्त है।

उदाहरण सं० ५ सन् १७४३ ई० का एक पत्र है जो करौली रियासत की ओर से जयपुर को सम्बोधित है। भाषा अत्यन्त स्पष्ट खड़ीबोली हिन्दी है; यथा—

"श्री महाराज बडे हैं",

"हम श्री महाराज के दरबार के हमेसां रजपूत हैं" आदि।

अन्तर्राज्यीय पत्राचार में सन् १७५१ ई० में इन्दौर की ओर से जयपुर को लिखा गया ख़रीता है जो उदाहरण सं० ७ है। इसकी भाषा आधुनिक हिन्दी है—

"राज का कागद आया, हकीकत सब जानी"

"श्री अनोपराम जी ने मुंजबानी समाचार कह्या सो मालूम हुवा" आदि

उदाहरण सं० १ में सन् १६७६ ई० में खड़ीबोली हिन्दी का जो गद्य मिलता है उसका सन् १७३३ ई० में अत्यन्त उत्कृष्ट रूप है। डॉ० नगेन्द्र ने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में लिखा है—"ब्रजभाषा के सम्पर्क से युक्त शुद्ध खड़ीबोली गद्य उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व नहीं मिलता है। इस समय की अनेक रचनाओं पर ब्रजभाषा के साथ पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी अथवा पंजाबी का प्रभाव है। इस काल में भी ललित गद्य की अपेक्षा अललित गद्य का ही (धर्म, दर्शन, चिकित्सा, ज्योतिष, इतिहास, भूगोल, सामुद्रिक, शकुन, गणित आदि विषयों पर लिखित शुष्क गद्य) प्राधान्य रहा।"

ऐसा प्रतीत होता है कि अनुसन्धानों के अभाव में उन्नीसवीं शताब्दी का आरम्भ ही खड़ीबोली हिन्दी गद्य का प्रारम्भ माना गया है। डॉ० नगेन्द्र ने तत्कालीन गद्य के लिए अललित गद्य का प्रयोग किया है। प्रशासनिक हिन्दी गद्य को भी इसी श्रेणी में रखकर खड़ीबोली हिन्दी गद्य का प्रादुर्भाव सरलता से सन् १८०० ई० या १८०१ ई० के स्थान पर २५०-३०० वर्ष पीछे यानी सन् १५००-१५५० ई० के निकट पहुँच जाता है जैसाकि सन् १६७६ ई० के उदाहरण सं० १ से पुष्टि होती है। सन् १६५० ई० से पूर्व के उदाहरण भी अवश्य ही मिलेंगे, ऐसा शंका-रहित सुनिश्चित विश्वास है, जिसकी पुष्टि १६७६ ई० के प्रस्तुत उदाहरण सं० १ के भाषा-लालित्य से होती है।

उदाहरण सं० ८ ग्वालियर राज्य की ओर से जयपुर को लिखा गया पत्र है जो सन् १७६६ ई० में खड़ीबोली हिन्दी गद्य का परिष्कृत रूप दर्शाता है और अन्तर्राज्यीय पत्राचार में हिन्दी के प्रतिष्ठित होने का परिचायक है।

उदाहरण सं० ९ तो अद्भुत पत्र है जो इन्दौर की रानी अहिल्याबाई होल्कर की ओर से सन् १७८७ ई० में जयपुर के सवाई प्रतापसिंह को लिखा गया। यह पत्र राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रतिष्ठापित होने का प्रबल प्रमाण है। इस प्रकार खड़ीबोली हिन्दी गद्य के उद्गम को सरलता से सन् १५०० ई० के निकट तक ले जाया जा सकता है।

उदाहरण सं० १० द्रष्टव्य—"कागद समाचार आये, दीन बोहोत हुवे सो या बात उठे के सनेह बोहार से नीपट दुर हे। अब हमेसे कागद समाचार लीषावते रहेंगे" आदि।

उदाहरण सं० ११ सन् १८१८ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी सरकार तथा उदयपुर के महाराणा भीमसिंह के मध्य हुए कोलनामे की नकल है जिसकी भाषा खड़ीबोली हिन्दी है।

उदाहरण १

नकल अरजदास्ती करांर मी० प्रथम सावण वदी १२ संवत् १७३३ कां

श्री महाराजा जी चीरंजी श्री महाराज कवार श्री चीमनाजी के दुसमना ने मीती असाढ सुदी ५ बुधवार तीसरे पहर जुर हुवा सो दीन चारी ४ सु धाते जुर ही रहा और पाँचवे दीन तँद्रीक सनपात हुवा सो सहदेव वौद भलां भला ईलाज कीयआ और ग्रहाँ का दान जप जीनजीन जो वताया था सो कीया अँर लाष पारथी पुजा वा दस हजार चंडी पाठ और स्तोत्र वा वटकछौरौ को पुजापाठ वागो० पुन्या भाति भाति का कराया सो पंद्रहई······(फटा)······तँद्रक सनपात तो मीट्यै वा ······(फटा)······को जोर हुवो सदी मी० प्रथम सावण वदी ९ सनीचरवार के दीन इथणी दान करायाजी

संवत् १७३३ (सन् १६७६ ई०)

उदाहरण २

॥ श्री गोपाल जी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा जी

श्री मीरजा राजा जैसिंघ जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री················चरण कमलानु षानांजाद षाकपाय पचोली जगजीवनदास लिषतं तसलीम बंदगी अवधारजो जी अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला छै श्री महाराजा जी कासीष समाचार सासता परसाद करावजो जी श्री महाराजा जी माईत हैं धणी

(धनी यानि मालिक) हैं श्री परमेसुर जी की जायगा हैं म्हे
↓ ↓
जगह (मैं—अहम् से बिगड़ा)

श्री महाराजा जी का षानाजाद बंदा हां। श्री पातसाहजी श्री महाराजाजी सूं महरबान हैं श्री महाराजा जी सुष पावजो जी यान गंगाजल ओरोग बा का घणा जतन फरमावजो जी श्री महाराजा जी सलामत सारा समाचार दरबार का आगैं अरजदासत कीया छै सु नजर मुबारक गुजरा होसी जी

श्री महाराजा जी सलामत मतालब सरकार का सरंजाम हुवा त्यांकी पै दर पै अरजदासत हजुर भेजी छै सु नजर मुबारक गुजरी होसी जी महाराजा श्री अजीतसिंघ जी को जुवाब न आयो छै बांको जुवाब आवै तब ही सनदांलां जी

श्री महाराजा जी सलामत तुलाराम ने बीस-बीस हजार रुपय दोनु सरकारां सुं मोहमसाजी का देणा कीया था त्यां का समाचार तो आगैं अरजदासत कीया छै सु नजर मुबारक गुजरा होसी जी तीमघे दस हजार अब दीया सु पाँच हजार रूपया तो सरकार की तरफ का अर महाराजा श्री अजीतसिघ जी का अठै रूपया मोजुद न था सु वाकी तरफ सुं भी स्यामसिघ जी सरकार सुं ही दीया जी

— — — — — — —

टिप्पणी : आगे का भाग छोड़ दिया है क्योंकि लम्बी अर्ज़दाश्त है।

— — — — — — —

मी० चैत बदि ४ सबत १७६९

उदाहरण ३

। श्रीरामजी

श्रीसवाई जैसींघजी

॥ सिधि श्री म्हाराजाधीराज महाराजा जी श्री श्री श्री श्री श्री

चरंण कुंमलांनु सदा सेवग आग्याकारी वंदा षाँनजाद हुकंमी मयारांम कीसौरदास केनी पाव धौक मुजरो अरज पौंहचे जी अगरा समाचार श्री महाराजाजी का तेजप्रताप कर भला छै जी श्री महाराजा जी का घडी घडी पल पल का समाचार मया फरमावा को हुकंम व्हे जी अप्रँचा श्री महाराजा जी मौटा घणी छो जी अंनदाता छौ जी माईल छोजी षांन जाद श्री माहाराजा जी का दरबार का कदींम वंदा सुभचींतक छाँ जी श्री महाराजा जी सलांमति अणंद रांमने हुकंम पौहच्यो जो श्री महाराणा जी जा मतालिब हौइ सो वांका मुतसदनां स्यो वाकफ होय ऐक ईतफाक स्यो सरंजाम दीज्यो अर सैदाँ सौं वांकी त्रफ सो रद बदल करे नीसां पकी करलीजो श्री महाराजा जी सलामति वघनौर वगैरेहै परगनां की अरजी पर दसषत व्हे आया अब सनद तयार हौय छै जी अर जवाहर हाथी वागेरे ईनांमात सुदांमद माफक

पातीसाह् जी ईनांयत कीया जी और मतालिब सारा श्री जी का हुकंम माफक सरंज्यंम दीया छै जी वंदा व अणंद राम काँ दोन्युं सरकारां का ईक ईीतफाक स्यों करां छां जी सो अरज पौहचे जी अब भी सैदां स्यों रदबदल करी पकी नीसाँ कर लैस्याँ जी बंदा तीसा श्री जी का चाकर छै तीसा श्री माहाराजाजी का चाकर बंदा छां जी बंदा ने सरकार का सेवग चाकर जाण वा को हुकम व्हे जी सदा हजुर का परवानाँ मया फरमावा को हुकम हौय जी सं० १७७० रा आसोज सुदी ३ सुके

इस वकील रिपोर्ट में भाषायी नम्रता के साथ पद लालित्य का संयोग है। वकील (अरबी का शब्द है जिसका अर्थ अभिवक्ता है) योग्य व्यक्ति ही रखे जाते हैं, इसलिए "चरंण कुंमलांनु सदा सेवग अग्याकारी वंदा षांनजाद हुकंमी मयाराम कीसौरदास केनी पाव् धौक मुजरो अरज पोंहचे" वाक्य अर्थ-गौरव-युक्त है जिसमें नम्रता की पराकाष्ठा के साथ लालित्य की अभिव्यक्ति होती है। शब्दों के सही रूपों का अप्रयोग शिक्षा के प्रसार के अभाव का द्योतक है। वकील का नाम 'माया-राम किशोरदास' है जिसमें किशोरदास वकील के पिता का नाम रहा होगा। दोनों नामों ने बोलचाल की भाषा में अपने रूप बदले हैं। सन् १७१३ ई० की इस रपट द्वारा तत्कालीन व्यवस्था का एक सजीव चित्रांकन हुआ है। कठिनाई यह रही कि सब शब्द मिलाकर लिखे जाते रहे जिन्हें समझकर अलग-अलग करके लिखना कठिन कार्य रहा।

उदाहरण ४ जोधपुर

स्वस्ति श्री राज राजेंद्र महाराजाधिराज माहाराजा श्रीसवाई जैसिंघ जी जोग्य जोधपुर गढ माहदुरगष राज राजेश्वर माहाराजाधिराज महाराजा श्री अभे-सिंघ जी लिषावतँ जुहार अपधारजो जी अगरा ससाचार भला छै राज रा सदा भला चाहीजे राज बडा छै सदा हित मया राषी छै निज थासेष रषावजो जुदायगी कीणी वात री जाँनो मती अठै घोडा रजपुत छे सु राज रा कांमनुं छै तथा कागद राजरा आया समाचार पसीलवार वांचीया राज अै हम दावादरी तरफ रो जाव जो मोकु करषायो नि पातसाहजी री हजूर बुलावत रोह सबल हुकम मेलायो सु पोह-चीयो औ राज चाबि काम कीयो ही मार हजूर आवण री जसलाह बै सुझी मौज रंजां मकरने कुष करसाँ सु जैताराण रे मारग ही यने हजूर सु आवी......और अलँद जिये दीण तथा रजपुता दी सा राज लिषी यो थो अगसुंकुच करने तैतारण दिषी उसी रो पीलजाबतो कर ता आवांबं सँ १७८३ आसोज वद ११ मु नषतगढ जोधपुर

उदाहरण ५

॥ श्रीमदनमोहनोजयति ॥ करौली

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराज श्री सवाई जैसिंघ जू जोग्य लिषायतँ श्री

राजागोपालसिंघ जू केन्य मुजरा बंच्यां श्रीमहाराज के शुभ समाचार दिन प्रति घरी घरी के सदा आरोग्य चाहीयें तो परम आँनद होय् श्री महाराज की महेरवा़नगी सो ह्या के समाचार भले है श्री महाराज वडे है हम श्री महाराज के दरबार के हमेसाँ रजपूत है ह्यां हुकम ब्योहार श्री महाराजाधिराज जी कौ है अपरँच ग्वालिय्र के इजारे लेवे की अरज राजा अयामलजू कौ रावकिरपाराम व मिश्र मोजीराम को लिषी है सु'हजूर मालूम करैंगे महेरबानगी करि कागद समाँचार हमेसाँ फुरमाव्त रहीय्ँगौ मिती चैत्र वदि ७ संबँत १८००

पत्र में खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग सन् १७४३ ई० में हुआ है। सामान्य भाषा में वर्तमान में अप्रयुक्त शब्द 'इजारा' है जिसमें इ लिखने के लिए ह्रस्व इ की मात्रा लगाई जाती है। सामान्यत: उस समय ई पर भी दीर्घ मात्रा लगाई जाती रही है। इज़ार: शब्द अरबी (पुल्लिग शब्द) है जिसका अर्थ जोर/हक़ है।

पत्र से तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का दिग्दर्शन होता है कि ग्वालियर के राजाओं का जोर चलने लगा था।

उदाहरण ६

॥ श्रीमदनमोहनजी ॥ करौली

श्रीमदनमोहनजी

सिधि श्री महाराजा धिराज महाराजा श्री माधौसिंव जी जोग्य लिषितँ श्री राजागोपालसिंघजी केन्य मुजरा बंच्या ह्याँ के स्माँचार श्री जी की कृपा सो भले है आपुके शुभ स्माँचार दिन प्रति घरी घरी के सदा भले चाहिय् तौ हमको परम आँनदु होइ जी अप्रँच हम व़ा दरवार के हमेसा रजपूत है श्री महाराज वडे है हम सो कृपा महरवा़नगी राषियतु है तासो विसेष राषत रहीयेगो ह्यां हुकम सव तरेह श्री महाराज कौ है जुदायगी कोनहूं वाँत की न जानियेगी और हँयां सौ ठाकुर अँचलसिंघजी आपुके हजूर भेजे है सो ब्यौरो जाहिर करैंगे हम तो हमेसा थे याही घर की चाकरी करी है याही घर के चाकर है कागद स्माचाँर कृपा करि फरमाइ लिषवाहियैगो मिती माह सुदी ६ संवत १८०७

उदाहरण ७

इन्दौर

श्रीरामजी

सीध श्री महाराजाधिराज राजराजेंद्र सवाई भाइ जी श्रीमाधोसींघ जी जोग्य ली० श्रीषंडेराव होळकर केन श्री बंचणा अठां का समाचार भला छे राज का सदा भला चाहीजे अप्रँच राज का कागद आया हकीकत सब जानी वा श्री अनोपरामजी ने मुँजबानी समाचार कह्या सो मालूम हुवा नबाब जी का मीलाय की वागैरे के लेक

मशोरनुल जी ने षत में लिषी छै सौ जाणोला इनके लीषे माफक करणा होय सो कीजीयो हमेसाँ कागद में सारा समाचार लीषवा करोला अनोपराम जी ने श्रीतीरथ ....सु भलेरजी ने रांष्यो छे मीती चैत्र श्रुद्ध ६ संवत् १८०८

↑ अस्पष्ट

पत्र में "राज का कागद आया हकीकत सब जानी वा श्री अनोपराम जी ने मुँजबानी समाचार कह्या सो मालूम हुवा" वाक्य पुनः सन् १७५१ ई० में खड़ी-बोली के अन्तर्राज्य प्रयोग की पुष्टि करता है। भाषा का अन्तर्राज्य प्रयोग यह दर्शाता है कि वर्तमान राजभाषा हिन्दी लगभग २५०-३०० वर्ष पूर्व भी राजभाषा के रूप में प्रयुक्त हुई थी।

उदाहरण ८

ग्वालियर

॥ श्रीरांमजी ॥

सिधी श्री महाराजाधीराज राज राजेंद्र माहाराजा श्री माधवसिंव्हँ जी योग्य लिषतं राज श्री सुबेदार केदारराव व पटेल जी श्रीमाहदजीसींदे केन जै श्री जी की बंचाई ठांका समाचार श्री जी की कृपा सूं भला छे राज का सदा भला चाहीजे अप्रँच आगांसूं सवाई जी के वायहां के ईतफाक सूँ बहोत काम का सरंजाम हुये अब भी हरयेक काम को सरंजा उभय पक्ष के इंतफाक सूँ हुवा चाहीये ईस वास्ते केतेक समाचार राजश्री राजसींघ कूं वा पंडत मलार कूँ लिषे हैं उनके कहे सूं मालूम होयगें जीस बाते में पहले स्नेह की द्रढता होय अवोर दीन दीन स्नेह की वृद्धी होय सो करोगे मिति भादो सुध १४ सवँत १८२३

यह उदाहरण भी उदाहरण ७ की भाँति ही वर्तमान राजभाषा हिन्दी के अन्तर्राज्य प्रयोग की व्यापकता की पुष्टि करता है। सन् १७५०-६० ई० का प्रयोग अवश्य ही २००-२५० वर्ष पूर्व से प्रचलन में आया होगा, यह सहजता से कहा जा सकता है।

उदाहरण ९

इन्दौर

॥ श्रीरामजी ॥

सीध श्री महाराजा धीराज राज राजेंद्र महाराज श्री सवाई प्रीथ्वीसींह जी जोग्य श्रीराव तुकोजी होलकर केन श्री बँचजो अठाका समाचार भला छै राज का भला चाहीजै अप्रंच जो सीद्ध पासंकरजी इहाँ हमारे पास है इनका कुटुँब माधोपुर में हमारा व राज का श्रेहजाण रषतेहे सो इनका मजकुर श्रीमंटजी वा रावतजी कुँ लीषा है सो जाहर करेगें उस माफक इनकी गौर ख़बरदास्त करने में आवेगी जो

व्हो रह सुभचीतंन कीया करें कागद समाचार हमेंस लीषत रहोला मीती पोष्य श्रुध १ सँवत १८२६

उदाहरण १०

इन्दौर

सीध श्रीसरबवोपमा महाराज धिराज राज राजँद्र महाराज श्री सवाई प्रताप-सिंघ जी जोग्य श्री अहल्याबाई होल्कर केन बंचा अठा का समाचार भला छै राज का समाचार सदा भला चाहीजे अपरँची कागद समाचार आये दीन बोहोत हुवे सो या बात उठे के सनेह बोहारसे नीपट दुरहे अब हमेसे कागद समाचार लीषावते रहेगें और कैलास बासी सुबदार साहीब के वा बड़े महाराज बैकुठ गामी के जो कुछ हेत बोहार घरो पैका साथ उसी बमुजीब अब भी जानेगें जुदायगी कीसी तरह की नहीं ओर केतके समाचार पंडत नवल राय वा पंडत कवलाकर जुवानी जाहर करसी मीती मागसरबदी १ समत १८४४

उदाहरण ११

श्री रांम जी

नकल कोलनामा सीरकार कूपनी अगरेज बाहाद्र वा म्हाराणा भीवसिंह जी उदयपुर का तयार कीया मीसत्रच्यारलस साकलसमट कलप बाहाद्र नै त्रफ सीरकार कुपनी अगरेज बाहाद्र के सैं माफीक अषतयार दीये हूये गवरनर बाहाद्र के अर ठाकूर अजीत स्यंघ बाहाद्र कु म्हाराणा की त्रफ सैं अषतयारदीया

- पहली दफ़ै : दौसती दौनू के बीच मै अर दोसती दोनू सीरकारू की पीढी द्र (दर) पीढी मजबूत रहैगी दोस्त अर दूसमन दोनू त्रफ के येक करि स्मझना
- दफै दूसरी : नीगहैवानी राज की अर मुलक ऊदपुर की जीमा सीरकार अगरेज का है
- दफ तीसरी : सीरकार म्हाराणा उदपुर की ताबैदारी अर रीफाकति सीर-कार कुपनी अगरेज बाहाद्र कु हमेसै की जायगी और सीरकारूं सै वा सरदारूं सै सरूकार न रषैंगे
- दफ चोथि : सीरकार म्हाराणां उदपुर की बीना मरजी अर षबर सीरकार अगरेजी कै स्वाल जुवाब साथी कीसी कै सरदारूं अर सरकारूं सै नैं करगे मगर भेजना षत कीताबतका दोसताने साथी दोसतु के अर भाईन के जारी रहगा
- दफ पांचवी : सीरकार म्हाराणा साहब की षीलस साथ की सूं कै नै करैंगे अर जौ बर तकदीर साथी की सू के तकरार रूहबकार होय तोफसील ऊ सका

मोकुफ ऊप्र (ऊपर) तजबीज सरकार अगरेजी के होयगा

- दफः छठी : आँवदनी मूलक हाल उदपुर के सैं पाच बरस तक च्यार अंनी सालीना ऊस सै पीछै छै अंनी सालीना बाबति मामले के बीच सीरकार अगरेजी कै हमेसे पौहोचगा अर म्हाराणां साहीब के ताई बाबित मामले की कीसू ओर सै सरूकार नै रहगा जौ की ईदावा मामले का करै तो जुवाब देणां ऊसका जीमा सीरकार अगरेज का है
- दिफ सातवी : जो म्हाराणा साहब साथ जाहर करने ईस बात के मकानाति ताली कै राज उदैपुर कै राहागर वाजबी के से बीच तहतै ओरूं के आपे है अर दरषास उस की छूटावने की रषता है सीरकार अगरेज की म जब तलक तहैती-काति साफ मालूम नै होयगी तो करार ईस बात का न्हीं करता मगर दूरसती अर सर सबजी उस राज की मनजुर होवगी माफीक मकदूर के बीच हर मुकदमुं के तहैतीक वाजबी मालुम होवगी तो कोसीस बीच कांम कै करी जायगी बीच उस सूरत के जीते मकानाति सीरकार के बीच कवजै औरूं के नीकले है सो बीच तहैत म्हाराणां साहब के आवगे छै अंनी उसकी बी बीच सीरकार अगरेजी मै पोहोचगी
- दैफ आठवीं : फोज राज उदपुर की माफीक बुलावने के अर माफीक मकदूर के बीच सीरकार अगरेजी के हाजीर होवैगी
- दैफ नौवी : सीरकार म्हाराणां साहब की हमेस मालकी हकुमति मुलक अपने की रहैगी अर दषल अदालत अगरेज का वीच उसै राज के नै होवैगा
- दफ दसवी : कोलनांमा दस दफु का साथी मोहार दसकति मीसत्री च्यारलसि साफलसीमटकलप बाहाद्र के वा ठाकुर अजीत स्यंघ बाहाद्र के सबबींच मकान दीली के तयार हूवा बीच अर सै येक म्हीने के म्होर अर दसकत नबाब गवरनर बाहाद्र के अर म्हाराणां भीवं स्यंघ के दूरसत होकर कै दोनूं तरफ पोहोचैगे तारीषी तेरवी म्हीना जनवरी का सैन १८ सै १८

टिप्पणी : पत्र में सन् का प्रयोग हुआ है। यह सन् १८१८ है।

विवेचन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :—

(१) प्रशासनिक पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग सन् १७५० ई० के लगभग प्रौढ़ता प्राप्त कर चुका था। अतएव उससे २००-२५० वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १५०० ई० के लगभग हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भ होने का विचार करना सर्वथा युक्तियुक्त होगा।

(२) अरबी, फ़ारसी, संस्कृत के तत्सम और तद्भव, हिन्दी के खड़ीबोली,

राजस्थानी/मारवाड़ी, व्रजभाषा रूपों के प्रचलित शब्दों तथा मारवाड़ी, ढूंढाडी खड़ीबोली तथा व्रजभाषा वाक्य रचना को मिश्रित करके पत्रों के कलेवर को लिपिबद्ध करना सर्वथा स्वाभाविक था।

(३) अंतरप्रान्तीय अथवा अन्तर्राज्यीय पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग मान्य और सर्वथा प्रचलित था।

(४) हिन्दी भाषा की क्षमता, शब्दों को आत्मसात करने और निरन्तर प्रयुक्त होते रहने के कारण सतत् बढ़ती रही।

मोकुफ ऊप्र (ऊपर) तजवीज सरकार अगरेजी के होयगा।

- दफ: छठी : आँवदनी मूलक हाल उदपुर के सैं पाच बरस तक च्यार अंनी सालीना ऊस सै पीछै छै अंनी सालीना बाबति मामले के बीच सीरकार अगरेजी कै हमेसे पौहोचगा अर म्हाराणां साहीब के ताई बाबित मामले की कीसू ओर सै सरूकार नै रहगा जौ की ईदावा मामले का करै तो जुवाब देणां ऊसका जीमा सीरकार अगरेज का है
- दिफ सातवी : जो म्हाराणा साहब साथ जाहर करने ईस बात के मकानाति ताली कै राज उदैपुर कै राहागर वाजबी के से बीच तहतै ओरूं के आपे है अर दरषास उस की छूटावने की रषता है सीरकार अगरेज की म जब तलक तहैती-काति साफ मालूम नै होयगी तो करार ईस बात का न्हीं करता मगर दूरसती अर सर सबजी उस राज की मनजुर होवगी माफीक मकदूर के बीच हर मुकदमु के तहैतीक वाजबी मालुम होवगी तो कोसीस बीच कांम कै करी जायगी बीच उस सूरत के जीते मकानाति सीरकार के बीच कवजै औरूं के नीकले है सो बीच तहैत म्हाराणां साहब के आवगे छै अंनी उसकी बी बीच सीरकार अगरेजी मै पोहोचगी
- दैफ आठवीं : फोज राज उदपुर की माफीक बुलावने के अर माफीक मकदूर के बीच सीरकार अगरेजी के हाजीर होवैगी
- दैफ नौवी : सीरकार म्हाराणां साहब की हमेस मालकी हकुमति मुलक अपने की रहैगी अर दषल अदालत अगरेज का बीच उसै राज के नै होवैगा
- दफ दसवी : कोलनांमा दस दफु का साथी मोहार दसकति मीसत्री च्यारलसि साफलसीमटकलप बाहाद्र के वा ठाकुर अजीत स्यंघ बाहाद्र के सबबींच मकान दीली के तयार हूवा बीच अर सै येक म्हीने के म्होर अर दसकत नबाब गवरनर बाहाद्र के अर म्हाराणां भीवं स्यंघ के दूरसत होकर कै दोनूं तरफ पोहोचैगे तारीषी तेरवी म्हीना जनवरी का सैन १८ सै १८

टिप्पणी : पत्र में सन् का प्रयोग हुआ है। यह सन् १८१८ है।

विवेचन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :—

(१) प्रशासनिक पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग सन् १७५० ई० के लगभग प्रौढ़ता प्राप्त कर चुका था। अतएव उससे २००-२५० वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १५०० ई० के लगभग हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भ होने का विचार करना सर्वथा युक्तियुक्त होगा।

(२) अरबी, फ़ारसी, संस्कृत के तत्सम और तद्भव, हिन्दी के खड़ीबोली,

मोकुफ ऊप्र (ऊपर) तजबीज सरकार अगरेजी के होयगा

- दफ: छठी : आँवदनी मूलक हाल उदपुर के सैं पाच बरस तक च्यार अंनी सालीना ऊस सै पीछै छै अंनी सालीना बाबति मामले के बीच सीरकार अगरेजी कै हमेसे पौहोचगा अर म्हाराणां साहीब के ताई बाबित मामले की कीसू ओर सै सरूकार नै रहगा जौ की ईदावा मामले का करै तो जुवाब देणां ऊसका जीमा सीरकार अगरेज का है
- दिफ सातवी : जो म्हाराणा साहब साथ जाहर करने ईस बात के मकानाति ताली कै राज उदैपुर कै राहागर वाजबी के से बीच तहतै ओरूं के आपे है अर दरषास उस की छूटावने की रषता है सीरकार अगरेज की म जब तलक तहैती-काति साफ मालूम नै होयगी तो करार ईस बात का न्हीं करता मगर दूरसती अर सर सबजी उस राज की मनजुर होवूगी माफीक मकदूर के बीच हर मुकदमुं के तहैतीक वाजबी मालुम होवगी तो कोसीस बीच कांम कै करी जायगी बीच उस सूरत के जीते मकानाति सीरकार के बीच कवजैं औरूं के नीकले है सो बीच तहैत म्हाराणां साहब के आवगे छै अंनी उसकी बी बीच सीरकार अगरेजी मै पोहोचगी
- दैफ आठवीं : फोज राज उदपुर की माफीक बुलावने के अर माफीक मकदूर के बीच सीरकार अगरेजी के हाजीर होवैंगी
- दैफ नौवी : सीरकार म्हाराणां साहब की हमेस मालकी हकुमति मुलक अपने की रहैगी अर दषल अदालत अगरेज का बीच उसैं राज के नै होवैंगा
- दफ दसवी : कोलनांमा दस दफु का साथी मोहार दसकति मीसत्री च्यारलसि साफलसीमटकलप बाहाद्र के वा ठाकुर अजीत स्यंघ बाहाद्र के सबबींच मकान दीली के तयार हूवा बीच अर सै येक म्हीने के म्होर अर दसकत नबाब गवरनर बाहाद्र के अर म्हाराणां भीवं स्यंघ के दूरसत होकर कै दोनूं तरफ पोहोचैंगे तारीषी तेरवी म्हीना जनवरी का सैन १८ सै १८

टिप्पणी : पत्र में सन् का प्रयोग हुआ है। यह सन् १८१८ है।

विवेचन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :—

(१) प्रशासनिक पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग सन् १७५० ई० के लगभग प्रौढ़ता प्राप्त कर चुका था। अतएव उससे २००-२५० वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १५०० ई० के लगभग हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भ होने का विचार करना सर्वथा युक्तियुक्त होगा।

(२) अरबी, फ़ारसी, संस्कृत के तत्सम और तद्भव, हिन्दी के खड़ीबोली,

राजस्थानी/मारवाड़ी, व्रजभाषा रूपों के प्रचलित शब्दों तथा मारवाड़ी, ढूंढाडी खड़ीबोली तथा व्रजभाषा वाक्य रचना को मिश्रित करके पत्रों के कलेवर को लिपिबद्ध करना सर्वथा स्वाभाविक था।

(३) अंतरप्रान्तीय अथवा अन्तर्राज्यीय पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग मान्य और सर्वथा प्रचलित था।

(४) हिन्दी भाषा की क्षमता, शब्दों को आत्मसात करने और निरन्तर प्रयुक्त होते रहने के कारण सतत् बढ़ती रही।

मोकुफ ऊप्र (ऊपर) तजबीज सरकार अगरेजी के होयगा

- दफः छठी : आँव्दनी मूलक हाल उदपुर के सैं पाच बरस तक च्यार अंनी सालीना ऊस सै पीछै छै अंनी सालीना बाबति मामले के बीच सीरकार अगरेजी कै हमेसे पौहोचगा अर म्हाराणां साहीब के ताई बाबित मामले की कीसू ओर सै सरूकार नै रहगा जौ की ईदावा मामले का करै तो जुवाब देणां ऊसका जीमा सीरकार अगरेज का है
- दिफ सातवी : जो म्हाराणा साहब साथ जाहर करने ईस बात के मकानाति ताली कै राज उदैपुर कै राहागर वाजबी के से बीच तहतै ओरूं के आपे है अर दरषास उस की छूटावने की रषता है सीरकार अगरेज की म जब तलक तहैती-काति साफ मालूम नै होयगी तो करार ईस बात का न्हीं करता मगर दूरसती अर सर सबजी उस राज की मनजुर होवृगी माफीक मकदूर के बीच हर मुकदमु के तहैतीक वाजबी मालुम होवगी तो कोसीस बीच कांम कै करी जायगी बीच उस सूरत के जीते मकानाति सीरकार के बीच कवजै औरूं के नीकले है सो बीच तहैत म्हाराणां साहब के आवगे छै अंनी उसकी बी बीच सीरकार अगरेजी मै पोहोचगी
- दैफ आठवीं : फोज राज उदपुर की माफीक बुलावने के अर माफीक मकदूर के बीच सीरकार अगरेजी के हाजीर होवैंगी
- दैफ नौवी : सीरकार म्हाराणां साहब की हमेस मालकी हकुमति मुलक अपने की रहैगी अर दषल अदालत अगरेज का बीच उसै राज के नै होवैंगा
- दफ दसवी : कोलनांमा दस दफु का साथी मोहार दसकति मीसत्री च्यारलसि साफलसीमटकलप बाहाद्र के वा ठाकुर अजीत स्यंघ बाहाद्र के सबबींच मकान दीली के तयार हूवा बीच अर सै येक म्हीने के म्होर अर दसकत नबाब गवरनर बाहाद्र के अर म्हाराणां भीवं स्यंघ के दूरसत होकर कै दोनूं तरफ पोहोचैंगे तारीषी तेरवी म्हीना जनवरी का सैन १८ सै १८

टिप्पणी : पत्र में सन् का प्रयोग हुआ है। यह सन् १८१८ है।

विवेचन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :—

(१) प्रशासनिक पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग सन् १७५० ई० के लगभग प्रौढ़ता प्राप्त कर चुका था। अतएव उससे २००-२५० वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १५०० ई० के लगभग हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भ होने का विचार करना सर्वथा युक्तियुक्त होगा।

(२) अरबी, फ़ारसी, संस्कृत के तत्सम और तद्भव, हिन्दी के खड़ीबोली,

राजस्थानी/मारवाड़ी, व्रजभाषा रूपों के प्रचलित शब्दों तथा मारवाड़ी, ढूंढाडी खड़ीबोली तथा व्रजभाषा वाक्य रचना को मिश्रित करके पत्रों के कलेवर को लिपिबद्ध करना सर्वथा स्वाभाविक था।

(३) अंतरप्रान्तीय अथवा अन्तर्राज्यीय पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग मान्य और सर्वथा प्रचलित था।

(४) हिन्दी भाषा की क्षमता, शब्दों को आत्मसात करने और निरन्तर प्रयुक्त होते रहने के कारण सतत् बढ़ती रही।

मोकुफ ऊप्र (ऊपर) तजबीज सरकार अगरेजी के होयगा

- दफ: छठी : आँव़दनी मूलक हाल उदपुर के सैं पाच बरस तक च्यार अंनी सालीना ऊस सै पीछै छै अंनी सालीना बाबति मामले के बीच सीरकार अगरेजी कै हमेसे पौहोचगा अर म्हाराणां साहीब के ताई बाबित मामले की कीसू ओर सै सरूकार नै रहगा जौ की ईदाव़ा मामले का करै तो जुव़ाब देणां ऊसका जीमा सीरकार अगरेज का है
- दिफ सातवी : जो म्हाराणा साहब साथ जाहर करने ईस बात के मकानाति ताली कै राज उदैपुर कै राहागर व़ाजबी के से बीच तहतै ओरूं के आपे है अर दरषास उस की छूटाव़ने की रषता है सीरकार अगरेज की म जब तलक तहैती-काति साफ मालूम नै होयगी तो करार ईस बात का न्हीं करता मगर दूरसती अर सर सबजी उस राज की मनजुर होवृगी माफीक मकदूर के बीच हर मुकदमुं के तहैतीक वाजबी मालुम होवगी तो कोसीस बीच कांम कै करी जायगी बीच उस सूरत के जीते मकानाति सीरकार के बीच कबजै औरूं के नीकले है सो बीच तहैत म्हाराणां साहब के आव़गे छै अंनी उसकी बी बीच सीरकार अगरेजी मै पोहोचगी
- दैफ आठवीं : फोज राज उदपुर की माफीक बुलाव़ने के अर माफीक मकदूर के बीच सीरकार अगरेजी के हाजीर होव़ैगी
- दैफ नौवी : सीरकार म्हाराणां साहब की हमेस मालकी हकुमति मुलक अपने की रहैगी अर दषल अदालत अगरेज का बीच उसै राज के नै होव़ैगा
- दफ दसवी : कोलनांमा दस दफु का साथी मोहार दसकति मीसत्री च्यारलसि साफलसीमटकलप बाहाद्र के व़ा ठाकुर अजीत स्यंघ बाहाद्र के सबवींच मकान दीली के तयार हूव़ा बीच अर सैं येक म्हीने के म्होर अर दसकत नबाब गवरनर बाहाद्र के अर म्हाराणां भीवं स्यंघ के दूरसत होकर कै दोनूं तरफ पोहोचैगे तारीषी तेरवी म्हीना जनवरी का सैन १८ सै १८

टिप्पणी : पत्र में सन् का प्रयोग हुआ है। यह सन् १८१८ है।

विवेचन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :—

(१) प्रशासनिक पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग सन् १७५० ई० के लगभग प्रौढ़ता प्राप्त कर चुका था। अतएव उससे २००-२५० वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १५०० ई० के लगभग हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भ होने का विचार करना सर्वथा युक्तियुक्त होगा।

(२) अरबी, फ़ारसी, संस्कृत के तत्सम और तद्भव, हिन्दी के खड़ीबोली,

राजस्थानी/मारवाड़ी, व्रजभाषा रूपों के प्रचलित शब्दों तथा मारवाड़ी, ढूंढाडी खड़ीबोली तथा व्रजभाषा वाक्य रचना को मिश्रित करके पत्रों के कलेवर को लिपिबद्ध करना सर्वथा स्वाभाविक था।

(३) अंतरप्रान्तीय अथवा अन्तर्राज्यीय पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग मान्य और सर्वथा प्रचलित था।

(४) हिन्दी भाषा की क्षमता, शब्दों को आत्मसात करने और निरन्तर प्रयुक्त होते रहने के कारण सतत् बढ़ती रही।

अध्याय ९

प्रशासनिक शब्दावली—
वर्तमान प्रशासनिक शब्दों के संदर्भ में

हिन्दी की प्रशासनिक शब्दावली कई शताब्दियों से नए-नए शब्दों से भरती जा रही है। कई सौ वर्ष पूर्व से लगाकर वर्तमान काल में भी प्रचलित अनेक शब्दों का यहाँ विवेचन किया गया है। किन्तु अरबी/फ़ारसी के अनेक प्रचलित शब्द अब छन कर विलुप्त हो गए हैं। प्रशासनिक शब्दावली से इतर शब्दावली की समीक्षा न करके प्रशासनिक क्षेत्र तक ही समीक्षा को सीमित रखा गया है।

समाचार शब्द के कई लिखित रूप दृष्टिगोचर हुए हैं। यथा—संमाचार, समाच्यार, संमचार, स्माचार। किन्तु यह शब्द बहु-प्रचलित शब्द रहा है। राज शब्द भी अति लोकप्रिय रहा है। वसूल, करार, मारफत, काम आदि शब्द वर्तमान काल में भी प्रचलित तथा प्रयोग में आ रहे हैं।

उदाहरण सं० ३ में 'रुषसत हुये' वाक्य आया है। रुखसत तथा हुए दोनों शब्द वर्तमान काल में भी प्रचलन में हैं। गौर, लीषावता आदि भी गौर, लिखाते आदि रूपों में विद्यमान हैं। 'हुये' वर्तनी यद्यपि ठीक नहीं है तो भी आजकल भी मिलती है।

उदाहरण सं० ४ में आया 'फुरमाई' शब्द भी प्रचलित है। मौजा, परगना, वकील शब्द जो उदाहरण ५ में आए हैं, प्रचलन में हैं।

उदाहरण सं० ६ में प्रयुक्त दरबार, ब्योरो, चाकर, हुकम, व्योहार, आज्ञा, प्रमान, हकीकत शब्द न्यूनाधिक प्रचलित हैं।

ब्योरो=ब्यौरा, व्योहार=व्यवहार, प्रमान=प्रमाण।

उदाहरण सं० ७ में प्रयुक्त सरजाम (सरंजाम) शब्द तो अब प्रचलन में नहीं है किन्तु 'समाधान' शब्द वर्तमान काल में भी 'रिकंसिलिएशन' शब्द का हिन्दी पर्याय है।

उदाहरण सं० ८ में सन् १८२७ ई० में प्रयुक्त 'थाना' शब्द वर्तमान काल में भी पूर्ववत् प्रचलित है।

उदाहरण सं० ९ में प्रयुक्त कामकाज, राजकाज शब्द यथापूर्व प्रयुक्त हो रहे हैं।

आगे के सभी उदाहरणों में प्रयुक्त अरबी/फ़ारसी के तथा संस्कृत के तत्सम/तद्भव ऐसे शब्दों की सूची, जो वर्तमान काल में भी प्रचलित हैं और अर्थ संप्रेषण कर रहे हैं, यहाँ दी जा रही है।

अरबी/फ़ारसी	**संस्कृत (तत्सम/तद्भव)**	
वसूल	श्री	**अंग्रेजी**
करार (अनुबंध)	महाराजाधिराज	पल्टण (प्लाटून)
माफक (अनुसार)	चरण	
मारफत (द्वारा)	करिपा (कृपा)	
जाहर	समाचार	
ताकीद	घड़ी	
मजकुर	भला	
अमन	ठाकुर	
अमान	छै	
फुरमाई	हित	
हाल	राज	
षेरष्वाह	बात	
व्योरो (विवरण)	मत	
हुकम	सदा	
हकीकति	शुभचिंतक	
बंदगी	भांत (भाँति)	
सरजाम	परम	
अरज	अनंद	
जारी	व्योहार	
अलाहदगी	समाधान	
	सीरकार (सर्वकार)	

उदाहरण १

बीकानेर

श्री लक्ष्मीनाराइणजी

स्वस्ति श्री माहाराजाधिराज माहाराजा श्री जैसंघ जी चरण कंमलानु माहाराजाधिराज माहाराज श्री करणसिंह जी लिषतु जुहार अवधारिजो जी अठारा संमाचार श्री··········री करिपा करने राजरी·······(फटा)·········ने भला छै राज रा घडी घडी रा भला चाहीज्यै वड छै ठाकुर छै हित मया अवधारजै गधाकी

अध्याय ९

प्रशासनिक शब्दावली—
वर्तमान प्रशासनिक शब्दों के संदर्भ में

हिन्दी की प्रशासनिक शब्दावली कई शताब्दियों से नए-नए शब्दों से भरती जा रही है। कई सौ वर्ष पूर्व से लगाकर वर्तमान काल में भी प्रचलित अनेक शब्दों का यहाँ विवेचन किया गया है। किन्तु अरबी/फ़ारसी के अनेक प्रचलित शब्द अब छन कर विलुप्त हो गए हैं। प्रशासनिक शब्दावली से इतर शब्दावली की समीक्षा न करके प्रशासनिक क्षेत्र तक ही समीक्षा को सीमित रखा गया है।

समाचार शब्द के कई लिखित रूप दृष्टिगोचर हुए हैं। यथा—संमाचार, समाच्यार, संमचार, स्माचार। किन्तु यह शब्द बहु-प्रचलित शब्द रहा है। राज शब्द भी अति लोकप्रिय रहा है। वसूल, करार, मारफत, काम आदि शब्द वर्तमान काल में भी प्रचलित तथा प्रयोग में आ रहे हैं।

उदाहरण सं० ३ में 'रुषसत हुये' वाक्य आया है। रुखसत तथा हुए दोनों शब्द वर्तमान काल में भी प्रचलन में हैं। गौर, लीषावता आदि भी गौर, लिखाते आदि रूपों में विद्यमान हैं। 'हुये' वर्तनी यद्यपि ठीक नहीं है तो भी आजकल भी मिलती है।

उदाहरण सं० ४ में आया 'फुरमाई' शब्द भी प्रचलित है। मौजा, परगना, वकील शब्द जो उदाहरण ५ में आए हैं, प्रचलन में हैं।

उदाहरण सं० ६ में प्रयुक्त दरबार, ब्योरो, चाकर, हुकम, व्योहार, आज्ञा, प्रमान, हकीकत शब्द न्यूनाधिक प्रचलित हैं।

ब्योरो=ब्यौरा, व्योहार=व्यवहार, प्रमान=प्रमाण।

उदाहरण सं० ७ में प्रयुक्त सरजाम (सरंजाम) शब्द तो अब प्रचलन में नहीं है किन्तु 'समाधान' शब्द वर्तमान काल में भी 'रिकंसिलिएशन' शब्द का हिन्दी पर्याय है।

उदाहरण सं० ८ में सन् १८२७ ई० में प्रयुक्त 'थाना' शब्द वर्तमान काल में भी पूर्ववत् प्रचलित है।

उदाहरण सं० ९ में प्रयुक्त कामकाज, राजकाज शब्द यथापूर्व प्रयुक्त हो रहे हैं।

आगे के सभी उदाहरणों में प्रयुक्त अरबी/फ़ारसी के तथा संस्कृत के तत्सम/तद्भव ऐसे शब्दों की सूची, जो वर्तमान काल में भी प्रचलित हैं और अर्थ संप्रेषण कर रहे हैं, यहाँ दी जा रही है।

अरबी/फ़ारसी	**संस्कृत (तत्सम/तद्भव)**	**अंग्रेजी**
वसूल	श्री	
करार (अनुबंध)	महाराजाधिराज	पल्टण (प्लाटून)
माफक (अनुसार)	चरण	
मारफत (द्वारा)	करिपा (कृपा)	
जाहर	समाचार	
ताकीद	घड़ी	
मजकुर	भला	
अमन	ठाकुर	
अमान	छै	
फुरमाई	हित	
हाल	राज	
षेरष्वाह	बात	
व्योरो (विवरण)	मत	
हुकम	सदा	
हकीकति	शुभचिंतक	
बंदगी	भांत (भाँति)	
सरजाम	परम	
अरज	अनंद	
जारी	व्योहार	
अलाहदगी	समाधान	
	सीरकार (सर्वकार)	

उदाहरण १

बीकानेर

श्री लक्ष्मीनाराइणजी

स्वस्ति श्री माहाराजाधिराज माहाराजा श्री जैसंघ जी चरण कंमलानु माहाराजाधिराज माहाराज श्री करणसिंह जी लिषतु जुहार अवधारिजो जी अठारा संमाचार श्री··········री करिपा करने राजरी········(फटा)·········ने भला छै राज रा घडी घडी रा भला चाहीज्यै वड छै ठाकुर छै हित मया अवधारजै गधाकी

अधकी आध्की आवधारेजो अठे घड रजपूत छै सु राज रे कांमनु छै दोज्यगी केण बात री मत जंणों आपरची पेड माहै ढील होइी छै सुँ चदराउत रे डलेखा सते सु डलरी परठै भटां संकर रे कागलहोता मला महो से है मीयेर हन णूर गीयहवई सं० १७०२ चैत सुदी १२

उदाहरण २

इन्दौर

सिध श्री माहाराजाधीराज राजेंद्र श्री सवाई माधोसिंह जी जोग्य श्री मलार राव होलकर केन श्री··········वंचजो अठां का समाचार भला छे राज का सदा भला चाहीजे अप्रंच पंडत शंकराजी ने राज नषें रुपयां का वसुल वास्ते भेजा छे तो करार माफक यांकी मारफत रुपया भेजोला पंडत गणेश जी आगां सुं छे ही या दोन्या की सामलात काम होयेला मीती फागुण बदी १० संमत १८०७

उदाहरण ३

इन्दौर

श्री राम जी

सिध जी महाराजाधिराज महाराज श्री सवाइ माधव सिंह जी जोग्य श्री मल्लार राव होल्कर के बांचजो अठां का समाचार श्री जी के कृपा सुं भला छे राज का सदा भला चाहीजे अपरंच ब्रह्म मूरत राव हरसुख रुषसत हुये है सो राज कनारे पोंहच सारा समाचार जाहर करेंगे मसारइले कदीम से ह्यां का वा राज का शुभ चिंतक छे राज हर भांत इनकी गौर राषोला हमेस कागद समाचार लीषावता रहोला मीती अगहन बदी १० समत् १८२१

उदाहरण ४

श्रीगजानना ।।

सिधि श्री महाराज धिराज महाराज राज राजिंद्र श्री सवाइी·····फटा····· घजी ऐतेराज श्री पंडित नारोशंकरजी के आसीर्वा·······फटा········आपुके सुभ स्माचार सदा सर्वदा भले चाहिजे तो हमको परम अनंद होई आपुंकी मेहरवानगी सो ईहा के स्माचार भलै है आगोराज जी ठक गोपाल जी श्री मथूरा जी जात है ताकों आपु अपने कामदारन को तांकीद कीवो सु पाठक मजकूर के साथ आदमी रहवर साथ दैके उँहां लौ पौहंचाई के ईनिके पौहचे की रसीद ले आवे जानै ये अमन अमान सौ पोहोचइ सो ताकीद फुरमाइी दीवो ईहा सर्व तरह कम आपु········· फटा·····काहुता व कौ तफावत नाही है हम लाईक कामकाज होई सु लिषतरोइवी मीती श्रावण शुध्व ५ पंचमी गुरवासर सवँत १८१४ मुकामनजीक काळवाड़

उदाहरण ५

॥ श्रीरामजी ॥ इन्दौर

सिधि श्री माहाराजाधिराज राज राजेंद्र महाराज श्रीसवाई प्रताप सींह जी जोग्य श्री कासीराम होलकर केन्य बांचजो जी इहां का समाचार भला है राज का सुष समाचार सदा भला चाहीजो तो परम आनदं होवे अपरंच मौजे गोवर्धनपुरो परगणा ठोंकयो गांव कील छबीलाराम इनके तरफ है हाल मालुम हुवा जो उस……फटा…… वंसुराज के आडी सुषेचल होती है जीस वासते यो कागद लीषबा में आयो है जो वकील मजकुर तरेफेन के षेरेष्वाहा और आपने काम पर मुस्तअंद जी सुँया बात आजोग्य कदाक कीसी का गैर समजायस सु हुंवा होय तो ताकीद मुतस-दीयां सु होय सुदामत माफक मो० मजकुर वैषलस चला जावे सो होने में ओवेलो हर हमेस कागद समाचार लीषा वोलो मीती आसाड बदी १ समंत १८५६

उदाहरण ६

श्रीगोपालजी ग्वालियर

सिद्धि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई जगतसिंह जी देवजोग्य लिषाइतं महाराज राजा जी श्री मानिकपाल जी बहादुर यदकुल चंद्रभाल को मुजरा बंच्या ह्या के समाचा श्री जी की कृपा सो भले हैं आपके सुभ समचार सदैवे भले चाही जे तो परम आनंद होई अप्रंचि दस घोड़ा रजपूत है सो दरबार के चाकर है कागद आयो व्योरो जाने लिषी ही के समायरन राषीये सोमयय में सुर की चाहे सो करैला हुकम व्योहार र आज्ञा प्रमान है और हकीकति श्रीमिश्र दुलीचंद अरज करेंगे कागद समाचार लिषाये रहियेगे मिति कातिक बदी ११ सवंत १८६१

उदाहरण ७

श्री जलंधरनाथ जी

राव चत्रभुज सुषलाल कस्यैसुप्रसाद बांचजो तथा थारी तरफरा समाचार कील्याणमल मालुम कीया सरे थारो बंदगी रोईरा दोतो श्री बडे माहाराज थकां सुरो मालुम है अबार पलटण तगापत सराजाम मेलणरी अरज कराई सो ठीक आठतो सरजाम लो कीलातो बता है ज्युं रह जासो समाधान आछी त्रह अठे आया रहसी बलै समाचार कील्याणमल लीषसी संबत १८६२ रा माह बुदी १२

राव चतुर भुज कस्य अगला

नं० ४

मुद्रा

राजराजेश्वर
माहाराजाधिराज महाराज
श्री मान संघ
जोधपुर

उदाहरण ८

करौली

श्रीगोपालजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्रीसवाई प्रतापसिंह जी देव जोग्य लिषाइतं महाराजा जी श्रीमानिकपाल जी बहादुर यदककुलचंद्र भला को मुजरा बंचया ह्या के समाचार श्री जी की कृपा सौ भले है आपुके समाचार सदैव भले चाहिजे तो परम आनंद होइ अप्रंचि दस घोडा······फटा ···· दरबार के चाकर है हित स्नेह राषियत है तासे विसेसरवाते रहियेगो······फटा······माचार जाने जुबानी ब्यौरो सवाइी राम ने कलों श्री हजूर यादीने सो हम तो····· फटा ······फरीफाती है वहां नु आवेगे तो कहा आवेगें आग्या माफिक हाजिर है ताफो अवसाध फो······फटा······दीन है सोपार के गांव नि में थाने है तिनको दस बीस दिन को काम है सो सब रगढ जाइाव निगावनि में सो थाने उठाइ पाछै सब जमे यति साथ लेके सिताबही हजूर आइहाजिर होइगें सबंतरह हुकम आपको है कोई बात तफरीत का न जानि कागद समाचार···············लिषायेरहीयेगे मिती काती बदी ३ संबत १८८४

उदाहरण ९

जोधपुर

श्री परमेश्वरजी सत छै

श्री राधा कृष्न जी

स्विस्ति श्री राज राजेंद्र महाराजाधिराज महाराजा श्रीसवाई प्रिथी सिंघ जी जोग्य राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री विजैसिघं जी लिषावतं जुहार वाचजो अठारा समाचार···············री कृपा सु भला है राज रा सदा भला चाहीजे राज वडा होअठा ऊठारा व्योहार मैं किंणी वात री जुदागी न है अठे घोडा रजपूत है सो राज रा कांम नूं है अठीरी तरफ काम काज हुवे सो लिषाया कर··· ···फटा······अप्रंच कागद राज रो आयो ने समाचार भटजी ने वोहरा राजा षुस्यालीराम रा लिषीया सुं जाहर हुवा सो अठा सुं इंणा नूं ने ऊपाधीया मँनरूप नूं समाचार लिषाया है सो जाहर करसी ने राज काज रै कांम मैं सारी ही रीत विशेष सावचेती राषणी। कागद समाचार सदा लिषाया करावसी। संबंत १९३२ रा आषाढ़ बदी ४

कुछ पूर्वोदाहरणों (अध्याय ३ तथा ४ आदि) में वर्णित शब्दों का विवेचन उनके वर्तमान पर्यायों के संदर्भ में किया गया है।

अध्याय ३

तपसीलवार— अरबी के तफ़सील शब्द का अर्थ विस्तार, विवरण है, शब्द यत्रतत्र वर्तमान में भी प्रचलित है किन्तु कम। अब प्रशासन में विस्तृत शब्द चलने लगा है।

मुफसल— अरबी का मुफ़स्सल शब्द है जिसका अर्थ सविस्तार है। शब्द प्रशासन में अब प्रचलित नहीं है।

बंदवस्त— फ़ारसी का बंदोबस्त शब्द है जिसका अर्थ प्रबंध, व्यवस्था है। शब्द समय के साथ लुप्त होने लगा है।

कौलकरार— अरबी क़ौल शब्द का अर्थ इक़ार, वादा से है। वर्तमान में ग्रामीण प्रयोग मात्र रह गया है।

ईरादा— अरबी इरादः शब्द का अर्थ संकल्प, निश्चय से है। शब्द का अर्थ कुछ हल्का हो गया है। अब यह विचार के अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है।

ऐकता— एकता शब्द वर्तमान में बहु प्रचलित है।

अध्याय ३

ईजारे— अरबी के इज़ार: शब्द से बना है जिसका अर्थ ठेका है। शब्द अब लुप्तप्राय है।

टकसाल— टंकशाला शब्द का तद्भव रूप है।

राजीनामां— अरबी, फ़ारसी का राज़ीनामः शब्द है जिसका अर्थ संधिपत्र है। शब्द न्यूनाधिक प्रचलित है।

मुकाम— अरबी में मुक़ाम शब्द का अर्थ देर तक ठहराव है। किन्तु यह शब्द स्थान के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है।

दफ्तर— फारसी में दफ़्तर शब्द है जिसका अर्थ कार्यालय है। शब्द प्रचलित है।

नकल— अरबी के नक़ल शब्द से तद्भव है। प्रचलित है।

फरद— फ़ारसी में फ़र्द शब्द का अर्थ हिसाब का रजिस्टर या हुक्म-नामा है। अब प्रचलित नहीं है।

दसकती— फ़ारसी के दस्तख़त शब्द का विकृत रूप है।

अध्याय ३

तहैतीक— अरबी तहकीक से बना है जिसका अर्थ जाँच-पड़ताल है।

नालस— फ़ारसी के नालिश शब्द से बना है जिसका अर्थ दावा या वाद है।

मुनास्ब— अरबी मुनासिब शब्द से बना है जिसका अर्थ 'उचित' है। प्रशासन में अब प्रयुक्त नहीं होता।

ऊजर— अरबी केउ ज्र शब्द से तद्भव है जिसका अर्थ आपत्ति, एतराज़ है। कम ही चलता है।

अध्याय ३

ईसतमरारी— अरबी में इस्तिम्रारी शब्द है जिसका अर्थ स्थायी है। अब प्रचलित नहीं है।

सापर (सफ़र)—यात्रा के लिए सफ़र शब्द प्रचलित है।

षरच— व्यय के लिए खर्च/खरच शब्द प्रचलित है।

दसतकार— दस्तकार शब्द फ़ारसी का है जिसका अर्थ शिल्पी है। प्रचलित है।

पेसकार— न्यायालयों में कागज-पत्र प्रस्तुत करनेवाले को पेशकार कहा जाता है। अब भी प्रचलित है।

दीवानी— फ़ारसी में वह अदालत जहाँ रुपये के लेन-देन तथा जायदाद के मुकदमे ही होते हैं। अब भी प्रचलित है।

मुतालव — अरबी मुतालबः शब्द का अर्थ तलब करना, माँग, तकाज़ा है। प्रचलित नहीं।

सनद— अरबी शब्द का अर्थ प्रमाण, प्रमाण-पत्र है। अब भी चलता है।

कपतान— अंग्रेजी के कैप्टेन शब्द का तद्भव रूप है।

दषल— अरबी दख़्ल का अर्थ कब्जा, हस्तक्षेप है। प्रचलित है।

बेसी— अधिक के अर्थ में प्रचलित है।

कारबार— फ़ारसी कार शब्द का अर्थ उद्यम, पेशा है। बार संभवतः शब्द व्यवहार का अपभ्रंश रूप है। प्रचलित है।

बील फैल, ये शब्द देशज हैं तथा संकर रूप है।
(बिना फेल हुए)

अध्याय ३

फीसाद— अरबी फ़साद शब्द का अर्थ दंगा, उपद्रव है। प्रचलित है।

शासन— शब्द प्रचलित है।

दरबार— फ़ारसी शब्द है जिसका अर्थ राजसभा है। प्रचलित है।

कूंच— फ़ारसी कूच शब्द का अर्थ प्रस्थान है। प्रचलित है।

उपाय— शब्द प्रचलित है।

किंचित मात्र— शब्द तद्भव है तथा प्रचलित है।
षाली— अरबी ख़ाली शब्द का अर्थ रिक्त है, प्रचलित है।
आमल— अरबी अमल शब्द का अर्थ कार्य, कर्म है।

अध्याय ३

अंतर— अन्तर शब्द तत्सम है तथा प्रचलित है।
हासल— अरबी हासिल शब्द का अर्थ प्राप्त है। प्रचलित है।
एहवाल— अरबी अहवाल का अर्थ घटनाएँ, समाचार आदि है, अब कम प्रचलित है।

अध्याय ४ प्रेषक, प्रापक— ये शब्द कई सौ वर्ष पूर्व प्रयुक्त हुए हैं किंतु उसी रूप में वर्तमान काल में बहु-प्रचलित हैं।

वर्तमान स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत की विभिन्न भाषाओं में संस्कृत शब्दों के वाहुल्य के कारण राजभाषा हिन्दी में भी संस्कृत तत्सम शब्दों का बाहुल्य होता जा रहा है। अब प्रशासन में प्रचलित कुछ शब्द निम्नलिखित हैं :—

अनुबंध
स्थायी
प्रबंध
व्यवस्था
प्रोन्नति
पद
पदनाम
नियुक्ति
स्थानांतरण
तैनाती/पदस्थता
विभाग
स्थान
रिक्ति
भेदभाव
सेना
सैनिक
कार्यालय
अफसर (सेना में, अन्यत्र अधिकारी)
समझौता
सहमति

अनुपालन
पालन
आदेश
विज्ञप्ति
विज्ञापन
ज्ञापन
परिपत्र
प्रारूप
राजपत्र (गज़ट)
पत्र
पत्राचार (पत्र-व्यवहार)
प्ररूप
विलेख
प्रलेख
श्रुतलेख
पट्टा
भूखण्ड
फर्श तल (फ्लोर लेवल)
चर्चा
वार्तालाप
समाचार
जनता
लोकहित
अधिकतम
न्यूनतम

आज भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन एवं उसके नियोजित विकास का प्रयत्न किया जा रहा है तथा अंग्रेजी शासन के परिणामस्वरूप जो विधि व्यवस्था प्राप्त हुई है उसमें शब्दों का विशेष महत्त्व है तथा उनमें सूक्ष्म अन्तर किए जाने के कारण उनकी संख्या भी बहुत है। अंग्रेजी पद्धति की विधि (लॉ) के लिए हिन्दी का प्रयोग होने के कारण हिन्दी में भी वह सब सूक्ष्मता के साथ व्यवहार करने की शक्ति अपेक्षित है। अतीत काल में यह सब नहीं होता था।

अतः भाषा का प्रयोग वैधानिक ढंग से न होकर कामचलाऊ ढंग से होता था। इसी कारण वह इतनी नियमबद्ध एवं एकरूप नहीं है तथा स्थान वैचित्र्य एवं व्यक्ति वैचित्र्य मिलता है।

अध्याय ११

प्रलेख

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

श्रीमदनगोपालजू

।।॰।। सिधिश्रीमहाराजाधिराजमहाराजाश्रीसवा
ईजैसीघजूजोगिलिषाइतंश्रीराजाश्रीकुंवरपा
लजूकोमुजरावचनैंअठाकेसमैच्याश्री श्री
कृपातेंभलेहैंश्रीमहाराजकेसुषसमैचारदिनप्रतिष
सीधरांकेसदांभलेचाहीयेंतोहमकोंप्रमसंतोषहोहि
कापैचिश्रीमहाराजकोआगरहआयोसाहषापार
चौहांननिवावतिलिषीहीसुचौहाननिकेतालके
मउघिरघोवगैरहगांवच्यारिहेतेतोतवहीषाली
करादीनेंतिनिमेंजैतसीघहमीरघांकोगढीकरि
वैठेहैंऔरअवजेजादोंनिकेतालकेगांवहैंमहारा
जानामसीघजूवामहाराजाविसनसीघजूकेअम
लतेजुटकाहमसांदेआएहैंताकोहाजिरहैंआगि
लीसनदिनिकेदस्तूरसोईहमश्रीमहाराजसोंहदू
रकारजकरिआएहैंऔरश्रीमहाराजहूनेंहुकम
कीनोंहोसुटकाघोहरितरहैतालुकदारहाजिरहैं
हतातोहुकमव्योहारश्रीमहाराजहीकोहैमितीआ
गैहैनसुदि संवत १७७२

खरीते जात हिन्दी रियासत करोली संवत् १७६६-१६०३, बंडल नं० २, प्रलेख सं० २/८

||सिधिश्रीमहाराजाधिराजमहाराजाजीश्रीरांमसिंघजी
देवचरणकमलांनवंदाम्रांनाजादध्यासीरांमविसनदास
केन्यचरणाधोकऔधारिज्यौजीअठाकासमाचारश्री
महाराजांजीकाप्रतापथैभलाछैजीश्रीमहाराजाजीका
घडीघडीकासदाआरोगचाहिजेजीअप्रंचश्रीमहारा
जाजीसलामतिश्रवांजौकरारतो२० मा०महौरंमसनाव्द१
कौइनोयातहुवोसलामकरिमांथैचढायलीयौजीहु
कमआयोजोअवारिजान्यौंताव्याहबरखुरदारचिम
नांकुवरकाहजुरिनपहुंच्यासोअवांनांपहुंच्यामाधि
कदसतरजोमरघांनांमैंलियागयाहैवआबांवतिगां
वघालसाकृावालांतिगांवजागीरदारांमुकररहुवाअर
उनमधेकेतालागांगांइतहालवसुलहुवाअरकेतावाकी

हिन्दी वकील रिपोर्ट—महाराजा साहब (जयपुर), वंडल नं० २, प्रलेख सं० २०८
२०१-२६०

॥सीधश्रीमहाराजाधिराजाश्रीमहाराजा
॥श्रीमाधोसींगजीजोग्यलीः षंडेरावहोळक
॥रकेनश्री बचणाअठाकासमाचारभ
॥लाछेराजकासदासर्वदाभलाचाहिजेअ
॥प्रंचमोजेचारवामोजेसोपवामोजेपिपकु
॥वामोजेबावडीयेचारोगांवराजनेसरकार
॥मेंदीथेउसकेवंदोबस्तीसबबपंडतश्रीरीण
॥कोडश्रीकुंजेजाछेलीनोगांवकीरयतपज
॥मीदारचोधरीकानुगोइनसेराजकुवेमोजे
॥बावडीकेगढीमेमहासींघकाठाणाहेसोग
॥ढीवालानवदीगरकरताहेगढीषालीकरदे
॥तानहीराजकाकागदथासोइनुनेमानानही
॥ऐसीहकीकतपंडतजीनेहमारेताईलीषीजी
॥इसवास्तेराजकुयेपत्रलीषाछेसोमहासींघकु
॥ताकीदकरोगेओरगढीषालीकरदेवसोबात
॥हायलोभलानहीतोहमारीफोजउसमुलक
॥मेपधरादीनमहीनामेआवेगीगढीवालेका
॥शीरकाटकरजोरावारीसेगढीसरकरेंगेत
॥वराजइनकुंवचावणाकीबालबोलोगेनासुने
॥नहीओरइजारदारोनेचारोगांवकेरस्तेबंदकी
॥यीहेइनकुंताकीदकरकररस्तेबंदीसुदामतचले

जयपुर रिकार्ड—खरीते जात इन्दौर, वंडल नं० १, प्रलेख सं० ३/४

॥ श्रीशिवोजयति ॥

॥स्वस्ति श्रीमन्निखिलवृंदारकवृंदवंदितपादारविंदोपा
पास्य र११।१।५।१।८ न प्या।१।५ ।समस्तपुरुषार्थे
षु अप्रतिम चतुरतया माभिराम सौजन्यसिंधु दुष्ट शि
क्षण शिष्टरक्षण दक्षेषु निजकुलावतंसेषु राजराजेंद्र
श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमन्माधवसिंहेषु॥ ॥श्री रघुना
थ बाजीराय विहिताशीराशयः समुल्लसंतु विशेषस्तु आ
पने दीवान जी राजा हरगोविंदजी के साथ तो फांजर बात था
जे आरत्नां तथा फवज पोशाक असवार भेजे सो आया आ
छिं तरा से चाकरी करि माने बहुत राजावंत राख्यो मीति जे
ठ वदि १३ संमत १८०९ मुकाम कुंभेर

जयपुर रिकार्ड—खरीते जात इन्दौर, बंडल नं० १, प्रलेख सं० ३/६२

॥ श्रीरामजी ॥

॥श्रीमाहाराजधीराजश्रीराजराजेंद्रश्रीराजा
॥सवाईमाधवसींघजीजोग्येराजश्रीसुबेदारश्री
॥माधवरावजीसींदेकेनश्री बांचजोअठंकोसमा
॥चारभलाछेराजरासदासर्वदाभलाचाहीजेअ
॥अंबहालकोमामलेतबाबतबाकीरहीछेसोकोताए
॥दोतोसुकीगमांछेहंनोजरूपीयानेजोनहींहेसोअ
॥छीबातकरीनहींहालबांचतेपत्रहीसताबबंमोजीबरूपै
॥यासबहींआपासनेजदेनाराजरोकांमदारांस्योंता
॥कीदीकरीनेसताबहीरूपैयानेजदेणोढीलजीदेरकरनीसो
॥सतीआगेहींसंनेहचाल्योआयोछेसोकीरपाकर
॥नाराजकोंरखावछेयांबातमोहंमनीसंतोषछे
॥मीतीफागणबदी ९ समत १८२०

खरीते जात हिन्दी—ग्वालियर, संवत् १८०७ से २००० तक, प्रलेख सं० १३०

॥ श्रीरामजी ॥

॥सिधश्री महाराजाधिराज महाराजश्री सवा
ई माधव सिंहजी जोग्य श्री मल्हारराव होलक
र के श्री वांचज्यो अठांका समाचार श्री जी के
कृपा सुं भला छे राज का सदा भला चाहीजे अप
रं च मल्ल भरतराव हर सुख रूप सत हुये हे सो
राज कना रे पोंहच सारा समाचार जाहर के
रेंगे मसार इ लेक दी मेस ल्लां का वा राज का
भुजा चैंन के छे राज हर भांत इन की गोर राषो
ला हमेस कागद समाचार लीषावता रहो
ला मीती अगहन वदी १० समत १८२१

जयपुर रिकार्ड—खरीते जात इन्दौर, बंडल नं० १, प्रलेख सं० ३/८८

॥ श्रीरामजी ॥

॥ सिधि श्री सरव उपमा महाराजाधिराज राजे
श्री महाराज श्री सवाई प्रतापसिंघजी जोग्य श्री अहि-
ल्याबाई होलकर केन बांचजो इहां के समाचा-
र भले है राज के सदा भले चाहीजे इहां जो व्योहार राज
को है कैलासवासी सूबेदार साहब के और राज के घराणे
के ठहरे जो कुछ हे इकलास चला आया है उस [illegible]
[illegible] नहीं है सनातन व्योहार पर नजर
राख के कागद समाचार हमेसा लिखावते रहोगे और स-
माचार राज श्री राजाराम रणछोड़ मालुम करसी मि-
ती भाद्रपद बुदि २ संमत १८[illegible]

जयपुर रिकार्ड—खरीते जात इन्दौर, बंडल नं० १, प्रलेख सं० ३/१९७

स्वस्तिश्रीमहाराजाधिराजमहाराजाश्रीसवाईजगतसिंघजीदेव

जोग्यलिषायतंमहाराजराजाजीश्रीहरिवषसपालजीबहादुर

यदुकुलचंद्रजादूंपौमुजरावंचावस्याकेसमाचारभी

जीकीक्रपासोंजाणजोहे आपकेसुजसमाचारसदैवजणजोचाहिजेतोपरमश्रौ

नंदहोइअप्रंचिदसथोडारजपूतहेसोदरबारकेचाकरहेआगादसमाचारआये

छेनेदिनजयेसोलिषावतरहीयेगोंजोरसमाचाराववतरमुजजीअरजकरे

गेलासर्वप्रकारदुरुस्तजोहारजागापप्रमानहेकोईवातअरिताफावतनजानिप्रौ

इसमाचारलिषावतरहीयेगोंमितीफागुणसुदी८संवत१८६५

खरीते जात हिन्दी रियासत करोली, संवत् १७६६-१९०३, बंडल नं० २, प्रलेख सं० २/३१२

श्रीलक्ष्मीनारायणजी

||स्वस्तिश्री राजराजेंद्र महाराजाधिराज महाराजाश्रीस
वाईजगतसिंघजीजोग्य राजराजेश्वर महाराजाधिरा
जमहाराजाश्रीसूरतसिंहजी लिखावतं जुहार बाचजो
अठा रा समाचार श्री।। जीरी मुनिजर सु भला छै रा
जरा सदा भला चाहीजै अप्रंच राज बडा छो म्हारै घणीबा
त छै हेतव्यार रा बो छो तिण सु विसेस रखावसो अरै उठै
रो एक बहवार करजो तिण सो अरै पांच घोडा रजपूत छै
सु राजरै काम नै छै त्याका गद राजरो या दितो मैन आ
यो सु दराबसी वीहाव रा समाचार देरा सरी पुरसोत
मदास दरबारी सवाई साह जाहर कीया सु खुसी हुई
उजाजाबसमाचार मु [illegible] बीरे नु फुरमाया छै सु जाहर हु
सी संमत १८१० मिती काती सुद ८ मुकाम [illegible]

जयपुर—खरीते जात बीकानेर, बंडल नं० ८, संवत् १८०७ से,
प्रलेख सं० ८/१६६

॥ स्वस्ति श्री राजराजेंद्र महाराजाधिराज मह
राजा श्री सुवाई जैसिंघजी जोग्य राजराजेश्व
र महाराजाधिराज महाराजा श्री सुरतसिंह
जी लिखावतु जुहार बाचजो अठा रा समा
चार श्री   जीरी सुनिजर सु भला छै रा
ज रा सदा भला चाहीज्यै राज वडा मोहां रै
थू(णी) कात छै सदा हेत वुहार रा छो जे सु वि
ग र मुख सो अठा ड गारो ऐक बुहार जा ल स्त्रे
ठ पाव घोडा रजपुत छै सु राज रै का मनु छै श्र
बसी कुर रोगा नार सर रो ससावतो वी गाड अ
यो ते बाबात राज लिखो सु सेखावतां ने गांव
पटो था सु खालसे कर लीया अठै सु सीख दे
दीवी ते री आगो ही लिखी छै सो कुरवारी र
अठै रै देस रै गावै रो नी गाडकर छै सु उरे स
ऊ क्रा रा रो माल पसमी नो उतार लीयो तेबा
बत आगै ही लीखो छै सु माल सा ऊ करो ने द
रायदस्त आगै सु मने करा सो पु जाजाव सु
ले साह ऊ कम सूद ने फुरमाया सु यारी अरजी
सु नाहर ऊ सीस बता १८०५ मिती चैत सुद ५ मु
पा मी बीकानेर कोट दाखल

जयपुर—खरीते जात बीकानेर, वंडल नं० ८, संवत् १८०८ से,
प्रलेख सं० ८/२२४

राजराजेन्द्र महाराजाधिराज महाराज श्री सवाईमानसिंह जी
जोगजैपुर

सिद्श्रीराजराजेन्द्र महाराजाधिराज महाराजश्रीसवाई
मानसिंह जी जोग उमद हराज हाय बुलन्द मकानम
हाराजाधिराज महाराज श्री यज्ञनारायणसिंह जी लि-
खावतू जुहार बाचज्यो अठाका समाचार श्री जी-
के प्रताप कर भला छै महाराज का सदा भला चाहीजे
आप म्हांके घणी बात छो आप उपरान्त कांई बात
न छै सो कागज में कगतक मनुहार लिखा अठा उठा
को एक ब्यवहार छै अपरंच चिरंजीवनी बाई बिट्ठल
कुवरि को विवाह चेत बद २ मुताबिक तारीख ८
मार्च सन् हाल गुरुवारा सावा को है अर बरात डूं-
गरपुर सूं आवसी सो आप सपरिवार सूं पधारस्यो आ-
पका पधारबा सूं प्रस्ताव की शोभा है और पधारबा वा-
स्तै ठाकुर गोपालसिंह जी व मोहतोणोत गोबिन्दसिंह ने -
भेजा या है सो हाजिर होसी- संबत १९८४ फागुण सुदी

खरीते जात हिन्दी किशनगढ़, बंडल नं० ११, संवत् १७६५ से २००४ वि०,
(संख्या ७४)

राज राजेन्द्र महाराज धिराज महाराज श्री साइ मानसिंहजी जोग्य

स्वस्ति श्री राज राजेन्द्र महाराज धिराज महाराज श्री सवाई

मानसिंह जी जोग्य महाराजाधिराज राज राजेश्वर नरेन्द्र

शि[illegible]फटिनेन्ट जनर[illegible] गंगासिंह जी बहादुर

जी.सी.[illegible], जी.सी.आइ.ई.[illegible], जी.बी.ई., के.सी.बी.,

ए.डी.सी. एल एल. डी., लिखावतू जुहार वान्चजो अगरा सम।

चार श्री जीरी सु नजर सु लला छे राज रा सदा भला

[illegible] जे राज वडा[illegible] याणी वात छो[illegible] जुहार राखो छो

[illegible] विसेस रया[illegible] प्रबु खरीतो राज[illegible] तमे लिख्यो

वेसाख वदि ४ ने विवाह छे सो राज पधारोला सु निहायत

खुसी हासिल हुई और म्हारो पधारणो जोधपुर हो गयो सम्वत

१९८९ मिती असाउ वदि १ मुकाम पायतखत श्री बीकानेर कोर दाखल

जयपुर—खरीते जात बीकानेर, बंडल नं० ८, संवत् १८०७ से;
प्रलेख सं० ८/२४०

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी तथा संस्कृत ग्रन्थ सूची

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास —डॉ० नगेन्द्र
प्रथम संस्करण १९७३ ई०

२. राजस्थान के प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग—सन् १८५७ से सन् १९७४ ई० तक, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ —डॉ० महेशचन्द्र गुप्त

३. राजस्थान का इतिहास —श्री बी० एम० दिवाकर
संस्करण १९७२ ई०
(कृष्ण ब्रदर्स अजमेर)

४. हमारा राजस्थान —श्री पृथ्वीसिंह मेहता
(सन् १९५० ई० संस्करण)

५. राजस्थान का इतिहास (प्रथम भाग) —डॉ० गोपीनाथ शर्मा
प्रथम संस्करण १९७१ ई०

६. राजस्थान का इतिहास —डॉ० कालूराम शर्मा तथा डॉ० प्रकाश व्यास
प्रथम संस्करण १९८४ ई०
(वनस्थली विद्यापीठ)

७. राजस्थान का इतिहास —श्री सुखवीरसिंह गहलौत
(फरवरी १९८० ई० संस्करण)
राजस्थान साहित्य मन्दिर, सोजती द्वार, जोधपुर

८. राजपूताने का इतिहास (पहली जिल्द) —गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
द्वितीय संस्करण सन् १९३७ ई०
व्यास एण्ड संस, अजमेर

९. महाराणा राजसिंह —डॉ० रामप्रसाद व्यास

१०. राजपूताने का इतिहास (तृतीय भाग) —श्री जगदीशसिंह गहलौत

११. उर्दू हिन्दी शब्दकोश —मुहम्मद मुस्तफाखाँ मद्दाह
सन् १९७७ ई० संस्करण

१२. मनु-स्मृति — सम्पादक—पं० गोपाल शास्त्री नेने
काशी संस्कृत ग्रन्थमाला ११४ — हिन्दी व्याख्याकार—पं० हरगोविन्द शास्त्री
सन् १९७० ई० चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
१३. नालन्दा विशाल शब्द सागर —सम्पादक श्री नवल जी
संवत् २००७ वि०
आदीश बुक डिपो, जवाहरनगर, बंगला रोड, दिल्ली
१४. राजस्थानी भाषा और साहित्य —डॉ० मोतीलाल मेनारिया
(तृतीय वार संवत् १८८२ शक)
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
१५. राजस्थानी गद्य-विकास और प्रकाश —डॉ० नरेन्द्र भानावत
प्रथम संस्करण १९७२ ई०
१६. राजपूताने का इतिहास —गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
जिल्द ३, भाग १ (प्रथम संस्करण)
सन् १९३६ ई०
१७. राजपूताने का इतिहास —गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
जिल्द ३, भाग ११ (प्रथम संस्करण)
सन् १९३७ ई०
१८. ऋक्-सूक्त-सुधाकर —व्याख्याकार डॉ० कृष्णकुमार
साहित्य भंडार सुभाष बाजार, मेरठ
सन् १९७२ ई० संस्करण
१९. इतिहास और नागरिक शास्त्र (कक्षा ७)
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
माघ १९०७ शक संस्करण
२०. राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण —डॉ० विश्वेश्वर स्वरूप भार्गव
कालेज बुक डिपो, जयपुर
सन् १९७१ ई० संस्करण
२१. भारतीयता, रागात्मक एकता और लिपि —डॉ० गंगाप्रसाद विमल
'नागरी संगम' पत्रिका, वर्ष ६, अंक २२
नागरी लिपि परिषद्, राजघाट, नई दिल्ली
२२. नागरी लिपि की महत्ता —ले० श्रीयतीन्द्रनाथ जेना
'नागरी संगम' पत्रिका (अप्रैल-जून १९८४)
२३. भारतीय लिपियों की कहानी —श्री गुणाकर मुळे
प्रथम संस्करण १९७४ ई०
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

१२. मनु-स्मृति — सम्पादक—पं० गोपाल शास्त्री नेने
काशी संस्कृत ग्रन्थमाला ११४ हिन्दी व्याख्याकार—पं० हरगोविन्द शास्त्री
सन् १९७० ई० चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी

१३. नालन्दा विशाल शब्द सागर —सम्पादक श्री नवल जी
संवत् २००७ वि०
आदीश बुक डिपो, जवाहरनगर, बंगला रोड, दिल्ली

१४. राजस्थानी भाषा और साहित्य —डॉ० मोतीलाल मेनारिया
(तृतीय वार संवत् १८८२ शक)
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

१५. राजस्थानी गद्य-विकास और प्रकाश —डॉ० नरेन्द्र भानावत
प्रथम संस्करण १९७२ ई०

१६. राजपूताने का इतिहास —गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
जिल्द ३, भाग १ (प्रथम संस्करण)
सन् १९३६ ई०

१७. राजपूताने का इतिहास —गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
जिल्द ३, भाग ११ (प्रथम संस्करण)
सन् १९३७ ई०

१८. ऋक्-सूक्त-सुधाकर —व्याख्याकार डॉ० कृष्णकुमार
साहित्य भंडार सुभाष बाजार, मेरठ
सन् १९७२ ई० संस्करण

१९. इतिहास और नागरिक शास्त्र (कक्षा ७)
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
माघ १९०७ शक संस्करण

२०. राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण —डॉ० विश्वेश्वर स्वरूप भार्गव
कालेज बुक डिपो, जयपुर
सन् १९७१ ई० संस्करण

२१. भारतीयता, रागात्मक एकता और लिपि —डॉ० गंगाप्रसाद विमल
'नागरी संगम' पत्रिका, वर्ष ६, अंक २२
नागरी लिपि परिषद्, राजघाट, नई दिल्ली

२२. नागरी लिपि की महत्ता —ले० श्रीयतीन्द्रनाथ जेना
'नागरी संगम' पत्रिका (अप्रैल-जून १९८४)

२३. भारतीय लिपियों की कहानी —श्री गुणाकर मुळे
प्रथम संस्करण १९७४ ई०
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

२४. राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश (तृतीय खण्ड) पंचशील प्रकाशन, जयपुर —आ० बदरीप्रसाद साकरिया —प्रो० भूपतिराम साकरिया
२५. हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास दूसरा प्रकरण —अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध

पत्रावलियाँ, खरीते, प्रलेख

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

१. खरीते जात हिन्दी—बूंदी
२. इन्दौर जयपुर खरीते संवत् १८०६ से २००२ वि०
३. महकमा खास—जयपुर, खरीते
जात हिन्दी-रियासत करौली
संवत् १७६६ से १६०३ वि० तादाद
१-३५१ तक बंडल नं० २
४. रिकार्ड आमेर, संवत् १८५६ वि० नं० १२० याददास्तियाँ
५. राजश्री महकमा ख़ास मेवाड़, सनद रजिस्टर नं० १०१-१५०, पैड नं० ३
६. खरीते जात हिन्दी—किशनगढ़, बंडल नं० ११
संवत् १७६५ से २००४ वि० संख्या ७४
७. खरीते जात बीकानेर—जयपुर
संवत् १८०७ से, बंडल नं० ८ कुल २२६
८. खरीते जात हिन्दी, रियासत जोधपुर
संवत् १७६६ से २००३ वि०
९. खरीते जात हिन्दी—ग्वालियर से जयपुर
संवत् १८०७ से २००२ वि० तादाद २४३
१०. खरीते जात हिन्दी—जोधपुर, जयपुर
११. खरीते जात हिन्दी कोटा-जयपुर
१२. Arzadashtas addressed to the rulers of Jaipur
Jaipur states old historical records office.
रजिस्टर नं० ५६
१३. खरीते जात हिन्दी—रियासत करौली से जयपुर, संवत् १८०७ से २००२
वि० तादाद २४३
१४. अर्ज़दाश्त महकमा ख़ास जयपुर, संवत् १७३२ से १७४१ वि० बंडल नं० २

१५. रिकार्ड आमेर याददास्ति
संवत् १८१२/२ तादाद ९०
१६. जयपुर अर्जदाश्त— रजिस्टर नं १५६
१७. जयपुर राज्य अर्जदाश्त रजिस्टर नं० १९०
१८. पुराना ऐतिहासिक रिकार्ड कार्यालय रजिस्टर नं० २०८
वकील रिपोर्ट-एड्रेस्ड टु दि रूलर्स ऑफ जयपुर

राष्ट्रीय अभिलेखागार जनपथ, नई दिल्ली

१. सिरोही फाइलें—वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स रेजिडेन्सी बाउंडरी
२. राव चिरंजीलाल हल्दिया संग्रह बी—ओरिएण्टल रेकॉर्ड (राजस्थान)
३. हल्दिया ए संग्रह—ओरिएण्टल रेकॉर्ड राजस्थानी नं० २३/११५

अंग्रेजी

1. Bibliotheca Indica Sec. I Part I (Jodhpur State) 1917 edition —L. P. Tessitori
2. Bibliotheca Indica Sec. I Part—II (New Series No. 1412) 1918 edition —L. P. Tessitori